हलायुधकोशः



उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

हिन्दी समिति प्रभाग ग्रन्थमाला—१५०

हलायुधकोशः

(अभिधानरत्नमाला)

सम्पादकः

जयशङ्करजोशी



'कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई॥'

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

(हिन्दी समिति प्रभाग)

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन

महात्मा गाँधी मार्ग, लखनऊ–२२६००१

प्रकाशक :
विनोद चन्द्र पाण्डेय
निदेशक,
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान
राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन,
महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ–२२६००१

प्रथम संस्करण : १९५७
द्वितीय संस्करण : १९६७
तृतीय संस्करण : १९९३

प्रतियाँ : २१००

मूल्य : २२०.०० रुपये

मुद्रक :
शिवम् प्रिन्टर्स,
सी. २७/२७३, इण्डियन प्रेस कालोनी, मलदहिया
वाराणसी—२२१००२

प्रकाशकीय

शब्दों के ज्ञान के लिए किसी भी भाषा में कोशों का उल्लेखनीय योगदान होता है। वस्तुतः भाषा की समृद्धि का ज्ञान कोशों के माध्यम से किया जा सकता है। विद्यार्थियों, शोधार्थियों और जिज्ञासुओं के लिए भी शब्द कोशों की महत्ता निर्विवाद है।

भारत में अतीत काल से ही कोशों की उपादेयता और उपयोगिता का अनुभव किया जा रहा है। फलस्वरूप संस्कृत भाषा के कोशकारों में अमर सिंह, हलायुध भट्ट आदि के नाम प्रसिद्ध हैं। इन्होंने शब्दों के विभिन्न पर्यायों को ललित शैली में श्लोकबद्ध कर कोशों की रचना की है। शब्दार्थ के लिए आज भी विद्वत्त समाज में कोश प्रामाणिक ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं।

'हलायुध कोशः' का तृतीय संस्करण सुविज्ञ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हर्ष की अनुभूति स्वाभाविक है। विश्वास है कि पूर्व संस्करणों की भाँति तृतीय संस्करण का भी स्वागत होगा और इससे भाषा और साहित्य के अध्येता लाभान्वित होंगे।

विनोद चन्द्र पाण्डेय
निदेशक

दो शब्द

भाषा का आधार शब्द है और शब्दों की व्युत्पत्ति और अर्थ के संज्ञान का माध्यम है शब्द कोश। भाषा अपनी हो या कोई अन्य भाषा, जिसे हम सीखना चाहते हों, या जिसका निरन्तर प्रयोग करना चाहते हों, उसके शब्द कोश की व्यावहारिक आवश्यकता हमें सदा रहती है।

हमारे देश में प्राचीन काल से ही संस्कृत-विद्वानों ने भाषा-परिमार्जन के लिए जहाँ व्याकरण को सुगठित किया, वहीं शब्दकोशों की भी रचना की गई। क्योंकि उस समय 'स्मृति' पर विशेष बल था, अतः शब्दकोशों की रचना भी विभिन्न श्लोकों में की गई, जिससे वे कंठस्थ हो सकें। संस्कृत भाषा के "अमर कोश" और 'अभिधान रत्नमाला' ऐसे ही शब्दकोश हैं। अमरकोश की रचना अमर सिंह ने की तथा "अभिधान रत्नमाला" की रचना हलायुध भट्ट ने की। परन्तु हलायुध भट्ट का कोश "अभिधान रत्नमाला" के स्थान पर उसके रचयिता हलायुध के नाम पर "हलायुधकोशः" के रूप में ही विख्यात हुआ।

भारत की प्रायः समस्त भाषाओं की जननी संस्कृत है। हिन्दी तो उसकी उत्तराधिकारिणी है ही। अतः इन सभी भाषाओं के शब्दों को ठीक से समझने के लिए संस्कृत के शब्दकोश अपरिहार्य ही हैं।

"हलायुध कोश" को सुसंपादित रूप में परिश्रमपूर्वक प्रस्तुत करने का कार्य संस्कृत के विद्वान् श्री जयशंकर जोशी ने किया और हिन्दी समिति ने इसका प्रकाशन सन् १९५७ में किया। इसका द्वितीय संस्करण सन् १९६७ में प्रकाशित हुआ। और अब उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, जिसमें हिन्दी समिति का अन्तर्भाव हो चुका है, इसका तृतीय संस्करण प्रकाशित कर हर्ष का अनुभव कर रहा है।

"हलायुधकोश" की विशेषता यह है कि इसमें ग्रन्थ को मूल रूप में प्रकाशित किया गया है जिसमें संपादन के माध्यम से हाशिये में अंग्रेजी में टिप्पणी देकर वर्ण्य शब्द का अर्थ और उसके पर्यायों की संख्या दे दी गई है। क्रमिक संख्या मूल पाठ में शब्दों के ऊपर भी अंकित की गई है, जिससे अंग्रेजी जानने वाले भी इसका लाभ उठा सकें। मूल ग्रन्थ के पश्चात् हलायुध कोश के शब्दों को

अकारादि क्रम से निवृत्ति सहित प्रस्तुत किया गया है। जहाँ-तहाँ उसके लोक-भाषाओं के पर्याय भी दे दिये गये हैं। इससे ग्रन्थ परम उपयोगी बन गया है और समस्त देश के विद्वान् इसका लाभ उठा सकते हैं, उठा रहे हैं।

मनीषियों की सेवा में प्रस्तुत संस्करण का समर्पण करते हुए गौरव की अनुभूति होना स्वाभाविक है।

मार्ग शीर्ष शुक्ल द्वादशी–२०४७
६ दिसम्बर, १९९२

डा० शरण बिहारी गोस्वामी
कार्यकारी उपाध्यक्ष

भूमिका

प्रस्तुतोऽयं श्रीमतो भट्टहलायुधस्य "अभिधानरत्नमाला" नामा ग्रन्थः। प्रकाशिताप्रकाशित-समुपलब्धानामस्य संस्करणानां मयात्र समुचित उपयोगः कृतः। अकारादिक्रमेण मूलग्रन्थस्य समस्तानां शब्दानामनुक्रमणिकापि समुपस्थापिता च। अनेनैव प्रस्तुतस्स ग्रन्थभागः "हलायुधकोशस्य शब्दानुक्रमकोशः" इति नामधेयः।

विदितमेव यत् संस्कृतवाणी भारतभूमेर्न केवलं प्राचीनतमा भाषा अपि तु भारतीयसभ्यतायाः संस्कृतेश्च द्योतिकाप्यस्ति। ज्ञानविज्ञानयोर्विविधग्रन्थराशिभिः सुसम्पन्ना चास्ति भाषेयम्।

तत्र भाषायाः सम्पन्नता शब्देष्वेवाश्रिता। तत्समुञ्चितवाक्यानि तु भावानां द्योतकमात्राणि सन्ति। अतः शब्दैर्विना वाक्यानामसम्भव आत्मलाभः। तेन चोपजीव्यानां शब्दानामुपयोगिता स्पष्टैव। साकल्येन तत्संग्रहात्मकशब्दकोशानां प्रचुरतैव भाषायाः सुसम्पन्नतां द्योतयति।

संस्कृतभाषायां सन्ति बहवः कोशग्रन्थाः। कोशस्तु संग्रहप्रतिबोधकः शब्दः। यथा स्वर्णादि-कोशेन विना मनुष्यो दरिद्रः कथ्यते तथैव शब्दकोशेन विना भाषापि दारिद्रयमवाप्नोति। धनकोशेन विना न सम्पाद्यन्ते यथा सांसारिककार्याणि तथैव शब्दकोशेन विना भाषाया अपि भवति कठिनतरः प्रयोगो दुर्लभञ्च ज्ञानम्। प्राचीनकालेनैव कोशग्रन्थानामुपयोगितां विचार्य विद्वद्भिः भृशं प्रयतितमस्ति। सुविख्यातेषु कोशग्रन्थेषु विपश्चिद्भूषणस्य भट्टहलायुधस्य कोशोऽयं मल्लिनाथप्रभृतिभिष्टीकाकारैष्टीका-ग्रन्थेषु स्थाने स्थाने विशिष्टार्थबोधनार्थमुद्धृतः।

मम क्षुद्रप्रयासोऽयं श्रीमतो भट्टहलायुधस्य सुविख्यातग्रन्थसम्पादने। यद्यपि मूलग्रन्थस्य "अभिधानरत्नमाला" इति भट्टहलायुधेन नामकरणं कृतं तथापि मया ग्रन्थकारस्य नामानुसरणं कृत्वा तथा टीकाकारैर्ग्रन्थकारस्य नाम्नैवास्य ग्रन्थस्य श्लोका यथोचितेषु स्थानेषु उद्धृता इङ्गिताश्चेति विचार्य ग्रन्थोऽयं "हलायुधकोशः" इति नाम्ना प्रकाशितः।

प्रस्तुतोऽयं ग्रन्थो द्वयोर्भागयोर्विभक्तः। तत्र प्रथमभागात्मको "मूलग्रन्थः", तत्पृष्ठप्रान्तयोराङ्ग्ल-भाषायां शब्दार्थो लिखितः। पर्य्यायवाचिनां शब्दानां संख्यापि तत्रैव लिखिता। प्रत्येकस्तु पर्यायवाची शब्दोऽङ्कितश्च। यथा–'घोषवती[1], वीणा[2], विपञ्ची[3], परिवादिनी[4], वल्लकी[5], एते पञ्च शब्दा वीणापर्य्यायवाचिनः, तत्प्रान्तभागेआङ्ग्लभाषायां "flute 5" इति लिखितम्। शक्नुवन्ति ज्ञातुं सरल-तयानेनाङ्ग्लभाषापाठिनो जना अपि यद् वीणायाः पञ्च पर्यायवाचिनः शब्दाः। यत्र पाठभेदोऽस्ति स मया पादटिप्पणीरूपेण निर्दिष्टः। भागे च द्वितीये मूलग्रन्थस्याकारादिक्रमेण शब्दानुक्रमणिकास्ति। मया तत्र यथाशक्ति प्रत्येकः शब्दो व्याख्यातः, तथा प्राचीनार्वाचीनेभ्यो ग्रन्थेभ्यः समुचितप्रयोगा अप्युद्धृताः। मूलग्रन्थस्य श्लोकाङ्का अपि निर्दिष्टा येन पाठकाः सरलतया मूलग्रन्थेऽपेक्षितं शब्दं तस्य पर्यायवाचिशब्दानपि च ज्ञातुं शक्नुवन्ति।

प्रथमोऽयं मम प्रयासः। त्रुटयस्त्वत्र भविष्यन्त्येव। मयात्र कियत्साफल्यं प्राप्तं विद्वज्जना एवास्य निर्णयं कर्तुं समर्थाः। तथापि यदि ममानेन क्षुद्रप्रयासेन कश्चिदपि संस्कृतानुरागिणामुपकारोऽभविष्यत्तदाहमात्मानं पूर्णरूपेण पुरस्कृतममंस्ये।

स्वकर्त्तव्यच्युतो भविष्याम्यहं यदि कृतज्ञताभारं न स्वीकरोमि समस्तानां पण्डितानां संस्कृतप्रेमिणाञ्च, येषां कृतीनां मया समुचितोपयोगः कृतस्तथा येषां सुकार्यैर्मया देववाण्याः सेवार्थं प्रेरणा प्राप्ता।

सन्ति मम कोटिशो धन्यवादा माननीयमुख्यमन्त्रिश्रीसम्पूर्णानन्दमहोदयेभ्यः। श्रीमद्भिरेतैर्ग्रन्थस्य प्रकाशने ममोपरि निजवरदहस्तः कृतः। समानरूपेण धन्यवादार्हाः सन्ति पण्डितवर्यश्रीजनार्दन जोशी येषां कृपादृष्टिर्मया बाल्यतः प्राप्ता। ग्रन्थस्यास्य रचनाकाले न केवलं श्रीमद्भ्यः साहाय्यं परन्तु निर्देशनमपि मया प्राप्तम्। न विस्मरणीया महती सहायता या मया सर्वश्रीलक्ष्मणसीताराम खेर, भगवतीशरण सिंह, पण्डितवर्यभोलानाथ शर्मा, चन्द्रलाल साह, देवकीनन्दन जोशी प्रभृतिमहोदयेभ्यः प्राप्ता। सर्व एते महोदयाः सन्ति धन्यवादार्हाः। महामहोपाध्यायपण्डितवर्य नारायणशास्त्री खिस्ते-महोदयैर्ममोत्साहो वर्द्धतोऽतएव धन्यवादार्हास्ते।

सर्वश्री पण्डित लीलाधरशर्मा 'पर्वतीय' तथा ज्योतिषाचार्य पण्डित निशाकान्त पाठक महोदयैर्ग्रन्थस्यास्य मुद्रणप्रसङ्गे महानुपकारः कृतः, तदर्थं धन्यवादार्हास्ते महानुभावाः।

अन्ते चेमं ग्रन्थं विदुषां पुरतो निधाय प्रार्थये यदत्र ये केचन दोषा मुद्रणेऽन्यथा वा सञ्जातास्तान् सर्वान् मां सूचयित्वा कृतार्थीकरिष्यन्ति। ग्रन्थस्योपयोगितविवर्धनाय विद्वज्जनानां सम्मतिं च सविनयमभ्यर्थये।

लखनऊ

श्रीकृष्णजन्माष्टमी, वि० सं० २०१४

विदुषामनुचरः

जयशङ्कर जोशी

हलायुधकोशः

हलायुधकोशः

(अभिधानरत्नमाला)

प्रथमं स्वर्गकाण्डम्

शब्दब्रह्म यदेकं यच्चैतन्यं च सर्वभूतानाम् ।
यत्परिणामस्त्रिभुवनमखिलमिदं जयति सा वाणी ॥ १ ॥

इयममरदत्तवररुचिभागुरिवोपालितादिशास्त्रेभ्यः ।
अभिधानरत्नमाला कविकण्ठविभूषणार्थमुद्ध्रियते ॥ २ ॥

Heaven 11.

1 स्वः 2 स्वर्गः 3 सुरसद्म 4 त्रिदशावासस्त्रि 5 विष्टपं 6 त्रिदिवम् ।
7 द्यौ 8 र्गौ 9 रमर्त्यभुवनं 10 नाकः 11 स्यादूर्ध्वलोकश्च ॥ ३ ॥

A god, a deity 21.

1 आदित्यास्त्रि 2 दशाः 3 सुराः 4 सुमनसः 5 स्वर्गौकसो 6 देवता,
7 गीर्वाणा 8 ऋभवो 9 ऽमराश्च 10 मरुतो 11 वृन्दारका 12 निर्जराः ।
13 अस्वप्ना 14 विबुधास्त्रि 15 विष्टपसदो 16 लेखाः 17 सुपर्वाण इ-,
त्याख्याता 18 अमृताशना 19 अनिमिषा 20 देवास्तथा 21 दैवतम् ॥ ४ ॥

A demon 8.

1 असुरा 2 दानवा 3 दैत्या 4 दैतेयाः 5 सुरशत्रवः ।
6 पूर्वदेवाः 7 शुक्रशिष्याः 8 पातालनिलयाः स्मृताः ॥ ५ ॥

Brahma, the creator of the universe 20.

1 2 3 4 5 6
ब्रह्मा स्रष्टा परमेष्ठी धाता पद्मभूः सुरज्येष्ठः ।
7 8 9 10 11
वेधा विधिर्विरिञ्चो हिरण्यगर्भः शतानन्दः ॥ ६ ॥
12 13 14 15 16
शम्भुः स्वयम्भूर्द्रुहिणश्चतुर्वक्त्रः प्रजापतिः ।
17 18 19 20
पितामहो जगत्कर्ता विरञ्चिः कमलासनः ॥ ७ ॥

The goddess of speech 8.

1 2 3 4 5 6 7 8
वाग्वाणी भारती भाषा गौर्गीर्ब्राह्मी सरस्वती ।

'Om' one mystic syllable 2.

1 2
ओङ्कारः प्रणवः प्रोक्तस्त्रयो वेदास्त्रयी स्मृताः ॥ ८ ॥

The vedas, the oldest sacred writings 6.

1 2 3 4 5 6
वेदः श्रुतिस्तथाम्नायः स्वाध्यायश्छन्द आगमः ।

Upanishad the scope of vedas 3.

a 1 2 3
वेदान्तश्च रहस्यं च बुधैरुपनिषन्मता ॥ ९ ॥

Reasoning logic 3.

Investigation or discussion of the vedas 2.

1 2 3 1 2
ऊहस्तर्कोऽनुमानोक्तिर्मीमांसा स्याद्विचारणा ।

Established truth or doctrine, a dogma 4.

1 2 3 4
स्मृताः कृतान्तराद्धान्तसिद्धान्तसमयाः समाः ॥ १० ॥

Name of Shiva 45.

1 2 3 4 5 6
ईशानः शशिशेखरः पशुपतिः शूली शिवः शङ्करः ,
7 8 9 10 11 12 13
शर्वः शम्भुरुमापतिश्च गिरिशः श्रीकण्ठ उग्रो हरः ।
14 15 16 17 18 19
सर्वज्ञस्त्रिपुरान्तकस्त्रिनयनो रुद्रः कपर्दी भवो ,
20 21 22 23
भूतेशः परमेश्वरोऽन्धकरिपुर्दक्षाध्वरध्वंसकृत् ॥ ११ ॥
24 25 26 27
स्थाणुः स्रष्टा धूर्जटिर्वामदेवः ,
28 29 30
कामध्वंसी व्योमकेशः कपाली ।
31 32 33
नीलग्रीवो वह्निरेताः पिनाकी ,
34 35 36 37
भीमो भर्गः कृत्तिवासा वृषाङ्कः ॥ १२ ॥
b 38 39 40 41
अहिर्बुध्नो विरूपाक्षः शिपिविष्टो गणाधिपः ।
42 43 44 45
गङ्गाधरो महादेवो मृडः स्यान्नीललोहितः ॥ १३ ॥

a वेदाङ्गश्च, वेदान्तस्य b अहिर्बध्नो, अहिबुध्न्यो, अहिबुध्न्या ।

Shiva's bow 2.

पिनाकं[2] स्यादजगवं[2] प्रमथास्तु[1] गणाः[2] स्मृताः ।

One of the chief attendants of Shiva.

Braided and matted hair of Lord Shiva.

कपर्दोऽस्य[1] जटाबन्धस्तण्डुः[2 a] स्यान्नन्दिकेश्वरः[1] ॥ १४ ॥

Name of Shiva's wife 21.

रुद्राणी[1] शर्वाणी[2] काली[3] कात्यायनी[4] भवानी[5] च ।
आर्याम्बिका[6, 7] मृडानी[8] हैमवती[9] पार्वती[10] गौरी[11] ॥ १५ ॥
उमा[12] भगवती[13] दुर्गा[14] चण्डी[15] दाक्षायणी[16] शिवा[17] ।
अपर्णा[18] स्यान्महादेवी[19] गिरिजा[20] मेनकात्मजा[21] ॥ १६ ॥
ब्रह्माण्याद्याः[1] स्मृताः सप्त देवतामातरो बुधैः ।

An incarnation of Durga.

चामुण्डा[1] कर्णमोटी[2] च चर्चा[3] स्याद्भैरवी[4] तथा ॥ १७ ॥

Name of Ganesh 9.

हेरम्बो[1] लम्बोदर[2] आखुरथो[3] गणपतिश्च[4] गजवदनः[5] ।
परशुधर[6] एकदन्तो[7] विनायको[8] विघ्नराजश्च[9] ॥ १८ ॥

Name of Kartikeya 20.

गौरीपुत्रः[1] षण्मुखः[2] शक्तिपाणिः,[3]
क्रौञ्चारातिः[4] कार्त्तिकेयो[5] विशाखः[6] ।
स्कन्दः[7] स्वामी[8] तारकारिः[9] कुमारः,[10]
सेनानीः[11] स्यादग्निभूर्बाहुलेयः[12, 13] ॥ १९ ॥
गाङ्गेयो[14] ब्रह्मचारी[15] च गुहो[16] वर्हिणवाहनः[17] ।
महासेनो[18] महातेजाः[19] शरजन्मा[20] च कथ्यते ॥ २० ॥

Name of Vishnu 56.

विष्णुः[1] कृष्णः[2] केशवो[3] मञ्जुकेशी,[4]
श्रीवत्साङ्कः[5] श्रीपतिः[6] पीतवासाः[7] ।
विष्वक्सेनो[8] विश्वरूपो[9] मुरारिः,[10]
शौरिः[11] शार्ङ्गी[12] पद्मनाभो[13] मुकुन्दः[14] ॥ २१ ॥

a बन्धस्तन्दुः, बन्धतद्रः बधस्तद्रुः ।

[15] गोविन्दो [16] धरणिधरः [17] सुपर्णकेतु–
[18] वैकुण्ठो [19] जलशयन[20]श्चतुर्भुजश्च ।
[21] दैत्यारि[22]र्मधुमथनो [23] रथाङ्गपाणि–
[24] दाशार्हः [25] क्रतुपुरुषो [26] वृषाकपिः स्यात् ॥ २२ ॥

[27] जनार्दना[28]धोक्षज[29]वासुदेवं [30] दामोदरं [31] श्रीधर[32]मच्युतं च ।
[33] उपेन्द्र[34]मिन्द्रावरजं च [35] बभ्रं [36] हरिं [37] हृषीकेशमुदाहरन्ति ॥ २३ ॥

[38] आत्मभूः [39] पुण्डरीकाक्षः [40] श्रीवत्सो [41] विष्टरश्रवाः ।
[42] नारायणो [43] जगन्नाथो [44] वनमाली [45] गदाधरः ॥ २४ ॥

[46] सनातनो [47][a] जिनः [48] शम्भु[49]र्विधि[50]र्वेधा [51] गदाग्रजः ।
[52] कैटभारि[53]रजो [54] जिष्णुः [55] कंसजि[56]त्पुरुषोत्तमः ॥ २५ ॥

The disc of Vishnu. — Vishnu's bow 1 — Vishnu's mace.

[1] चक्रं सुदर्शनं चापं [1] शार्ङ्गं [1][b] कौमोदकी गदा ।

Vishnu's sword. — Vishnu's conch.

खड्गोऽस्य [1] नन्दकः शङ्खः [1] पाञ्चजन्यः प्रकीर्तितः ॥ २६ ॥

The jewel suspended on Vishnu's breast. — A starlike mark on Vishnu's breast.

[1] कौस्तुभो वक्षसि मणिः [1] श्रीवत्सोऽस्य च लाञ्छनम् ।

Name of Krishna's father 2.

[1] वसुदेवस्तु कथितो बुधै[2]रानकदुन्दुभिः ॥ २७ ॥

Name of Krishna's elder brother 18.

[1] बलदेवो [2] बलभद्रो [3] मुशली [4] नीलाम्बरः [5] प्रलम्बघ्नः ।
[c] [6] सीरी च [7] सात्वतः स्या[8]त्तालध्वज [9] एककुण्डलो[10]ऽनन्तः ॥२८॥

[11] सङ्कर्षणो [12] रौहिणेयः [13] कालिन्दीकर्षणो [14] बलः ।
[15] रेवतीरमणो [16] रामः [17] कामपालो [18] हलायुधः ॥ २९ ॥

[1] विहङ्गराजो [2] गरुडो [3] गरुत्मान् ,
[4][d] तार्क्ष्यः [5] सुपर्णीतनयः [6] सुपर्णः ।

a जितः b कौमुदकी c शारी च सावतः, सीरी च स्यात्यतः d तार्क्षः ।

Name of Garuda, the mount of Vishnu 10.

7 8
स्याद्वनतेयः पवनाशनाशः ,
9 10
सुरेन्द्रजित्कश्यपनन्दनश्च ॥ ३० ॥

Name of Vishnu's wife 9.

1 2 3 4 5 6
लक्ष्मीः श्रीः कमला पद्मा पद्मवासा हरिप्रिया ।
7 8 9
क्षीरोदतनया मा च शब्दज्ञैरिन्दिरा स्मृता ॥३१॥

Cupid, the god of love 30.

1 2 3 4 5
प्रद्युम्नो मकरध्वजो मनसिजः सङ्कल्पजन्माङ्गजः ,
6 7 8 9 10 11
पञ्चेषुः कुसुमायुधश्च मदनो मारः स्मरो मन्मथः ।
12 13 14 15 16
कन्दर्पो झषकेतनो रतिपतिः श्रीनन्दनो हृच्छयः ,
17 a 18 19 20
कामः शम्बरसूदनो मधुसखः शृङ्गारयोनिः स्मृतः ॥ ३२ ॥
21 b 22 23 24
दर्पकः शूपकारातिरनङ्गो विषमायुधः ।
25 26 27 28
आत्मभूर्मनसिशयः पुष्पधन्वा मनोभवः ॥ ३३ ॥
29 30 1 2
मापत्यमिरजश्चैव कामपत्नी रतिः स्मृता ।

Cupid's wife 2.

Cupid's son 2.

1 2 c
अनिरुद्धश्च तत्सूनुरुषारमण इष्यते ॥ ३४ ॥

The sun 47.

1 2 3 4 5
आदित्यः सविता सहस्रकिरणः प्रद्योतनो भास्कर–
6 7 8 9 10 11
स्तिग्मांशुस्तरणिस्तथा दिनमणिर्भास्वान्विवस्वान्हरिः ।
12 13 14 15 16 17 18
मार्तण्डस्तपनो विकर्तन इनः पूषा पतङ्गो भगः ,
19 20 21 22 23 24 25
सूर्यो गोपतिरर्यमा दिनकरः सूरोंऽशुमाली रविः ॥ ३५ ॥
d 26 27 28 29 30 31 32
मिहिरो विरोचनोऽर्कस्तिमिररिपुर्द्युमणिरंशुमानंशुः ।
33 34 35 36 37
हरिदश्वः सप्ताश्वः प्रभाकरो भानुमान्भानुः ॥ ३६ ॥
38 39 40 41 42 33
ब्रध्नो हंसः खगो मित्रश्चित्रभानुरहर्पतिः ।
44 45 46 47
कर्मसाक्षी जगच्चक्षुर्द्वादशात्मा त्रयीतनुः ॥ ३७ ॥

a शम्बरसूदन b सूर्पका, सूर्पका, c रमणमुच्यते d मिहरो ।

A ray of light 32.

1 2 3 4 5 3 7 8
रोचिः शोचिरभीशुः प्रद्योतगभस्तिरश्मिघृणिकिरणाः ।
9 10 11 12 13 14 15 16 17
रुचिरुग्दीधितिदीप्तिद्युतिप्रभाभाविभाभासः ॥ ३८ ॥
18 19 20 21 22 23 24 a 25 26
उस्रधामवसुकेतुमरीचिप्रग्रहोपधृतिवृष्णिमयूखाः ।
27 28 29 30 31 32
अंशुभानुकरपादविरोका गाव इत्यभिहितास्तु समानाः ॥ ३९ ॥

Fiery hot 7.

1 2 3 4 5 6 7 b
तिग्मं तीक्ष्णं खरं तीव्रं चण्डमुष्णं पटु स्मृतम् ।

Heat of the sun 4.

1 2 3 4
आतपः कथ्यते रौद्रं निदाघो घर्म उच्यते ॥ ४० ॥

The halo round the sun or the moon.

1 2 3 4
परिधिः परिवेषः स्यान्मण्डलं चोपसूर्यकम् ।

An eclipse 3.

1 2 3
उच्यते राहुसंस्पर्श उपराग उपप्लवः ॥ ४१ ॥

The moon 21.

1 2 3 4
इन्दुश्चन्द्रश्चन्द्रमा ओषधीशः,
5 3 7 8
सोमो राजा रोहिणीवल्लभोऽब्जः ।
9 10
ऋक्षेशः स्यादत्रिनेत्रप्रसूतः,
11 12 13
प्रालेयांशुः श्वेतरोचिः शशाङ्कः ॥ ४२ ॥
14 c 15 16 17
द्विजराजो रजनिकरः पीयूषरुचिर्निशीथिनीनाथः ।
d 18 19 20 21
जैवातृको मृगाङ्को विधुश्च दाक्षायणीरमणः ॥ ४३ ॥

Moonlight 4.

1 2 3 e 4
चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना तथा चन्द्रातपः स्मृतः ।

The disc round the sun or moon (see परिधि in 41 sloka).

The spots on the moon represented as a hare.

1 2 f 1
मण्डलं बिम्बमाख्यातं हृदये लाञ्छनं मृगः ॥ ४४ ॥

Mark, token, symbol 7.

1 2 3 4 5 6
अङ्कश्चिह्नमभिज्ञानं लाञ्छनं लक्ष्म लक्षणम् ।
7
कलङ्कश्चेति विज्ञेया नातिनानार्थवाचकाः ॥ ४५ ॥

The planet mars 5.

1 2 3 4 5
वक्रमङ्गारकं भौमं लोहिताङ्गं धरात्मजम् ।

The planet Mercury.

1 2 3 4 g
रौहिणेयं बुधं सौम्यमाहुश्चान्द्रमसायनम् ॥ ४६ ॥

a धिष्ण्य, धृष्णि b तपः स्मृतम् c रजनिचरः d जोकात्रिको e चन्द्रतपः f हृदयं g सायनिः ।

The planet Jupiter, the preceptor of gods 8.

[1]वाचस्पति[2]राङ्गिरसो [3]वृहस्पतिः कथ्यते [4]गुरु[5]र्जीवः ।
[6]धिषणस्[7]त्रिदशाचार्यश्[8]चित्रशिखण्डिप्रसूतश्च ॥ ४७ ॥

The planet Venus, the preceptor of demons 7.

[1]उशना [2]शुक्रः [3]काव्यो [4]दैत्यगुरु[5]र्भार्गवः [6]कवि[7]र्धिष्ण्यः ।

The planet Saturn 6.

[1]असितः [2a]क्रोडः [3]पङ्गुश्[4]छायातनयः [5]शनैश्चरः [6]शौरिः ॥ ४८ ॥

A name of Rahu, ascending node 5.

[1]स्वर्भानुः [2]सैंहिकेयश्च [3]तमो [4]राहु[5]र्विधुन्तुदः ।

A comet, descending node 3.

[1]केतवः [2 b]शिखिनः प्रोक्ता [3]आर्द्रालुब्धक उच्यते ॥ ४९ ॥

The constellation Ursa Major.

[1]सप्तर्षयस्तु विद्वद्भिः [2]स्मृताश्चित्रशिखण्डिनः ।

Pleiades 2.

[1]कृत्तिका [2]बहुला प्रोक्ताः [1]पक्षस्तु [1]बहुलो[2]ऽसितः ॥ ५० ॥

Fortnight 1.

The dark half of the lunar month 2.

[1]भं [2]नक्षत्रं [3]तारकं [4]तारका च,
[5]ज्योतिस्[6]तारा [7]धिष्ण्य[8 c]मृक्षं [9]तथोडु ।

A star 9.

[1]पुष्यस्[2]तिष्यः [1]स्याद्धनिष्ठा [2]श्रविष्ठा ,
[d 1]दाक्षायण्यः [2]कीर्तिताश्चन्द्रदाराः ॥ ५१ ॥

The eighth lunar asterism 2.

The 23rd lunar asterism 2.

27 Lunar asterism.

Indra, the god of heaven.

[1]इन्द्रो [2]दुश्च्यवनो [3]हरिः [4]सुरपतिः [5]सङ्क्रन्दनो [6]वासवो ,
[7]वृत्रारि[8]र्बलसूदनः [9]शतमखो [10]वृद्धश्रवाः [11]कौशिकः ।
[12]जिष्णु[13]र्वज्रधरः [14]सहस्रनयनो [15]वास्तोष्पति[16]र्गोपतिः ,
[17]पर्जन्यो [18]मघवा [19]वृषा [20]हरिहयः [21]प्राचीनबर्हिः स्मृतः ॥ ५२ ॥
[22]पुरुहूतः [23]पृतनाषाट् [24]पुरन्दरः [25]पूर्वदिक्पतिः [26]स्वाराट् ।
[27]आखण्डलस्[28]तुराषाट् [29 e]सुत्रामा [30]गोत्रभित्[31]सुनासीरः ॥ ५३॥
[32]शक्रः [f 33]स्यादुग्रधन्वा च [34]हरिवान्[35]पाकशासनः ।
[36]दिवस्पति[g 37]र्विडौजाश्च [38]मरुत्वान्[39]मेघवाहनः ॥ ५४ ॥

a क्रोडः b शखिनः c मृक्षमथो d दाक्षायिण्यः, दाक्षरायण्यः, दक्षणायण्यः, e सूत्रामा f स्यादग्रधन्वा g विडोजाश्च ।

Indra's wife 3.	1 2 3 1 इन्द्राणी पौलोमी शची जयन्तश्च तत्सुतो ज्ञेयः ।	Indra's son.
Indra's city 1.	1 1 अमरावती च नगरी नन्दनमुद्यानमिन्द्रस्य ॥ ५५ ॥	Indra's garden 1.
Indra's thunder-bolt 12.	1 2 3 4 5 6 पविरशनिः शतधारं वज्रं कुलिशं च भवति दम्भोलिः । 7 8 9 10 11 12 a गौभिदुरं व्याधामः स्वरुरिन्द्रप्रहरणं तथा शम्बः ॥ ५६ ॥	
Clap of thunder 2.	1 2 1 2 स्फूर्जथुर्वज्रनिर्घोषो वज्रज्वालाऽतिभीः स्मृता ।	The flash of lightning 2.
Indra's bow, rain--bow. } 3.	1 2 3 ऋजु रोहितमिच्छन्ति बुधाः शक्रशरासनम् ॥ ५७ ॥	
A cloud 10.	1 2 3 4 5 6 अभ्रमब्दो घनो मेघः स्तनयित्नुः पयोधरः । 7 b 8 9 10 धाराधरो धूमयोनिर्जीमूतश्च बलाहकः ॥ ५८ ॥	
Heavy fall of rain 2.	1 2 1 2 धारासम्पात आसारो वातास्तं वारिसीकरः ।	Rain driven by wind 2.
The cloudy day 2.	1 2 c 1 2 दुर्दिनं मेघतिमिरं करकः स्याद्घनोपलः ।	Hail 2.
	d 1 2 चलन्नवाभ्रमाला च बुधैः कादम्बिनी स्मृता ॥ ५९ ॥	A series of clouds 2.
Lightning 10.	1 2 3 4 e 5 6 7 शम्पा चपला क्षणिका शतह्रदा ह्लादिनी तडिद्विद्युत् । 8 9 10 सौदामिन्यचिरांशुः प्राज्ञैरैरावती च विज्ञेया ॥ ६० ॥	
Indra's elephant 3.	1 2 3 ऐरावतोऽभ्रमातङ्गः स चैरावण उच्यते ।	
Indra's horse 2.	1 2 1 2 उच्चैःश्रवास्तु देवाश्वो मातलिः शक्रसारथिः ॥ ६१ ॥	Indra's charioteer 2.
Fire 39.	1 2 3 4 5 6 7 सप्तार्चिर्बहुलः शिखी हुतवहो वैश्वानरोऽग्निर्वसु– 8 9 10 11 f 12 र्वह्निर्वायुसखः सितेतरगतिः स्वाहाप्रियः पावकः । 13 14 15 16 17 18 अर्चिष्मान् ज्वलनः कृशानुरनलो धूमध्वजो हव्यवाट्, 19 20 21 22 23 बर्हिर्ज्योतिरुषर्बुधश्च दहनः स्याच्चित्रभानुः शुचिः ॥ ६२ ॥	

a सम्ब शम्बुः, शवुः b धूमज्योति c कर्कस्तु, करका d चरभ्रमाला e ह्लादिनी, ह्रादिनी f स्वाहापतिः ।

24 25 a 26 27
कृपीटयोनिर्दमुनाः कृष्णवर्त्माशुशुक्षणिः ।
28 29 30 31
विभावसुरपांपित्तं जातवेदास्तनूनपात् ॥ ६३ ॥
b 32 33 34 35
वीतिहोत्रो वृहद्भानुराश्रयाशो धनञ्जयः ।
36 37 38 39
हिरण्यरेतास्तमोघ्नो रोहिताश्वो हुताशनः ॥ ६४ ॥

Flame 14.
1 2 3 4 5 6 7
अर्चिः कीला ज्वाला वर्चस्तेजस्त्विषस्तथा ज्योतिः ।
8 9 10 11 12 13 14
हेतिद्युतिदीप्तिरुचः शिखाप्रभारश्मयः समानार्थाः ॥ ६५ ॥

Light 3.
1 2 3
स्मृतः प्रकाश आलोक उद्द्योतश्च समास्त्रयः ।

Wife of Agni. — Mass of smoke 2.
c 1 2 1 2
अग्नायी कथ्यते स्वाहा धूम्या स्याद्धूमसंहतिः ॥ ६६ ॥

Steam, vapour 2. — Tongue of the fire 2.
1 2 1 Spark 2 1 2
ऊष्मा वाष्पः स्फुलिङ्गश्च कणा जिह्वास्तथार्चिषः ।

A fire brand. — High flame of fire 2.
1 2 1 2
अलातमुल्मुकं ज्ञेयमुल्का ज्वालास्य निर्गता ॥ ६७ ॥

Names of the seven tongues of Agni.
1 2 3 4 5
भवति हिरण्या कनका रक्ता कृष्णा सुप्रभा चान्या ।
6 7
अतिरक्ता बहुरूपेति सप्त सप्तार्चिषो जिह्वाः ॥ ६८ ॥

Fuel 6.
1 2 3 4 5 6
एधस्तर्पणमिन्धनमधः समिदिध्म इत्यभिन्नार्थाः ।

Ashes 5.
1 2 3 4 5
भूतिर्भसितं भस्म क्षारं रक्षा च निर्दिष्टा ॥ ६९ ॥

A wood on fire Sylvan fire Forest fire. — Flash of lightning 2.
1 2 3 1 2
धनवह्निर्दवो दावो मेघवह्निरिरंमदः ।

Submarine fire 4.
1 2 3 d 4
और्वः समुद्रवह्निः स्याद्वाडवो वडवामुखः ॥ ७० ॥

Name of Pluto, the God of death 16.
1 2 e 3 4 5
शमनः समवर्ती च प्रेतपतिः पितृपतिश्च कीनाशः ।
6 7 8 9
वैवस्वतः कृतान्तः कालिन्दीसोदरः कालः ॥ ७१ ॥
10 11 12 13 14
अन्तको धर्मराजश्च यमो दण्डधरो हरिः ।
15 16
दक्षिणाशापतिः सद्भिः श्राद्धदेवश्च कथ्यते ॥ ७२ ॥

a दंमुना, दमना b वीतहोत्रो c आग्नेयी d वडवानलः, वाडवानलः e शमवर्ती ।

Evil spirits or demons 9.

1 2 3 4 5
यातूनि यातुधानाः क्रव्यादा राक्षसाश्च रक्षांसि ।
6 7 a 8 9
नक्तञ्चरनैर्ऋतकौणपास्तथा नैकषेयाः स्युः ॥ ७३ ॥

Name of the god of the waters and the regent of the west 6.

1 2 3 4
वरुणं यादसा नाथं पाशपाणिं प्रचेतसम् ।
5 6
जलाधिदैवतं प्राहुः प्रत्यगाशापतिं बुधाः ॥ ७४ ॥

Air, wind 20.

1 2 3 4 5 6 7
पवनः श्वसनो वायुर्मरुदनिलो मारुतो जगत्प्राणः ।
8 9 10 11 b 12
पृषदश्वः पवमानः प्रभञ्जनः स्पर्शनो वातः ॥ ७५ ॥
13 14 15 16
नभस्वान्मातरिश्वा च समीरश्च समीरणः ।
17 18 c 19 20
सदागतिर्गन्धवहो हरिः प्रोक्तो महाबलः ॥ ७६ ॥

Wind with rain. A whirlwind 2.

d 1 2
कञ्झावातः सवृष्टिः स्याद्वात्या वातस्य मण्डली ।

Fragrance.

1 2 3 4
आमोदः स्यात्परिमलः सौरभ्यं च सुगन्धिता ॥ ७७ ॥

Name of Kuber the treasurer, the god of wealth 17.

1 2 3 4 5
ऐलविलः पौलस्त्यो वैश्रवणः किन्नरेश्वरो धनदः ।
6 7 8 9
श्रीदः श्रीकण्ठसखो मनुष्यधर्मा धनाध्यक्षः ॥ ७८ ॥
10 11 12 13
उत्तराशापतिर्यक्षः कुवेरो नरवाहनः ।
14 15 16 17 e
गुह्यको राजराजश्च धनी पुण्यजनेश्वरः ॥ ७९ ॥

Wealth, riches 15.

1 2 3 4 5 6 f 7 8
द्युम्नं द्रव्यं द्रविणं राः सारं स्वापतेयमर्थः स्वम् ।
g 9 10 11 12 13 14 15
ऋक्थं पृक्थं वित्तं धनं हिरण्यं च वसु विभवः ॥ ८० ॥

Gold or silver. Other than gold or silver.

1 2
अकुप्यं रूप्यहेमाख्यं कुप्यमन्यद्धनं भवेत् ।

Cattle, live stock.

1 2
गोमहिष्यादिकं सर्वं बुधैर्जीवधनं स्मृतम् ॥ ८१ ॥

A deposit, a trust 2. Treasure 2.

1 2 1 2
निक्षेपः स्यादुपनिधिः कथ्यते शेवधिर्निधिः ।

An attendant of Kubera 4.

1 2 3 4
किन्नरः स्यात्किम्पुरुषो मयुरश्वमुखस्तथा ॥ ८२ ॥

a नैरतकोपा, नैऋतकोणपा, नैर्ऋतकोणपा b स्पर्शनो वायुः c गववाहो d झंझावातः झञ्झानिलः, झञ्झामरुत् e पुण्यधनेश्वरः f मर्थं g रिक्तं पृक्यं, ऋक्यं, पित्तं, ऋच्छं पृच्छं ।

Kubera's garden. उद्यानं स्याच्चैत्ररथं [1] विमानं चास्य पुष्पकम् [1] । Kubera's aeroplane.

Kubera's city. अलका [1] नगरी ज्ञेया पुत्रस्तु नलकूवर: [1] ॥ ८३ ॥ Kubera's son.

The architect of the gods 2. विश्वकृद्[1] विश्वकर्मा[2] च त्वष्टा[3] स्याद्देववर्धकि:[4] ।

God's doctors or physicians 4. नासत्याव[1]श्विनौ[2] दस्रौ[3] प्रोक्तौ देवचिकित्सकौ[4] ॥ ८४ ॥

Name of Gautam Buddha 11. शौद्धोदनि[1]र्दशबलो[2] बुद्ध:[3][a] शाक्य[4]स्तथागत: सुगत:[6] ।
मारजि[7]दद्वयवादी[8] समन्तभद्रो[b][9] जिनश्च[10] सिद्धार्थ:[e][11] ॥ ८५ ॥

A Jain saint. जिनेन्द्री[1] वीतरागो[2]ऽर्हन्[3] केवली[4] च त्रिकालवित्[5] ।

Misfortune 2. अलक्ष्मी[1]र्निर्ऋति[2]र्ज्ञेया नियति[1]र्विधि[2]रुच्यते ॥ ८६ ॥ Fate, luck 2.

Different Devayonies 11. यक्ष[1]राक्षस[2]गन्धर्व[3]सिद्ध[4]किन्नर[5]गुह्यका:[6] ।
विद्याधरा[7]प्सरो[8]भूत[9]पिशाचा[10] देवयोनय:[11] ॥ ८७ ॥

A nymph of Indra's heaven 7. घृताची[1] मेनका[2] रम्भा[3] उर्वशी[4] च तिलोत्तमा[5] ।
सुकेशी[6] मञ्जुघोषाद्या:[7] कथ्यन्तेऽप्सरसो बुधै: ॥ ८८ ॥

Contempt.
(1) Prurience.
(2) Coquettishness.
(3) Affectation of indifference.
(4) Imitation
(5) Gracefulness of gait.
(6) Flurry.
(7) Feminine action, emotion.

हेला[1]विलास[2]बिब्बोक[3]लीला[4]ललित[5]विभ्रमा:[6] ।
स्त्रीणां शृङ्गारचेष्टा:[d] स्युर्हावपर्यायवाचका:[7] ॥ ८९ ॥
बाह्यार्थालम्बनो यस्तु विकारो मानसो भवेत् ।
स भाव:[e][1] कथ्यते सद्भिस्तस्योत्कर्षो रस: स्मृत: ॥ ९० ॥

(1) Love (2) Laughter (3) Grief (4) Anger (5) Effort (6) Fear (7) Disgust (8) Wonder (9) Quietness.

रति[1]र्हास[2]श्च शोक[3]श्च क्रोधो[4]त्साहौ[5] भयं[6] तथा[f] ।
जुगुप्सा[7]विस्मय[8]शमा:[9] स्थायिभावा: प्रकीर्तिता: ॥ ९१ ॥

Nine *'rasas'* used in drama

शृङ्गार[1]हास्य[2]करुणा[3] रौद्र[4]वीर[5]भयानका:[6] ।
बीभत्सा[7]द्भुत[8]शान्ता[9]श्च नव नाट्ये रसा: स्मृता: ॥ ९२ ॥

1. Emotion of love, Erotic.
2. The emotion of laughter. Comic.
3. The emotion of pathos or tender grief. Pathetic.
4. The emotion of anger. Furious.
5. The emotion of heroism, heroic.
6. The emotion of fear or terror.
7. Odious, the emotion of disgust.
8. Marvellous, the emotion of wonder or admiration.
9. Pacific.

a बुध: b सुमन्तभद्रो c तुल्यार्था: d शृङ्गारचेष्टा: स्यु०, शृङ्गारचेष्टा च e स्वभाव:, भावक: f समा: ।

Singing, song 2.	गीतं[1] गानमिति[2] प्रोक्तं वाद्य[1]मातोद्य[2]मिष्यते[a] ।	A musical instrument 2.
Dancing 3.	नृत्यं[1] तु ताण्डवं[2] लास्यं[3] त्रितयं नाट्यमुच्यते ॥ ९३ ॥	
Measure, musical time 2.	ताल:[1] काल[b]क्रियामानं[2] लय:[1] साम्यमुदाहृतम्[2] ।	Equal time of music and dancing2.
Gesticulation 2	अङ्गहारो[1]ऽङ्गविक्षेप:[2] सूच्योऽर्थोऽभिनय: स्मृत: ॥ ९४ ॥	
	प्रेक्षार्थं गीतवाद्यं तु सङ्गीतमभिधीयते ।	
	आदावेव तु यन्नाट्यं पूर्वरङ्ग:[1] स उच्यते ॥ ९५ ॥	Prelude to drama.
A flute.	प्रोक्ता घोषवती[1] वीणा[2] विपञ्ची[3] परिवादिनी[4] ।	
	वल्लकी[5] चेति तद्भेदास्तन्त्रीभेदसमुद्भवा: ॥ ९६ ॥	
A stage, a dancing place 2.	रङ्ग:[1] स्यान्नर्तनस्थानं[2] मृदङ्गो[1] मुरज:[2] स्मृत: ।	A small drum 2.
A drum 4.	आनक:[1] पटहो[2] ज्ञेयो डिण्डिम:[3] पणवस्तथा[4] ॥ ९७ ॥	
The bow of a lute, a drum stick 2.	कोणो[1] वादनदण्ड:[2] स्याद्भेरी[1] दुन्दुभिरिष्यते[2] ।	A large kettle—drum.
The queen 2.	नाट्ये राज्ञी[1] स्मृता देवी[2] कुमारो[1] भर्तृदारक:[2][c] ॥ ९८ ॥	The heir-apparent, the prince.
A learned man.	भाव[1] इत्युच्यते विद्वान्[2] भावुको[1] भगिनीपति:[2] ।	Sister's husband 2.
A father 2.	आवुकस्तु[1] पिता[2] ज्ञेय आर्यो[1] मारिष[2] उच्यते ॥ ९९ ॥	A venerable person.
	d × × × × × × × ×	

a मुच्यते b काल: क्रियामानं c भद्रदारुक:, भट्टदारक

d × श्रीरागो वसन्तस्य पञ्चमो भैरवस्तथा ।
मेघरागस्तु विज्ञेयो षष्ठो नटनरायण: ॥ १ ॥
गौडी कोलाहलां धारी द्रविडी मालवकौशिका ।
षष्टीस्याद्देवगान्धारा श्रीरागा च विनिर्मिता ॥ २ ॥
आदोला कौशिकी चैव तथा पटममञ्जरी ।
गुडकुरी चैव देशाख्या रामकरी वसन्तजा ॥ ३ ॥
त्रिगुणा स्तम्भतीर्थी च आभेरी ककुभ़ा तथा ।
वियराडी तथा चेरी षडेता: पञ्चमे मता: ॥ ४ ॥
भैरवी गूर्जरी चैव भाषा वेलाउली तथा ।
कर्णाटी रक्तहंसा च षडेता: भैरवे मता: ॥ ५ ॥
वङ्गुला मथुरा चैव कामोदा चोषसाटिका ।
देवगिरी च देवाला षडेता: मेघरामजा: ॥ ६ ॥
त्रोटकी मोटकी चैव दुंविनिट्ट विराटिका ।
मल्लारी सैधवी चैव एता नटनरायणे ॥ ७ ॥

5 Region, quarter.

1 2 3 4 5
आशा: ककुभ: काष्ठा हरितश्च दिश: समाख्याता: ।

1 The regent of the east, Indra. 2 The regent of south-east, fire 3 The regent of the south, Pluto.

1 2 3 4 5 6 7 8
इन्द्रानलयमनैर्ऋतवरुणमरुद्धनदरुद्रदिक्पाला: ॥१००॥

4 The regent of south-west, Neptune. 5 The regent of the west, Varuna. 6 The regent of the north west- Marut. 7 The regent the of the north- Kubera.

8 The regent of the north-east, Shiva.

East, belonging to Indra.

1 2 3 1 2 3
ऐन्द्री पूर्वा प्राची याम्या दिग्दक्षिणा तथाऽवाची ।

South, belonging to Pluto (Yama).

West, belonging to Varuna.

1 2 1 2 3
स्याद्वारुणी प्रतीची कौवेरी चोत्तरोदीची ॥१०१॥

North, belonging to Kubera.

Intermediate quarters.

1 2 3 a
अन्तराला दिशश्चान्या विदिश: प्रदिश: स्मृता: ।

Above 3.

1 2 3 1 2 3
उपरिष्टादुपर्यूर्ध्वं तथाधस्तादवागध: ॥१०२॥

Below, down, down-wards 3.

Eastern.

1 2 1 2
प्राचीनं प्राक् स्मृतं प्राङ्गैरुदीचीनमुदक् तथा ।

Northern 2.

Western.

1 2 1 2
प्रत्यक् चैव प्रतीचीनमपाचीनमपागिति ॥१०३॥

Southetn.

1 2 3 b 4 5
ऐरावत: पुण्डरीक: कुमुदाञ्जनवामना: ।

1 Indra's elephant placed at the east quarter. 2 Agni's elephant placed at the south-east quarter. 3 Pluto's elephant placed at the south quarter. 4 Nairit's elephant placed at the south-west quarter. 5 Neptune's elephant placed at the west quarter.

6 7 8
पुष्पदन्त: सार्वभौम: सुप्रतीकश्च दिग्गजा: ॥१०४॥

6 Wind's elephant placed at the north-west quarter. 7 Kubera's elephant placed at the north quarter. 8 Shiva's elephant placed at the north-east quarter.

Time 3.

1 2 3 1
दिष्ट: कालस्तथानेहास्तद्भेदा: स्यु: कलादय: ।

A measure of time.

Day and night 1.

1 2
अहोरात्रं च विद्वद्भि: कथ्यते षष्टिनाडिकम् ॥१०५॥

Day 7.

1 2 3 4 5 6 7
दिवसो दिवा दिनं द्यु: प्रोक्तमहर्वासरस्तथा घस्र: ।

A period of 3 hours 1.

1 2 1 2 c
प्रहरो याम: सन्ध्ये रजनीदिनयो: प्रवेशनिष्कासौ ॥१०६॥

Twilight 2.

1 2 3
तमी तमिस्रा कथिता तमस्विनी,

4 5 6
विभावरी नक्तमुखा च शर्वरी ।

a प्रदिशस्तया, b कुमुदोञ्जनवामनौ c निष्काशौ ।

7 8 9 10
क्षपा त्रियामा क्षणदा निशीथिनी ,

11 12 13 14
निशा च दोषा रजनी च यामिनी ॥१०७॥

15 16 17 18
वसतिर्वासतेयी च श्यामा रात्रिश्च कथ्यते । — Night 18.

1 2 3
any nights 3. — गणरात्रो निशा बह्वचश्चिररात्रस्ततः परम् ॥१०८॥

1 2 1 2
In the evening 2. — सायं दिवावसानं स्यात्प्रदोषो रजनीमुखम् । — The first hour after sunset 2.

1 2 3
निशीथो मध्यमा रात्रिः प्रोक्ता सा च महानिशा ॥१०९॥ — Mid-night 3.

1 2 3 4 5
Darkness 10. — अवतमसमन्धतमसं संतमसं ध्वान्तमन्धकारं च ।

6 7 8 a 9 10
तिमिरं तमस्तमिस्रां तमिस्रमिच्छन्ति भूछायाम् ॥११०॥

1 2 3 4 5 6
Dawn, morning, day-break 10. — कल्यमुषः प्रत्यूषं प्रगे प्रभातं भवेद्विभातं च ।

7 b 8 9 10
दिवसमुखं गोसर्गः प्रातर्व्युष्टं च निर्दिष्टम् ॥१११॥

c 1 1 2
First moonlit night. — शशिनि सिनीवाली स्याद्दृष्टे नष्टे कुहूरमावास्या । — The new-moon 2.

1 1
अनुमतिरूने राका सम्पूर्णे पूर्णमासी च ॥११२॥ — Full-moon day.

1 2 1
A Month. — त्रिंशदहोरात्रः स्यान्मासस्ताभ्यामृतुर्वसन्ताद्याः । — Season, 1 spring,

4 autumnal, 5 winter, 6 cold season.
2 3 4 d 5 6
2 summer, 3 rainy, — ग्रीष्मः प्रावृट् शरदा हेमन्तः शिशिर इति ते षट् ॥११३॥

e
चैत्रादिमासा मधुमाधवौ द्वौ ,

ततः परं शुक्रशुची क्रमेण ।

Names of months and seasons beginning with spring. — नभोनभस्यौ कथिताविषोर्जौ ,

सहःसहस्यौ च तपस्तपस्यौ ॥११४॥

मासेन मनुष्याणां पित्र्यमहोरात्रमेकमिच्छन्ति । — Measurement of time in human & divine.

f
अब्देन तु देवानां ब्राह्मं देवयुगसहस्राभ्याम् ॥११५॥

a तिमिस्रा, तमिस्रा b गोत्सर्गः c शशिर्नी d शरदे शरदो e चैत्रादिमासौ f ब्राह्मयं ।

Year 6. — हायनाब्दशरद्वर्षसंवत्सरसमाः (1 2 3 4 5a 6) समाः ।

Summer 2. — निदाघः कथ्यते ग्रीष्मो (1 2) वर्षाः प्रावृट् तपात्ययः (1 2 3) ॥११६॥ — Rainy season.

The periodical destruction of the universe 9. — संवर्तः परिवर्तः क्षयो युगान्तो जगद्विनाशश्च । कल्पान्तः समसुप्तिः संहारः स्यान्महाप्रलयः ॥११७॥ (1 2 3 4 5 6 7 8 9)

The immediate result of actions 2. — सान्दृष्टिकं फलं सद्य (b 1 2) उदर्कः फलमुत्तरम् । (1 2) — The future result of action 2.

Present time 2. — तत्कालं तु तदात्वं (1 2) स्यादुत्तरः काल आयतिः (1 2) ॥११८॥ — future time 2.

दितिरदितिर्दनुकद्रूनिकषाविनताश्च (c) मातरः प्रोक्ताः ।
दैत्यसुरदानवोरगपिशिताशनपक्षिराजानाम् ॥११९॥

दिति Mother of दैत्य (Demons)
अदिति " " सुर (Gods)
दनु " " दानव (Devils)
कद्रू Mother of उरग (Snakes, Serpents)
निकषा " " पिशाच (Ghost, eaters of raw flesh)
विनता " " पक्षिराज (Garuda, the mount of Vishnu)

The sun and the moon. — चन्द्रार्कावेकवाक्येन (1) पुष्पदन्तौ (d 2) प्रकीर्तितौ ।

Man and his wife 3. — जायापती च विद्वद्भिर्जम्पती दम्पती तथा (1 2 3) ॥१२०॥ — Husband and wife.

Heaven and earth 4. — द्यावाभूमी च रोदस्यौ रोदसी रोदसीति च । (e 1 2 3 4)

Food or clothing 2. — कशिपुर्भोजनाच्छादावौशीरं (1 2) शयनासने (1 2) ॥१२१॥ — Couch or chair 2.

Auspicious 11. — श्वः श्रेयसं स्यात्कल्याणं श्वोवसीयं शिवं शुभम् । भविकं भावुकं श्रेयो भव्यं भद्रं च मङ्गलम् ॥१२२॥ (f 1 2 g 3 4 5 6 h 7 8 9 10 11)

Joy, delight, gay, happiness 13. — प्रमोदप्रमदौ हर्षः प्रीतिरुत्कर्ष उद्धवः । सम्मदो मुत्तथानन्दः शर्म जोषं च शं सुखम् ॥१२३॥ (i 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13)

Salvation, eternal emancipation, final beatitude 11. — कैवल्यं निर्वाणं निःश्रेयसममृतमक्षरं ब्रह्म । अपुनर्भवोऽपवर्गो मुक्तिर्मोक्षो महानन्दः ॥१२४॥ (1 2 3 4 5 6 7 8 9 j 10 11)

a संवत्सरसमयाः b सांसृष्टिकं, सांसृष्टकं c निषषाश्चनताश्च d पुष्पवन्तौ e द्यावाभूम्यौ f स्वश्रेयंसं, श्वोवशीयं, ष्वाःश्रेय, ष्वोवशीयं, ष्वःश्रेयं, g श्वोवशीयं h भावुकं i प्रमोदः प्रमदो j मुक्तिर्मोक्षा ।

Eternal, everlasting 5.
सनातनं[1] ध्रुवं[2] नित्यं[3] शाश्वतं[4] स्यादनश्वरम्[a][5] ।

Righteousness, virtue 5.
धर्मः[1] पुण्यं[2] वृषः[3] श्रेयः[4] सुकृतं[5] च समं स्मृतम् ॥१२५॥

इष्टानिष्टफलं प्राज्ञैः स्मृतं दैवमयानयम्[b][1] ।
Good luck, bad luck.

Fate, luck, destiny 4
भागधेयं[1] तथा भाग्यं[2] विपाको[3] भवितव्यता[4] ॥१२६॥

A portent, foreboding evil omen, even omen 7.
उपलिङ्ग[1]मरिष्टं[2] स्यादुपसर्ग[3] उपद्रव[4]स्तथोत्पातः[5] ।
ईति[6]रजन्यं[7] च बुधैर्डमरो[1] डिम्बश्च[2][c] विप्लवः[3] कथितः ॥१२७॥
A scuffle or turmoil 3.

Worship 3.
अर्चा[1] पूजा[2] सपर्या[3] स्यादुपहारो[1] बलिः[2] स्मृतः ।
Present, gift 2.

Deep or profound meditation 3.
प्रणिधानं[1] समाधानं[2] समाधिश्च[3] समास्त्रयः ॥१२८॥

Diligent service.
वरिवस्या[1] परिचर्या[2] शुश्रूषो[3]पासना[d][4] परीष्टिः[5] स्यात् ।
सेवा[6] भक्ति[7]रुपास्तिः[8] प्रसादना[9][e]राधनो[10]पचाराश्च[11] ॥१२९॥

Reflection image 11.
प्रतिबिम्बं[1] प्रतिरूपं[2] प्रतिमानं[3] प्रतिकृतिं[4][f] प्रतिच्छन्दम्[5] ।
प्रतिकायं[6] च प्रतिनिधिमाहुः[7] प्रतियातनां[8][g] प्रतिच्छायाम्[9] ॥१३०॥
अर्चा[10] तु प्रतिमा[11] प्रोक्ता हरिणी[h][1] स्याद्धिरण्मयी ।
A gold image 1.

Brass or iron image.
अन्यलोहमयी प्राज्ञैः सूर्मी[1] स्थूणा[2] च कथ्यते ॥१३१॥

शुचि[1]र्मेध्यं[2] पवित्रं[3] च पुण्यं[4] पावनमुच्यते[5] ।
विमलं[6] विशदं[7] वीध्र[8]मुज्ज्वलं[9] स्यादनाविलम्[10] ॥१३२॥
Holy, pure 10.

The universe 4.
भुवनं[1] विष्टपं[2] लोको[3] जगदेकार्थवाचकाः[4] ।

Ambrosia, nectar 4.
अमृतं[1] त्रिदशाहारः[2] सुधा[3] पीयूषमुच्यते[4][i] ॥१३३॥

Life, creature 5.
असवो[1] जीवितं[2] प्राणा[3] जीवो[4] जीवा[5] च कथ्यते ।

The soul 3.
क्षेत्रज्ञः[1] पुरुषो[2] ह्यात्मा[3] संसारी[1] चेतनो[2] मतः ॥१३४॥
A sentient being 2.

a स्यादनुस्वरम्, स्यादनस्वरम् b देवभयानयम्, दैवभयायनम्, c डम्बश्च, डिम्भश्च d पासनं e प्रसाधना f प्रतिकृतं g प्रतियातना, प्रतिछायम् h हिरण्यी स्याद्धिरणायां i पीयूष उच्यते ।

The five trees of the heaven.
1 2 3 4 5
मन्दारपारिजातकहरिचन्दनकल्पवृक्षसन्तानाः ।

The Meru mountain 2.
1 2
पञ्चैते सुरतरवो मेरुः सुरपर्वतो ज्ञेयः ॥१३५॥

The mountain Sumeru or Meru 7.
1 2 3 4
शक्रक्रीडाचलो मेरुः सुमेरुर्हेमपर्वतः ।
5 6 a 7
रत्नसानुरिति ख्यातो हेमाद्रिस्त्रिदशालयः ॥१३६॥

The sky 15.
1 2 3 4
नभो मरुद्वर्त्म वियद्विहाय—
5 6 7
स्तारापथः पुष्करमन्तरिक्षम् ।
8 9 10 11 12
व्योमाम्बरं विष्णुपदं च खं द्यौ—
13 14 15
र्विहायसा स्याद्गगनं तथा द्युः ॥१३७॥

Sound, noise 8.
1 2 3 4 5 6 7 8
ह्रादो नादः शब्दः स्वानो ध्वानः स्वरो रवो घोषः ।

Speaking, speech, saying 4.
1 2 3 4 b
अभिधानव्याहारोदीरणकथनादयस्तु तद्भेदाः ॥१३८॥

An uproar 4.
1 2 3 4
कोलाहलः कलकलस्तुमुलो व्याकुलो रवः ।

Unconnected speech 2.
1 2 c
उच्चावचमिति प्रोक्तमनिबद्धं तु यद्वचः ॥१३९॥

Higher 2. — Deep 2.
1 d 2 1 2
उच्चैस्तरो ध्वनिस्तारो मन्द्रो गम्भीर उच्यते ।

Shrill inarticulate. — Harsh 2.
1 2 1 2
कलश्च मधुरोऽव्यक्तो विक्रुष्टो निष्ठुरो मतः ॥१४०॥

Pleasing. — Sweet and true.
1 2 1
सान्त्वं स्यान्मधुरं वाक्यं प्रियं सत्यं च सूनृतम् ।

Indistinct 2. — Senseless 2.
1 2 1 2
ख्यातं म्लिष्टमविस्पष्टमबद्धं वियुतार्थकम् ॥१४१॥

Spoken rapidly 2. — Uttered with omission 2.
1 2 1 2
तूर्णोदितं निरस्तं स्याद् ग्रस्तं लुप्तपदं स्मृतम् ।

Sputtered 2. — Vulgar 2.
1 2 1 2 e
अम्बूकृतं सनिष्ठीवं ग्राम्यमश्लीलमुच्यते ॥१४२॥

Significative alteration of voice 1.
1
भिन्नकण्ठो ध्वनिर्धीरैः काकुरित्यभिधीयते ।

Consisting of compound words. — A period containing many compound words.
1 2
समासप्रायमाख्यातं पदजातं च तण्डकम् ॥१४३॥

a भीमाद्रि, धीमद्भि b दयश्च c भिवद्धं च d उच्चैः स्वरो e श्लीलमिष्यते ।

True, correct 6.	ऋतं[1] सत्यं[2] समीचीनं[3] सम्यक्[4] तथ्यं[5] यथातथम्[6] ।	
Lie, falsehood 5.	अलीकं[1] वितथं[2] मिथ्या[3] मृषा[4] स्यादनृतं[5] तथा ॥१४४॥	
Praise 10.	अर्थवादः[1] प्रशंसा[2] च स्तोत्र[3]मीडा[4] स्तुति[5]र्नुतिः[6] ।	
	विकत्थनं[a][7] स्तवः[8] श्लाघा[9] वर्णना[10] च निगद्यते ॥१४५॥	
Pleasing discourse2.	चटु[1] चाटु[2] प्रियं वाक्यं हृद्यार्थं[1] हृदयङ्गमम्[2] ।	Congenial 2.
News, tidings 4.	वार्त्तो[1]दन्तः[2] प्रवृत्तिश्च[3] वृत्तान्तश्च[4] समाः स्मृताः ॥१४६॥	
Legend 2.	अनादिवार्त्ता[1] ह्यैतिहयं[2][b] किंवदन्ती[1] जनश्रुतिः[2] ।	Rumour 4.
	कौलीनं[3] जनवादः[4] स्याद्विगानं[1] वचनीयता[2] ॥१४७॥	Ill report, defamation 2.
Censure, blame, obloquy, taunt, reproach 8.	अपवाद[1] उपक्रोशो[2] निर्वादा[3]वर्णवाद[4]परिवादाः[5] ।	
	एकार्थाः कथ्यन्ते गर्हा[6] निन्दा[7] जुगुप्सा[8] च ॥१४८॥	
Curse 5.	शाप[1] आक्रोश[2][c] आक्षेपः[3] क्षारणा[4] स्याद्विरूक्षणम्[5] ।	
Exaggerating with latent irony 3.	स्मृताः सोल्लुण्ठ[1]सोत्प्रास[d] सोपहासाः[2][3] समास्त्रयः ॥१४९॥	
Tautology and repetition 2.	अनुलापो[1] मुहुर्भाषा[2] प्रलापो[1]ऽनर्थकं[2] वचः ।	Senseless talk 2.
An outcry.	काक्वा वर्णनमुल्लापः संलापो[1] भाषणं[2] मिथः ॥१५०॥	Conversation 2.
The rustling of dry leaves.	मर्मरः[1] शुष्कपर्णानां विस्फारो[1] धनुषां ध्वनिः ।	The twang of a bow-string
The roaring of elephant.	बृंहितं[1] वारणानां च हेषा[1] ह्लेषा[2] च वाजिनाम् ॥१५१॥	The neighing of horses 2.
Name 6.	आख्या[1] संज्ञा[2]भिधा[3]ह्वानं[4] नामधेयं[5] च नाम[6] च ।	
A tale, a legend 3.	आख्यायिका[1] कथा[2]ख्यानं[3] प्रह्वलीका[e][1] प्रहेलिका[2] ॥१५२॥	A riddle 2.
Repeating twice or thrice.	विदुराम्रेडितं प्राज्ञा द्विस्त्रिर्व्याहरणं[f] च यत् ।	
Praise fame 5.	कीर्तिः[1] श्लोको[2] यशो[3]ऽभिख्या[4]समाख्यास्[5]तुल्यलक्षणाः ॥१५३॥	

a कविकत्थनं च b ह्यौतिह्यं, ह्यैतह्यं, ढचौतिर्यं c आक्षेप आक्षेक्रोशः, शाप आऽकाशः, आपत्रश्चाक्रोश आक्षेपः d सोत्प्राशोपहासाः, सोत्प्रासः सोपहासाः e प्रबल्हिका f द्विस्त्रिव्या ।

A question 2. Reproach 2.

1 2 1 2
प्रश्नः स्यादनुयोगः पर्यनुयोगो भवेदुपालम्भः ।

Calling 3.

1 a 2 3
आकारणमाह्वानं कथयन्त्यभिमन्त्रणं प्राज्ञाः ॥१५४॥

Venerable.

1 2
तत्रभवान् भगवानिति शब्दो वृद्धैः प्रयुज्यते पूज्ये ।

A title added to names by way of respect.

1 2
पादा इति नामान्ते देवो भट्टारको वापि ॥१५५॥

इति श्रीभट्टहलायुधकृतायामभिधानरत्नमालायां
स्वर्गकाण्डं प्रथमं समाप्तम् ॥ १ ॥

a आकरण।

द्वितीयं भूमिकाण्डम्

	1 2 3 4 5 6 7 8 भूर्भूमिर्वसुधावनिर्वसुमती धात्री धरित्री धरा ,	
	9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 गौर्गोत्रा जगती रसा क्षितिरिला क्षोणी क्षमा क्ष्माचला ।	
The earth 37.	19 20 21 22 a 23 24 25 कुः पृथ्वी पृथिवी स्थिरा च धरणी विश्वम्भरा मेदिनी ,	
	26 27 28 29 30 31 32 ज्यानन्ता विपुला समुद्रवसना सर्वंसहोर्वी मही ॥१५६॥	
	33 34 35 36 काश्यपी भूतधात्री च रत्नगर्भा वसुन्धरा ।	
	37 धराधारा च विज्ञेया तद्विशेषान्निबोधत ॥१५७॥	
Fertile soil 2.	1 2 1 b 2 उर्वरा सर्वसस्या भूर्भवेदिरिणमूषरम् ।	A spot with saline soil 2.
	c खिलमप्रहतं स्थानं मरुर्धन्वा स्थलं स्थली ॥१५८॥	
Clay 2.	1 2 1 2 मृन्मृत्तिका प्रशस्तासौ मृत्सा मृत्स्नेति कथ्यते ।	Excellent soil 2.
Green with young grass.	1 d 1 2 शाद्वलं हरितं प्रोक्तं नड्वलं नलसंयुतम् ॥१५९॥	Abounding in reeds.
A country with black soil.	1 1 कृष्णभूमः प्रदेशोऽसौ यत्र स्यात्कृष्णमृत्तिका ।	Black soil.
A country with yellowish soil.	1 1 पाण्डुभूमस्तथा प्रोक्त उदग्भूमश्च पण्डितैः ॥१६०॥	Fertile soil.
A country which lives on river water.	नद्यम्बुजीवनो देशो नदीमातृक उच्यते ।	Basin.
	वृष्टिनिष्पाद्यसस्यस्तु विज्ञेयो देवमातृकः ॥१६१॥	Crop which depends on rains.

a धरिणी b दिरणम् c खिलमप्रहितम् d शाड्वलम् ।

A field which grows 'Moong' a pulse.

मुद्गादीनां क्षेत्रं मौद्गीनं कौद्रवीणमित्यादि ।
व्रैहेयं शालेयं भवति पुनर्व्रीहिशाल्योर्यत् ॥१६२॥

A field which grows "Kodon" a variety of rice.
A field of rice or beans, fit for being sown with beans.

A field of sesame.

तिल्यं तैलीनं स्यान्माष्यं माषीणमुम्यमौमीनम् ।

A field of a variety of beans called 'Mash' 'urada'.

A field of hemp.

भङ्ग्यं भाङ्गीनं वा यव्यं षष्टिक्यमेषां च ॥१६३॥

A field of barley.

A field of vegetables.

शाकशाकटमाख्यातमथवा शाकशाकिनम् ।
शाकस्य क्षेत्रमन्येषामेवं क्षेत्रेषु संहतिः ॥१६४॥

Mountain 14.

अचलशिलोच्चयशैलक्षितिधरगिरिगोत्रपर्वताहार्याः ।
नगशिखरिसानुमन्तो धराद्रिकुध्राश्च तुल्यार्थाः ॥१६५॥

A side or ridge of a mountain.

नितम्बः कटको ज्ञेयः सानु प्रस्थं तटं भृगुः ।

Tableland on the top of a mountain, also on level expanse level plain 2.
A slope, declivity, precipice 2.

The top of a mountain 3.

शृङ्गं च शिखरं कूटं निर्झरः प्रस्रवोऽम्भसाम् ॥१६६॥

A waterfall 1.

A cave 5.

गुहा पाषाणसन्धिः स्यात्कन्दरः कन्दरा दरी ।

A bush 2.

निकुञ्जं गह्वरं प्रोक्तं पादाः प्रत्यन्तपर्वताः ॥१६७॥

A stone, a rock 7.

शिलोपलाश्मपाषाणग्रावाणः प्रस्तरो दृषत् ।

A rock fallen from a mountain 1.

गलिताः स्थूलपाषाणा गण्डशैला इति स्मृताः ॥१६८॥

Loadstone, magnet 3.

अयस्कान्तविशेषाः स्युश्चुम्बकभ्रामकादयः ।

A mine 3.

आकरः स्यात्खनिर्गञ्जा रुमा च लवणाकरः ॥१६९॥

A salt-pit 2.

उच्यते गैरिकं धातुस्ताम्रं शुल्वमुदुम्बरम् ।

Copper 3.

Brass 2.

आरकूटः स्मृतो रीतिः कांस्यं सौराष्ट्रकं तथा ॥१७०॥

Bell-metal 2.

Iron 8.

गिरिसारमश्मसारं लोहं कालायसं तथा शस्त्रम् ।
तीक्ष्णमयः पारशवं कवयः कथयन्त्यभिन्नार्थम् ॥१७१॥

Lead 2.

सीसकं सीसपत्रं स्याद्वङ्गं च मधुकं त्रपु ।

Tin 3.

Silver 4.

रजतं कलधौतं च रूप्यं तारं च कथ्यते ॥१७२॥

a सानुः b प्रसवो, प्रश्रवो c पर्यन्तपर्वताः d मुदम्बरम् ।

Gold 25.

हेम[1] स्वर्णं[2] जातरूपं[3] सुवर्णं[4],
भर्मं[a 5] रुक्मं[6] हाटकं[7] शातकुम्भम्[8] ।
गाङ्गेयं[9] स्याद्गैरिकं[10] भूरि[11] चन्द्रं[12],
राः[13] कल्याणं[14] निष्कमष्टापदं[15] च ॥१७३॥
जाम्बूनदं[17] हिरण्यं[18] कनकमहारजतकाञ्चनानि[19 20 21] स्युः ।
कार्तस्वरचामीकरकर्बुरतपनीयनामानि[22 23 24 25] ॥१७४॥

Emerald 3.

अश्मगर्भं[1] मरकतं[2] हरिन्मणिरिति[3] स्मृतः ।

Ruby 2. The lapis lazuli 2.

शोणाश्मा[1] पद्मरागः[2] स्याद्वैदूर्यं[1 b] बालवायजम्[2] ॥१७५॥

Crystal 4.

स्फटिकः[1] सूर्यकान्तः[2] स्यादर्काश्मा[3] दहनोपलः[4] ।

A gem, a jewel 3. Any metal 2.

रत्नं[1] वसु[2] मणिः[3] सर्वं[c] सर्वं लोहं[1] च तैजसम्[2] ॥१७६॥

A tree 19.

वृक्षोऽङ्घ्रिपः[1 2 d] क्षितिरुहः[3] शिखरी[4] च शाखी[5],
शालो[6] वनस्पतिरगो[7 8] विटपी[9] कुठश्च[10 e] ।
अद्रिः[11] कुजस्तरुरनोकह[12 13 14] इत्यभिन्नाः,
शब्दा द्रुविष्टरनगद्रुमपादपाश्च[f 15 16 17 18 19] ॥१७७॥

A tree with fruit 1.

अवकेशी[1] स विज्ञेयः फलैर्बन्ध्यस्तु यो भवेत् ।

A shrub. Bearing fruit 3.

क्षुपो[1] ह्रस्वशिफाशाखी[g] फलवान्[1] फलिनः[2] फली[3 h] ॥१७८॥

A tree bearing fruit from blossoms.

वानस्पत्याः[1] स्मृता वृक्षा ये पुष्प्यन्ति[i] फलन्ति च ।

A tree that bears fruit without any apparent blossoms.

फलन्ति ये विना पुष्पं तान्वदन्ति वनस्पतीन्[1] ॥१७९॥

An annual plant or herb which dies after becoming ripe

फलपाकावसानास्तु बुधैरोषधयः स्मृताः ।

A creeper 5.

लता[1] प्रतानिनी[2] वल्ली[3] प्रततिर्व्रततिस्तथा[4 5] ॥१८०॥

a भस्म, हर्म्यं b स्याद्वैडूर्यं c सर्वलोहं d घ्रिपः
e कुटश्च f रनोकुह, द्रुविष्टिरं g ह्रस्वशिखः शाखी, ह्रस्वशिख-
शाखी, ह्रस्वशाखःशिखी h स्मृतः i पुष्पन्ति ।

The part below 2.	[1]अवाग्भागो भवेद् [2]बुध्नः [1]प्राग्रं तु [2]शिखिरं [3]शिरः ।	The highest point 3.
The spreading branches and foliage of a tree 2.	[1]विस्तारो [2]विटपः प्रोक्त [1]आरोहस्तु [2]समुच्छ्रयः ॥१८१॥	The heignt of a tree 2.
The trunk of a tree from the root to the branches 2.	[1]स्कन्धादधः [2]प्रकाण्डः [1]स्यात्प्रघाणः [2]स्कन्धं उच्यते ।	The upper part of the stem of a tree 2.
The upper main branch of a tree 2.	[a 1]स्कन्धशाखा तु [2]शाला [1]स्यान्निष्कुटः [2]कोटरः स्मृतः ॥१८२॥	The hollow of a tree 2.
Bark 3.	[1]त्वग्[2]वल्कं [3]वल्कलं प्रोक्तं [1]मज्जा [2]सार उंदाहृतः ।	Marrow, pith 2.
The bulbous root 2.	[1]करहाटं [2]भवेत्कन्दः [1]पादो [2]मूलं [3]जटा [4]शिफा ॥१८३॥	The root of a tree 4.
A trench for water dug at the root of a tree 4.	[1]आवाल [2]आलवालः [3]स्यादावापः [4]स्थानकं तथा ।	
	लतोद्गमोब्वरोहस्तु [1]प्रवालः [2]पल्लवाङ्कुरः ॥१८४॥	
A shoot, a sprout, a germ 4.	[3]पल्लवः [4]स्यात्किसलयं [1]वल्लरी [2]मञ्जरी तथा ।	A branching footstalk 2.
A leaf 7.	[b 1]वर्हं [2]पर्णं [3]दलं [4]पत्त्रं [5]पलाशं [6]छदनं [7]छदः ।	
A sprout 1. A shoot 2.	[1]अङ्कूरश्[2]चाङ्कुरः पोक्तो [1]वृन्तं [2]प्रसवबन्धनम् ॥१८५॥	The stalk of flowers or fruit.
Flower 5.	[1]पुष्पं [c 2]प्रसवः [3]कुसुमं [4]प्रसूनकं [5]सुमनसः समाख्याताः ।	
An opening bud 5.	[1]कोरक[2]जालक[3]कलिका[4]कुड्मल[5]मुकुलानि तुल्यानि ॥१८६॥	
Budded, blown 8.	[1]उन्मीलितम्[2]उन्मिषितं [3]स्मितम्[4]उन्निद्रं [5]विजृम्भितं [6]हसितम् ।	
	[d 7]उद्बुद्धं [8]व्याकोशं पुष्पेषु [e]विकाशवाचकाः शब्दाः ॥१८७॥	
The pollen of flowers 2.	[1]पौष्पं रजः [2]परागः [1]स्यान्मकरन्दो [2]मधुः स्मृतः ।	The nectar of flowers 2.
A cluster of flowers 4.	[1]स्तवको [2]गुच्छको [3 f]गुच्छो [4]गुलुञ्छः परिकीर्तितः ॥१८८॥	
A new fruit.	[g 1]शलाटुः कोमलं प्रोक्त [1]वानं [2]शुष्कफलं भवेत् ।	A dry fruit 2.
A pod 3.	[1]बीजकोशी [2]शमी [3 h]शिम्बा [1]ग्रन्थिः [2]पर्व [3]परुस्तथा ॥१८९॥	A joint or knot of a tree 3.

a स्कन्धशाखास्तु, स्कन्धशाखासु b वर्हं पत्रं दलं पर्णं c प्रसवं
d उद्बद्धं e विकाशं f गुञ्छो गुलुञ्छः, गुंछोगुलुंछः, गुत्सोगुलुंछ, ग्लुछोग्लुंछः,
गुंछोग्लुंछः g शिलाटुः, शलाटुः, शलादुः h शंबा, शंवा, सिंबा पर्व परः स्मृतः ।

A shrub, a bush 3.	उलप[1]स्तम्ब[2]गुल्माश्च[3] वीरुधो[1] विटपाः[2] स्मृताः ।	A far spreading creeper 2.
A young grass.	शष्पं[1] बालतृणं[2] प्रोक्तं सर्वं च तृणम्[1]अर्जुनम्[2] ॥१९०॥	A grass 4.
	घासस्तु[3] यवसः[4][a] प्रोक्तो बर्हि[b][1]र्दर्भः[2] कुथः[3] कुशः[4] ।	Kush grass.
A sort of grass 2.	उलपो[1] वल्वजः[2][c] प्रोक्त इषीका[d][1] काश[2] उच्यते ।	A kind of reed 2.
A sort of grass 2.	हरिताली[1] भवेद्दूर्वा[2] शरो[1] मुञ्ज[2] इति स्मृतः ॥१९१॥	A sort of grass.
Plantain, banana 3.	रम्भा[1] कदली[2] मोचा[3] तृणराजः[1] कथ्यते तलस्[2]तालः[3] ।	The palmyra tree 3.
A kind of tree 2.	कङ्केलि[1]रशोकः[2] स्यादाम्र[1]श्चूतश्च[2] सहकारः[3] ॥१९२॥	The mango tree 3.
The vine 4.	मृद्वीका[1] गोस्तनी[2] द्राक्षा[3] हारहूरा[4] च कथ्यते ।	
A medicinal plant 3.	प्रियङ्गुः[1] फलिनी[2][e] श्यामा[3] कुटजो[1] गिरिमल्लिका[2] ॥१९३॥	A kind of tree 2.
A shrub oleander 2.	करवीरो[1] हयमारो[2] मालूरः[1] श्रीफलो[2] भवेद्बिल्वः[3] ।	A sort of tree 3.
A lime tree 2.	करुणो[f][1] जम्बीरः[2] स्याद्बदरी[1] कुवली[g][2] च कर्कन्धुः[3] ॥१९४॥	The jujube tree, an edible berry 3.
A sort of tree 2.	अर्जुनं[1] ककुभं[2] प्राहुः सालं[1][h] सर्जं[2] च सूरयः ।	A kind of tree 2.
A tree 2.	झाबुकः[1] पिचुलः[2] प्रोक्त इज्जलो[i][1] निचुलः[j][2] स्मृतः ॥१९५॥	A plant 2.
A neem tree 2.	अरिष्टः[1] पिचुमन्दः[2] स्यान्न्यग्रोधो[1] वट[2] उच्यते ।	Banyan tree 2.
The holy fig tree 4.	श्रीवृक्षः[1] पिप्पलो[2]ऽश्वत्थो[3] बुधैर्बोधिश्च[4] कथ्यते ॥१९६॥	
A kind of tree 4.	ब्रह्मवृक्षः[1] पलाशः[2] स्यात्किंशुकश्च[3] त्रिपत्रकः[4] ।	
A plant 2.	महावृक्षः[1] स्नुहिः[2] प्रोक्तः शेलुः[1][k] श्लेष्मातकः[2] स्मृतः ॥१९७॥	A sort of tree 2.
A kind of tree 2.	नक्तमालः[1] करञ्जः[2] स्याद्वृषा[1] वासा[2]टरूषकः[3] ।	A kind of tree 3.
A sort of tree 2.	आरग्वधः[1] कृतमालः[2] स्वर्णपुष्पी[3] च कथ्यते ॥१९८॥	

a यवसं प्रोक्तं b वर्हिर्दर्भकुयः स्मृतः, वर्हिर्दर्भकथः स्मृतः, कुथः कुशः c विल्वजः, बिल्वजः d ईषिका काय, इषीका कास e पलिनी f करणो g कुवला h शालं i इज्जुलः j इचुलः, प्रोक्तः गञ्जलो, प्रोक्तवंजलो k शैलुः शलुः ।

A sort of tree 2. — वृक्षोत्पलः[1] कर्णिकारः[2] पीतसालो[1 a]ऽसनः[2] स्मृतः । — A sort of tree 3.

A plant 2. — दण्डोत्पलः[1] सहदेवा[2 b] सल्लकी[1] स्याद् गजप्रिया[2] ॥१९९॥ — A plant.

A shrub 2. — निर्गुण्डी[1] सिन्दुवारः[2 c] स्यान्मन्दारः[1] पारिभद्रकः[2] । — A tree 2.

The betel plant. — ताम्बूली[1] नागवल्ली[2] स्याद् गूवाकः[1] पूग[2] उच्यते ॥२००॥ — The betelnut tree 2.

The ratan 5. — वानीरो[1] वञ्जुलः[2] शीतो[d 3] विदुलो[4] वेतसः[5] स्मृतः ।

A plant 4. — गोक्षुरः[1] स्थलशृङ्गाटः[e 2] श्वदंष्ट्रा[3] स्यात्त्रिकण्टकः[4] ॥२०१॥

The cotton plant 5. — पिचव्यो[1] बादरः[2] प्रोक्तः कर्पास[3]स्तूलकं[4] पिचुः[5] ।

A creeper 2. — कोशातकी[f 1] पटोली[2] स्याद् गिरिकर्ण्य[1]पराजिता[2] ॥२०२॥ — A plant 3.

A plant 2. — कथ्यते कृष्णला[1] गुञ्जा[2] तापिच्छः[1] काकतुण्डिका[2] । — A tree 2.

A tree 2. — किम्पाकः[1] स्यान्महाकाल[2] ओष्ठी[1] विम्बी[2] च तुण्डिका[3] ॥२०३॥ — A plant 3.

A bamboo tree 5. — त्वचिसारश्च[1] यो वंशो[2] वेणु[3]त्वक्सार[4]मस्कराः[5] ।

स्वनन्ति येऽनिलोद्धूता वेणवस्ते तु कीचकाः[1] ॥२०४॥ — A hallow bamboo.

A species of barleria with blue blossoms 1. — नीला झिण्टी भवेद्बाणः[1] पीता सहचरी[1] भवेत् । — A species of barleria with yellow blossoms 1.

Jasmine 4. — मालती[1] कथ्यते जाति[2]र्मागधी[3] यूथिका[4] तथा ॥२०५॥

हेमपुष्पमिह[1] नागकेसरं[2] , — A kind of tree 2.

केसरं[1] च वकुलं[2] प्रचक्षते । — A kind of tree 2.

कोविदारमपि[1] काञ्चनारकं[2] , — A kind of tree 2.

मल्लिकां[1] विचकिलं[2] विचक्षणाः ॥२०६॥ — Arabian jasmine 2.

The blossoms of blue amaranth 4. — वर्णपुष्प[1]ममलानकं[g 2] तथा ,

किङ्किरातमुदितं[3] कुरण्टकम्[4 h] ।

a पीतशालो b सहदेवी c शन्दुवारः, सिन्धुवारः d सीतो e स्थूलशृङ्गाटः f केशातकी, शाकातकी पटोला g ममिलानकं, ममिलातकं, मसिलातकं, अमलातकं h कुरुंटकं, करंटकं, कुरुंटकं ।

The china rose 2. ओड्रपुष्पमभिधीयते[1] जपा[2],

Many flowered nyktanthes 2. सप्तला[1] च नवमालिका[2] स्मृता ॥२०७॥

A plant 2. बन्धूकं[1] बन्धुजीवं[2] स्यात्पुन्नागः[1] सुरर्पणिका[2] । A tree 2.

A plant 4. अतिमुक्तकमिच्छन्ति[1] वासन्तीं[2] माधवीं[3] लताम्[a 4] ॥२०८॥

A sort of cucumber 4. एर्वारुश्चिर्भटः[b 1 2] प्रोक्तो वालुकी[3 c] कर्कटी[4] तथा ।

A pumpkin gourd 2. कर्कारुरथ[1] कूष्माण्डस्तुम्ब्यलाबूश्च[2 1 2] दुग्धिका[3 d] ॥२०९॥ A long white gourd 3.

Forest, wood 8. अरण्यमटवी[1 2] सत्त्रं[3] कान्तारं[4] काननं[5] वनम्[6] ।

विपिनं[7] गहनं[8] चेति नातिभिन्नार्थमिष्यते[e] ॥२१०॥

तटोपकण्ठे या जाता वनराजी[1] महीभृताम् । A long tract of forest, a grove or long row of trees, a path in a forest.

A land at the foot of a mountain. उपत्यकां[1] तु तामाहुरुपरिष्टादधित्यकाम्[1] ॥२११॥ Tableland, highland.

नगरान्नातिदूरेण यः सद्भिरुपरोपितः ।

तरुषण्डः[f] स आरामस्तथोपवनमुच्यते[1 2] ॥२१२॥ A grove, a plantation 2.

विज्ञेयं प्रमदवनं नृपस्तु यस्मिन्,

शुद्धान्तैः सह रमते गृहोपकण्ठे[g] ।

A garden. उद्यानं स्वयमपरैः समं च लोकै—

रन्येषां विभववतां च पुष्पवाटी ॥२१३॥

Elephant 14. मातङ्गद्विरदद्विपाः[1 2 3] करिगजस्तम्बेरमानेकपाः[4 5 6 7],

कुम्भीकुञ्जरवारणेभरदिनः[8 9 10 11 12] सामोद्भवः[13] सिन्धुरः[14] ।

Lion 9. तुल्यार्थाः कथिता हरिर्मृगपतिः[1 2] पञ्चाननः[3] केसरी[4],

हर्यक्षो[5] नखरायुधो[6] मृगरिपुः[7] सिंहश्च[8] कण्ठीरवः[9] ॥२१४॥

One of the 3 divisions of elephants. भद्रो[1] मन्दो[2] मृगश्चेति[3] विज्ञेयास्त्रिविधा गजाः ।

वनप्रचारसारूप्यसत्त्वभेदोपलक्षिताः ॥२१५॥

a माधवीलता, माधवीं माधवीं लतां, माधवी लता, b ईर्वारुश्चर्भटः, एर्वारुश्चिभटः, एर्वारश्चिर्भटः, एर्वातुश्चितिः, एर्वारुश्चिर्भिटः c वालुंकी d दुश्चिका, दुग्धिका दुधिका, e नातिनानार्थ f तरुशंडः तरुपंडः g कण्ठम् ।

A lump uopn the head of an elephant in rut. 2.

a 1 2
मूर्धपिण्डौ स्मृतौ कुम्भौ कुम्भयोरन्तरं विदुः ।

An elephant's cheek, elephant's temple 3.

b 1 2 c 3 1 d 2
करटः स्यात्कटो गण्डो वमथुः करसीकरः ॥२१६॥

Water thrown out by an elephant's trunk 2.

Ichor or juice that exudes from the temple of an elephant in rut 2.

1 2 1 2 1 2
दानं मदो विषाणौ च दशनौ स्कन्ध आसनम् ।

The trunk of an elephant 2.
Front part of an elephant's body 2.

1 2 1 2
अपाङ्गदेशो निर्याणं कर्णमूलं तु चूलिका ॥२१७॥

The outer corner of the eye cf an elephant 2
The root of an elephant's ear 2.

The forehead of an elephant 2.

1 2 1 2
अवग्रहो ललाटं स्यादारक्षः कुम्भयोरधः ।

The junction of the frontal sinuses of an elephant 2.

The part of an elephant's head between the tusks.

1
दन्तयोरुभयोर्मध्यं प्रतिमानं प्रचक्ष्यते ॥२१८॥

The tip of an elephant's trunk 4.

1 2 3 4
कराग्रं पुष्करं प्रोक्तमङ्गुलिः कर्णिका मता ।

The tip or root of an elephant's tail 2

1 e 2 1 2
पेचकः पुच्छमूलं तु पद्मं स्याद् विन्दुजालकम् ॥२१९॥

The coloured marks on the trunk and face of an elephant2.

An elephant in rut 3.

1 2 3 1 f 2
लग्नः प्रभिन्नो मत्तः स्यादुपात्तो मदवर्जितः ।

An elephant out of rut 2.

g 1
तिर्यग्दन्तप्रहारस्तु गजः परिणतो मतः ॥२२०॥

An elephant stooping to strike with his tusks or giving a side blow with his tusks.

Arranged for war 2.

h 1 2
सज्जितः कल्पितो ज्ञेयो बहूनां घटना घटा ।

An elephant's girth 3.

i 1 2 3 h
चूषा कक्ष्या वरत्रा स्यादालानं स्तम्भ उच्यते ॥२२१॥

Spurring of an elephant by means of the rider's feet 2.

1 j 2 1 2
पादकर्म यतं प्रोक्तं यातमङ्कुशवारणम् ।

Guiding an elephants, with the hook 2.

Pricking an elephant with the goad and striking with the legs.

k 1 1
उभयं वीतमाख्यातं भेदः स्थूलोच्चयो गतेः ॥२२२॥

The middle pace of elephants, a hollow at the root of an elephant's tusk.

The root of the teeth 2.

1 2 1 2
करीरी दन्तमूलं स्याद्वारी च गजबन्धनम् ।

The place where elephants are tied up 2.

The chain used to secure the hind feet of an elephant 4.

1 2 3 4
निगडः पादबन्धश्च हिञ्जीरः शृङ्खलोऽन्दुकः ॥२२३॥

A young elephant.

1 2 1 2 l
कलभः करिपोतः स्यादङ्कुशः सृणिरुच्यते ।

A goad for driving an elephant 2.

A royal elephant 2.

1 2 m 1
औपवाह्यो राजवाह्यः सन्नाह्यः समरोचितः ॥२२४॥

An elephant fit for war 1.

A vicious elephant2.

1 2 1 2
व्यालो दुष्टगजः प्रोक्तो हस्तिनी तु वशा स्मृता ।

The female elephant 2.

a मूर्ध्नि b करकः c कटोगुस्नो, फटो गञ्जो d करशीरः e पेचुकः, पचकः, पेयुकः f स्यादुद्धातो g तिर्यग्दत्त h सजितः i भूषा, कक्षा, वक्षा j युतं, पादकमायातं, पादकमायतं k उमयो, उभय l शृणि, श्रेणि m सान्नाह्यः, सनाह्यः ।

The china rose 2.	ओड्रपुष्पमभिधीयते[1] जपा[2] ,	
Many flowered nyktanthes 2.	सप्तला[1] च नवमालिका[2] स्मृता ॥२०७॥	
A plant 2.	बन्धूकं[1] बन्धुजीवं[2] स्यात्पुन्नागः[1] सुरपर्णिका[2] ।	A tree 2.
A plant 4.	अतिमुक्तकमिच्छन्ति[1] वासन्तीं[2] माधवीं[3] लताम्[a 4] ॥२०८॥	
A sort of cucumber 4.	एर्वारुश्चिर्भटः[b 1 2] प्रोक्तो वालुकी[3 c] कर्कटी[4] तथा ।	
A pumpkin gourd 2.	कर्कारुरथ[1] कूष्माण्डस्तुम्ब्यलाबूश्च[2 1 2] दुग्धिका[3 d] ॥२०९॥	A long white gourd 3.
Forest, wood 8.	अरण्यमटवी[1 2] सत्त्रं[3] कान्तारं[4] काननं[5] वनम्[6] ।	
	विपिनं[7] गहनं[8] चेति नातिभिन्नार्थमिष्यते[e] ॥२१०॥	
	तटोपकण्ठे या जाता वनराजी[1] महीभृताम् ।	A long tract of forest, a grove or long row of trees, a path in a forest.
A land at the foot of a mountain.	उपत्यकां[1] तु तामाहुरुपरिष्टादधित्यकाम्[1] ॥२११॥	Tableland, highland.
	नगरान्नातिदूरेण यः सद्भिरुपरोपितः ।	
	तरुषण्डः[f] स आरामस्तथोपवनमुच्यते[1 2] ॥२१२॥	A grove, a plantation 2.
	विज्ञेयं प्रमदवनं नृपस्तु यस्मिन् ,	
	शुद्धान्तैः सह रमते गृहोपकण्ठे[g] ।	
A garden.	उद्यानं स्वयमपरैः समं च लोकै—	
	रन्येषां विभववतां च पुष्पवाटी ॥२१३॥	
Elephant 14.	मातङ्गद्विरदद्विपाः[1 2 3] करिगजस्तम्बेरमानेकपाः[4 5 6 7] ,	
	कुम्भीकुञ्जरवारणेभरदिनः[8 9 10 11 12] सामोद्भवः[13] सिन्धुरः[14] ।	
Lion 9.	तुल्यार्थाः कथिता हरिर्मृगपतिः[1 2] पञ्चाननः[3] केसरी[4] ,	
	हर्यक्षो[5] नखरायुधो[6] मृगरिपुः[7] सिंहश्च[8] कण्ठीरवः[9] ॥२१४॥	
One of the 3 divisions of elephants.	भद्रो[1] मन्दो[2] मृगश्चेति[3] विज्ञेयास्त्रिविधा गजाः ।	
	वनप्रचारसारूप्यसत्त्वभेदोपलक्षिताः ॥२१५॥	

a माधवीलता, माधवीं माधवीं लतां, माधवौ लता,
b ईर्वारश्चर्भटः, एर्वारुश्चिर्भटः, एर्वारश्चिर्भटः, एर्वातुश्चितिः,
एर्वारुश्चिर्भिटः c वालुंकी d दुश्चिका, दुग्धिका
दुधिका, e नातिनानार्थं f तरुखंडः तरुपंडः g कण्ठम् ।

A lump uopn the head of an elephant in rut. 2.

a 1 2
मूर्धपिण्डौ स्मृतौ कुम्भौ कुम्भयोरन्तरं विदुः ।

An elephant's cheek, elephant's temple 3.

b 1 2 c 3 1 d 2
करटः स्यात्कटो गण्डो वमथुः करसीकरः ॥२१६॥

Water thrown out by an elephant's trunk 2.

Ichor or juice that exudes from the temple of an elephant in rut 2.

1 2 1 2 1 2
दानं मदो विषाणौ च दशनौ स्कन्ध आसनम् ।

The trunk of an elephant 2.
Front part of an elephant's body 2.

1 2 1 2
अपाङ्गदेशो निर्याणं कर्णमूलं तु चूलिका ॥२१७॥

The outer corner of the eye cf an elephant 2
The root of an elephant's ear 2.

The forehead of an elephant 2.

1 2 1 2
अवग्रहो ललाटं स्यादारक्षः कुम्भयोरधः ।

The junction of the frontal sinuses of an elephant 2.

The part of an elephant's head between the tusks.

1
दन्तयोरुभयोर्मध्यं प्रतिमानं प्रचक्ष्यते ॥२१८॥

The tip of an elephant's trunk 4.

1 2 3 4
कराग्रं पुष्करं प्रोक्तमङ्गुलिः कर्णिका मता ।

The tip or root of an elephant's tail 2

1 e 2 1 2
पेचकः पुच्छमूलं तु पद्मं स्याद् विन्दुजालकम् ॥२१९॥

The coloured marks on the trunk and face of an elephant2.

An elephant in rut 3.

1 2 3 1 f 2
लग्नः प्रभिन्नो मत्तः स्यादुपात्तो मदवर्जितः ।

An elephant out of rut 2.

g 1
तिर्यग्दन्तप्रहारस्तु गजः परिणतो मतः ॥२२०॥

An elephant stooping to strike with his tusks or giving a side blow with his tusks.

Arranged for war 2.

h 1 2
सज्जितः कल्पितो ज्ञेयो बहूनां घटना घटा ।

An elephant's girth 3.

i 1 2 3 h
चूषा कक्ष्या वरत्रा स्यादालानं स्तम्भ उच्यते ॥२२१॥

Spurring of an elephant by means of the rider's feet 2.

1 j 2 1 2
पादकर्म यतं प्रोक्तं यातमङ्कुशवारणम् ।

Guiding an elephants, with the hook 2.

Pricking an elephant with the goad and striking with the legs.

k 1 1
उभयं वीतमाख्यातं भेदः स्थूलोच्चयो गतेः ॥२२२॥

The middle pace of elephants, a hollow at the root of an elephant's tusk.

The root of the teeth 2.

1 2 1 2
करीरी दन्तमूलं स्याद्वारी च गजबन्धनम् ।

The place where elephants are tied up 2.

The chain used to secure the hind feet of an elephant 4.

1 2 3 4
निगडः पादबन्धश्च हिञ्जीरः शृङ्खलोऽन्दुकः ॥२२३॥

A young elephant.

1 2 1 2 1
कलभः करिपोतः स्यादङ्कुशः सृणिरुच्यते ।

A goad for driving an elephant 2.

A royal elephant 2.

1 2 m 1
औपवाह्यो राजवाह्यः सन्नाह्यः समरोचितः ॥२२४॥

An elephant fit for war 1.

A vicious elephant2.

1 2 1 2
व्यालो दुष्टगजः प्रोक्तो हस्तिनी तु वशा स्मृता ।

The female elephant 2.

a मूर्ध्नि b करकः c कटोगुस्नो, फटो गञ्जो d करशीरः e पेचुकः, पचकः, पेयुकः f स्यादुद्धातो g तिर्यग्दत्त h सजितः i भूषा, कक्षा, वक्षा j युतं, पादकमायातं, पादकमायतं k उभयो, उभय l शृणि, श्रेणि m सान्नाह्यः, सनाह्यः ।

An elephant-driver 4. — आधोरणा[1] हस्तिपका[2] हस्त्यारोहा[3] निषादिनः[4] ।

An elephant keeper 2. — गजाजीवास्तु[1] शास्त्रज्ञैर्महामात्रा[2] इति स्मृताः ॥२२५॥

A hog, a boar 8. — कोलः[1] क्रोडः[2] शूकरः[3] स्याद्वराहः[4] ,
पोत्री[5] दंष्ट्री[6] घृष्टिरुक्तः[7] किरिश्च[8][a] ।

Tiger, a hyena 7. — व्याघ्रो[1] द्वीपी[2] पुण्डरीकस्तरक्षुः[3][4] ,
शार्दूलः[5] स्याच्चित्रकायो[6] मृगारिः[7] ॥२२६॥

Buffalo 5. — महिषः[1] सैरिभ[2][b] उक्तो रक्ताक्षः[3] कासरो[4] लुलायश्च[5] ।

A rhinoceros 3. — वाध्रीणसश्च[1] खड्गी[2] गण्डक[3] इति कथ्यते सद्भिः ॥२२७॥

A bear 4. — ऋक्षाच्छभल्लभाल्लूकभल्लूकाश्च[1][2][3][e][4] समाः स्मृताः ।

A wolf 4. — अरण्यश्वा[1] बुधैर्ज्ञेयः कोक[2] ईहामृगो[3] वृकः[4] ॥२२८॥

A jackal, a fox 10. — गोमायुर्भूरिमायः[1][2][d] स्याच्छृगालो[e][3] जम्बुकः[4] शिवा[5] ।
फेरण्डः[f][6] फेरवः[7] फेरुः[8] क्रोष्टा[9] च मृगधूर्तकः[10] ॥२२९॥

A kind of deer, an antelope 13. — एणः[1] कुरङ्गो[2] हरिणो[3] मृगः[4] स्यात्
सारङ्ग[5] ऋष्यः[6][g] पृषतो[7] रुरुश्च[8] ।
न्यङ्कुस्तथा[9] रङ्कुरिति[10] प्रसिद्धा ,
वातप्रमीशाम्बरकृष्णसाराः[11][12][h][13] ॥२३०॥

An ape, a monkey 11. — बलीमुखो[1] मर्कटको[2] वनौकाः[3] ,
प्लवङ्गमः[4] स्यात्प्लवगः[5] प्लवङ्गः[6] ।
हरिः[7] कपिः[8] कीश[9] इमे च शब्दाः ,
शाखामृगो[10] वानर[11] इत्यभिन्नाः ॥२३१॥

a करिश्च, किरश्च, विडिश्व b सेरभ, सेरिभ c भालूकं d भूरिमायु
e स्यात् शृगालो, स्याछंगोलो f फेरुण्डः g ऋक्षः
h तप्तसाराः, तप्तरयाराः ।

A kind of monkey 1.	गोलाङ्गूल[1] इति प्रोक्तः कृष्णवक्त्रस्तु मर्कटः ।	
Monkey tricks, monkey like behaviour.	कपेः क्रीडादिकं किञ्चित्कापेयमिति कथ्यते ॥२३२॥	
Porcupine 3.	शललः[1] शल्लकः[2][a] श्वावित्[3]तत्सूची[1] शललं[2] शलम्[3] ।	The quill of a Porcupine 3.
Beast of prey, wild beast.	व्याघ्रादयो वनचराः पशवः श्वापदाः स्मृताः ॥२३३॥	
A kind of lizard 2.	गोधा[1] मुशलिका[b][2] प्रोक्ता गौधेरा[c]स्तत्सुता मताः ।	
The geeko 3.	सरटः[1] कृकलासः[2] स्यात्प्रतिसूर्यशयानकः[3] ॥२३४॥	
A mouse, a rat 5.	आखुर्[1]वृषो[2] मूषकः[3] स्या[d]दुन्दुरः[4] खनकस्[5]तथा ।	
The musk rat.	छुच्छुन्दरी[1] च विज्ञेया विद्वद्भिर्गन्धमूषिका[2] ॥२३५॥	
The cat 4.	ओतुर्[1]विडालो[2] मार्जारो[3] वृषदंशश्[4]च कथ्यते ।	
A pole cat 3.	जाहको[1] गात्रसङ्कोची[2] मण्डली[3] च बुधैः स्मृतः ॥२३६॥	
	पतत्[1]पतङ्गः[2] पतगः[3] पतत्री[4],	
	पत्त्री[5] शकुन्तिः[6] शकुनिः[7] शकुन्तः[8] ।	
A bird 26.	वयो[9] विहायो[10] विहगो[11] विहङ्गो[12],	
	विहङ्गमः[13] पत्त्ररथो[14] गरुत्मान्[15] ॥२३७॥	
	शकुनः[16] खगो[17] नगौकाः[18] पक्षी[19] विर्[20]विष्किर[21][e]स्तथा विकिरः[22] ।	
	अण्डज[23]नीडज[24]वाजि[25]द्विजाश्[26]च कथिताः समानार्थाः ॥२३८॥	
The wing of a bird 9.	तनूरुहं[1] गरुत्[2]पत्त्रं[3] पतत्रं[4] छदनं[5] छदः[6] ।	
	पिच्छं[7] वाजस्[8][f]तथा पक्षः[9] पक्षमूलं[1] तु पक्षतिः[2] ॥२३९॥	The tip of a bird's wing 2
An egg 2.	पेशीकोशः[1][g] स्मृतोऽण्डश्[2]च कुलायो[1] नीड[2] उच्यते ।	A nest 2.
The beak or bill of a bird 3.	चञ्चुश्[1]चञ्चूस्[2]तथा त्रोटिर्[3]डयनं[1] गगने गतिः ॥२४०॥	Flying in the air 1.

a शल्यकः b मुशली c गोवेरा, गोधेरा d स्यादुंदरुः, स्यादंदरः
e विर्विकरस्तथा f वाजिस्तथा g पेशी कोशः ।

[1]केकी [2]शिखी [3]शिखण्डी [4]प्रचलाकी [5]वर्हिणः [6]कलापी च ।

A peacock 10. — [7]सर्पाशनो [8]मयूरः [9]शिखावलः [10]श्यामकण्ठश्च ॥२४१॥

A peacock's crest 2. — वाणी केका [1]शिखा [2]चूडा [1]चन्द्रको [2]मेचकः स्मृतः । — An eye in the feathers of a peacock's tail 2.

A peacock's tail 4. — [1]प्रचलाकः [2]शिखण्डश्च [3]कलापो [4]वर्हं उच्यते ॥२४२॥

The cuckoo 5. — [1]अन्यभृतः [2]परपुष्टः [3]कलकण्ठः [4]कोकिलः [5]पिकः प्रोक्तः ।

A sparrow 4. — [1]कलविङ्कश्[2]चटकः स्याद् [3]गृहबलिभुक् [4]नीलकण्ठश्च ॥२४३॥

A heron 2. — [1]क्रौञ्चः [2]क्रुङ् स्यात्[1]खञ्जनः [2]खञ्जरीटः — A wagtail 2.

[1]कोकश्[2]चक्रश्चक्रवाको [3]रथाङ्गः । — The ruddy goose.

[1]दार्वाघाटः [2]सारसः [3]पुष्कराख्यः , — The crane, woodpecker 3.

The female crane 2. — प्रोक्ता सद्भिः [1]सारसी [2]लक्ष्मणा च ॥२४४॥

A crow 10. — [1]अरिष्टः [2]करटः [3]काको [4]बलिपुष्टः [5]सकृत्प्रजः ।

[6]एकदृग्[7]बलिभुक् [8]ध्वाङ्क्षश्[9]चिरञ्जीवी च [10]वायसः ॥२४५॥

An owl 4. — [1]उलूकः [2]कौशिकः प्रोक्तो [3]ध्वाङ्क्षारातिर्[4]निशाटनः ।

A raven 5. — [1]काकोलो [a][2]मौकलिर्[3]द्रोणः [4]कृष्णकाको [5]वनाश्रयः ॥२४६॥

A cock 4. — [1]कृकवाकुस्[2]ताम्रचूडः [3]कुक्कुटश्[4]चरणायुधः ।

The blue jay 2. — [1]किकिदीविः स्मृतश्[2]चाषः [1]शकुन्तो [b][2]भास उच्यते ॥२४७॥ — The vulture 2.

The fork tailed shrike 3. — [1]भृङ्गः [2]कलिङ्गो [3]धूम्याटः [1]सारङ्गश्[2]चातको मतः । — A kind of bird 2.

A skylark 2. — [1]व्याघ्राटस्तु [2]भरद्वाजः [1]शुकः [2]कीर उदाहृतः ॥२४८॥ — A parrot 2.

A kind of bird 3. — [1]आटिः [c][2]शरारि[3]रातिः स्यादु[1]त्क्रोशः [2]कुररो मतः । — An osprey 2.

A species of water bird. — [1]दात्यूहो [2]जलरङ्कुः स्यात्[1]कोयष्टिः [2]शिखरी स्मृतः ॥२४९॥ — A sort of aquatic bird 2.

a मौष्कलि, मौकलि, मौद्गबि b भाश c शरारिराख्यात उत्क्रो ।

A crane.	वको वकोटो विज्ञेयो बलाका विसकण्ठिका ।	A sort of female crane 2.
A kite 3.	आतायी शकुनिश्चिल्लो मद्गुः स्याज्जलवायसः ॥२५०॥	The diver bird 2.
A swan, a gander 4.	हंसाः श्वेतच्छदाः प्रोक्ताश्चक्राङ्गा मानसौकसः ।	
A goose 4.	वारला हंसकान्ता स्याद्वरला वरटा तथा ॥२५१॥	
A flamingo, a sort of goose with red legs and bill.	आताम्रै राजहंसाश्च धार्तराष्ट्राः सितेतरैः ।	A sort of goose with black legs & bill.
	मलिनैर्मल्लिकाख्याश्च कथ्यन्ते चरणाननैः ॥२५२॥	A sort of goose with brown legs and bill.
A drake, a duck.	पक्षैराधूसरैर्हंसाः कलहंसा इति स्मृताः ।	
A sort of falcon 2.	प्रोच्यन्ते प्राचिकाः श्येनाश्चटिकाः क्षुद्रपक्षिकाः ॥२५३॥	A small bird 2.
	जीवञ्जीवकपिञ्जलचकोरहारीतवञ्जुलकपोताः ।	
	कारण्डवकादम्बक्रकराद्याः पक्षिजातयो ज्ञेयाः ॥२५४॥	
A bee 13.	मधुकरमधुपमधुव्रतशिलीमुखभ्रमरभृङ्गपुष्पलिहः ।	
	इन्दिन्दिरालिषट्चरणचञ्चरीकालिनो द्विरेफाः स्युः ॥२५५॥	
A cricket.	झिल्लीका चीरी स्यात्सरघा मधुमक्षिका भवेत्क्षुद्रा ।	A bee 3.
A spider 5.	लूतोर्णनाभमर्कटजालिकक्रमयश्च तुल्यार्थाः ॥२५६॥	
A moth 2.	पतङ्गः शलभः प्रोक्तः खद्योतो द्योतिरिङ्गणः ।	A glow-worm, a fire-fly 2.
A sort of lizard.	हालाहलश्चाञ्जनिका ज्येष्ठा स्याद् गृहगोधिका ॥२५७॥	A house-lizard.
A village 4.	ग्रामः संवसथो ज्ञेयो ग्रामाधानं च खेटकम् ।	
Born or living in a village 3.	ग्रामीणास्तु निगद्यन्ते ग्राम्या ग्रामेयका इति ॥२५८॥	
	ग्रामान्तिकमुपशल्यं पर्यन्तः परिसरः कटः प्रोक्तः ।	Out skirts of a village or town.
Limit, boundary 5.	अवधिर्मर्यादा स्यादाघाटः सीम सीमा च ॥२५९॥	

a आतापी b प्राचिका सेना चटिका, सेनाश्चिटिका, सेनाश्चिटिकाः c कारंडवकादंबकचक्रकाराद्याः, कारंकांरडवकादंवकराद्याः, कादवः कदंबकः, क्रकराद्याः, कारंडवकादंबकः क्रकराद्याः, कारंडवकादंबकक्रकराद्याः d चिंचिरीका, चिंचरीका, चिरीका e क्रिमयश्च, क्रमयश्च f ज्योतिरिंगिणः, ज्योतिरिंगणः, द्योतिरिंगणः, द्योतिरंगण ।

A way, the road (also सृतिः)	अध्वा[1] पन्थाः[2] पद्धति[3]रेकपदी[4] वर्त्म[5] वर्तनी[6] सरणिः[7] ।	
	अयनं[8] पदवी[9] मार्गः[10] पद्या[11] च निगद्यतं निगमः[12] ॥२६०॥	
	ग्रामयोरन्तरं दीर्घं प्रान्तरं परिकीर्त्यते[a] ।	A long lonesome or solitary path.
A hamlet, a station of cowherds 2.	घोष[1] आभीरपल्ली[2]स्यात्पक्कणः[1] शबरालयः[2] ॥२६१॥	The hut of a barbarian or chāndāla.
A cowpen 5.	व्रजः[1] स्याद् गोकुलं[2] गोष्ठं[3] गोवृन्दं[4] गोधनं[5] धनम् ।	
Rich in cattle.	गोमान्[1] गोमी[2] च गोस्वामी[3] गोविन्दो[1]ऽधिकृतो गवाम् ॥२६२॥	The superintendent of cows 1.
An ox, a bull 11.	उक्षा[1]नड्वान्[2]वलीवर्दः[3] ककुद्मान्[4]वृषभो[5] वृषः[6] ।	
	ऋषभः[7] सौरभेयो[8] गौर्[9]वाडवेयो[10]ऽथ शाक्वरः[11] ॥२६३॥	
A calf 2.	तर्णकः[1] स्मर्यते वत्सो[2] दम्यो[1] वत्सतरः[2] स्मृतः ।	A steer 2.
A bull fit for castration.	आर्षभ्यः[1] स च विज्ञेयः षण्ढत्वे यस्य योग्यता ॥२६४॥	
A large bull 2.	महोक्षः[1] स्यादुक्षतरो[2] वृद्धोक्षस्तु[1] जरद्गवः[2] ।	An old ox 2.
The bullock attached to the shaft.	धुरं वहति यो धुर्यो[1] धौरेयः स च कथ्यते ॥२६५॥	
An ox carrying burden on his back 2.	स्थूरी[b][1] स्यात्पृष्ठवाह्य[2]स्तु स्कन्धिकः[1] स्कन्धवाहकः[2] ।	An ox carrying burden on his shoulders 2.
A bull's hump 2.	अंसकूटस्तु[1] ककुदं[2] सास्ना[1] स्याद् गलकम्बलः[2] ॥२६६॥	A dewlap 2
The head of an ox.	नीचकी[c][1] च शिरोदेशः स्कन्धदेशो वहः[1] स्मृतः ।	The shoulder of an ox.
Nozzled with a string (नस्या) through the nose 2.	नस्योतो[1] नस्तितः[2] प्रोक्तः षोडन्[1] षड्दशनः[2] स्मृतः ॥	A young ox that has got the first six teeth.
An ox whose horns are broken.	भग्नशृङ्गस्तु[1] कूटः[2] स्याद्विषाणं[1] शृङ्गमुच्यते[2] ॥२६७॥	A horn 2.
	अघ्न्या[1] गौर्[2]माहेयी[3] सुरभिर्[4]बहुला[5] च सौरभेयी[6] च ।	
A cow 11.	उस्रा[7]र्जुनी[8] च रोहिण्[9]युक्तानडुही[10] बुधैरनड्वाही[11] ॥२६८॥	
A cow that has taken the bull 2. A cow for the first time with a calf 2.	वेहद्[1]वृषभोपगता[2] प्रष्ठौही[1] गर्भिणी[1] वशा[1] बन्ध्या[2] ।	A barren cow 2.
A milch cow.	धेनुर्[1]नवप्रसूता[2] वष्कयणी[1] प्रौढवत्सा[2] स्यात्[d] ॥२६९॥	A cow that has full grown calves.

a परिकीर्तितम् b स्थौरी स्यात्पृष्टि c नीचिकी d च ।

	1 2 1 2	
A cow which has miscarried 2.	अवतोका स्रवद्गर्भा भद्रा गौर्गोमतल्लिका ।	An excellent cow 2
	1 a 2 1 2	
A tractable cow 2.	अचण्डी सूरता प्रोक्ता वत्सकामा तु वत्सला ॥२७०॥	A cow fond of her calf 2.
	1 2 1 2	
An udder 2.	ऊधः स्यादापीनं पीनोध्नी पीवरस्तनी प्रोक्ता ।	A cow with a large udder 2.
	1 2 b 1 2	
An excellent cow 2.	श्रेष्ठा च नैचिकी स्याद्द्रोणदुघा प्रचुरदुग्धा च ॥२७१॥	A cow yielding much milk 2.
	1 2	
A cow fit to receive the bull 2.	काल्योपसर्या प्रजने प्रसिद्धा ,	
	1 c 2	
A cow that has many calves 2.	परेष्टुका च प्रचुरप्रसूतिः ।	
	विंजायते या प्रतिवत्सरं गौः ,	
	1	
A cow bearing a calf every year.	समांसमीनेति निगद्यतेऽसौ ॥२७२॥	
	1 1 2	
A cow which has had only one calf, young cow.	गृष्टिः सकृत्प्रसूता स्यात्पलिक्नी बालगर्भिणी ।	A cow for the first time with calf 2.
	1 2 1 2	
Coming or got from a cow as milk, curd etc 2.	गव्यं गोसम्भवं सर्वं करीषं गोमयं स्मृतम् ॥२७३॥	Cow dung 2.
	1 2 3 4 5 6	
Milk 6.	ऊधस्यं क्षीरं स्याद्दुग्धं स्तन्यं पयश्च पीयूषम् ।	
	1 2 3	
Fresh butter 3.	दधिसारं नवनीतं ब्रुवते हैयङ्गवीनं च ॥२७४॥	
	1 2 3 4 5 6	
Name of butter-milk 6.	तक्रमरिष्टमुदश्विद्दण्डाहतकालशेयमथितानि ।	
	1 2 1 2 3 4	
Thin curd 2.	द्रप्सं दध्यघनं स्यात्सर्पिर्घृतमाज्यमाधारः ॥२७५॥	Purified butter 4.
	1 2 1 2 1 2	
Thick, congealed 2.	शीनं स्त्यानं श्रृतं पक्वं विलीनं द्रुतमुच्यते ।	Cooked, boiled 2. Melted, dissolved, liquified 2.
	1 2 3 4 5	
A churning stick 5.	मन्था मन्थश्च मन्थानो वैशाखः खजकस्तथा ॥२७६॥	
	1 2 d 3	
A rope for tying a cattle 3.	सन्दानं दामनी दाम पशूनां बन्धनं मतम् ।	
	1 2 1 e 2 3 4	
A ram 2.	अजः प्रोक्तः स्तभो वस्तश्छागश्छगलकश्छगः ॥२७७॥	A goat 4.
	1	
Any young domestic animal.	वर्करः कथ्यते सद्भिः सर्वोऽपि तरुणः पशुः ।	
	1 f	
An animal without horns.	तूवरः श‍ृङ्गहीनस्तु पुमानव्यञ्जनश्च यः ॥२७८॥	

a सूरिना, सूरिता b नीचकी, नैचका c प्रवृरप्रवृत्तिः d दामिनी
e वस्तः छागः, गछः छागः, वस्तुः छागः, वर्तश्च्छागः गछछागछगल,
f व्यंजनस्तु ।

A sheep 8.	अविरूर्णायुरभ्रो हुडुरुरणो वृष्णिमेषमेण्ढाः स्युः ।
A ewe's milk 3.	अविसोढमविमरीसं स्यादविदूसं च दुग्धमवेः ॥२७९॥
A camel 7.	दासेरकः क्रमेलक उष्ट्रो मयरवणकरभशृङ्खलकाः ।
An ass 5.	बालेयश्चक्रीवान् खरगर्दभरासभाश्च तुल्यार्थाः ॥२८०॥
A dog 8.	कौलेयकः सारमेयो भषणः श्वा च कुर्कुरः[a] ।
	शुनको मृगदंशश्च बुधैः शालावृको मतः ॥२८१॥
A hunting dog 1.	मृगव्ये कुशलः श्वा च विश्वकद्रुरिति[b] स्मृतः ।
A mad dog 1. / A bitch 2.	अलर्को रोगितो ज्ञेयः ·शुनकी सरमोच्यते ॥२८२॥
A yoke of six.	पशूनां षट्कसंख्यायां षड्गवं[c] स्मर्यते बुधैः ।
A pair, a couple.	द्वित्वे च गोयुगं तेषां नामोच्चारणपूर्वकम् ॥२८३॥
A country 4.	नीवृज्जनपदो देश उपवर्तनमिष्यते[d] ।
People, man 3.	जनो लोकः प्रजा प्रोक्ता विषयो ग्रामसंख्यया ॥२८४॥
A town 11.	पत्तनं स्यादधिष्ठानं निगमः पुटभेदनम् ।
	नगरं नगरी द्रङ्गः स्थानीयं पूः पुरी पुरम् ॥२८५॥
Capital 2.	स्कन्धावार इति प्राज्ञै राजधानी निगद्यते ।
Suburb 2.	शाखानगरमाख्यातं तथोपनगरं बुधैः ॥२८६॥
	विदेहा मिथिला प्रोक्ता काशिर्वाराणसी स्मृता ।
	अवन्त्युज्जयिनी[e] ज्ञेया कन्यकुब्जा महोदया ॥२८७॥
An embankment at the gate of a city 2. / Gate of a city 2.	हस्तिनखः[f] परिकूटं च कथ्यते गोपुरं पुरद्वारम् ।
Rampart 3. / The leaf of a door 2.	वप्रं शालं प्राकारमाहुररर[g] कपाटं च ॥२८८॥

a कुक्कुरः b कद्रूरिति, विश्वद्भूरिति c षट्त्वं, पड्गु, पद्ग d उपपर्वत ।
e ज्जयनी f हस्तिनखं g हुररकं, हुररि, हुररीं, हुररं, हुररविं ।

Carriage road 3.	प्रतोली[1] विशिखा[2] रथ्या[3] मुखं[1] निःसरणं[2] स्मृतम् ।	The entrance, egress or outlet from a building 2.
A place where several roads meet.	शृङ्गाटकः[1] पथां श्लेषः संस्थानं[2] तु[a] चतुष्पथम्[3] ॥२८९॥	
Building site 2.	गृहभूमिस्तु[1] वास्तुः[2 b] स्याद्वाट[1] आवेष्टको[2] वृतिः[3] ।	A wall, an enclosure 3.
A royal tent.	गृहस्थानं स्मृतं राज्ञामुपकार्या[1]उपकारिका[2] ॥२९०॥	
A dwelling place or a dwelling house 30.	आवास[1]आवसथं[2] गृहं[3] च भवनं[4] स्थानं[5] निशान्तं[6] कुलं[7] ,	
	संस्त्यायो[8] निलयो[9] निकाय्यम्[10]उटजं[11] गेहं[12] कुटं[13] मन्दिरम्[14] ।	
	धिष्ण्यं[15] धाम[16] निकेतनं[17] च सदनं[18] पस्त्यं[19] च वास्तु[20] क्षयः[21]	
	शाला[22] वेश्म[23] निवेशनोदवसिते[24] प्रोक्ते च सद्म[25]औकसी[26] ॥२९१॥	
	शरणम्[27]अगारं[28] निवसनम्[29]आलय[30] एकार्थवाचकाः शब्दाः ।	
A lying in chamber 2.	अपवरकं[1] गर्भगृहं[2] संजवनं[1] स्याच्चतुःशालम्[2] ॥२९२॥	A square formed by four houses 2.
A palace, a temple 1.	गृहमिष्टकादिरचितं प्रासादो[1] देवतानरेन्द्राणाम् ।	
A shed for sacrifice 1.	आयतनं[c 1] देवानामन्येषां धनवतां[d] हर्म्यम्[1] ॥२९३॥	Mansion, a palace.
A palace.	सुधाधवलितं सौधं कुट्टिमं बद्धभूमिकम् ।	Paved floor 2.
A platform 2.	इन्द्रकोश[e 1]स्तमङ्गः[2] स्यादट्ट[1]श्चाट्टालको[2] मतः ॥२९४॥	An attic 2.
A kichen 3.	पाकस्थानं[1] रसवती[2] कथ्यते तन्महानसम्[3] ।	
Sleeping room 2.	उशन्ति शयनस्थानं[1] वासागारं[2] विशारदाः ॥२९५॥	
A workshop 2.	आवेशनं[1] शिल्पिशाला[2] वाजिशाला[1] तु मन्दुरा[2] ।	A stable 2.
A shop, a stall 3.	पण्यविक्रयशाला[1] स्यादापणो[2] विपणिस्तथा[3] ॥२९६॥	
A manufactory 2.	कर्मशाला[1] च कारूणामन्वासनमुदाहृतम्[2] ।	
A shed on the road for accommodating passengers with water 2	प्रपा[1] पानीयशाला[2] स्यात्सत्त्रशाला[1] प्रतिश्रयः[2] ॥२९७॥	A poor house 2.

a च b वास्तुं c आयतनं च d धनवतां च
e इन्द्रकोशस्तु, आवेशिनं ।

A shelter.	उपघ्न[1] आश्रयः[2] प्रोक्तो मुनीनां स्थानमाश्रमः ।	Abode of mendicants.
The hut of an ascetic.	मठश्च[1] व्रतिनां स्थानं[a] मण्डपः[1] स्याज्जनाश्रयः ॥२९८॥	A pavilion.
A terrace before a house 3.	वेश्मैकदेशः प्रघणः[1] प्रघाणः[2] स्यादलिन्दकः[3] ।	
A court yard 2.	अजिरं[1] प्राङ्गणं[2] प्रोक्तं वेदिका[1] च वितर्दिका[2] ॥२९९॥	A raised square ground 2.
The gate of a city 3.	द्वार्द्वारं[1][2] बलजं[3] ज्ञेयमर्गला[1] परिघः[2] स्मृतः ।	A bolt 2.
The rentil of a door.	उत्तरङ्गं[1] मतं तिर्यक् द्वारस्योपरि दारु यत् ॥३००॥	
Buntings 2.	बुधैर्वन्दनमाला[1] तु[b] तोरणं[2] परिकीर्त्यते ।	
A ladder flight of stairs 4.	आरोहणं[1] स्यात्सोपानं[2] निःश्रेणि[3]रधिरोहिणी[4][c] ॥३०१॥	
Threashold 2.	गृहावग्रहणी[d][1] प्रोक्ता देहली[2] तु[e] मनीषिभिः ।	
A brush, a broom 2.	संमार्जनी[1] वर्धनी[2] स्यात्सङ्करो[1]ऽवकरः[f][2] स्मृतः ॥३०२॥	Dustsweepings 2.
The wooden frame of a roof 2.	आच्छादनं[1] स्याद्वलभी[2] गृहाणां ,	
A beam supporting the frame-work of a roof.	गोपानसी[1] दारु च वक्रसंस्थम् ।	
Eaves.	नीव्रं[g][1] वलीकं[2] पटला[3] तमाहुः ,	
A dove cot.	कपोतपाली[1][h] च विटङ्कसंज्ञा[2][i] ॥३०३॥	
An airhole, a little round window 4.	वातायनो[1] गवाक्षश्च[2][j] जालकं[3] जालमुच्यते[4] ।	
An inner court of a palace 2.	कक्षान्तरं[1] प्रकोष्ठं[2][k] च चन्द्रशाला[1] शिरोगृहम्[2] ॥३०४॥	An upper storey 2.
A kind of palace.	स्वस्तिको[1] वर्धमानश्च[2] नन्द्यावर्तादयस्तथा[3] ।	
	विच्छन्दकविशेषाः[4] स्युरमी भूपतिवेश्मनाम् ॥३०५॥	
	परिवारः[1] परिकरः[2] परिस्पन्दः[3][l] परिग्रहः[4] ।	
Retinue, follower, family 7.	तथोपकरणं[m][5] प्रोक्तं परिबर्हः[6] परिच्छदः[7][n] ॥३०६॥	

a व्रतिनां शाला b च c रोहणी d गृहाचगृहिणी e च f वस्करः, विक्किरः g नीर्ध्रं h पालीं i संज्ञाम् j गवाक्षस्तु k प्रकोष्टं स्यात्, प्रकाष्टं तु l परिस्यन्द m तथोपकारणं n परिछन्दः ।

Bed 5. पर्यङ्कः[1] शयनं[2] शय्या[3] तल्पं[4] च तलिनं[5] स्मृतम् ।
A fence 2. अपाश्रयस्तु[a 1] विद्वद्भिः कथ्यते मत्तवारणः[2] ॥३०७॥
A blanket. प्रवेण्यास्तरणं[1] वर्णः[2] परिस्तोमः[3] कुथः[4] कुथा[5] ।
नवतं[b 7] चेति तुल्यार्थाः प्रच्छदश्चोत्तरच्छदः[1, 2] ॥३०८॥ A cover, a wrapper 2
A screen surrounding a tent 2. अपटी[1] काण्डपटः[2] स्यात्प्रतिसीरा[1] जवनिका[2] तिरस्करिणी[3] । A curtain 3.
A pillow 3. उच्छीर्षकमुपधानं[1, 2] धीरैरुपवर्हमाख्यातम्[3] ॥३०९॥
An awing, a canopy 4. चन्द्रोदयो[1] वितानं[2] स्यादुल्लोचः[3] कदकस्तथा[4] ।
A fan 2. व्यञ्जनं[1] तालवृन्तं[2] च विष्टरः[1] पीठमासनम्[2, 3] ॥३१०॥ A seat, a chair 3.
A couch 2. वेत्रासनं[1] तथासन्दी[2] कङ्कतं[1] केशमार्जनम्[2] । A comb 2.
A wooden shoe 4. पादुकानुपदीना[1, 2] स्यादुपानत्पादरक्षणम्[3, 4] ॥३११॥
A wooden spoon or ladle 4. दर्वी[1] तर्दूश्च[2] खजिका[c 3] कथ्यते दारुहस्तकः[4] ।
A basket 2. पेटां[1] वदन्ति मञ्जूषां[2] कुशूलं[1] धान्यकोष्ठकम्[2] ॥३१२॥ A granary 2.
A frying pan 2. अम्बरीषो[1] भवेद् भ्राष्ट्रः[2] कन्दुः[1] स्वेदनिका[2] स्मृता । An iron plate for baking cakes (तवा)
An oven 4. चुल्ल्यश्मन्तकमुद्ध्मानं[1, 2, d 3] स्मृताधिश्रयणी[4] बुधैः ॥३१३॥
A portable stove 3. अङ्गारशकटीं[1] प्राहुर्हसन्तीं[2] च हसन्तिकाम्[3] ।
A pot 6. उखा[1] स्थाली[2] चरुः[3] कुम्भी[4] पिठरं[5] कुण्डमुच्यते[6] ॥३१४॥
A boiler 2. कटाहः[1] कर्परो[2] ज्ञेयो भृङ्गारः[1] कनकालुका[2] । A golden vase 2.
A dish 3. शालाजिरो[1] वर्धमानः[2] शरावः[3] स्मर्यते बुधैः ॥३१५॥

a उपाश्रयस्तु, आयाश्रयस्तु, अपाश्रियस्तु b नवनं c खंजक, खजक, खदिका, खजाका d मुध्मानं, मुद्धानं, मुद्वानं, मध्वानं ।

A kind of drinking vessel 2.	a 1 2 1 2 कोशिका मल्लिका प्रोक्ता पिधानं स्यादुदञ्चनम् ।	A lid, a cover 2.
A water-jar 14.	1 2 3 4 5 6 घटः करीरः कलशः कुटः कुम्भो निपः स्मृतः ॥३१६॥	
	7 8 9 10 कर्करी करकः प्रोक्तो वर्धनी च गलन्तिका ।	
	11 b 12 13 14 गर्गरी मन्थनी प्रोक्ता मणिकः स्यादलिञ्जरः ॥३१७॥	
Sour gruel 9.	1 2 3 c 4 5 धान्याम्लमारनालं सन्धानं काञ्जिकं च सौवीरम् ।	
	6 7 8 9 d अभिषवमवन्तिसोमं तुषोदकं शुक्तमिच्छन्ति ॥३१८॥	
Boiled rice 7.	1 2 e 3 4 5 6 f 7 अन्धः कूरं भक्तं दिदीविरन्नं तथौदनो भिस्सा ।	
Food 2.	1 2 1 2 g 3 अशनं स्यादाहारः पूपापूपौ च पूपलिका ॥३१९॥	A ricecake 3.
Rice gruel 5.	1 2 3 4 h 5 यवागूरुष्णिका श्राणा तरला च विलेपिका ।	
Savoury food, a dainty dish made of milk 3.	i 1 2 3 क्षैरेयी पायसं गोक्तं परमान्नं च सूरिभिः ॥३२०॥	
Sweets 2.	j 1 2 k 1 2 मिष्टान्नं व्यञ्जनं ज्ञेयं वेषवार उपस्करः ।	Condiment 2.
Whey 2.	1 2 1 2 दधिमण्डो भवेन्मस्तु करम्भो दधिसक्तवः ॥३२१॥	Barley meal mixed with coagulated milk 2.
A kind of broth; made of or from or mixed or sprinkled with coagulated milk 3.	1 2 3 1 2 दाधिकं संस्कृतं दध्ना सार्पिषं सर्पिषा स्मृतम् ।	Dressed or cooked with clarified butter 2.
Salted prepared with brine, briny.	m लवणोदकसंसिद्धमुदलावणिकं मतम् ॥३२२॥	
	1 2 3 अङ्गारेषु विपक्वं मांसं भूतिर्भरूटकं भृष्टम् ।	Roasted meat 3.
Dressed or boiled in a pot 2.	n 1 2 1 2 उख्यमुखासंसिद्धं शूले शूल्यं भटित्रं च ॥३२३॥	Roasted on a spit 2.
Coagulated milk 2.	1 2 किलाटः कूर्चिका चेति क्षीरस्य विकृती उभे ।	
Raw sugar 1. गौडी Spirit distilled from molasses 1.	o 1 1 1 2 फाणितविकृतिर्गौडी मत्स्यण्डी खण्डशर्कराः ॥३२४॥	Granulated sugar 2.

a कौशिका b मन्थिनी c काञ्चिकं d शुक्ति, सुक्त, शिक्ल e क्रूरं f तथोदनं भित्सा, तयोदनो भित्सा, तथोदनी भित्सा g पूपिका h तरणं, तरुणं, नरणं i क्षीरेयी, क्षैरेयं, क्षेरेयं j मिष्टान्नं भोजनं ज्ञेयं k वेसवार, वेशषार l करंबो m स्मृतम् n उख्यमुखायां, उख्यमुखाया o फाणितं, फणितं ।

Eating 11.	वल्भनमभ्यवहारः प्रत्यवसानं च जेमनं जग्धिः । खादनमशनं भक्षणमाहारो भोजनं स्वदनम् ॥३२५॥	
Enough 2.	पर्य्याप्तमुपसम्पन्नं तृप्तिः सौहित्यमुच्यते ।	Satisfaction 2.
The remnants of food 2.	विघसो भुक्तशेषं स्याद्भुक्तोच्छिष्टं तु फेलिका ॥३२६॥	The leavings of foods 2.
A vessel 4.	अमत्रं भाजनं पात्रं स्थालं तुल्यार्थमिष्यते ।	
A goblet.	गल्वर्कश्चानुतर्षश्च चषकः सरकः स्मृतः ॥३२७॥	
Liquor shop.	आपानं पानगोष्ठी स्यात्सपीतिः सहपानकम् ।	Drinking in company 2.
A relish, a stimulant to drink3.	उपदंशावदंशौ च चक्षणं सम्प्रचक्षते ॥३२८॥	
Intoxicating drink 24.	मध्वासवः शीधु सुरा प्रसन्ना , परिस्रुता स्यान्मदिरा मदिष्ठा । कादम्बरी स्वादुरसा च शुण्डा , गन्धोत्तमा माधवकश्च हाला ॥३२९॥ कल्यं कश्यं तथा मद्यं मैरेयं कापिशायनम् । माध्वीकमासवः प्रोक्तः परिस्रुद्वारुणी मधु ॥३३०॥	
Man, people 12.	मनुष्यो मानुषो मर्त्यो मनुजो मानवो नरः । पुमान्पञ्चजनो ना च पुरुषः पूरुषश्च विट् ॥३३१॥	
Learned, intelligent, wise 28.	धीरो धीमान् लब्धवर्णो विपश्चिद् , वृद्धो विद्वान् प्राप्तरूपोऽभिरूपः । सूरिः प्राज्ञः पण्डितः सन्मनीषी , ज्ञो दोषज्ञः कोविदः स्यात्प्रबुद्धः ॥३३२॥	

a चानुकर्षश्च b स्यात्सम्पीतिः c उपदंशौ d सीधु e परिश्रुता, परिश्रृता f सुंडा, सुडा g कस्यं h परिश्रुद्वा, परिशुद्धा, परिभृद्वा ।

बुधः[18] सुधीः[19] कृती[20] कृष्टिः[21] कविर्[22]व्यक्तो[23] विशारदः[24] ।
विचक्षणश्च[25] मेधावी[26] संख्यावान्[27]मतिमान्[28]मतः ॥३३३॥

Understanding, intellect 13.

प्रेक्षा[1] प्रज्ञा[2] प्रतिभा[3] धीर्[4]धिषणा[5] शेमुषी[6] मनीषा[7] च ।
बुद्धिर्[8]मतिश्च[9] मेधा[10] संख्या[11] संवित्ति[12]रुपलब्धिः[13] ॥३३४॥

Skilful, clever, dexterous, accomplished 11.

चतुरः[1] स्यात्क्षेत्रज्ञः[2] कृतहस्तः[3] कृतमुखश्च[4] कृतकर्मा[5] ।
दक्षः[6] कुशलो[7]ऽभिज्ञो[8] निष्णातः[9] शिक्षितः[10] प्रवीणश्च[11] ॥३३५॥

Stupid, foolish, ignorant 11.

वैधेयो[1] बालिशो[2] बालो[3] जडो[4] जाल्मो[5] यथोद्गतः[6] ।
मूढो[7] मन्दो[8] विवर्णश्च[9] मूर्खः[10] स्यान्मातृशासितः[11] ॥३३६॥

Bad, inferior, low, vile 13.

अर्वाण[1]मणक[2]मपसद[3 a]मवम[4]मवद्यं[5] निकृष्ट[6]मपकृष्टम्[7] ।
अधमं[8] चेलं[9] काण्डं[10] खेटं[11] पापं[12] च रेफसं[13] प्राहुः ॥३३७॥

A thief, a robber 10.

ऐकागारिक[1]तस्कर[2]दस्यु[3]प्रतिरोधकाः[4] परास्कन्दी[5] ।
चौरो[6] मलिम्लुचः[7] स्यात्परिमोषी[8] पारिपन्थिकः[9] स्तेनः[10] ॥३३८॥

A thief who steals in the very sight of the possessor.

पश्यतो यो हरत्यर्थं स चौरः पश्यतोहरः[1] ।
द्रव्यं ह्यपहृतं लोप्त्रं[1] स्तेयं[2] चौर्यमिति[3] स्मृतम् ॥३३९॥

Theft, stolen property 3.

A shoplifter, a cloth-stealer 2. — Bound, tied 3.

पाटच्चरः[b 1] पटचौरो[2] बद्धो[1] नद्धश्च[2] संयतः[3] ।

Conferring happiness 4.

क्षेमङ्करो[1] रिष्टतातिः[2] शिवतातिः[3] शिवङ्करः[4] ॥३४०॥

Dependent, submissive 8.

परवांस्तु[1] पराधीनो[2] निघ्नः[3] परवशस्तथा[4] ।
परतन्त्रः[5] परायत्तः[6] परच्छन्दश्च[7] गृह्यकः[8] ॥३४१॥

Cruel, hard 6.

कठोरः[1] कठिनः[2] क्रूरः[3] कक्खटः[c 4] कर्कशो[5] दृढः[6] ।

Fat 5.

उच्यते बहुलः[d 1] स्थूलः[2] पीनः[3] पीवा[4] च पीवरः[5] ॥३४२॥

a पशदम b पाटचरः पट्टचौरो c कखटः, कषडः, कषढः, कर्कशो दृढ उच्यते d बहल ।

Master, lord 10. [a]अर्यः परिवृढः स्वामी प्रभुर्नेता च नायकः ।
अधिभूरधिपः प्रोक्तो ह्यधीशोऽधिपतिस्तथा ॥३४३॥

An ascetic 7. तपस्वी संयतः शान्तो मुनिर्लिङ्गी यतिर्व्रती ।

A Buddihst mendicant 7. [b]रजोहरणधारी च श्वेतवासाः सिताम्बरः ॥३४४॥

A Jain mendicant 5. नग्नाटो दिग्वासाः क्षपणः [c]श्रमणश्च जीवको जैनः ।
आजीवो [d]मलधारी [e]निर्ग्रन्थः कथ्यते सद्भिः ॥३४५॥

A wicked person 10. दुर्जनः पिशुनः क्षुद्रो नीचः कर्णेजपः खलः ।
दोषग्राही पुरोभागी द्विजिह्वो मत्सरी मतः ॥३४६॥

Mean, miserly stingy 9. कदर्यहीनकीनाशकिम्पचानमितम्पचाः ।
कृपणक्षुल्लकक्लीवक्षुद्रा एकार्थवाचकाः ॥३४७॥

Poor 6. क्षुद्रदरिद्राकिञ्चनदुर्विधदुःस्थाश्च दुर्गताः प्रोक्ताः ।

Low, vile 5. [f]इतरप्राकृतपामरपृथग्जना वर्वराश्च तुल्यार्थाः ॥३४८॥

[g]दाण्डाजिनिकः कुहकः [h]कार्पटिको जालिकश्च कौसृतिकः ।

Hypocrite, illusive, crafty 10. धूर्तो व्यंसक उक्तो मायावी मायिको मायी ॥३४९॥

Voracious 5. आद्यूनः स्यादौदरिको भक्षको घस्मरोऽद्मरः ।

Insatiable. तमसेचनकं प्राहुस्तृप्तिर्यस्य न जायते ॥३५०॥

Maintained by others 4. परान्नः परपिण्डादः परजातः [i]परैधितः ।

Eating all kinds of food 2. सर्वान्नीनः सर्वभक्षो मांसादी [j]शौष्कलः स्मृतः ॥३५१॥ Meat-eater 2.

a आर्यः परिदृढ़ः b ऋजोहरिण, ररोहरण c श्रवणश्च d मधमारी e निर्गयः, निग्रन्थः f इतरः g दण्डाजनिका, दांडाजनिकः, दंडाजनिकः, दांडोजनिकः, दंडाजिनकः h कापटिके i परैधिकः, परैधूंतः । j सौष्कलः, मौष्कलः, मौष्कलिः, मोष्कलिः ।

Meaning	Text	Meaning
Prone or inclined to, bent on or intent upon, engrossed by 4.	1 2 3 4 उच्यते प्रवणः प्रह्वस्तत्परश्च परायणः ।	
Conversant with 4.	1 a 2 3 4 व्युत्पन्नः प्रहतः क्षुण्णः संस्कृतश्च निगद्यते ॥३५२॥	
Hankering after, addicted to, longing for 5.	1 2 b3 4 5 लोलुभं लोलुपं लोलं लालसं लम्पटं विदुः ।	
Quick 3.	1 2 3 c1 d2 प्रतूर्णस्त्वरितस्तूर्ण उत्सुकः प्रसृतः स्मृतः ॥३५३॥	Desiring 2.
A valorous warrior 5.	1 2 3 4 5 शूरो वीरश्च विक्रान्तो भटश्चारभटो भवेत् ।	
Timid, frightened, afraid, agitated 8.	1 2 3 4 5 6 दरितश्चकितो भीतस्त्रस्तो भीरुश्च कातरः ॥३५४॥	
	7 8 क्षुभितः शङ्कितश्चेति नातिनानार्थवाचकाः ।	
Generous, noble 8.	1 2 3 4 महोत्साहो महोद्योगो महेच्छः स्यान्महामनाः ॥३५५॥	
	5 6 e7 8 उदात्तश्च तथोदीर्णो महात्मोदार उच्यते ।	
Rich, wealthy 7.	1 2 3 4 5 6 7 आढ्यः समृद्धो धनवानिन ईशो धनीश्वरः ॥३५६॥	
Diligent in supporting ones family 2.	f 1 g 2 अभ्यागारिकमिच्छन्ति कुटुम्बव्यापृतं जनाः ।	
A traveller 5.	1 2 3 4 5 पान्थोऽध्वगोऽध्वनीनः स्यादध्वन्यः पथिकस्तथा ॥३५७॥	
Light footed, swift 3.	h1 2 3 1 2 जङ्घालो जवनो वेगी पाथेयं शम्बलं स्मृतम् ।	Provender for journey 2.
A guest 4.	i 1 2 j 3 4 आवेशिकः प्राघुणक आगन्तुरतिथिः स्मृतः ॥३५८॥	
Hospitality 3.	1 2 3 आतिथेयं तथातिथ्यमातिथेयी च कथ्यते ।	
A beggar 4.	1 2 3 4 k अर्थी मार्गणकः प्रोक्तो याचकश्च वनीपकः ॥३५९॥	
Begging, solicitation 5.	1 2 3 4 5 अध्येषणैषणा याच्ञा याचना प्रार्थना स्मृता ।	
Hungry 5.	1 1 2 3 4 5 क्षुद्वान्बुभुक्षितः प्सातो जिघत्सुः क्षुधितस्तथा ॥३६०॥	

a प्रहितः b प्रोक्तं c उत्सकः d प्रस्ततः, प्रसितः e महात्म्यो, माहात्म्यो f आभ्यागा g कुटम्ब h जंवालो, जांघालो, जंघाजो i आवेशकः j प्राघुणिक, प्राद्युणिक k वनीयकः l क्षुद्रान् बुभुक्षितप्सतो, क्षुद्वान्, बुभुक्षितप्सातो ।

Hunger 6.	[1]अशनाया [2]बुभुक्षा [3]प्सा [4]जिघत्सा[5]क्षुत्[6]क्षुधाः समाः ।	
Angry 5.	[1]कोपनः [2]क्रोधनः [3]क्रोधी [4]रोषणः स्याद[5]मर्षणः ॥३६१॥	
Anger 5	[1]कोपः [2]क्रोधस्तथा[3]मर्षो [4]रोषः [5]प्रतिघ [a]उच्यते ।	
Thirsty 4	[1]तृषित[2]स्तर्षितः प्रोक्तः [3]पिपासुश्च [4]पिपासितः ॥३६२॥	
Thirst 5	[1]उदन्या [2]तर्ष[3]तृट्[4]तृष्णा[5]पिपासाश्च समाः स्मृताः ।	
Covetous, greedy 6	[b][1]तृष्णको [2]गर्धनो [3]गृध्नु[4]र्लिप्सु[5]र्लुब्धो[6]ऽभिलाषुकः ॥३६३॥	
Covetousness, desire 6.	[1]तृष्णा[2]भिलाषो [3][c]लिप्सा[4]शा [5]धनाया [6]गर्धनोच्यते ।	
Dumb, speechless 2.	[1]अधरो [2]हीनवादी स्यात्[1]प्रसक्तः [d][2]प्रसृतः स्मृतः ॥३६४॥	Longing for 2.
A slave, a servant.	[1]दासो [2]दासेरक[3]श्चेटो [4]भुजिष्यः [5]किङ्करो मतः ।	
Gentle or pleasant discourse 2.	[1]श्लक्ष्णो [2]मधुरवाक् प्रोक्तः [1]स्थूललक्षो [2]बहुव्ययी ॥३६५॥	Munificient 2.
Affable in address.	[1]प्रियवाग्दानशीलश्च [2]वदान्यः परिकीर्तितः ।	
Despised 4.	भवे[1]दक्षिगतो [2]द्वेष्यः [e][3]प्रणाय्यो[4]ऽसंमतो मतः ॥३६६॥	
Handsome pleasing 5.	[1]चक्षुष्यः [2]सुभगो ज्ञेयो [3]वल्लभो [4]दयितः [5]प्रियः ।	
A poltroon, a dunghill-cock 3.	[1]गेहेनर्दी [2]गेहेशूरः [3]पिण्डीशरश्च कथ्यते ॥३६७॥	
The dog in the manger 1.	स्थानस्थो यो परान् द्वेष्टि [1]गोष्ठश्वं तं विदुर्बुधाः ।	
	असौ पञ्चजनीनः स्याद्यो भाण्डादिरतो नरः ॥३६८॥	An actor, a mimic.
A passionless saint 2.	[1]वैरङ्गिको [2]विरागार्हो [1]धनवान[f][2]स्तिमान्मतः ।	Rich 2.
A messenger 2.	[g][1]प्रेष्यः प्रोक्तः [2]परिस्कन्दः [1]कर्मशूरश्च [2]कर्मठः ॥३६९॥	A careful worker, one who works scrupulously.
Skilful, clever.	[1]अलङ्कर्मीण इत्युक्तः कर्मशीलस्तु यः पुमान् ।	
Swift, quick 2.	[1]उत्ताल[2]स्त्वरितो ज्ञेयो [1]विश्रब्धः [2]स्थिर उच्यते ॥३७०॥	Trustworthy, reliable 2.

a इष्यते b तृश्चिको c लिप्सा च शायनाया, लिप्सा च शाधनाया, लिप्सा स्याद्धनाया, लिप्सास्याद्वनाया d प्रसितः e प्राणधः, प्रेणायः, प्राणाच्छायः, प्रोणाद्यः, प्राणाय्ये f स्तिमान्स्मृतः, स्तिवान्मतः, स्तिभवामतः g प्रेक्षः प्रेक्ष्यः ।

	तीक्ष्णोपायेन योऽन्विच्छेत्स आयःशूलिको[1] मतः ।	A man who, in order to gain an object, uses forcible instead of gentle means.
Painful.	अरुन्तुदः[1] स्याद्व्यथको[2] वियातो[1] धृष्ट[2] उच्यते ॥३७१॥	Bold, impudent.
Hurtful.	शरारु[1]र्घातको[2] हिंस्रो[3] नृशंसः[4] क्रूरकर्मकृत्[5] ।	
Righteous 3.	साधुः[1] सज्जन[2] आर्यः[3] स्याद्गृहमेधी[1] गृहाधिपः[2] ॥३७२॥	A house holder 2.
	कुशाग्रीयमतिः[1] प्रोक्तः सूक्ष्मदर्शी[2] च यः पुमान् ।	Acute, sharp-minded 2.
Intelligent, thoughtful 2.	चिद्रूपः[1] स्यात्सहृदयः[2] सहस्तः[1] शिक्षितायुधः[2] ॥३७३॥	Skilled in handling weapons 2.
An eloquent.	समुखः[1 a] स खलु प्रोक्तो यो वक्ति प्रतिभान्वितः ।	
	नीलीरागः स विज्ञेयः स्थिरप्रेमा च यः पुमान् ॥३७४॥	Firm and constant in affection or attachment.
Unsteady in affection or attachment.	क्षणमात्रानुरागी च हरिद्राराग उच्यते ।	
Best 2.	शाली[b 1] श्रेयान[2]धृष्टौ[1] च प्रोक्तौ शालीनशारदौ[2] ॥३७५॥	Diffident, bashful.
	दूरार्थानर्थसन्दर्शी दीर्घदृष्टिः[1] प्रकीर्तितः ।	Foresighted.
Quick witted.	प्रत्युत्पन्नमति[1]र्ज्ञेयस्तत्कालोत्पन्नधीर्नरः ॥३७६॥	Talking no matter, deserving no matter, deserving no reply, talking nonsense.
Fatalist.	यद्भविष्यो दैवपरो[1] यद्वदः[1] स्यादनुत्तरः[2] ।	
Stupid 2.	अज्ञो[1] मातृमुखः[2] प्रोक्तो दुर्मुखो[1] मुखरः[2] स्मृतः ॥३७७॥	A foul-mouthed 2.
Speaking improperly 2.	कद्वदो[1] गर्ह्यवादी[2] स्यात्कट्वरः[c 1] कुत्सितो[2] भवेत् ।	Contemptible despised 2.
At the end of compounds, anything excellent or prominent of its kind.	प्रकाण्डोद्धौ[d 1] प्रशंसायामाक्षेपे हतकः[1] स्मृतः ॥३७८॥	Taunt.
Proud 2.	अहंयुः[1] स्यादहङ्कारी[2] शुभंयुः[1] शुभसंयुतः[2] ।	Happy 2.
Independent.	यथाकामी[1] स्वरुचिः[2] स्यात्स्वच्छन्दो[3] निरवग्रहः[4] ॥३७९॥	
Searching, enquiring 2.	अन्वेष्टा[1]नुपदी[2] प्रोक्तः प्रतिभू[1]र्लग्नकः[2] स्मृतः ।	Surety sponsor 2.
Convalescent 3.	रोगादुन्मुक्त[1] उल्लाघः[2] कल्यो[1] वार्त्तो[e 2] निरामयः[3] ॥३८०॥	Healthy 3.
Long lived 2.	जैवातृकः[1] स्यादायुष्मान्[2] बलवानं[1 f]सलो[2] मतः ।	Strong 2.
Goat-herd 2.	जाबालः[1] स्यादजाजीवः[2] कम्रः[1] कामी[2] च कामुकः[3] ॥३८१॥	Lustful 3.

a सुमुखः b शीली c स्यात्कद्वरः, करद्वरः, कांडूरः
d प्रकांडोद्यौ, प्रकांडोद्यौ, प्रकांडाब्धौ e नार्यश्च कथ्यते, वात्तश्च कथ्यते, नार्त्तश्च कथ्यते f बलवान्मांसलो ।

Libertine,a gallant.	वेश्यापतिर्[1] भुजङ्गः[2] स्याद्विटः[3] पल्लवकः[a][4] स्मृतः ।	
Confused 2.	विहस्तो[1] व्याकुलः[2] प्रोक्तः कुण्ठो[1] मन्दः[2] क्रियासु यः ॥३८२॥	Slow at work 2.
Active 2.	क्रियावान्[1] कर्मसूद्युक्तो[2] दीर्घसूत्रो[b][1] जडक्रियः[2] ।	Delatory,sluggard2.
Insulted 2.	निकृतो[c][1] विप्रलब्धः[2] स्यात्समुन्नद्धो[1]ऽतिगर्वितः[2] ॥३८३॥	Conceited 2.
Respected, honoured 4.	प्रतीक्ष्यः[1] कथ्यते पूज्यः[2] पूजितो[3]ऽपचितो[4] भवेत् ।	
Envious 2.	ईर्ष्यालुः[1] कुहनः[2] प्रोक्तो जारो[1] ह्युपपतिः[2] स्मृतः ॥३८४॥	A paramour 2.
Straight for ward2.	सरलो[1] दक्षिणो[2] ज्ञेयो विदग्ध[1]श्छेक[2] उच्यते ।	Shrewd, clever 2.
Looking up wards 2.	उत्पश्य[1]मुन्मुखं[2] विद्यान्न्युब्जं[1] विद्यादधोमुखम्[2] ॥३८५॥	Bent downwards2
Sitting 2.	आसीन[1] उपविष्टः[2] स्यादूर्ध्व[1][d] ऊर्ध्वन्दमः[2] स्थितः[3] ।	Erect, raised, standing up 3.
Drunk, intoxicated 2.	क्षीवो[1] मत्तः[2] क्षमः[1] शक्तः[2] प्रगल्भः[1] प्रौढ[2] उच्यते ॥३८६॥	Able 2; bold 2.
Desiring, longing for 2.	उत्क[1] उत्कण्ठितः[2] प्रोक्तो विक्लवो[1] विह्वलः[2] स्मृतः ।	Agitated 2.
Indolent, lazy 6.	अलसः[1] शीतको[2][e] मन्दो[3] जडो[4] जिह्म[5]श्च मन्थरः[6] ॥३८७॥	
Deformed 2.	पोगण्डो[1] विकलाङ्गः[f][2] स्याल्लोहलो[1]ऽव्यक्तवाग्[2]भवेत् ।	Speaking indistinctly 2.
Gambler 2.	कितवः[1] स्याद्द्यूतकारो[2] द्यूत[1]मक्षवती[2] भवेत् ।	Gambling 2.
Playing with dice2.	अक्षो[1] दुरोदरं[2][g] प्रोक्तं सभिको[1] द्यूतकारकः[2] ॥३८८॥	The keeper of a gambling house 2.
Examiner 2.	परीक्षकः[1] कारणिको[2] गृह्यः[1] पक्ष[2] उदाहृतः ।	A partisan, a follower 2.
Noble, well-born 2.	अभिजातः[1] कुलीनः[h][2] स्यात्कुचरः[1] कुटिलाशयः[2] ॥३८९॥	Malevolent 2.
An elephant rider2.	निषादिनो[1] गजारोहा[2] अश्वारोहास्तु[1] सादिनः[2] ।	A horse rider.
Charioteer 2.	रथिनः[1] स्यन्दनारोहा[2] नावारोहास्तु[1] नाविकाः[2] ॥३९०॥	A boatman.

a पल्लविकः b दीर्घसूत्री c निष्कृतो, निःकृतो, निःकृष्टो
d स्यादूद्ध्र्वमूद्ध्र्वंदमः स्थितः, स्यादूद्ध्र्वमूद्ध्र्वमवस्थितः, स्यात् ऊर्ध्वमूर्ध्वमद-स्थितः, स्यात ऊर्ध्वमूर्ध्वमदस्थितः, स्यादूर्द्धऊर्द्धदमस्थितिः e सीतको, शीतगो
f विपुलांगः g दरोदरं h कुलीनश्च कुचरः ।

A Brahaman 10.
ब्राह्मणो वाडवो विप्रो भूमिदेवो द्विजोत्तमः ।
अग्रजन्मा द्विजन्मा च षट्कर्मा सोमपा द्विजः ॥३९१॥

The three superior castes.
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजातयः ।

The sudra caste 2.
शूद्रस्तुरीयवर्णः स्यात्तद्भेदास्त्वन्त्यजाः स्मृताः ॥३९२॥

A kind of sudra caste

ब्रह्मचार्यादयो वेदे प्रोक्ताश्चत्वार आश्रमाः ।
शूद्रोऽगृहस्थ एव स्यात्क्षत्रियो न यतिर्भवेत् ॥३९३॥

The four Ashramas as specified in Vedas.
(1) Brahmacharya
(2) Gribastha
(3) Vānprastha,
(4) Sanyāsa.

ब्रह्मचारी भवेद्वर्णी गृहस्थः स्नातकस्तथा ।

A house-holder; Brahman just returned from the house of his preceptor and became an initiated house holder 2.

A hermit, one in the third order of his religious life 2.
वैखानसो वानप्रस्थः कर्मसंन्यासिको[a] यतिः ॥३९४॥

An ascetic, one who has renounced the world and controlled his passions 2.

One well versed in vadas 4.
अनूचानः सर्ववेदः श्रोत्रियश्छान्दसो मतः ।

The son of a famous father.
प्रख्यातात्पितुरुत्पन्न आमुष्यायण इष्यते ॥३९५॥

Lineage, family, race 6.
अन्ववायोऽन्वयो वंशो गोत्रं चाभिजनः[b] कुलम् ।

Conduct, character, behaviour 4.
चरित्रं चरितं शीलं चारित्रं च समं स्मृतम् ॥३९६॥

वृत्ताध्ययनसम्पत्तिरिष्यते ब्रह्मवर्चसम् ।

Divine glory, spiritual pre-eminence resulting from sacred knowledge.

Religious studentship, celebacy, self-restrained.
ब्रह्मचर्यं बुधाः प्राहुः समस्तेन्द्रियसंयमम् ॥३९७॥

संज्ञेय उपसङ्ग्राह्यो योऽभिवाद्यो यथाविधि ।

To be respectfully saluted, respectable, venerable.

Respectful salutation.
उपसङ्ग्रहणं चापि प्राहुः सन्तोऽभिवादनम् ॥३९८॥

निवृत्तेन्द्रियलौल्यस्तु श्रान्तः शान्तश्च[c] कथ्यते ।

Calm, peaceloving, free from lust.

Patient of bodily, mortifications or austerities etc. 2.
तपःक्लेशसहो दा तो ह्यन्तर्वाणिश्च शास्त्रवित् ॥३९९॥

Skilled or versed in scriptures, very learned 2.

A teacher 2.
अध्यापक उपाध्यायो व्याख्या विवरणं स्मृतम् ।

Commentary 2.

A pupil 5.
शिष्यान्तेवासिनौ छात्रः शैक्षः[d] प्राथमकल्पिकः ॥४००॥

An obstacle 4.
विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहो व्यवायश्च प्रकीर्तितः ।

A complete perusal 2.
साकल्यवचनं प्राज्ञैः पारायणमुदाहृतम्[e] ॥४०१॥

a कर्मसां, कर्मसो b चाभिजनं, चाभिजनकुलम् c शांतः श्रांतश्च
d शैक्ष्यः, शिष्यः, शैष्यः e मितिस्मृतम् ।

Oral tradition 4. — आम्नायः सम्प्रदायः स्यात्पारम्पर्यं गुरुक्रमः ।

Moral 2. — प्रयतः स्यादनुच्छिष्टः संशितश्च[a] सुनिश्चितः ॥४०२॥ — Decided 2.

An astronomer, an astrologer 8. — सांवत्सरो ज्योतिषिको[b] ज्ञानी मौहूर्तिकस्तथा । कार्तान्तिकस्तु दैवज्ञ आदेशी गणकः स्मृतः ॥४०३॥

A man of the first three classes who has lost his caste owing to non-performance of the principal purifactory rites 2. — व्रात्यः संस्कारहीनः

A religious student who has committed an act against his vow of celibacy 2. — स्यादवकीर्णी क्षतव्रतः ।

A brahman who has allowed his sacred fire to become extinct. — शिश्विदानो

wicked 2. — दुराचारस्त्यक्ताग्निर्वीरहा द्विजः ॥४०४॥

Religious hypocrite, an imposter 2. — धर्मध्वजी[c] लिङ्गवृत्तिः

A Brahman who neglects his duties of his caste 2 — रस्वाध्यायो निराकृतिः ॥

One who lives by arms, a warrior, a soldier 2. — शस्त्राजीवः काण्डस्पृष्टो[d]

An unworthy brahman, a contemptuous term for a brahaman. — ब्रह्मबन्धुर्द्विजोऽधमः[e] ॥४०५॥

One who gets a living only by the merit of his caste. — जातिमात्रोपजीवी च कथ्यते ब्राह्मणब्रुवः[f] ।

An exclamation uttered by a brahman in the sense of "help ! help !" — अब्रह्मण्यमवध्यं[g] स्याद्

Fit for a brahaman. — ब्रह्मण्यं ब्रह्मणे हितम् ॥४०६॥

The holy sacrificial cord worn by the Hindus over their left shoulder and under the right. — उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रक्षिप्तं दक्षिणे करे । प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बितम् ॥४०७॥

Bathing, purifactory ablution, extracting the somā juice & drinking it. — आचमनमुपस्पर्शनमाप्लवनं स्नानमिष्यते सवनम् ।

Washed 3. — निर्णिक्तं प्रक्षालितमाहुर्धौतं च तुल्यार्थम् ॥४०८॥

A religious mendicant 9. — पाराशरी व्रती भिक्षुर्मस्करी पारिरक्षिकः[h] । परिव्राजकस्तपस्वी कर्मन्दी तापसः स्मृतः ॥४०९॥

An upper garment 3 — वैकक्षमुत्तरासङ्गः[i] प्रोक्ता वृहतिका तथा ।

Loin cloth. — पर्यस्तिका परिकरः पर्यङ्कश्चेति कथ्यते ॥४१०॥

A cloth to cover the privities 2, — कक्षापटः स्यात्कौपीनं

A water pot 2, — कुण्डिका च कमण्डलुः ।

A staff. — आषाढो व्रतिनां दण्डो

The seat of an ascetic 2. — व्रतिनामासनं वृषी[j] ॥४११॥

a शंसितश्च b ज्योतिषको c धर्मध्वजी d कांडपृष्टो, कांडपृष्टे e द्विजाधमः, द्विजोत्तमः f ब्रह्मणो, ब्राह्मणे अब्रह्मण्यं, अब्रह्मण्यमवद्यं g अब्रह्मण्यवर्ण्य h पारिरक्षकः, परिरक्षकः i वेकक्ष, वेकष्य, वैकक्ष्य j वृसी, भृसी ।

A sage
1 2 3 4
ऋषिस्त्रिकालदर्शी स्यान्मुनिर्वाचंयमो मतः ।

Name of Valmiki the reputed author of the Ramayan,
1 2 3
प्राचेतसस्तु वाल्मीकिर्मैत्रावरुण उच्यते ॥४१२॥

Name of Agastya.
1 2 3 4
उक्तोऽगस्तिरगस्त्यो लोपामुद्रापतिश्च घटयोनिः ।

Name of Vyas.
1 2 3 4
सात्यवतेयः पाराशर्यो द्वैपायनो व्यासः ॥४१३॥

Sacrifice 12.
1 2 3 4 5 6 7
यागो यज्ञः क्रतुः स्तोमः सप्ततन्तुर्मखोऽध्वरः ।
8 9 10 11 12
वितानं संस्तरो बर्हिः सवः सत्रं च कथ्यते ॥४१४॥

Fire producing wooden stick 2.
1 2
निर्मन्थकाष्ठमरणिः प्रणीतोऽग्निश्च संस्कृतः ।

Fire consecrated by prayers.

An altar especially, prepared for sacrifice 2.
1 a 2 1 2
वेदी परिष्कृता भूमिः पात्रमुक्तं स्रुगादिकम् ॥४१५॥

A sort of wooden ladle used for pouring clarified butter on Sacrificial fire.

An oblation of rice or barley of the boiled in milk for presentation to Gods 2.
1 2 1 b 2
हव्यपाकश्चरुः प्रोक्तः सान्नाय्यं हविरुच्यते ।

An oblation of of burnt offering, also of clarified butter, rice or barley mixed with Ghee.

Curd of milk and whey, a mixture of boiled and coagulated milk.
1 c
शृते क्षीरे दधिक्षिप्तमामिक्षा कथ्यते बुधैः ॥४१६॥
1
उपाकृतस्तु विज्ञेयो मन्त्रेण प्रोक्षितः पशुः ।

A sacrificial animal killed during the recitation or prescribed prayers.

Offered as an oblation to fire 1.
1 2 1 2
हुतं वषट्कृतं ज्ञेयं यज्ञान्तोऽवभृथः स्मृतः ॥४१७॥

The end or completion of a principal sacrifice.

One who offers a sacrifice to Brahaspati.
1
वृहस्पतिसवेनेष्टं येनासौ स्थपतिर्भवेत् ।
सर्ववेदास्तु विज्ञेयो दत्तसर्वस्वदक्षिणः ॥४१८॥

One who performs a sacrifice by giving away all his wealth.

Gift, donation 10.
1 2 d 3 4 5
विश्राणनं विहापितमंहतिरपवर्जनं वितरणं च ।
e 6 7 8 9 10
निर्वपणं च स्पर्शनमुत्सर्गः स्यात्प्रदेशनं दानम् ॥४१९॥

One who performs sacrifice 5.
1 2 3 4 5
यष्टा च यजमानः स्यादादेष्टा दीक्षितो व्रती ।

Performer of many sacrifices 2.
1 2 1 2
इज्याशीलो यायजूको यज्वा स्यादासुतीवलः ॥४२०॥

One who performs sacrifices in accordance with vedic precepts 2.

A king 12.
1 2 3 4 5 6 7
राजा राजन्यो राट् प्रजापतिः क्षत्रियो नृपः क्षत्रम् ।
8 9 10 11 12 f
मूर्धाभिषिक्तभूपतिपार्थिवनरदेवलोकपालाः स्युः ॥४२१॥

a परिस्कृता b साम्नायं, साम्नार्यहविरुच्यते c आमिष्या, आमक्षः d विहायनमंहि, विहायितमं, विहायतमं, विदायनमं e निर्वापणं, निव्रापणं f पालाश्च ।

An emperor. येनेष्टं राजसूयेन स सम्राट्[1] परिकीर्तितः ।
चक्रवर्ती[2] सार्वभौमो[3] मध्यमो मण्डलेश्वरः ॥४२२॥

Umbrella 2. आतपत्रं[1] भवेच्छत्रं[2] चामरं[1] तु[a] प्रकीर्णकम्[2] । A fan, whisk 2.
हैमं सिंहासनं राज्ञां स्मृतं भद्रासनं बुधैः ॥४२३॥ A throne.

A door-keeper 8. द्वास्थो[1] दौवारिकः[2] क्षत्ता[3] दण्डी[4] वेत्रधरस्तथा[5] ।
उत्सारको[6] द्वारपालः[7] प्रतिहारो[8] बुधैः स्मृतः ॥४२४॥

A spy 9. अपसर्पश्चरश्चारः[1 2 3] प्रणिधिर्गूढपूरुषः[4 b 5] ।
यथार्थवर्णो[6] मन्त्रज्ञः[7] स्पशो[8] हेरक[c 9] उच्यते ॥४२५॥

A minister 4. मन्त्री[1] बुद्धिसहायः[2] स्यादमात्यः[3] सचिवस्तथा[4] ॥

Domestic priest3. सौवस्तिक[1] इति प्रोक्तः पुरोधाश्च[2] पुरोहितः[3] ॥४२६॥

Principal 2. महामात्रः[d 1] प्रधानं[2] स्यादध्यक्षोऽधिकृतः[1 2] स्मृतः । A superintendent 2.

An attendant on women's appartment 4. सौविदः[1] सौविदल्लश्च[2] स्थापत्यः[3] कञ्चुकी[4] मतः ॥४२७॥

A friend 5. मित्रं[1] सखा[2] वयस्यश्च[3] सुहृत्[4]स्निग्धश्च[5] कथ्यते ।

A follower 5. अनुजीवी[1] सहायः[2] स्या सेवकोऽनुचरोऽनुगः[3 4 5] ॥४२८॥

A judge 3. प्राड्विवाकोऽक्षदृक्[1 2] स्थेयो[3 e] न्यायोऽक्ष[1 2] इति कथ्यते । Justice, equity 2.

A superintendent of the harem. अन्तःपुरेष्वधिकृतः स्मृतोऽन्तर्वंशिको नरः ॥४२९॥

A eunuch 8. क्लीवो[1] वर्षधरः[f 2] षण्ढः[3] पण्डकश्च[4] नपुंसकः[5] ।
उभयव्यञ्जनं[g 6] पोटा[h 7] तृतीयाप्रकृतिः[8] स्मृताः ॥४३०॥

A cook 4. आरालिकः[1] सूपकारः[2] सूदः[3] स्य द्वल्लवस्तथा[4] ।

A kitchen superintendent 2. पौरोगवस्तु[1] विज्ञेयः सूदाध्यक्षो[2] मनीषिभिः ॥४३१॥

a च प्रकीर्तितम् b गूढपौरुषः, गूढपोरुषः c हरक, धेरिक, हैरिक d महामात्यः प्रधानः e स्तेयो, स्तयो, ज्ञेयो f वर्षचरः g उभयं ब्यंजनं h पोटो योषीया, योषोया ।

A jester 3.	वैहासिकः[1] केलिकिलो[2][a] बुधैर्वासन्तिको[3] मतः ।	
Play, jest, merriment 6.	परिहासो[1] द्रवो[2] नर्म[3] केलिः[4] क्रीडा[5] च खेलनम्[6] ॥४३२॥	
A body guard 2.	रक्षिवर्गो[1] ह्यनीकस्थः[2] सेनानीर्[1]वाहिनीपतिः[2] ।	A commander, a general 2.
Income 2.	अर्थागमो[1] भवेदायो[2] भागधेयो[1] बलिः[2] करः[3] ॥४३३॥	Tax 3.
A present, bribe 9.	उपदा[1] प्राभृतं[2] प्रोक्तमुपग्राह्य[3]मुपायनम्[4] ।	
	लञ्चो[b][5]त्कोच[6]मुपादान[7]मुपचार[8]स्तथामिषम्[9] ॥४३४॥	
A bard 6.	प्रबोधका[1] मागध[2]वन्दि[3]सूता[4],	
	वैतालिका[5] मङ्गलपाठकाश्च[6] ।	
Hunting, chase 5.	अच्छोटनं[c][1] स्यान्मृगया[2] मृगव्यं[3],	
	पापर्द्धि[4]राखेटक[5][d] इत्यभिन्नम् ॥४३५॥	
A horse, a pony 14.	अर्वा[1] गन्धर्वो[3]ऽश्वः[3] सप्ति[4]र्वाजी[5] तुरङ्गम[6]स्तुरगः[7] ।	
	तार्क्ष्यो[e][8] हरि[9]स्तुरङ्गो[10] युयुरुक्तो[11] घोटको[12] हयो[13] वाहः[14] ॥४३६॥	
Different varieties of horses according to their qualities.	गुणदेशकृतास्तेषां संज्ञाः स्युरनेकधा लोके ।	
	कर्कः श्वेतः शोणो रक्तो हेमश्च कृष्णवर्णोऽश्वः ॥४३७॥	
	मल्लिकाक्षः सितैर्नेत्रैः कृष्णैरिन्द्रायुधो मतः ।	
	श्रीवृक्षकी स विज्ञेयः श्रीवृक्षो यस्य लाञ्छनम् ॥४३८॥	
	आजानेयाः कुलीनाः स्युः पारसीका वनायुजाः ।	
	काम्बोजा वाह्लिकाः प्रोक्ताः सैन्धवाः सिन्धुपारजाः ॥४३९॥	
Ill-trained or unbroken horse 2.	शूलको[f][1] दुर्विनीतोऽश्वः[2] पोतः[1] प्रोक्तः किशोरकः[2] ।	Colt 2.
A mare 5.	अर्वती[1] वडवा[2] वामी[3] प्रसूता[4] वाजिनी[5] स्मृता ॥४४०॥	

a केलिकलो, केलिकिरो, केलिकरो　b लंबोत्को, नृचोत्को, लंकोत्को
c आछोटनं, अछोएनं, आछोदनं　d खोटकभि, खेटकमि -　e तार्क्षो
f सूकलो, शूकलो ।

A tail 3.	1 2 3 1 2 लूनं पुच्छं तु लाङ्गूलं वालहस्तश्च वालधिः ।	A hairy tail 2.
The nostril of a horse 2.	1 2 a 1 b 2 प्रोथ इत्युच्यते घोणा मध्यं कश्यं खुरः शफः ॥४४१॥	Hoof 2.
A saddle 2.	1 2 1 2 पर्याणं स्यात्पल्ययनं खलीनं कविकं स्मृतम् ।	The bit of a bridle 2.
A whip 2.	1 c2 1 2 d3 चर्मदण्डः कशा प्रोक्ता वल्गारश्मिकुशाः स्मृताः ॥४४२॥	Bridle, rein 3.
Speed. velocity 8.	1 2 3 4 5 6 7 8 रंहस्तरः स्यदः स्यात्प्रसरो वेगो रयो जवो वाजः ।	
Dust, powder. sand 5.	1 2 3 4 5 6 पांशुः क्षोदो रेणुश्चूर्णं धूली रजश्च तुल्यार्थाः ॥४४३॥	
A cart 3.	1 2 3 1 2 अनः शताङ्गः शकटः स्यन्दनः कथ्यते रथः ।	A chariot 2.
A cart drawn by oxen.	1 2 गन्त्री कम्बलिवाह्यस्तु कूवरी च निगद्यते ॥४४४॥	
A carriage employed at Military exercise.	1 2 e 1 2 f योग्यारथो वैनयिको ह्यध्वन्यः पारियानिकः ।	A carriage fit for travelling 2.
A litter borne on men's shoulders.	1 2 3 g कर्णीरथः प्रवहणं डयनं चेति कथ्यते ॥४४५॥	
A car for carrying images of gods 2.	1 2 1 h 2 देवतार्थो देवरथो युद्धार्थः साम्परायिकः ।	A war chariot 2.
A pleasure van 2.	1 2 क्रीडारथः पुष्परथो जेता जैत्ररथः स्मृतः ॥४४६॥	A triumphal car.
A wheel 2.	1 2 1 2 चक्रं रथाङ्गमाख्यातं कूवरं च युगन्धरम् ।	The pole of a carriage 2.
The periphery of a wheel 3.	1 2 3 1 2 चक्रधारा प्रधिर्नेमिर्नाभिश्चक्रस्य पिण्डिका ॥४४७॥	The nave of a wheel 2.
Any part of a carriage 2.	1 2 1 2 अपस्करो रथाङ्गः स्यादणिरक्षाग्रकीलिका ।	The pin of an axle 2.
A charioteer 5.	1 2 3 4 5 नियन्ता प्राजिता क्षत्ता दक्षिणस्थश्च सारथिः ॥४४८॥	
The charioteer who stands on the left of a champion 2.	1 2 1 2 सव्येष्ठः कथ्यते सूतो वरूथं रथगोपनम् ।	A sort of wooden defence or fender with which a chariot is provided as a defence against collision 2.
A vehicle, a carriage 5.	1 2 i 3 4 5 वाहनं धोरणं युग्यं यानं पत्त्रमिति स्मृतम् ॥४४९॥	

a कस्यं b खुराः शफाः, खराः शफाः c कसा, कसाः d वल्गारश्मिकशाः, वल्गुरश्मिःकशा, वलारश्मिकुशाः, वल्यारश्मिकुशाः e अध्वन्यः, वैनविकोऽध्वन्यः, वैनयको अध्वन्यः f पारियात्रकः, पारियातिकः g तनयं, नयनं h साम्परायकः i युग्मं, युग्वं, युग्यं ।

A litter, a palanquin 2. | A mule 2.

शिविका याप्ययानं स्याद्वेसरोऽश्वतरो मतः ।

A foot soldier, a pedestrian 8.

पदातपत्तिपादातपदातिकपदातयः ।
पद्गश्च पदगश्चेति कथ्यन्ते पादचारिणः ॥४५०॥

A tent 5.

दूष्यं स्थुलं पटकुटी गुणलयनी केणिका च निर्दिष्टा ।

S a pole, a post, a stake 5.

ध्रुवकः शिवकः शङ्कुः पुष्पलकः कीलकः प्रोक्तः ॥४५१॥

A march 3. | A camp 2.

यात्रा प्रयाणं प्रस्थानं निवेशः शिविरं स्मृतम् ।

An attack 3.

अवस्कन्दः प्रपातश्च सौप्तिकं च निगद्यते ॥४५२॥

War, battle, contest, combat, conflict, quarrel 36.

सङ्ग्रामः समितिः समिच्च समरं संख्यं समीकं रणं,
युद्धं युत्प्रधनं मृधं समुदयः संयत्कलिः संयुगम् ।
द्वन्द्वायोधनसम्प्रहारकलहाक्रन्दाहवाभ्यागमाः,
संस्फोटप्रविदारणप्रहरणानीकाजयः सङ्गरः ॥४५३॥
सम्परायः समाघातः प्रघातश्च समाह्वयः ।
जन्यं स्यादभिसम्पातः सम्मर्दो विग्रहस्तथा ॥४५४॥

An enemy, a foe, an adversary 23.

अभियातिररातिरमित्ररिपू,
प्रतिपक्षविपक्षविरोध्यरयः ।
अहितोऽसहनश्च जिघांसुरिति,
प्रथिताः परिपन्थिपरासुहृदः ॥४५५॥

a पदातिपादातिपादिकपदातयः, पदातिपत्तिपादातिपादिकपदातयः, पदात्तिः पादति पत्तिः पदातिकः पदातयः, पादाकः पदिकश्चेति पादाकः पदिक पदिकश्चेति, पादतः पदिकश्वेति, पदातः पदिकश्चेति b केलिका c संजित्कलिः d संस्फोटः, संस्फोटो प्रविदारणं e अभियाति ।

14 15 16 17 a 18
प्रत्यर्थी पर्यवस्थाता द्वेषी वैरी च शात्रवः ।
19 20 21 22 23
शत्रुः सपत्नो भ्रातृव्यः प्रत्यनीको द्विषन्मतः ॥४५६॥

An army 12.
1 2 3 4 5 6 7
पृतना सेना ध्वजिनी पताकिनी वाहिनी बलं सैन्यम् ।
8 9 10 11 12
चक्रं चमूर्वरूथिन्यनीकिनी स्यादनीकं च ॥४५७॥

A flag, banner 5.
1 2 3 4 5
वैजयन्ती पताका च केतुः स्यात्केतनं ध्वजः ।

An ornament on the top of a flag.
अस्योच्चूलावचूलाख्यावूर्ध्वाधोमुखकूर्चकौ ॥४५८॥

An armour, mail 10.
b 1 2 3 4 5
सन्नाहः कवचं वर्म तनुत्राणमुरश्छदः ।
6 7 8 9 10
जगरः कङ्कटो माठी दंशनं जालिका स्मृता ॥४५९॥

A shield.
1 2 3 4
खेटकं फलकं चर्म प्रोक्तमावरणं बुधैः ।

Armed, accoutred.
1 2 3 4
वर्मितः स्यात्कवचितः सन्नद्धो दंशितस्तथा ॥४६०॥

A comple attack.
1 2
सर्वाभिसारमिच्छन्ति सर्वसन्नहनं बुधाः ।

Marching against an enemy, encountering a foe 2.
1 2
यत्सेनयाभिनिर्याणं स्मृतं तदभिषेणनम् ॥४६१॥

Weapon 5.
1 2 3 4 5
हेतिः शस्त्रं प्रहरणमायुधमस्त्रं चतुर्विधं तच्च ।

Kinds of weapon in accordance with their method of using.
मुक्तामुक्तममुक्तं करमुक्तं यन्त्रमुक्तं च ॥४६२॥
c
शक्त्यादि पाणिमुक्तं स्यादमुक्तं क्षुरादिकम् ।
मुक्तामुक्तं तु यष्ट्यादि यन्त्रमुक्तं शरादिकम् ॥४६३॥

A bow 7.
1 2 3 4 5 6 7
अस्त्रं धनुरिष्वासं कोदण्डं धन्व कार्मुकं चापम् ।

A bow-string 7.
1 2 d 3 4 5 6 7
बाणासनं द्रुणा स्यान्मौर्वी ज्या सिञ्जिनी गुणो जीवा ॥४६४॥

A quiver 8.
1 2 3 4 5 6
तूणीरमुपासङ्गस्तूणं तूणी निषङ्ग इषुधिश्च ।

The notched end of a bow 2.
7 8 1 e 2
वाणाश्रयः कलापः कार्मुककोटिर्भवेदटनिः ॥४६५॥

An arrow 16.
1 2 3 4 5 6 7 f 8
कङ्कपत्रशरमार्गणबाणाश्चित्रपुङ्खविशिखेषुकलम्बाः ।
9 10 11 12 13 14 15 16
सायकप्रदरकाण्डपृषत्काः पत्त्रिणः खगशिलीमुखरोपाः ॥४६६॥

a तु b संनाहं c क्षुरकादिकम् d स्यान्मूर्वी e वेदटिनिः, वेदटनी, वेदटिनः f कदम्बा ।

सर्वायसस्तु बाण: [1]प्रक्ष्वेडन [2]एषणश्च [3]नाराच: । — An iron arrow.

तीरीतद्रूलदण्डासनादय: काण्डभेदा: स्यु: ॥४६७॥ — Kinds of arrow.

[1]पत्रपाली [2]भवेद्वाज: [1]कर्तरी [2]पुङ्ख उच्यते । — The feathered part of an arrow 2. / The feather of an arrow 2.

[1]वेध्यं [2]लक्ष्यं [3]शरव्यं च [4]निमित्तं च समं विदु: ॥४६८॥ — An aim, a butt

[1]अर्धचन्द्र[2]क्षुरप्रादि [1]धाराग्रं मुखमुच्यते । — An arrow with a crescent shaped head. / The broad edged head of an arrow.

[1]आराग्रं तु मुखं तेषां पुष्पपत्रादिभेदत: ॥४६९॥ — The point of an awl, an iron thong at the end of a whip.

[1]बाणमुक्तिर्व्यवच्छेदो [1]दीप्तिर्वेगस्य तीव्रता । — Shooting, letting fly an arrow. / The flash-like flight of an arrow.

[1]अभ्यास: कथ्यते [2]योग्या [1]श्रमस्थानं [2]खलूरिका ॥४७०॥ — exercise or practice in general 2. / A place for military exercise.

[1]लघुहस्त: [2]शीघ्रवेधी [1]कृतपुङ्खस्तु [2]शिक्षित: । — An expert or skilful archer 2. / Skilled in archery 2.

स भवेदपराद्धेषुर्यस्य लक्ष्याच्च्युत: खग: ॥४७१॥

[1]निस्त्रिंश: [2]करवाल: [3]खड्ग: [4]कौक्षेयक: [5]कृपाण: स्यात् । — A sword 10.

[6]रिष्टि[7]रसि[8]चन्द्रहासौ [9]तरवारि[10]र्मण्डलाग्रं च ॥४७२॥ — A handle 2.

[1]कोश: [2]प्रत्याकार: [3]खड्गपिधानं [1]त्सरु[2]र्भवेन्मुष्टि: ॥ — A sheath, a scabbard 3.

[1]असिपुत्रिका[2]सिधेनु: [3]क्षुरिका [4]पत्रं च [5]शस्त्रिका ज्ञेया ॥४७३॥ — A knife 5.

[a 1]परश्वध: [2]कुठार: [3]स्यात्परशु: [4]स्वधितिस्तथा । — An axe, a hatchet 4.

[b 1]निशातं [2]निशितं [3]धौतं [4]तेजितं च समं स्मृतम् ॥४७४॥ — Sharpened, whettened 4. / A mallet, hammer 2.

[1]प्रासो निगदित: [2]कुन्तो [1]मुद्गरो [2]द्रुघण: स्मृत: । — Lance 2. / An iron club.

[1]क्रकचं [2]करपत्रं [1]स्यात्परिघ: [2]परिघातन: ॥४७५॥ — A saw 2.

यष्टिपट्टि[c]सदु:स्फोट[d]मुखण्डीशङ्कुशक्तय: ।

[e]भिन्दमालगदादण्डचक्राद्या: शस्त्रजातय: ॥४७६॥ — Kinds of different weapons.

a परस्वध: b निसानं, निशानं, निशांतं, निशान्ता c पट्टिश d मुषडी, मृशंडी, मुखंढी, मुखंडी, मखुंढी e भिंडिभाला, भिंडिभाल, भिंडुमाल, भिंदिपाल ।

[1]मारणं [2a]निशरणं [3]निवर्हणं ,
[4]सूदनं [5]निरसनं [6]निशुम्भनम् ।
[7]घातनं [8]प्रशमनं [9]प्रमापणं ,
[10]वर्जनं [11]विशसनं [12]प्रवासनम् ॥४७७॥
[13]निर्वापण[14]निर्वासन[15]कदन[16]व्यापादनानि तुल्यानि ।
[17]निर्ग्रन्थन[18]मालम्भः [c19]प्रमया [20]हिंसा च [21]संज्ञपनम् ॥४७८॥

Killing, slaughter, slaying 21.

[1]नष्टो [2]गृहीतदिक् प्रोक्तः [3]कान्दिशीको [4]भयद्रुतः ।

A runaway.

[1]प्रस्कन्नः [2]पतितो ज्ञेयो [b1]जितकाशी [2]जिताहवः ॥४७९॥

Defeated in battle 2.

Victorio

[1]शुद्धान्त[2]मवरोधश्च राज्ञो[3]ऽन्तःपुरमुच्यते ।

A royal harem.

[1]कृताभिषेका [2]महिषी भट्टिन्य इतराः स्मृताः ॥४८०॥

Anointed queen.

[1]रामा [2]वामा [3]वामनेत्रा [4]पुरन्ध्री ,
[5]नारी [6]भीरु[7]र्भामिनी [8]कामिनी च ।
[9]योषा [10]योषि[11]द्वासिता [12]वर्णिनी [13]स्त्री ,
[14]स्यात्सीमन्तिन्य[15]ङ्गना [16]सुन्दरी च ॥४८१॥
[17]अबला [18]महिला [19]ललना [20]प्रमदा [21]रमणी [22]नितम्बिनी [23]वनिता ।
[24]दयिता [25]प्रतीपदर्शिन्युक्ता [26]कान्ता [27]वधू[28]र्वशा [29]युवतिः ॥४८२॥

A woman 29.

[1]कुमारी कथिता [2]कन्या [1]किञ्चित्प्रौढा [2]सुवासिनी ।

A girl 2.

Half grown girl 2.

[1]वर्या [2]पतिंवरा प्रोक्ता [1]नग्ना प्रोक्ता च [2d]कौटवी ॥४८३॥

A girl who chooses her husband 2.

A naked womans 2.

[1]अदृष्टरजसं नारीं [2]नग्निकां ब्रुवते बुधाः ।

A girl before menstruation.

[1]वधूटी च [2]चिरण्टी च [3]द्वितीयवयसौ स्त्रियौ ॥४८४॥

A woman married or single who continues to reside after maturity in her father's house; a young woman in general

[1]अर्द्धवृद्धा तु या नारी सा कात्यायनिका स्मृता ।

An elderly or middle-aged widow.

[1]पुनर्भू[2]र्दिधिषूः प्रोक्ता [1]वृषस्यन्ती [2]रतार्थिनी ॥४८५॥

A woman who has married a second time 2.

Lustful, lascivious2.

a निःसरणं, निसरणं b जितकासी c प्रमयः d कोट्टवी ।

A woman whose husband is living 2. — A woman whose children are lving 2.

1 2 1 2
पतिवत्नी जीवत्पतिर्जीवतोका च जीवसूः ।

A woman without husband and children.

1
रहिता पतिपुत्राभ्यां निर्वीरेत्यभिधीयते ॥४८६॥

A widow 2. — A woman who does not get menstruation.

1 2 1 a 2
विश्वस्ता विधवा प्रोक्ता पुष्पहीना च निष्कला ।

A female beggar 3. — A woman's female friend 3.

1 2 3 1 2 3
श्रमणा भिक्षुकी मुण्डा वयस्याली सखी स्मृता ॥४८७॥

A woman in her monthly courses 5.

1 2 3
अवीरुदक्या च रजस्वला स्यात्,

4 5
आत्रेयिका पुष्पवती च नारी ।

A girl in whom the menstruation has just commenced 2.

1 2
राका भवेज्जातरजास्तु कन्या,

A woman bringing forth a dead child 2.

1 2 c
नश्यत्प्रसूतिः कथिता च भिन्दुः ॥४८८॥

A woman of excellent qualities

1 2 3 d 4
मुख्या नारी वरारोहा वरस्त्री मत्तकाशिनी ।

(i) A clever or intriguing woman. (ii) A drunken woman.

(i) (ii) 1
स्त्री विदग्धा च मत्ता च वाणिनीत्यभिधीयते ॥४८९॥

A harlot, a prostitute 5.

1 2 3 4 5
रूपाजीवा वेश्या गणिका पण्याङ्गना तथा क्षुद्रा ।

1 2 3
राजकुलप्रतिबद्धा वारस्त्री वारमुख्या च ॥४९०॥

A royal courtezan.

A group of harlots.

1 e
गाणिक्यं गणिकानां च समूहः कथ्यते बुधैः ।

A woman in attendance in a harem. — A female messenger 2.

1 2 1 2
असिक्न्यन्तःपुरप्रेष्या दूती सञ्चारिका स्मृता ॥४९१॥

A procuress 3. — A toilet woman, a female perfumer 2.

f 1 2 3g 1 2
कुट्टिनी शम्भली चुन्दी सैरन्ध्री गन्धकारिका ।

A female servant, a female slave 5.

1 2 3 4 h 5
पोटा वोटा तथा चेटी दासी स्यात्कुट्टहारिका ॥४९२॥

A doll 2.

1 2
पाञ्चालिका पुत्रिका स्यात्काष्ठदन्तादिनिर्मिता ।

An earthen doll 2.

1 i 2
स्मृता लेप्यमयी स्त्री तु बुधैरञ्जलिकारिका ॥४९३॥

1 2 3 4 5 6
दाराः क्षेत्रं कलत्रं च भार्या सहचरी वधूः ।

A wife 11.

7 8 9 j 10 11
सधर्मचारिणी पत्नी जाया च गृहिणी गृहाः ॥४९४॥

a च निष्फला, तु निष्फली b श्रवणा, भ्रमणा c बिडुः, विंडुः, किंडुः, भिडुः, निंडुः d मत्तकामिनी, मत्तगामिनी e तु f कुहिनी, कुट्टनी g चुंडी, चंडी h कुट्टि, कुदि i च j गृहणी ।

A woman whose husband is living 2.	1 2 1 2 पतिवत्नी जीवत्पतिर्जीवतोका च जीवसूः ,	A woman whose children are lving 2.
A woman without husband and children.	1 रहिता पतिपुत्राभ्यां निर्वीरेत्यभिधीयते ॥४८६॥	
A widow 2.	1 2 1 a 2 विश्वस्ता विधवा प्रोक्ता पुष्पहीना च निष्कला ।	A woman who does not get menstruation.
A female beggar 3.	1 2 3 1 2 3 श्रमणा भिक्षुकी मुण्डा वयस्याली सखी स्मृता ॥४८७॥	A woman's female friend 3.
A woman in her monthly courses 5.	1 2 3 अवीरुदक्या च रजस्वला स्यात् , 4 5 आत्रेयिका पुष्पवती च नारी ।	
A girl in whom the menstruation has just commenced 2,	1 2 राका भवेज्जातरजास्तु कन्या , 1 2 c नश्यत्प्रसूतिः कथिता च भिन्दुः ॥४८८॥	A woman bringing forth a dead child 2,
A woman of excellent qualities	1 2 3 d 4 मुख्या नारी वरारोहा वरस्त्री मत्तकाशिनी ।	
(i) A clever or intriguing woman. (ii) A drunken woman.	(i) (ii) 1 स्त्री विदग्धा च मत्ता च वाणिनीत्यभिधीयते ॥४८९॥	
A harlot, a prostitute 5.	1 2 3 4 5 रूपाजीवा वेश्या गणिका पण्याङ्गना तथा क्षुद्रा ।	
A royal courtezan.	1 2 3 राजकुलप्रतिबद्धा वारस्त्री वारमुख्या च ॥४९०॥	
A group of harlots.	1 e गाणिक्यं गणिकानां च समूहः कथ्यते बुधैः ।	
A woman in attendance in a harem.	1 2 1 2 असिक्न्यन्तःपुरप्रेष्या दूती सञ्चारिका स्मृता ॥४९१॥	A female messenger 2.
A procuress 3.	f 1 2 3g 1 2 कुट्टिनी शम्भली चुन्दी सैरन्ध्री गन्धकारिका ।	A toilet woman, a female perfumer 2.
A female servant, a female slave 5.	1 2 3 4 h 5 पोटा वोटा तथा चेटी दासी स्यात्कुट्टहारिका ॥४९२॥	
A doll 2.	1 2 पाञ्चालिका पुत्रिका स्यात्काष्ठदन्तादिनिर्मिता ।	
An earthen doll 2.	1 i 2 स्मृता लेप्यमयी स्त्री तु बुधैरञ्जलिकारिका ॥४९३॥	
A wife 11.	1 2 3 4 5 6 दाराः क्षेत्रं कलत्रं च भार्या सहचरी वधूः । 7 8 9 j 10 11 सधर्मचारिणी पत्नी जाया च गृहिणी गृहाः ॥४९४॥	

a च निष्फला, तु निष्फली b श्रवणा, भ्रमणा c बिडुः, विंडुः, किंडुः, भिडुः, निंडुः d मत्तकामिनी, मत्तगामिनी e तु f कुहिनी, कुट्टनी g चुंडी, चंडी h कुट्टि, कुटि i च j गृहणी ।

Marriage, wedding 5.	[1]उपयामः [2]परिणयनं [3]पाणिग्रहणं [4]विवाह [5]उद्वाहः ।	
A respectable woman 2.	[a][1]कुलबालिका [2]कुलस्त्री [1]पतिव्रता [2]सुचरिता [3]सती [4]साध्वी ॥४९५॥	A faithful wife 4.
An unchaste woman 8.	[1]पांशुला [b][2]बन्धुकी [3]स्वैरिण्य[4]सती [5]पुंश्चली[6]त्वरी ।	
	[c][7]धर्षिणी [8]कुलटा प्रोक्ता [d][1]त्वविनीता[2]भिसारिका ॥४९६॥	An impertinent woman 2.
A husband 14.	[1]कान्तः स्यात्[2]कमिता [3]पति[4]र्वरयिता [5]भर्ता च [6]भोक्ता [7]धवो ,	
	[8]रुच्या[9]भीक[10]वरा[11]भिकाश्च [12]रमणः [13]प्राणाधिनाथो[14]ऽनुगः ।	
A son 12.	[1]सूनुः [2]सन्तति[3]रात्मजश्च [4]तनुजः [5]पुत्रः [6]प्रसूतिः [7]सुतः ,	
	[8]तुक् [9]तोकं [10]तनयश्च [11]नन्दन इति प्राज्ञै[12]रपत्यं स्मृतम् ॥४९७॥	
A pregnant woman 4.	[1]आपन्नसत्त्वा [2]गुर्वी [3]स्यादन्तर्वत्नी च [4]गर्भिणी ।	
The longing of a pregnant woman 4.	[1]दोहदं [2]दौहृदं [3]श्रद्धा [4]लालसा च [e]समाः स्मृताः ॥४९८॥	
The last month of pregnancy 2.	[1]सूतिमासो [2]वैजननो [1]गर्भो [2]भ्रूण इति स्मृतः ।	An embryo 2.
A lying-in-chamber 2,	[1]अरिष्टगृहमिच्छन्ति [2]सूतिकाभवनं बुधाः ॥४९९॥	
A woman who has born a child 3,	[1]विजाता च [2]प्रजाता च [3]प्रसूता स्त्री निगद्यते ।	
The womb.	[1]गर्भाशयो [2]जरायुः स्या[1]दुल्वं च [f][2]कललं स्मृतम् ॥५००॥	Foetus; the bag which surrounds the embryo 2.
The son of an unmarried girl 2.	[1]कन्यापुत्रस्तु [2]कानीनो [1]नाटेरः [2]स्यान्नटीसुतः ।	The son of a dancing girl 2.
A bastard 2.	[1]बन्धुको [2]बन्धुकीपुत्रो [1]गोप्यो [2]दासीसुतः स्मृतः ॥५०१॥	The son of a female slave 2,
The young of any animal 9.	[1]बालः [2]पाको[3]ऽर्भको [4]गर्भः [5]पोतश्च [6]पृथुकः [7]शिशुः ।	
	[8]शावो [9]डिम्भश्च विज्ञेयो [1]वटु[2]र्माणवको मतः ॥५०२॥	A lad.
Old 4.	[1]प्रवयाः [2]स्थविरो [3]वृद्धो [4]यातयामश्च कथ्यते ।	
Old age 2.	[1]जरा तु [g][2]विस्रसा प्रोक्ता [h][1]दारक[2]स्तरुणो [3]युवा ॥५०३॥	Young 3.

a कुलबाधिका कुलपालिका b बन्धका c धर्षणी d दुर्विनीता, ह्यभिनीता
e समा स्मृता f फलिलं, कलिलं g विश्रसा, विश्चसा h दारुक ।

Mother 4. माँ के नाम ४

1 2 3 4
अम्बा सवित्री जननी च माता ,

Father 4. बाप के नाम ४

1 2 3 4
बप्ता च तातो जनकः पिता च ।

A daughter-in-law4

1 2 3 4
स्नुषा जनी पुत्रवधूर्वधूः स्यात् ,

A brother's wife 2.

1 2
प्रजावती भ्रातृवधूः स्मृता च ॥५०४॥

A daughter 3. — A son-in-law 2.

1 2 3 1 2
दुहिता तनया पुत्री जामाता दुहितुः पतिः ।

Daughter's son.

1 2 a 3 b
दौहित्रस्तत्सुतो नप्ता स च पौत्रश्च कथ्यते ॥५०५॥

An elder brother 3. — A younger brother 3.

1 2 3 1 2 3
अग्रजः पूर्वजो ज्येष्ठः कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः ।

A brother's son.

1 2 3 c 4
भ्रातृव्यो भ्रातृपुत्रः स्याद् भ्रात्रीयो भ्रातृजस्तथा ॥५०६॥

A nurse. — A sister 3.

1 2 1 2 3
धात्री स्यादुपमाता भगिनी जामिः स्वसा च विज्ञेया ।

A sister's son 3.

1 2 3
तत्पुत्रः स्वस्रीयो जामेयो भागिनेयः स्यात् ॥५०७॥

A brother by the same mother.

1 2 3 4 d
समानोदर्यसोदर्यसगर्भाः सोदराः समाः ।

A husband's brother's wife.

भ्रातृवर्गस्य या जाया यातरस्ताः परस्परम् ॥५०८॥

Related 9.

1 2 3 4 5 6
आत्मीयः स्वजनो बन्धुराप्तो ज्ञातिश्च बान्धवः ।

7 8 9
सनाभयः सपिण्डाश्च सगोत्राश्च समाः स्मृताः ॥५०९॥

The body 17.

1 2 3 4
तनुस्तनूः संहननं शरीरं ,

5 6 7 8
कलेवरं विग्रहदेहकायाः ।

9 10 11 12 13
अङ्गं वपुर्वर्ष्म पुरं च पिण्डं ,

14 15 16 17
क्षेत्रं च गात्रं च घनश्च मूर्तिः ॥५१०॥

Foot 3. — Hand 5.

e 1 2 3 1 f 2 3 4 5
अंह्रिः पादश्चरणः पाणिः शयपञ्चशाखकरंहस्ताः ।

A finger-nail 6.

1 2 3 4 5 6
कामाङ्कुशाः कररुहाः पुनर्नवाः पाणिजा नखा नखराः ॥५११॥

a ज्ञेयो नप्ता पौत्रश्च b पौत्रस्तु c भ्रातृजः स्मृतः d स्मृताः
e अंघिः, अंघ्रिः f पाणिशय ।

The hips and loins.	1 2 3 4 5 काञ्चीपदं कलत्रं जघनं श्रोणी ककुद्मती ज्ञेया ।	
The buttocks 5.	a 1 3 3 4 5 आरोहश्च नितम्बः कटी कटीरं त्रिकस्थानम् ॥५१२॥	
The anus 3.	1 2 3 1 2 b 3 गुदः पायुरपानं स्यात्कटिप्रोथौ स्फिजौ पुतौ ।	The buttocks.
The cavities of the loins.	c 1 2 कुकुन्दरौ समाचष्टे जनो जघनकूपकौ ॥५१३॥	
	1 2 3 4 5 भगो योनिरुपस्थश्च वराङ्गं स्मरमन्दिरम् ।	Vagina; Pudendeem muliebre.
The penis.	1 2 3 4 5 शिश्नः शेफोऽथ मेढ्रश्च तुल्ये मेहनशेफसी ॥५१४॥	
The knee 2. The leg 2.	1 2 1 2 1 2 जानुः स्यादष्ठीवान् प्रसृता जङ्घा च घुटको गुल्फः ।	An ankle 2.
The thigh 2.	1 2 1 d 2 3 4 e 5 6 ऊरुः सक्थि पिचण्डं जठरोदरतुन्दकुक्षिगर्भाः स्युः ॥५१५॥	The belly 6.
The finger 2.	1 2 1f 2 3 4 5 अङ्गुल्यः करशाखाः कर्णः श्रोत्रं श्रुतिः श्रवः श्रवणम् ।	An ear 5.
The neck 5.	1 2 3 4 g 5 1 2 ग्रीवा धमनिर्मन्या शिरोधरा कन्धरा गलः कण्ठः ॥५१६॥	The throat 2.
A conch shaped neck, a neck marked with three lines like a shell and is considered as a sign of great fortune 1.	1 रेखात्रयाङ्किता ग्रीवा कम्बुग्रीवेति कथ्यते ।	
The waist 4.	1 2 3 4 अवलग्नं विलग्नं च मध्यमं मध्यमुच्यते ॥५१७॥	
The head 7.	1 2 3 4 5 6 7 मुण्डोत्तमाङ्गमस्तकमौलिशिरःशीर्षमूर्धकानि स्युः ।	
The mouth 7.	1 2 3 4 5 6 7 तुण्डं वदनं वक्त्रं लपनं मुखमास्यमाननं च समम् ॥५१८॥	
The eye 9.	1 2 3 4 5 6 7 8 9 दृग्दृष्टिनेत्रलोचनचक्षुर्नयनाम्बकेक्षणाक्षीणि ।	
The tears 6.	1 2 3 4 5h 6 अश्रूणि वाष्परोदननयनजलाश्रास्रुनामानि ॥५१९॥	
The outer corner of the eye 2.	1 i 2 1 2 नयनोपान्तमपाङ्गः कनीनिका नयनमध्यतारा च ।	The pupil of the eye 2.
The part between the eye-brows. The corner of the mouth 2.	1 2 k कूर्पं भ्रुवोश्च मध्यं सृक्व स्यादोष्ठपर्यन्तः ॥५२०॥	

a आरोहस्तु b युतौ c ककुन्दरौ, ककुन्दरा d पिण्डिं e तुण्ड, तुंड f कर्णश्रोत्रं g कन्धरो h जलाश्राश्रुनामानि, जलास्राशिश्निनामानि, जलास्ताश्रुनामानि, जलाश्रुनामानि i प्रपाङ्गः स्यात् j सृक्कः, सृक्कि, सृक्कं, सृक्वा k पर्यन्तम् ।

The nose 5.	a 1 2 3 4 5 सिङ्घिनी नासिका नासा घ्राणं घोणा च कथ्यते ।	
The tongue 3.	1 2 3 1 2 रसज्ञा रसना जिह्वा तालु काकुदमुच्यते ॥५२१॥	The palate 2.
The arm 5.	1 2 3 4 5 दोः प्रवेष्टो भुजो बाहुर्भुजा च स्मर्यते बुधैः ।	
The cheek 4.	1 2 3 4 गण्डो गल्लः कपोलश्च हनुस्तुल्यार्थवाचकाः ॥५२२॥	
The testicles,	1 2 3 4 1 2 b मुष्कोऽण्डं वृषणः कोशः सङ्ग्राहो मुष्टिरुच्यते ।	The fist 2.
The collar bone, the clavicle.	1 1 c 2 जत्रु वक्षोंऽसयोः सन्धिरूरुसन्धिश्च वङ्क्षणः ॥५२३॥	The joint of the thigh 2.
Hair on the body 2,	1 2 1 1 रोम तनूरुहमुक्तं नयनगतं पक्ष्म मुखगतं श्मश्रु ।	An eye-lash. The beard.
The lips 4.	1 2 3 4 अधरो दन्तच्छद ओष्ठ उच्यते दन्तवासश्च ॥५२४॥	
The chin.	d1 1 2 1 2 ओष्ठस्याधश्चिबुकं ललाटमलिकं भुजाग्रमंसं च ।	The forhead 2. The shoulder 2.
Armpit 2.	e 1 2 1 2 3 कक्षां च बाहुमूलं घाटामवटुं कृकाटिकामाहुः ॥५२५॥	Nape of the neck 3.
The female breast 5.	1 2 3 4 5 f उरसिजकुचवक्षोरुहपयोधराः स्तनसमाननामानि ।	
Nipple 4.	1 2 3 4 g उक्ताः कुचमुखचूचुकवृन्तानि शिखा च तुल्यानि ॥५२६॥	
The chest, the breast 5,	1 2 3 4 h5 भुजमध्यमुरो वक्षो हृदयस्थानं च वत्समिच्छन्ति ।	
A tooth 5.	1 2 3 4 5 एकार्थाः कथ्यन्ते दशनद्विजदन्तरदरदनाः ॥५२७॥	
The lap 3.	1 2 3 क्रोडमङ्कस्तथोत्सङ्गः प्राग्भागो वपुषः स्मृतः ।	
The back, hinder part 2.	1 2 1 2 पृष्ठं स्यात्पश्चिमो भागः कटौ च कटिशीर्षकौ ॥५२८॥	The loins.
A vital member or organ 2.	1 2 1 2 जीवस्थानं भवेन्मर्म पादाग्रं प्रपदं मतम् ।	The extremity of a foot 2.
The parting line of the hair, the hair parted on each side of the head so as to leave a line.	1 सीमन्तः कथ्यते स्त्रीणां केशमध्ये तु पद्धतिः ॥५२९॥	
The hair of the head 7.	1 2 3 4 5 6 7 केशाः शिरसिजमूर्धजकचचिकुरशिरोरुहाः स्मृता वालाः ।	
	तद्बन्धविशेषाः स्युर्वेणी धम्मिल्लकुन्तलकवर्याः ॥५३०॥	Different forms of braid or lock.

a संधिनी, सिंघिनी b मुष्टिरिष्यते, मुष्टिरिच्यते c वंक्षिणः, वक्षणः d श्चुवुकं, श्चुवकं e कक्षा f नामानः g भवन्ति h वक्षमिच्छन्ति ।

Much or ornamented hair.	हस्तः पक्षः पाशः केशेषु बहुत्ववाचकाः शब्दाः ।	A lock of hair or curl hanging down on the fore-head,
A curl lock of hair 1.	अलकं[1] कुटिलाः केशा भ्रमरकमुक्तं[1] ललाटस्थम् ॥५३१॥	
A lock of hair left on the crown of the head, a tuft 3.	बालानां तु शिखा[1] प्रोक्ता काकपक्षः[2] शिखण्डिका[3] ।	
Grey hair 2.	पलितं[1] पाण्डुराः[2] केशा व्रतिनां तु जटा[1] सटा[2] ॥५३२॥	An ascetics' matted hair 2.
Wrist, the extremity of the arm 2.	मणिबन्धः[1] पाणिमूलं[2] कफणिः[a][1] कूर्परः[2] स्मृतः ।	An elbow 2.
The fore arm, the part between the wrist and elbow 1.	तयोर्मध्यं प्रकोष्ठः[1] स्यात्प्रकाण्डः[b][1] कूर्परांसयोः[2] ॥५३३॥	The upper part of the arm 2.
The mind.	चेतश्चित्तं[1][2] मनः[3] स्वान्तं[4] हृदयं[5] मानसं[6] समम् ।	
Intent upon one object 3.	एकायनं[1] तथैकाग्रमेकतानं[2][3] च तद्गतम् ॥५३४॥	
Mental pain.	आधिस्तु[1] मानसी पीडा वाञ्छितोऽर्थो[c][1] मनोरथः[2] ।	A desired object a wish 2.
An organ of sense 6.	खमक्षमिन्द्रियं[1][2][3] स्रोतो[d][4] हृषीकं[5] करणं[6] स्मृतम् ॥५३५॥	
The distance from the elbow to the tip of the middle finger taken as a measure of length equal to 24 thumb.	मध्याङ्गुलीकूर्परयोर्मध्ये प्रामाणिकः करः ।	A cubit of the middle length from the elbow to the tip af the little finger
The closed fist, the distance from elbow to the end of the closed fist.	बद्धमुष्टिकरो रत्निररत्निः[1][1] सकनिष्ठिकः[e][2] ॥५३६॥	
The fist, a measure of capacity equal to one handful.	सम्पिण्डिताङ्गुलिर्मुष्टिः[1][2] प्रसृतिः[1] कुञ्चिताङ्गुलिः[2] ।	The palm of the hand stretched out and hollowed, a handful considered as a measure equal to two palas.
The span of the thumb and fore finger 2.	प्रसारिताङ्गुलिः पाणिः कथ्यते प्रतलस्तलः[1][2] ॥५३७॥	The palm of the hand 2.
A span from the tip of the thumb to that of the ring finger.	प्रादेशः[1] स्यात्प्रदेशिन्या[2] तालो[1] मध्यमया[2] भवेत् ।	A short span.
	गोकर्णोऽनामया[1][2] प्रोक्तो वितस्तिः[1] स्यात्कनिष्ठया ॥५३८॥	A measure of length equal to 12 "angulis" being the distance between the extended thumb and the little finger.
An ornament, a decoration 9.	आकल्पो[1] मण्डनं[2] वेषः[3] प्रतिकर्म[4] प्रसाधनम्[5] ।	
	भूषणं[6] स्यादलङ्कारो[7] नेपथ्याभरणे[8][9] तथा ॥५३९॥	
	समालभनमिच्छन्ति[f][1] चर्चां[2] मार्ष्टिं[3] च सूरयः ।	
Smearing the body with fragrance 5.	स्थासकं[4] हस्तविम्बं[5] स्यात्परिष्कारश्च[g][1] भूषणम्[2] ॥५४०॥	An ornament 2.
A mark on the forehead.	तिलकं[1] तमालपत्त्रं[2] चित्रकमुक्तं[3] विशेषकः[4] पुण्ड्रम्[5] ।	
A mark made with sandal or any other fragrant powder on the fore-head.	रचिता ललाटपट्टे ललाटिका[1] कथ्यते रेखा ॥५४१॥	

a कफणः, कफेणिः, केणिः b प्रगण्डः c वांछितार्थो d श्रोतो
e सकनिष्टकः, रत्निरकनिष्ठिकः f समालंभ g परिस्कारश्च ।

Drawing lines or figures of painting on the face, arms, chest, cheek, neck etc with fragrant and coloured. Substance as a mark of decoration.

भुजशिखरस्तनमण्डलकपोलकण्ठेषु विरचिता कुशलैः ।
अनुलेपनेन लेखा निगद्यते [1 a] पत्रवल्लीति ॥५४२॥

Saffron 7.

[1] कुङ्कुमं [2] घुसृणं [3] वर्णं प्रोक्तं [4] लोहितचन्दनम् ।
[5] काश्मीरजं च विद्वद्भिः [6] कालेयं [b 7] जागुडं स्मृतम् ॥५४३॥

Sandal wood tree

[1] चन्दनं [2] स्यान्मलयजं [3] श्रीखण्डं [4] रोहणद्रुमः ।

Musk 3.

[1] मृगनाभिर्[2]मृगमदः प्रोक्ता [3] कस्तूरिका बुधैः ॥५४४॥

Camphor 2.

[1] कर्पूरो [2] घनसारः स्यात्[1]काकतुण्डो[2]ऽगरुः स्मृतः ।

A dark species of a gallochum.

The betelnut 2.

[1] ताम्बूलं [2] क्रमुकं प्रोक्तम[1]ङ्गरागो [2] विलेपनम् ॥५४५॥

The unguent for the body.

A lower garment 4.

[1] उपसंव्यानं [2] परिधानम[3]न्तरीयं च [4] निवसनं तुल्यम् ।

An upper garment 4.

[1] प्रावरणं [2] संव्यानं [3] प्रच्छादनमु[c 4]त्तरीयं च ॥५४६॥

A sort of petticoat 2.

[1] अर्धोरुकं वरस्त्रीणां [2] वासश्चण्डातकं स्मृतम् ।

The ends of the cloth tied into a knot in front; the knot of the wearing garment 3.

[1] परिधानांशुकग्रन्थिः प्रोक्ता [2] नीवी [3] तथोच्चयः ॥५४७॥

A cloth 12.

[1] चेलं [2] चीरं [3] वासः [4] कर्पट[5]माच्छादनं [6] निवसनं च ।
[7] अम्बर[8]मंशुकमुक्तं [9] वस्त्रं [10] सिचयः [11 d] पटः [12] पोटः ॥५४८॥

The four sources of cloth (1) the bark and (2) fruit of trees and plants (3) hair of insects (4) and animals.

चतुर्विधं तु विज्ञेयं त्वक्सूत्रकृमिरोमजम् ।

Silken cloth, woven silk 4.

[e 1] पत्त्रोर्णं [2] धौतकौशेयं [3 (i)] दुकूलं [(ii) 4] क्षौममिष्यते ॥५४९॥

(i) (ii) Also skirt.

Cotton cloth 2.

[1] कार्पासं [2] वादरं प्रोक्तं [1] वस्त्रस्यान्तो [2] मतोऽञ्चलः ।

The extreme end of the cloth 2.

New cloth 2.

[1] अहतं [2] स्यान्नवं वासो [1] जीर्णमुक्तं [f 2] पटच्चरम् ॥५५०॥

Old cloth 2.

Washed 2.

[1] धौतमुद्[2]गमनीयं च [1] वर्तिर्[2]वस्तिर्[3 g]दशाः [4] सिचः ।

The skirt of a web or dress 4.

एकार्था [h] आविकौरभ्ररल्लकोर्णायुकम्बलाः ॥५५१॥

Woollen garments, also blanket 2.

a पत्रवल्ली तु b जांगुडं, जागुडां, जागुडीं c मन्तरीय च
d पटपोटः पटःप्रोतः e पत्तोर्णं, पूत्तूर्णं, पूत्तूर्णं f पटच्चरः
g दशा, देशां h आविको।

कञ्चुको[1] वारवाणः[2] स्यात्कूर्पासश्च[1] निचोलकः[2] ।

An armour, a mail 2. Also a dress fitting close to the upper part of the body, bodice.

A sort of bodice worn by woman 2.

स्रग्[1]माला[2] माल्यमाख्यातं[3] केशमध्ये तु गर्भकः[1] ॥५५२॥

A garland, wreath, chaplet 3.

Chaplet of flowers worn on the hair.

प्रभ्रष्टकं[1] शिखालम्बि पुरो न्यस्तं ललामकम्[2] ।

A chaplet of flowers leaning downwards on the forehead 2.

तिर्यग्वक्षसि विक्षिप्तं वैकक्षकमुदाहृतम्[a][1] ॥५५३॥

A garland worn over the left shoulder and under the right arm like the sacred thread.

ग्रीवायां लम्बितं प्राज्ञैः प्रालम्बकमिति[1] स्मृतम् ।

A garland worn round the neck.

आपीडः[b][1] शेखरो[2]त्तंसा[3]वतंसाः[4] शिरसि स्रजः[5] ।

A chaplet tied on the crown of the head 5.

कर्णपूरेऽपि[1] दृश्येते तथोत्तंसा[2]वतंसकौ[3] ॥५५४॥

An earring 3.

जतु[1]यावक[2]लाक्षा[3]ऽलक्तकाः[4] समाः सिक्थकं[1] मधूच्छिष्टम्[2] ।

Lac 4.

Bee wax 2.

कज्जलम्[1]अञ्जनम्[2]अभिहितमादर्शो[1] दर्पणो[2] मुकुरः[3] ॥५५५॥

Lamp-black, collyrium 2.

A mirror 3.

ताडङ्कस्[c][1]ताडपत्रं[2] स्यात्कुण्डलं[3] कर्णवेष्टनम्[4] ।

A large earring 4.

कर्णालङ्करणं[1] सर्वं कर्णिकेत्यभिधीयते[2] ॥५५६॥

Any ornament for the ear 2.

केयूरम्[1]अङ्गदं[2] प्रोक्तं बाहुमूलविभूषणम्[3] ।

A bracelet worn up on the upper arm 2.

आवापः[1] परिहार्यः[2] स्यात्कटको[3] वलयं[4] तथा ॥५५७॥

A bracelet 4.

कङ्कणं[1] हस्तसूत्रं[2] च विदुः प्रतिसरं[3] बुधाः ।

An amulet, a string tied round the wrist at weddings etc. 3.

ग्रीवालङ्करणं[1] सर्वं ग्रैवेयकमितीष्यते[2] ॥५५८॥

An ornament for the neck 2.

अङ्गुल्याभरणं[1] प्रोक्तमङ्गुलीयकम्[2]ऊर्मिका[3] ।

A finger-ring 3.

कथ्यतेऽङ्गुलिमुद्रा[1] च भवेद्या लिखिताक्षरा ॥५५९॥

A seal ring, a signet ring.

कलापः[1] सप्तकी[2] काञ्ची[3] मेखला[4] रसना[d][5] तथा ।

A girdle, a zone 7.

कटिसूत्रं[6] सारसनं[7] किङ्किणी[1] क्षुद्रघण्टिका[2] ॥५६०॥

A small bell 2.

सिञ्जिनी[e][1] पादकटकस्[2]तुलाकोटिस्[3]तु नूपुरम्[4] ।

मञ्जीरं[5] हंसकं[6] स्त्रीणां चरणाभरणं स्मृतम् ॥५६१॥

Anklet, any ornament for the feet 7.

a वैकक्षि b आपीडशेखरो c ताडकं ताडपत्रं d रशना, दशमा, दशना e शिंजिनी, शिजिनी ।

A pearl-necklace having hundred strings 2.
गुच्छ-Pearl-necklace of 32 strings.
अर्धगुच्छ-A pearl-necklace of 24 strings.
हार-Necklace.
A single string of pearls 3.
A necklace of 27 pearls 2.
The central gem of a necklace 3.
A jewel of the crest or diadem.
Crown, diadem 4.
Beauty 5.
Seeing, sight 8.
A side glance 2.
Shame, bashfulness 6.
Embracing 7.
Sexual intercourse 7.
Name of the third or agricultural and mercantile class, "Vaishyas" 5.
Living subsistence 4.
A trader, a merchant 5.
A usurer 4.

देवच्छन्दः[1] शतयष्टिरर्धो[2] माणवकः[a 1] स्मृतः ।
हारो[b] गुच्छार्धगुच्छौ[1 1] च गोपुच्छश्च[1] भवेत्क्रमात् ॥५६२॥
एकावल्येकयष्टिः[1 2] स्यात्कथ्यते सा च कण्ठिका[3] ।
प्रोक्ता नक्षत्रमाला[1] च सप्तविंशतिमौक्तिका[2 c] ॥५६३॥
हारमध्यस्थितं[1] रत्नं नायकं[2] तरलं[3] विदुः ।
चूडामणिं[1] च विद्वांसो वदन्ति शिरसि स्थितम् ॥५६४॥
आहुः किरीटमुष्णीषं[1 2] कोटीरं[3] मुकुटं[4] समम् ।
राढा[1] शोभा[2] विभूषा[3] स्यादभिख्या[4] सुषमा[5] समाः ॥५६५॥
निभालनं[1] निशामनं[2] निध्यानमवलोकनम्[3 4] ।
ईक्षणं[5] दर्शनं[6] दृष्टिर्द्योतनं[7 8] च समं स्मृतम् ॥५६६॥
कटाक्षो[1] दृष्टिविक्षेप[2] ईषच्च[1] हसितं स्मितम्[2] ।
ह्रीर्लज्जापत्रपा[1 2 3] व्रीडा[4] त्रपा[5] मन्दाक्षमुच्यते[6] ॥५६७॥
आलिङ्गनमुपगूहनमाहुः[1 2] परिरम्भणं[3] परिष्वङ्गम्[4] ।
आश्लेषमङ्कपालीं[5 6] क्रोडीकरणं[7] च तुल्यार्थम् ॥५६८॥
संवेशनं[1] निधुवनं[2] सम्प्रयोगो[3] रहो[4] रतिः[5] ।
सुरतं[6] मोहनं[7] प्रोक्तं मणितं[1] रतकूजितम्[d 2] ॥५६९॥
आर्या[1] भूमिस्पृशो[2] वैश्या[3] ऊरव्याश्च[e 4] विशः[5] स्मृताः ।
जीवनं[1] वृत्तिराजीवो[2 3] वार्त्ता[4] चेति निगद्यते ॥५७०॥
पण्याजीवा[1] वणिजः[2] प्रापणिका[3] नैगमाश्च[4] वैदेहाः[5] ।
द्वैगुणिको[1] वार्धुषिको[2] वृद्धयाजीवः[3] कुसीदिकः[f 4] प्रोक्तः ॥५७१॥

A pearl-necklace having twenty strings.
गोपुच्छ-A pearl-necklace consisting of four strings.
Smiling 2.
An inarticulate murmuring sound uttered in cohibitation 2.

a अर्घमाणकः, अर्धोमाणकः b हारी c मौक्तिकः, मौक्तिके
d रतिकूजितम् e औरव्याश्च, ओरव्याश्च, उरव्याश्च, उव्धाश्च
f कुशीदिकः कुसीदकः, कुसीदः ।

Debt 4.	1 2 3 4 अपमित्यकमुद्धार ऋणं स्यात्पर्युदञ्चनम् ।	
Interest on money 2.	1 2 1 2 वृद्धिः कलान्तरं प्रोक्तं कुसीदं वृद्धिजीवनम् ॥५७२॥	Usury 2.
Exchange, barter 3.	1 2 3 परिवृत्तिर्विनिमयो वैमेयश्च निगद्यते ।	
Bought purchased 2.	1 a 2 1 2 b प्रक्रयः क्लृप्तिकं प्रोक्तं भाटकोऽवक्रयः स्मृतः ॥५७३॥	Price 2.
A farmer 5.	1 2 3 c 4 5 क्षेत्राजीवः कृषिकः कृषीवलः कर्षकः कुटुम्बी च ।	
Corn, grain 2.	d 1 2 1 2 3 सीत्यं सस्यं प्रोक्तं वप्रं क्षेत्रं च केदारम् ॥५७४॥	A field, a farm 3.
A plough 3.	1 2 e 3 1 2 हलं स्याल्लाङ्गलं सीरः फालः कुशिक उच्यते ।	Ploughshare 2.
A bridle 3	1 2 3 1 2 f योक्त्रं तु रश्मिराबन्धः शम्या च युगकीलकः ॥५७५॥	The pin of a yoke 2.
The clod of earth 2.	1 2 1 g 2 कथितो लोष्टको लोष्टः कोटीशं लोष्टभेदनम् ।	A harrow 2.
Ploughed or furrowed twice 2.	1 2 1 2 शम्बाकृतं द्विसीत्यं स्यात्सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥५७६॥	A furrow 2.
A spade.	1 2 1 2 गोदारणं च कुद्दालं लवित्रं दात्रमुच्यते ।	A sickle
A goad for driving cattle 3.	1 2 3 1 h 2 प्रतोदः प्राजनं तोत्रं लूनं दातमिति स्मृतम् ॥५७७॥	Cut, reaped 2.
A post of a threshing floor 2.	1 2 i 1 2 खलेवाली भवेन्मेठिः खलधान्यं खलं स्मृतम् ।	Threshing floor 2.
Chaff, husk 2.	1 2 1 2 बुशः कडङ्गरः प्रोक्तः कणः स्यात्क्षुद्रतण्डुलः ॥५७८॥	A single grain of rice 2.
The beard of corn 2.	1 2 1 2 धान्यशूकं च किंशारुः कणिशं धान्यशीर्षकम् ।	An ear of corn 2.
A stalk 2.	1 2 1 2 j 1 2 नालं काण्डं क्षुपो गुच्छो व्रीहिः स्तम्बकरिः स्मृतः ॥५७९॥	A corn, a grain 2. Varieties of rice,
क्षुपो गुच्छो A clump of grass 2,	रक्तशालिर्महाशालिः कलमाश्चेति शालयः ।	रक्तशालिः A red species of rice. महाशालिः A kind of large and sweet smelling rice.
Name of a plant, Condia Myxa or Latifolia 3.	1 2 3 उद्दालः कथितः प्राज्ञैः कोद्रवः कोरदूषकः ॥५८०॥	कलमः Rice sown in May-June which ripens in December-January.

a क्लृप्तकं b तथा c कर्बुकः कुटम्बी d सैत्यं सैन्यं e सीरं, शीरं f कीलिका किलिकम्, g कोटीरं, कीटिशं, काटीशं h दात्र, दान i मेढिः, मेटि, मेथि, मेधि j गुंछो, गुँष्टो, गुष्टो ।

A kind of pulse, Lentil 2.	[a 1]मङ्गल्यको [2]मसूरः स्यात्[1]सिद्धार्थः [2]सर्षपः स्मृतः ।	White mustard 2.
Black-mustard 3.	[1]आसुरी [2]राजिका चेति कथ्यते [3]राजसर्षपः ॥५८१॥	
A sort of millet 2.	[1]प्रियङ्गुः कथ्यते [2]कङ्गुर[1]तसी [2]स्यादुमा [3]क्षुमा ।	Linseed flax 3.
Peas 3.	[1]कलायः [2]खण्डिको ज्ञेयः [3]सातीनश्च मनीषिभिः ॥५८२॥	
Wild sesamum 2.	[1]जर्तिलः कथ्यते सद्भि[2]ररण्यप्रभवस्तिलः ।	
Barren sesamum 3.	[1 b]तिलपिञ्जस्[2]तिलपेजस्तथा [3]षण्ढतिलः स्मृतः ॥५८३॥	
Rice growing wild or without cultivation 2.	[1]तृणधान्यं तु [2]नीवारः [1]श्यामाकः [2]श्यामको भवेत् ।	A kind of edible grain or corn, also graminaceous plant 2.
A sort of pulse, also the wind caused by winnowing 2.	[1]वल्ला [2]निष्पावकाः प्रोक्ता [1]आढकी [2]तुवरी स्मृता ॥५८४॥	A kind of pulse 2. (अरहर)
लाजा panched or fried grain, rice parched and flattened 2.	[1]भृष्टं धान्यं लाजाः [1]पृथुकाश्[2]चिपिटाश्च [1]कुट्टितास्ते स्युः ।	कुट्टिता - Pounded, rice.
धाना Fried barley.	[c]भृष्टा यवास्तु धाना [1]दरपक्वा [2]कथ्यतेऽभ्यूषः ॥५८५॥	Half parched barley 2.
A person of the low class 5.	[1]शूद्रो[2]ऽन्त्यवर्णो [3]वृषलः [4]पद्यः [5]पज्जश्च कथ्यते ।	
A writer 4.	[1]लेखकः [2]स्याल्लिपिकरः [3]कायस्थो[4]ऽक्षरजीवकः ॥५८६॥	
A cow-herd 4.	[1]आभीरः [2]स्यान्महाशूद्रो [3]गोपालो [4]वल्लवस्तथा ।	
A carpenter 5.	[1]त्वष्टा च [2]काष्ठतट् [3]तक्षा [d 4]रथकारश्च [5]वर्धकिः ॥५८७॥	
A goldsmith.	[1]नाडिन्धमः [2]कलादः [3]सुवर्णकारश्च [4]मुष्टिको ज्ञेयः ।	
A jeweller 2.	[1]वैकटिको [2]मणिकारो [1]ध्माकारो [2]लोहकारः स्यात् ॥५८८॥	A Black-smith 2.
A barber 4.	[1]क्षुरमर्दी [2]दिवाकीर्तिश्[3]चण्डिलो[e] नापितः स्मृतः ।	
A gardener 3.	[1]मालाकारस्तु विज्ञेयो [2]मालिकः [f 3]प्रातिहारिकः ॥५८९॥	
A potter 2	[1]कुम्भकारः [2]कुलालः [1]स्यात्तन्तुवायः [2]कुविन्दकः ।	A weaver 2.
A shampooer 2.	[g 1]संवाहको[2]ऽङ्गमर्दी [1]स्यात्तुन्नवायश्च [2]सौचिकः ॥५९०॥	A tailor 2,

a मांगल्यको b पिङ्ग c भ्रष्टं, भ्रष्टा d रथकारस्तु e श्चंडालो, श्चाडिलो f प्रातहारिकः, प्रतिहरिकः g संवाहकोंऽ गमर्दः ।

A plasterer 2.	1 2 1 2 a लेपकः पलगण्डः स्याद्रङ्गाजीवस्तु चित्रकृत् ।	A painter 2.
Plastering, painting in general.	1 कर्म लेप्यादिकं सर्वं पुस्तकर्म स्मृतं बुधैः ॥५९१॥	
An actor, mime, a dancer 5.	1 2 3 4 5 शैलाली शैलूषः कुशीलवश्चारणः कृशाश्वी च । 6 7 8 1 2 जायाजीवो भरतो नटस्तथा स्यान्नटी क्षुद्रा ॥५९२॥	A dancing girl 2.
An artisan, a mechanic 3.	1 2 3 शिल्पिनः कारवः प्रोक्ताः प्रकृतिश्च मनीषिभिः ।	
A washerman 2.	1 2 1 2 b निर्णेजकः स्याद्रजकः कल्पपालस्तु शौण्डिकः ॥५९३॥	A distiller of liquors 2.
A fisherman 5.	1 2 3 4 5 कैवर्तो धीवरो दासो मत्स्यबन्धी तु जालिकः ।	
A net 2.	1 2 1 c 2 आनायः कथ्यते जालं कुवेणी मत्स्यबन्धनी ॥५९४॥	A fish basket 2.
A butcher 2.	1 2 d 1 2 वैतंसिकः सौनिकः स्यात्कौटिको मांसविक्रयी ।	A meat seller 2.
A slaughter-house 2.	e 1 2 1 2 3 सूना स्याद् घातनस्थानं कृपाणीली च कर्तरी ॥५९५॥	Scissors shears 3.
A shoe-maker 2.	1 2 1 2 चर्मकृत्पादुकाकारो नद्ध्री वद्ध्री च कथ्यते ।	A leather thong 2.
A fowler, a hunter 4.	1 2 3 4 मृगयुर्लुब्धको व्याधो बुधैर्वागुरिकः स्मृतः ॥५९६॥	
A rope 6.	1 2 f 3 4 5 6 शुल्वा रज्जुर्वराटश्च वटस्तन्त्रीर्गुणः स्मृतः ।	
A noose.	1 2 1 2 पाशः स्याद्बन्धनग्रन्थिर्वागुरा मृगजालिका ॥५९७॥	A trap for catching beasts 2.
Chāndāla, an outcaste 8.	1 g 2 3 4 अन्तावसायी चण्डालो निषादश्च जनङ्गमः । 5 6 h 7 i 8 श्वपचः पक्वशश्चैव मातङ्गः प्लवकः स्मृतः ॥५९८॥	
Different sects of 'Antjati' belonging to lowest caste.	j किराताः शबरा निष्टचाः पुलिन्दा नाहला भटाः । माला म्लेच्छादयो भिल्लाः कथ्यन्ते ह्यन्तजातयः ॥५९९॥	
Disease, sickness, invalidity12.	1 2 3 4 5 6 7 रोगो रुक् व्याधिराकल्यं गदो मान्द्यमपाटवम् । 8 9 10 11 12 आम आमय आतङ्क उपतापो रुजा स्मृता ॥६००॥	

a चित्रकर्मादिकं b सौडिकः c मत्स्यबंधिनी d शौनिकः e शूना f रज्जुर्वटारश्च, रज्जुर्वराकरटश्च, वटारक, वटस्तंत्रीगुणः, वटस्तंत्रागुण;, वटस्तंत्रीगुणस्तथा g चांडालो h पुल्कसः, पुक्कसः, पुक्कशः, बुक्कसः i प्लवगः j शिविरा ।

Cough 2.	क्षवथुः[1] कथ्यते कासो[2] वेपथुः[1] कम्प[2] उच्यते ।	Tremor 2.
Burning fever 2.	दवथुः[1] परितापः[2] स्याद् ग्लानिश्च[1] क्लमथुः[2] स्मृतः ॥६०१॥	Fatigue, languor 2.
Consumption 3.	राजयक्ष्मा[1] क्षयः[2] शोषः[3] शोफः[1] श्वयथुरिष्यते[2] ।	Swelling 2.
A sort of cutaneous eruption 2.	किलासं[1] कथ्यते सिध्म[2] पामा[1] कच्छूः[2] खसः[3][a] स्मृतः ॥६०२॥	Itch, scab 2,
	कण्डूतिः[4] कण्डूया[5] कण्डूः[6] कण्डूयनं[7] तथा खर्जूः[b][8] ।	
Waking.	जागर्या[1] जागरणं[2] प्रजागरो[3] जागरा[4] च विज्ञेया ॥६०३॥	
Boil, pimple, blister 3.	पिटकः[1] स्फोटको[2] गण्डः[3] श्वित्रं[1] कुष्ठं[2] च पाण्डुरम्[3] ।	White leprosy 3.
Elephantiasis 2.	श्लीपदं[1] पादवल्मीकः[2] पृष्ठग्रन्थिर्[1]गडुः[2][c] स्मृतः ॥६०४॥	Hump on the back 2.
A disease producing baldness 2.	केशघ्नम्[1]इन्द्रलुप्तं[2] स्यादर्शश्च[1] गुदकीलकः[2] ।	Piles 2.
Bile 2. Phlegm 2.	मायुः[1] पित्तम्[2] कफः[1] श्लेष्मा[2] प्रतिश्यायश्च[1][d] पीनसः[2] ॥६०५॥	Catarrh affecting the nose 2.
Afflicted with rheumatism 2.	वातकी[1] वातरोगी[2] स्यात्सातिसारो[1]ऽतिसारकी[2] ।	Afflicted with diarrhoea or dysentry 2.
Pained with phlegm and scab, scabby, pained with leprosy, leprous.	सिध्मश्लेष्मार्शसंयोगात्सिध्मलः श्लेष्मलो[1]ऽर्शसः[2] ॥६०६॥	Afflicted with piles 2.
Afflicted with ringworms 2.	दद्रुणो[e][1] दद्रुरोगी[2] स्यान्नःक्षुद्रः[1] क्षुद्रनासिकः[2] ।	Small-nosed 2.
	क्लिन्ने यस्याक्षिणी पिल्लश्[1]चिल्लश्[2]चुल्लश्[3]च स स्मृतः ॥६०७॥	Blear-eyed 3.
Big bellied; gorbellied 2.	पिचण्डिलो[f][1] वृहत्कुक्षिस्[2]तुन्दिलो[1]दरिलौ[2] च सः ।	Fat, corpulent 2.
Bald-headed 3.	खलतिः[1] शिपिविष्टः[2] स्यादैन्द्रलुप्तिक[3] एव च ॥६०८॥	
Blind 2.	अन्धो[1] ह्यनेडमूकः[2] स्यादेडो[1] वधिर[2] उच्यते ।	Deaf 2,
A dumb 3.	जडः[1] कडः[2] स्मृतो मूकः[3] कल्लमूकस्[g][1]त्ववाक्श्रुतिः[2] ॥६०९॥	Deaf and dumb 2.
Lame 3.	खञ्जः[1] पङ्गुस्तथा[2] श्रोणः[3] कुणिर्[1]विकलपाणिकः[2] ।	Maimed 2.
Having prominent navel 2.	तुण्डिर्[1]उन्नतनाभिः[2] स्याद्विग्रो[1] विगतनासिकः[2] ॥६१०॥	Noseless. 2.

a खशः b खर्जुः c गंडः d प्रतिशायश्च, प्रतिकृयावश्च । e दद्रणे दद्ररोगी, ददृणो ददृरोगी f पिचिंडिलो, पिडिलोचि, पिचिडोलि g कलम् ।

Hump-backed 2.	1 2 1 2 गडुलः कथ्यते कुब्जः खर्वशाखस्तु वामनः ।	Dwarfish 2.
Dwarf 3.	1 2 3 पृश्निः स्वल्पशरीरः स्यात्किरातः स च कथ्यते ॥६११॥	
A physician 5.	1 2 3 4 5 आयुर्वेदी भिषग्वैद्यो दोषज्ञः स्याच्चिकित्सकः ।	
Treatment, the practice of medicine 2.	1 2 1 2 उपचर्या चिकित्सा स्यान्निदानं हेतुरुच्यते ॥६१२॥	Diagnosis, primary cause of disease 2.
A poison-doctor 2.	1 2 1 a 2 जाङ्गुलिको विषभिषक् व्यालग्राह्यहितुण्डिकः ।	A snake-catcher 2.
Medicine 6.	1 2 3 4 5 6 भैषज्यं भेषजं जायुरगदस्तन्त्रमौषधम् ॥६१३॥	
A sort of salt.	1 2 b 3 4 सिन्धूत्थं माणिमन्थं च सैन्धवं लवणोत्तमम् ।	
Long pepper 6.	1 2 3 4 5 6 कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी पिप्पली कणा ॥६१४॥	
Dry ginger 5.	1 c 2 3 4 5 शुण्ठी नागरमुक्ता महौषधं विश्वभेषजं विश्वा ।	
Liquorice root 2.	1 2 1 2 3 d मधुकं यष्टिमधु स्यादमृता वत्सादनी गुडूची च ॥६१५॥	A kind of plant 3.
Ginger 2.	1 2 1 2 आर्द्रकं शृङ्गवेरं स्यादजाजी जीरकः स्मृतः ।	Cumin seed 2.
Black pepper 3.	1 2 e 3 वेल्लजं मरिचं प्रोक्तमूषणं च मनीषिभिः ॥६१६॥	
A kind of salt 2.	1 2 f 1 2 सौवर्चलस्तु रुचकः कुस्तुम्बुरु च धान्यकम् ।	Coriander seed 2.
The aggregate of (1) black pepper (2) long pepper and (3) dry ginger 3.	1 2 3 1 g 2 त्रिकटु त्र्यूषणं व्योषं हिङ्गु रामठ उच्यते ॥६१७॥	Asafoetida 2.
Yellow myrobalan3	1 2 3 1 2 3 हरीतक्यभया पथ्या धात्री चामलकी शिवा ।	Emblic my--robalan 3. (आँवला)
A kind of tree 3.	1 2 3 1 2 कलिरक्षो विभीतः स्यात्त्रितयं त्रिफला स्मृता ॥६१८॥	A mixture of (1) हरीतकी, विभीतक and आमलकी।
A ringworm shrub 4.	1 h 2 3 4 एडगजः प्रपुनाटो दद्रुघ्नश्चक्रमर्दकः प्रोक्तः ।	
Asparogus racemosus 2. शतावरी in Hindi,	1 2 i 1 2 3 शतमूलिका त्वभीरुर्निदिग्धिका कण्टकारिका व्याघ्री ॥६१९॥	Name of a medicinal plant भटकटैया in Hindi 3.

a व्यालग्राह्योहि　b माणिबंधं　c सुंठी, शुंठीं, शंठी　d गडूची
e प्रोक्तं त्र्यूषणं, प्रोक्तं पूषणं　f कुस्ताम्बरु, कस्तंबरु, कुस्ताम्बरु, कुस्तंवरु　g रामठो हिङ्गुरुच्यते, हिगु व्योषं रामठ उच्यते,
h प्रपुन्नाठो, प्रमुन्नाठो　i निर्दिग्धिका, निदग्धिका (गुणैः कंटकैर्वा निदिह्यते स्म उपचिता, दिह उपचये, निदिग्धा कनि निदिग्धिका)

A particular fragrant; gum resin, bedellium.
a 1 2 3 4
पुराख्यो महिषाक्षश्च गुग्गुलः स्यात्पलङ्कषः ।

Safflower, कसूंभ in Hindi.
b 1 c 2
महारजनमिच्छन्ति कुसुम्भं च सुमेधसः ॥६२०॥

Vermillion 3, मोथा in Hindi.
1 2 d 3 e
हिङ्गुलं हंसपादं च कुरुविन्दं निगद्यते ।

Honey 5.
1 2 3 4 5
सारघं माक्षिकं क्षौद्रं मधु पुष्परसस्तथा ॥६२१॥

A fragrant root 2. A sort of perfume 3.
1 f 2 1 2 3
उशीरं वीरणीमूलं ह्रीवेरं वालकं जलम् ।

A kind of plant 4.
1 2 3 4
मुस्तकः कुरुविन्दः स्याद् गुन्द्रा च जलदाह्वयः ॥६२२॥

इति श्रीभट्टहलायुधकृतायामभिधानरत्नमालायां
भूमिकाण्डं द्वितीयं समाप्तम् ॥२॥

a सुराव्यो महिषाख्यश्च b महारजत c कुसंभं d करविंदं e प्रचक्षते f उसीरं।

तृतीयं पातालकाण्डम्

The infernal regions 6.

1 2 3
वडवामुखं पातालं वैरोचननिकेतनम् ।
4 5 6
तथाधोभुवनं प्रोक्तं नागलोको रसातलम् ॥६२३॥

A hole 16.

1 2 3 4 5 6 7 8
निम्नमगाधो गर्तः श्वभ्रं शुषिरं वपा बिलं विवरम् ।
a 9 10 11 12 13 14 15 16
अन्तरमवटु च्छिद्रं निर्व्यथनं रन्ध्ररोककुहरदराः ॥६२४॥

The hell 3.

1 2 3
निरयो दुर्गतिश्चैव नरकः परिकीर्तितः ।

An (evil) spirit subject to the torments of hell.

1 2 3 b
नारका जन्तवः प्रेता यात्याश्चैवातिवाहिकाः ॥६२५॥

Torment 2. / Confinement 2.

1 2 1 2
यातना कारणा प्रोक्ता कारा बन्धनमुच्यते ।

Pain 6.

1 2 3 c 4 5 6
आबाधा वेदना दुःखमर्तिः पीडा व्यथा तथा ॥६२६॥

Sin, wrong 14.

1 2 3 4 5 6 7 8
वृजिनं दुरितं दुष्कृतमघमंहः किल्विषं तमः कल्कम् ।
9 10 d 11 12 13 14
एनः कलमषमशुभं पापं स्यात्पातकं पाप्मा ॥६२७॥

Death 11.

1 2 3 4 5 6 7
निधनं नाशो मृत्युर्मरणं पञ्चत्वमत्ययः कालः ।
8 9 10 11
संस्था स्याद्दिष्टान्तो निमीलनं दीर्घनिद्रा च ॥६२८॥

Dead 7. / Corpse 2.

1 2 3 4 5
परासुरुपसम्पन्नः प्रमीतः संस्थितो मृतः ।
6 7 1 2
प्रेतः परेतश्च तथा कुणपः शवमुच्यते ॥६२९॥

a अन्तरमवाक्, अंतरमवट b श्चैवात्यवाहकाः, श्चैवातिवाहकाः
c दुःखमार्तिः d कलुष ।

Headless trunk retaining some power of action 2.	[1]कबन्धः कथ्यते / [2]रुण्डः [1][2][3][4]क्षतमीर्ममरुर्व्रणः ।	Wound 4.
The skin, hide 5.	[1]असृग्धरा[2]जिनं [3]चर्म [4]कृत्ति[5]स्त्वक् परिकीर्तिता ॥६३०॥	
Flesh 8.	[1]पललं [a][2]जाङ्गलं [3]मांसं [4]पलं [5]पिशित[6]मामिषम् ।	
	[7]क्रव्यं [8]तरसमेकार्थं [1][b]विस्रं [2]स्यादामगन्धिकम् ॥६३१॥	The smell of raw meat 2.
Blood 7.	[1]क्षतजं [2]लोहित[3]मस्रं [4]रुधिर[5]मसृक् [6]शोणितं च [7]रक्तं स्यात् ।	
A bone 4.	[1]अस्थीनि [2]धातु[3]कीकस[4]कुल्यानि भवन्ति तुल्यानि ॥६३२॥	
A skeleton 3.	[1]शरीरस्यास्थि [2]कङ्कालं तथा [3]स्यादस्थिपञ्जरम् ।	
The skull 3.	शिरसोऽस्थि [1]करोटिः स्यात्[2]कपालं [3]शकलं च [c]तत् ॥६३३॥	
The radius of the arm 2.	[1]शाखास्थि [2]नलकं प्रोक्तं [1]पृष्ठस्यास्थि [2]कसेरु च ।	Backbone 2.
The principal artery of the body 2.	[1]कण्डरा [2]स्यान्महास्नायुः [1]स्नसा [2]स्नायुः [3]शिरा स्मृता ॥६३४॥	Sinew 3.
The brain 2.	[d][1]मस्तिष्कं [2]मस्तकस्नेहो [1]वपा [2]मेदो [3]वसा स्मृता ।	The serum or the lymph of the flesh 3.
An entrail 2.	[1]अन्त्रं [2]पुरीतत्कथितं [1]कालखण्डं [2]यकृन्मतम् ॥६३५॥	Liver 2.
The heart 2.	[1]बुक्कं [2]स्यादग्रमांसं च [1]तिलकं [2][e]क्लोम कथ्यते ।	The lungs 2.
A worm.	[1]कृमिः [2]कीटस्तु [3]नीलङ्गुः [4]पुलकश्च समः स्मृतः ॥६३६॥	
Excrements, ordure 12.	उच्यते [1]वर्च [2]उच्चारो [3]वर्चस्को[4]ऽवस्करः [5]शकृत् ।	
	[6]गूथं [7]कीटं च [8]विट् [9]विष्ठा [10]पुरीषं [11]शमलं [12]मलम् ॥६३७॥	
Semen, virile 6.	[1]शुक्रं [2]वीर्यं [3]बलं [4]बीज[5]मिन्द्रियं [6]रेत उच्यते ।	A funeral pile 2, a pile of fuel on which the dead body is cremated 2.
Crematorium, cremation ground; burning ghat 2.	[1]श्मशानं [2]स्यात्पितृवनं [1]चिता [2]चित्या च कथ्यते ॥६३८॥	
Crying 2.	[1]क्रन्दितं [2]रुदितं प्रोक्तं [1]विलापः [2]परिदेवनम् ।	Lamentation 2.
Bathing after the performance of funeral ceremony 2.	[1]अपस्नानं [2]मृतस्नानं [1]निवापः [2]पितृतर्पणम् ॥६३९॥	Presents given to the deceased 2.

a जागरं b विश्रं c यत् d मस्तक्यं, मस्तियु, मस्तिक्यं
e क्लोममिष्यते।

1 2 3 a 4 5 6 7 b
* विषधरदन्दशूकपवनाशनसर्पसरीसृपोरगव्याल-
8 9 10 11 12 13
भुजगभुजङ्गकुम्भीनसपन्नगनागभोगिनः ।
14 15 16 17 18 19 20
अहिफणभृत्पृदाकुकाकोदरकञ्चुकिचक्रिगूढपाद् ,
21 22 23 24 25
द्विरसनकाद्रवेयदर्वीकरदृक्श्रुतयो भुजङ्गमाः ॥६४०॥

A snake, a serpent 29.

c 26 27 28 29
आशीविषो दीर्घपृष्ठः कुण्डली जिह्मगः स्मृतः ।

1 2 3 1 2 3
फणः फणा फटा प्रोक्ता विषं स्याद्गरलं गरः ॥६४१॥

The hood of a snake 3. — Poison 3.

1 d 1 2
अहेः शरीरं भोगः स्यादाशीर्दंष्ट्राभिधीयते ।

The coil of a snake. — A serpent's fang.

e 1 2 1 2 3 f
भवेत्तिलित्सो गोनासो वाहसोऽजगरः शयुः ॥६४२॥

A sort of snake 2. — The boa 3.

1 2 1 g 2
अलगर्दो जलव्यालो राजिलो डुण्डुभः स्मृतः ।

A water snake 2. — A kind of snake 2.

h 1 i 2 1 2
अहीरणी स्याद्द्विमुखो राजसर्पश्च सर्पभुक् ॥६४३॥

A sort of snake 2. — A large species of serpent 2.

j 1 2 3 4
निर्ल्वयनी निर्मोकः कञ्चुक उक्ता भुजङ्गमुक्ता त्वक् ।

The cast off skin or slough of a snake.

k 1 2 3 4
वम्रीकूटं नाकुर्वल्मीको वामलूरश्च ॥६४४॥

Ant-hill 4.

1 2 3 1 4
उपजिह्वोपदीका च वम्री स्यादुपदेहिका ।

A sort of ant 4.

1 2 1 2 3
अलं वृश्चिकलाङ्गूलं द्रुत आलिश्च वृश्चिकः ॥६४५॥

The sting of scorpion 2. — A scorpion 3.

1 2 m 3 4
ब्रह्मपुत्रः शौल्किकेयो दारदश्च प्रदीपनः ।
5 6 7 8 9
रसः सौराष्ट्रिकः क्ष्वेडस्तीक्ष्णश्च विषमुच्यते ॥६४६॥

A sort of poison 9.

* The metre (छन्द) of this stanza is called धृतश्री or according to others पञ्चकवली । It consists of 4 tetrastichs, each containing 28 short syllables, arranged in the following order; ⏑⏑⏑⏑⏑–⏑–⏑⏑⏑⏑–⏑⏑–⏑⏑– ⏑–⏑–⏑. It occurs again in IV । (६८६) see माघ ३–८२ ।

a पवनाशसर्प b व्यालः, c आशीर्विषो d आशीर्दशा, आसीदंष्ट्रा e भवेत्तिलंगो, भवेत्तिलंसो, भवेत्रिलिंगो f स्मृतः g दुंदुभः दुंदुभिः h अहीरागी अहीरगी i द्विजिह्वः स्यात् j निर्लयनी, निर्लूयनी k वम्रीकूटं, वल्मीकूटं, वोल्मीकूटं l वम्री m शौल्किकेयः ।

Different kinds of poison 6.
[a][1]शृङ्गिको [2]वत्सनाभश्च [3]कालकूटो [4]हलाहलः ।
[5]काकोलो [b][6]विस्फुलिङ्गश्च तद्भेदाः स्युरनेकधा ॥६४७॥

Water 26.
[1]आप[2]स्तोयं [3]घनरस[4]पयः [5]पुष्करं [6]मेघपुष्पं ,
[7]कं [8]पानीयं [9]सलिल[10]मुदकं [11]वारि [12]वाः [13]शम्बरं च ।
[14]अर्णः [15]पाथः [16][c]कुश[17]जल[18]वनं [19]क्षीर[20]मम्भो[21]ऽम्बु [22]नीरं ,
प्रोक्तं प्राज्ञैर्[23]भुवन[24]ममृतं [25]जीवनीयं [26]दकं च ॥६४८॥

Deep 5.
[1]अतलस्पर्श[2]मगाधं [3]गम्भीरं स्याद् [4]गभीर[d][5]मस्थागम् ।

Navigable 2. — Water just drawn out of the well.
[1]नावा [2]तार्यं नाव्यं [1]द्राग्भूतकं तत्क्षणोद्धृतं तोयम् ॥६४९॥

Frost, cold 8 — A mass of snow 2.
[1]प्रालेय[2]मवश्याय[3]स्तुहिनं [4]शिशिरं [5]हिमं [6]तुषारं च ।
[7]मिहिका स्या[8]न्नीहारो [1]हिमसंघातो [2]हिमानी च ॥६५०॥

Erection of the hair of the body 8.
[1]रोमाञ्चः [2]पुलकः स्यात्[3]कण्टक[4]मुद्धुषण[5]मुल्लकसनं च ।
[6][e]रोमोद्गम[7]रोमविकार[8]रोमहर्षाः समानार्थाः ॥६५१॥

The sea, an ocean 12.
[1]रत्नाकरः [2]सरस्वा[3]नुदधि[4]रुदन्वान्[5]सरित्पति[6]रकूपारः ।
[7]पारावार[8]स्तोयनिधि[9]रर्णव[10]जलराशि[11]सागर[12]समुद्राः ॥६५२॥

A wave, a billow 3.
[1]वीची [2]भङ्ग[3]स्तरङ्गः स्यात्तन्महत्त्वे च कथ्यते ।

A great wave 5.
[1]ऊर्मि[2]रुत्कलिको[3]ल्लोलः [4]कल्लोलो [5]लहरी तथा ॥६५३॥

A shore 2. — Tide, flow, current; also sea-coast, sea-shore 2.
[1]मर्यादा [f][2]कूलदेशोऽस्य [1]वेला [2]वृद्धिश्च वारिणः ।

A wood on the sea-coast.
[1]वेलावनं तु विज्ञेयमुपकण्ठेऽस्य यद्वनम् ॥६५४॥

A sea-trader 2 — A boat, a ship 2.
[1]सांयात्रिकः [2]पोतवणिक् [g][1]पोतः [2]प्रवहणं स्मृतम् ।

The mast of a ship, also a stake to which a boat is moored; also a rock or tree in the midst of a river 2. — A sailor 2.
[1]कूपको [2]गुणवृक्षः स्या[1]न्निर्यामः [2]कर्णधारकः ॥६५५॥

a शृंगिका b विस्फुलिंगः स्यात् तद्भेदा अप्यनेकधा c कुशजलवम d मस्ताङ्गं e रोमोद्गरोरोमविकारो, रोमरोमविकारो, रोमोद्गमोरोम-विकारो f कूलदेशस्य, कूलदशाश्च g प्रोतः ।

English	Sanskrit	English
Any large aquatic animal, a sea-monster 3.	अन्तर्जलचरं[1] सत्त्वं[2] क्रूरं यादोऽभिधीयते[3] ।	
A shark 2.	अवहारः[1] स्मृतो ग्राहः[2] कुम्भीरो[1] नक्र[2] उच्यते ॥	A crocodile 2.
A tortoise 3.	कच्छपः[1] कमठः[2] कूर्मस्तद्भार्या[3] च डुली[1] स्मृता ॥६५६॥	The female tortoise.
	वैसारिणो[a 1] विसारः[2] पृथुरोमा[3] जलचरो[4] झषो[5] मत्स्यः[6] ।	
A fish 11.	तिमिर[7]निमिषश्च[8] मीनः[9] शकली[10] शल्की[11] च विज्ञेयः ॥६५७॥	
A sort of fish 2.	सहस्रदंष्ट्रः[1] पाठीनः[2] प्रोष्ठी[b 1] च शफरी[2] स्मृता ।	
A shrimp or prawn; a sort of fish 2.	नलमीन[1]श्चिलिचिमः[2] कुलीरः[1] कर्कटो[2] मतः ॥६५८॥	A crab 2.
Which are large, a sort of fish.	शालः[1] शकुलः[2] कुलिशो[3] राजीवो[4] रोहितश्च[5 c] पल्लवकः[6 d] ।	
	शृङ्गी[7]मद्गुर[e 8]वागुस[9]नन्द्यावर्तादयो[10] महामत्स्याः ॥६५९॥	
A kind of sea-animal, a crocodile, a shark 2.	मत्स्यविशेषो[1] मकरः[2] करिमकरो[1] भवति तद्विशेषस्तु ।	A fabulous sea-monster.
A sort of large fish.	चीरिल्लि[f 1]तिमि[2]तिमिङ्गिलगिलादयो[3] महामत्स्याः ॥६६०॥	
Having recently come out of a small egg, also a shoal of fish, a multitude of fish 2.	क्षुद्राण्डो मत्स्यसंघातः[1] पोताधानं[2 g] च कथ्यते ।	
A worm 2.	गण्डूपदः[1] किञ्चुलको[2 h] जलौकाः[1 i] स्युर्जलौकसः[2] ॥६६१॥	A leech 2.
A frog 8.	मण्डूकः[1] प्लवको[2] भेकः[3] शालूरो[4] दर्दुरो[5] हरिः[6] ।	
	प्लवङ्गमः[7] प्लवगः[8] स्याद्वर्षाभूस्तद्वधूः[1] स्मृता ॥६६२॥	The female frog.
	यावन्तो दृश्यन्ते नरकरितुरगादयः स्थले जीवाः ।	
	तावन्तः सलिलेष्वपि जलपूर्वास्ते तु[j] विज्ञेयाः ॥६६३॥	
A pearl 3.	उक्ता मुक्ता[1] मौक्तिकं[2] शौक्तिकेयं[3] ,	
Pearl-oyster 2.	मुक्तास्फोटः[1] शुक्तिराख्यायते[2] च ।	

a वैसारणो, वैशारणो b प्रौष्ठी c लोहितश्च d पल्लपिकः e मद्गुरु f चिरिल्लि g पोतादानं h कंचुलको, किंजलको i जलौकाश्च, जलोकसः, जलोकाः स्युः j तेऽपि ।

	1 2 1 2	
A conch, shell 2.	कम्बुः शङ्खः क्षुल्लकाः क्षुद्रशङ्खाः ,	A small shell 2.
	1 2	
	शम्बूकास्ते स्युः कपर्दो वराटः ॥६६४॥	A small shell used as a coin (कौड़ी).
	1 2 3 4	
	सिन्धुः स्रवन्ती तटिनी तरङ्गिणी ,	
	5 6 7 8	
A river 24.	नदी धुनी निर्झरिणी च निम्नगा ।	
	9 10 11	
	कूलङ्कषा शैवलिनी सरस्वती ,	
	12 13 14	
	समुद्रकान्ता ह्रदिनी तथापगा ॥६६५॥	
	15 16 17 18 19 20	
	स्रोतः स्रोतस्विनी कर्षूः कुल्या द्वीपवती सरित् ।	
	21 22 a 23 24	
	रोधो वप्रस्तु विज्ञेयो भिद्य उद्धयो नदः स्मृतः ॥६६६॥	
	1 2 3 4 5 6	
A bank, a shore 6.	तीरं कूलं तटं कच्छः प्रपातो रोध उच्यते ।	
	b 1 2 1 2	
Near bank 2.	अर्वाक्कूलमपारं स्यात्परं पारमिति स्मृतम् ॥६६७॥	Opposite shore 2.
	1 2	
	पात्रं तु कूलयोर्मध्यमावर्तः पयसां भ्रमः ।	A whirl, an pool, eddy whirl 2.
	1 c 2 1 d 2	
The swelling or rising of a river or sea, flood 2.	पूरः स्यादम्भसो वृद्धिः फेनो डिण्डीर उच्यते ॥६६८॥	Froth, foam 2.
	1 2 e 3 4 5 6	
A stream 6.	ओघः प्रवाहो वेणी च धारा स्रोतो रयः स्मृतः ।	
	1 2 f 3	
Confluence or junction of two rivers 3.	सम्भेदः सङ्गमो नद्योः संवेद्यश्च निगद्यते ॥६६९॥	
	1 2 3 1 2	
A mound in the middle of a river 2	सैकतं पुलिनं द्वीपं सिकता वालुका स्मृता ।	Sand, gravel 2.
	1 2	
An island, a cape.	मध्ये द्वीपमन्तरीपं ह्रदस्तोयाशयो मतः ॥६७०॥	A lake 2.
	1 2 1 g 2	
The bend of a river 2.	चक्राणि पुटभेदाः स्युः सेतुर्वरण उच्यते ।	A bridge 2.
	1 2 h 1 2 3	
Fare 2.	आतरस्तरपण्यं च तल्पं स्यादुडुपः प्लवः ॥६७१॥	A raft, float 3.
	1 2 3 4 1 2	
A boat, a ship 4.	तरीर्नौर्मङ्गिनी बेडा नौदण्डः क्षेपणी स्मृता ।	An oar 2.
	1 2 1 i 2	
A rudder 2	अरित्रं कोटिपात्रं स्यात्पुलिन्दो मङ्ग उच्यते ॥६७२॥	The head of a boat 2.

a उध्यो, उयो, उद्यो, उद्धयो b अवाक्कूल c स्यादम्भसां d डिंडिम e वेणी तु f संवेद्यस्तु, संवद्यरक्त निगद्यते g सेतुर्वारणमुच्यते h तल्वं स्यांदुडुपं i पल्वणं।

The ganges 9. — भागीरथी[1] सुरसरि[2]द्विष्णुपदी[3] जाह्नवी[4] तथा गङ्गा[5] ।
मन्दाकिनी[6] त्रिपथगा[7] सरिद्वरा[8] त्रिदशदीर्घिका[9] प्रोक्ता ॥६७३॥

The river Godawari 2. The river Yamuna 3. — गोदावरी[1] च गोदा[2] कालिन्दी[1] दिनकरात्मजा[2] यमुना[3] ।

The river Sone 2. The river Narbada 3. — शोणो[1] हिरण्यबाहुर्[2]मेकलकन्या[1] च नर्मदा[2] रेवा[3] ॥६७४॥

A small pond 3. A large pond 3. — वेशन्तः[1] पल्वलं[a][2] तल्लं[3] कासारः[1] सरसी[2] सरः[3] ।

A natural pond 2. An artificial pond 2. — आखातो[b][1] देवखातः[2] स्यात्खाता[1] पुष्करिणी[2] भवेत् ॥६७५॥

A pond 2. A bridge 2. — आधारश्च[1] तडागं[2] स्यादाली[1] पाली[2] च कथ्यते ।

A moat, a ditch 2. — परिखा[1] दीर्घिका[2] प्रोक्ता खाता या परितः पुरम् ॥६७६॥

A drain 2. A spring 2. — परीवाहो[1] जलोच्छ्वास[2] उत्सः[1] प्रस्रवणं[c][2] स्मृतम् ।

Drop. — विप्रुषो[1] विन्दवः[2] प्रोक्ताः पृषतः[3] पृषतास्तथा[4] ॥६७७॥

Liquidated food; also mud 2. Mud, mire 6. — पिच्छिलं[1] स्याद्विजपिलं[d][2] पङ्कः[1] शादो[2] निषद्वरः[3] ।
जम्बालः[4] कर्दमः[5] प्रोक्तो बुधैरिचिकिलस्तथा[e][6] ॥६७८॥

A lotus 17. — सहस्रपत्त्रं[1] शत्रपत्त्र[2]मम्बुजं[3]
कुशेशयं[4] तामरसं[5] सरोरुहम्[6] ।
विसप्रसूनं[f][7] कमलं[8] महोत्पलं[9],
सरोज[10]मब्जं[11] नलिनं[12] च पुष्करम्[13] ॥६७९॥
राजीव[14]मरविन्दं[15] च पद्मं[16] पङ्कजमिष्यते[17] ।

Red lotus. A white lotus 2. — रक्तं कोकनदं[1] प्रोक्तं पुण्डरीकं[1] सिताम्बुजम्[2] ॥६८०॥

The white water lily 2. A blue lotus 4. — सौगन्धिकं[1] च कह्लारं[2] स्यादिन्दीवर[1]मुत्पलम्[2] ।

White lotus 2. — नीलोत्पलं[3] कुवलयं[4] कैरवं[1] कुमुदं[2] विदुः ॥६८१॥

a पल्वणं b अखातो c प्रवहणं d स्याद्विजवलं e बुधै-
रिचकिल f विसप्रसूतं ।

A pericarp of lotus 2.

Fibrous root of a lotus; a lotus fibre 3.

(a) lotus plant bearing white lotuses
(b) place or pond abounding in white lotuses
(c) an assemblage of white lotuses.

1 a 2 b 1 2
कर्णिका बीजकोशः स्यात्किञ्जल्कं केसरं स्मृतम् ।
1 c 2 3 1 2
मृणालं स्याद्बिसं कन्दो विसिनी नलिनी भवेत् ॥६८२॥
1 2 3
कुमुद्वती कुमुदिनी बुधैः कैरविणी स्मृता ।

The filament of a flower 2
A lotus plant, an assemblage of lotuses, lotus fibre; also a lake abounding in lotuses 2.

A water plant moss.

A well 2
प्रधिर्नेमि A pulley, the periphery or circumference of a wheel 2.

A small pool or pond near a well or a well itself 2.

The rope and bucket of a well 2.

A canal 2.

d 1 2 1 2
शेवालं शैवलं प्रोक्तं जलशूकं च नीलिका ॥६८३॥
1 2 1 2 1 2 e 3
अन्धुः कूपः प्रधिर्नेमिश्चुरी चुण्ढी च चूतकः ।
1 2 1 2
निपानमुदपानं च वाप्याहावश्च कथ्यते ॥६८४॥
f 1 2 1 2
उद्घाटकं घटीयन्त्रं पादावर्तोऽरघट्टकः ।
1 g 2 1 2
पानं तु सारणिः प्रोक्ता प्रणाली जलपद्धतिः ॥६८५॥

Moss 2.

A small well or reservoir 3.

A trough near a well for watering cattle 2.

A wheel or machine for raising water from a well 2.

A channel, a drain, a gutter 2.

इति श्रीभट्टहलायुधकृतायामभिधानरत्नमालायां

पातालकाण्डं तृतीयं समाप्तम् ॥३॥

a वीजकोशं b किञ्जल्कः किंजः c स्याद्बिसकन्दो d शैवालं
e चंठी, चुंडी f उद्घाटनं g सारणैः, सारणं ।

चतुर्थं सामान्यकाण्डम्

* 1 2 3 4 5 6 7 8
निकरनिकायनिवहविसरव्रजपुञ्जसमूहसञ्चयाः ,
9 10 11 a 12 13 14 15
समुदयसार्थयूथनिकुरम्बकदम्बकपूगराशयः ।
16 17 18 19 20 21 22
चयसमवायवृन्दसन्दोहसमाजवितानसंहति-
23 24 25 26 27 28 29 30
प्रकरगणौघसंघसंघातव्रातकुलोत्कराः स्मृताः ॥६८६॥

Heap, collection 40.

31 b 32 33 34 35
पटलं पेटकं चक्रं चक्रवालं च मण्डलम् ।
36 37 38 39 40
जालं जातं तथा व्यूहवारस्तोमाश्च ते स्मृताः ॥६८७॥

Small, little, minute 15.

1 2 3 4 5 6 7 8
सूक्ष्मलेशलवश्लक्ष्णक्षुद्रदभ्रकणाणवः ।
9 10 11 12 13 14 15
किञ्चिन्मात्रतनुस्तोक ह्रस्वाल्पत्रुटयः समाः ॥६८८॥

Fine, pleasing 42.

c 1 2 3 4 5 6 7
प्राग्र्यं प्राग्रहरं प्रवेकमपरं वर्यं वरेण्यं वरं ,
8 9 10 11 12 13 14
श्रेष्ठं प्रेष्ठमनुत्तमं च मधुरं मञ्जु प्रियं मञ्जुलम् ।
15 16 17 18 19 20 21
हृद्यं हारि मनोहरं च रुचिरं कान्तं परं सुन्दरं ,
22 23 24 25 26 27 28 29
सौम्यं साधु च वल्गु चारु सुषमं वामं शुभं पेशलम् ॥६८९॥

* This छन्द is called ध्रितश्री or पञ्चकवली consisting 4 tetrastichs each containing 28 short syllables arranged in the following order⏑⏑⏑ ⏑–⏑–⏑⏑⏑–⏑⏑⏑–⏑⏑⏑–⏑⏑–
it also occured in sloka 640. It is also used by the poet माघ in शिशुपालवध ३–८२ ।

a निकरंव b पेटलं c प्राग्रं ।

Chief, Principal.

[30]अग्रयं [31]प्रधानं [32]प्रमुखं [33]पुरोगं ,
[34]मुख्यं [35]परार्ध्यं [36]प्रवरं [37]प्रवर्हम् ।
[38]अग्रेसरं [a][39]सत्तम[40]मुत्तमं च ,
[41]ग्रामण्य[42]मग्रण्यमुदाहरन्ति ॥६९०॥

Doubt, hesitation9.

[1]शङ्का [2]वितर्कः [3]सन्देहः [4]संशया[b]रेक[5]विभ्रमा[6]: ।
[7]विचिकित्सा [8]विकल्पश्च [9]भ्रान्तिरेकार्थवाचकाः ॥६९१॥

Near 19.

[1]समीपं [2]सनीडं [3]समर्याद[4]मारात् ,
[5]सदेशं [6]सवेशं [7]ससीमो[8]पकण्ठम् ।
[9]तथाभ्यर्ण[10]मभ्यग्र[c][11]मभ्याशमाहु—
बुधाः [12]सन्निधाना[13]न्तिके [14]सन्निकृष्टम् ॥६९२॥
[15]आसन्नं [16]सविधं [17]पार्श्व[18]मुपान्त[19]मपदान्तरम् ।

Remote, distant 5.

[1]विप्रकृष्टं [2]परं [3]दूर[4]माराद् [5]व्यवहितं स्मृतम् ॥६९३॥

Like, similar 11.

[1]सदृक् [2]समानः [3]सदृशः [4]सदृक्षः ,
[5]प्रख्यः [6]प्रकाशः [7]प्रतिमः [8]प्रकारः ।
[9]तुल्यः [10]समः [11]सन्निभ इत्यभिन्नाः ,
शब्दाः प्रयोगेषु गवेषणीयाः ॥६९४॥

Fickle 10.

[1]लोलं [2]चपलं [3]चटुलं [4]प्रचलं [5]तरलं [6]परिप्लव[7]मधीरम् ।
[8]पारिप्लवं च धीराश्चलाचलं [9]चञ्चलं [10]च कथयन्ति ॥६९५॥

Crooked 12.

[1]वक्रं [2]वृजिनं [3]भङ्गुर[4]माविद्धं [5]वेल्लितं [6]नतं [7]जिह्मम् ।
[8]भुग्न[9]मरालं [10]कुटिलं [11]व्याकुञ्चित[12]मूर्मिमत्कथितम् ॥६९६॥

a सत्तमनुत्तमं, सतममुत्तमं, सत्तमुत्तमं b संशयांवेक, संशयाबेक, संशयोद्रेक c म्यासमा ।

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
द्राक् चपलं लघु मङ्क्षु स्राक् तूर्णं त्वरितमाशु शीघ्रमरम् ।
11 12 13 14 15 16
Soon, quickly 16. अह्नाय सत्वरं च क्षिप्रं द्रुतमञ्जसा झटिति ॥६९७॥

1 2 3 4 5 6 7
Always, continual, unceasing 11. सततं सन्ततमनिशं नित्यमजस्रं च शश्वदश्रान्तम् ।
8 9 10 11
अविरतमनवरतं स्यादेकार्थमनारतमसक्तम् ॥६९८॥

1 2 3 4 5 6 7 8 9
Large, great 13. बृहदुरु गुरु विस्तीर्णं पुरु पृथु पृथुलं महद्विशालं च ॥।
10 11 a 12 13
व्यूढं विपुलं रुद्रं वरिष्ठमेकार्थमुद्दिष्टम् ॥६९९॥

1 2 3 4 5 6 7
A pair, a couple 7. युग्मं युगं च युगलं द्वन्द्वं द्वितयं यमं यमलम् ।
b 1
Couple of male and female. स्त्रीपुंसयोस्तु युग्मं मिथुनं परिकथ्यते सद्भिः ॥७००॥

c 1 2 3 4 5 6
Abundant; much 10. प्राज्यं भूरि प्रभूतं च प्रचुरं बहुलं बहु ।
d 7 8 9 10
पुरुजं पुष्कलं पुष्टमदभ्रमभिधीयते ॥७०१॥

1 2 3 4 5 6
Full of, gathered, accumulated 9. आचितं निचितं व्याप्तं छन्नं कीर्णं च सङ्कुलम् ।
7 8 9
आकुलं भरितं पूर्णं नातिनानार्थवाचकाः ॥७०२॥

1 2 3 4
Rejected, set aside 7. प्रत्याख्यातं प्रतिक्षिप्तं प्रत्यादिष्टं निराकृतम् ।
5 6 7
निरस्तमपविद्धं च प्राज्ञाः परिहृतं विदुः ॥७०३॥

1 2 3 4
Disrespect, dishonour, contempt 7. अत्याकारः परिभवो निकारश्च पराभवः ।
5 6 7
अनादरश्चाभिभवस्तिरस्कारश्च कथ्यते ॥७०४॥

1 2 3 4 5
Terrible, fearful 10. घोरं प्रतिभयं भीमं दारुणं स्याद्भयानकम् ।
6 7 8 9 10
आभीलं भीषणं भीष्मं भैरवं च भयावहम् ॥७०५॥

1 2 3 4 5
Friendship 10. सख्यं साप्तपदीनं सौहार्दं सौहृदं तथा स्नेहः ।
6 7 8 9 10
मैत्री प्रीतिरजर्यं सभाजनं सङ्गतं प्रोक्तम् ॥७०६॥

a वृन्दं, भद्रं, बड्रं b स्त्रीपुंसयोश्च c प्रायं d पुरुहं ।

First 7.	आदिरग्रं पुरा पूर्वं प्रथमं प्राक् पुरः स्मृतम् ।	
Beginning 3.	उपज्ञोपक्रमारम्भौ पश्चाच्च चरमं भवेत् ॥७०७॥	Final, last 2.
Solitude 7.	रहः प्रच्छन्नमेकान्तं निःशलाकमुपह्वरम् ।	
	उपांशु विजनं प्रोक्तं रहस्यं गुह्यमुच्यते ॥७०८॥	Secret, concealed 2.
Trick, deceit, deception 10.	कैतवं कपटं कूटं व्याजच्छद्मोपधिच्छलम् ।	
	मिषं निभं च निर्दिष्टं व्यपदेशश्च सूरिभिः ॥७०९॥	
Wish, desire 8.	इच्छा वाञ्छा स्पृहा काङ्क्षा कामनेप्सा[a] रुचिस्तथा ।	
	आशंसा चेति तुल्यार्था निश्चितं नियतं स्मृतम् ॥७१०॥	Positiyely 2.
Old, ancient 6.	जीर्णं जरत्पुराणं प्रत्नं प्रतनं पुरातनं प्रोक्तम् ।	
New, fresh 6.	नव्यं नवं नवीनं स्यान्नूतनमभिनवं नूत्नम् ॥७११॥	
Enclosed, encircled; surrounded 5.	निवृतं[b] वेष्टितमुक्तं परिवृत्तं वलयितं परिक्षिप्तम् ।	
Eradicated 4.	आवर्हितमुन्मूलितमुत्पाटितमुद्धृतं च समम् ॥७१२॥	
All, whole, entire 8.	कृत्स्नं समग्रं सकलं समस्तं ,	
	सर्वं च विश्वं निखिलाखिले च ।	
Fragment, a part 7.	खण्डार्धनेमाः शकलं च भित्तं ,	
	सामीत्यसम्पूर्णसमानसंज्ञाः ॥७१३॥	
Scattered 2.	अवकीर्णमवध्वस्तं त्यक्तमुत्सृष्टमुज्झितम् ।	Left, thrown away 3.
Dispised 3.	अनादृतमवज्ञातमपहस्तितमिष्यते ॥७१४॥	
Promise 6.	आगूः सङ्गरसन्धाप्रतिश्रवाः संश्रवः प्रतिज्ञा च ।	
Disregard, contempt 5.	हेला स्यादवहेलं रीढावज्ञावलीढा[c] च ॥७१५॥	

a कामना स्याद्‌ *b* निवृतं वेष्टशुक्तं c लीढा, रीढा ।

Sorcery. [a][1]मूलीकर्म प्रोक्तं [2]संवननं [3]कामणं [4]वशीकरणम् ।

Respentance 4. [1]विप्रतिसारो[2]ऽनुशयः [3]पश्चातापो[4]ऽनुतापः स्यात् ॥७१६॥

Thin, spare 7. [b][1]क्षामं [2]शातं [3]कृशं [4]क्षीणं [5]पेलवं [6]तलिनं [7]तनु ।

Dense, thick 9. [1]निरन्तरं [2]घनं [3]सान्द्रं [4]बहुलं [5]विरलेतरम् ॥७१७॥

[c]निविडं [7]निविरीशं च [8]दृढं [9]गाढं प्रचक्षते ।

Abundant 5. [1]कामं [2]प्रकामं [3]पर्याप्तं [4]नितान्तं [5]भृशमुच्यते ॥७१८॥

Excessive 3. [1]अत्यर्थम[2]तिमर्यादम[3]तिवेलं च कथ्यते ।

Concealment 4. [1]व्यवधानं [2]तिरोधानम[d]न्त[3]र्धिर[4]पवारणम् ॥७१९॥

Mutual, reciprocal 4. [1]परस्परं [2]मिथः प्रोक्त[3]मन्योन्य[4]मितरेतरम् ।

Sport, play 4. [1]कौतूहलं [2]विनोदः स्यात्[3]कौतुकं च [4]कुतूहलम् ॥७२०॥

Line, row, range 6. [1]आली [2]श्रेण्या[3]वली [4]पङ्क्ति[5]र्वीथी [6]राजी च कथ्यते ।

Shaving, tonsure 4. [1]क्षौरं च [2]भद्राकरणं [3]मुण्डनं [4]वपनं स्मृतम् ॥७२१॥

[1]दर्पो [2]मदो[3]ऽवलेपो [4]मानो [5]गर्वो भवे[6]दहङ्कारः ।

Pride, haughtiness 11. [7]आवेशः [8]संवेगः [9]संरम्भः [10]सम्भ्रमस्तथा[11]टोपः ॥७२२॥

Power, strength, might 13. [1]प्राणः [2]स्थाम [3]बलं [4]द्युम्न[5]मोजः [6]शुष्म [7]तरः [8]सहः ।

[9]प्रतापः [10]पौरुषं [11]तेजो [12]विक्रमः स्यात्[13]पराक्रमः ॥७२३॥

Pity, kindnees, comparsion 6. [1]अनुक्रोशः [2]कृपा [3]शूकं [4]दया च [5]करुणा [6]घृणा ।

Repeatedly 5. [1]प्रतिक्षण[2]मभीक्ष्णं च [3]भूयः स्या[4]दसकृ[5]न्मुहुः ॥७२४॥

Terror, fear 6. [1]आतङ्को [2]भय[3]माशङ्का [4]दरस्[5]त्रासश्च [6]साध्वसम् ।

Forbearance patience 5. [1]मर्षः [2]क्षमा [3]तितिक्षा च [4]क्षान्तिरुक्ता [5]सहिष्णुता ॥७२५॥

a मूलकर्म b क्षामं क्षांत c निवडं निवडीशं d तर्धि-परिवारणम् ।

Meaning	Verse	Meaning
A staff, a stick 5.	1 2 3 4 5 वैणवो लगुडो रम्भो दण्डो यष्टिश्च कथ्यते ।	
Walking about, going, moving 5.	1 2 3 4 5 गतिर्वीखा विहारः स्यात्परिसर्पः परिक्रमः ॥७२६॥	
Corner 5.	1 2 3 4 5 अणिरश्रिस्तथा कोटिरश्रः कोणश्च कथ्यते ।	
Foul, dirty 4.	1 2 3 4 कश्मलं मलिनं म्लानं मलीमसमुदाहृतम् ॥७२७॥	
Wages, cost price 6.	1 2 3 a 4 5 6 भृतिर्भृत्या च कर्मण्या वेता मूल्यं च वेतनम् ।	
A line of a letter or writing 3.	b 1 2 c 3 लिपिरालेख्यलेखा स्याल्लिपिर्लेखाक्षरस्य च ॥७२८॥	
Cutting, clipping 4.	1 2 3 4 कल्पनं कर्तनं प्रोक्तं वर्धनं छेदनं तथा ।	
Reverse 4.	1 2 3 4 व्यत्ययः स्याद्विपर्यासो वैपरीत्यं विपर्ययः ॥७२९॥	
Concealment of knowledge 4.	1 2 3 4 अपह्नवोऽपलापः स्यादपज्ञानमपात्ययः ।	
Composition 5.	1 2 3 4 5 श्रन्थनं ग्रन्थनं गुम्फः सन्दर्भो रचना स्मृता ॥७३०॥	
Rubbing the body with fragrant unguents 2.	1 d 2 1 2 उद्वर्तनमुत्सादनमाहुः सोत्प्रासहसितमुपहसितम् ।	Ridiculing, derision 2.
Confused 2.	1 2 1 2 3 उत्पिञ्जलमाकुलकं स्यादनुपदमन्वगन्वक्षम् ॥७३१॥	Following 3.
White 7.	1 2 3 4 5 6 7 गौरः श्वेतः सितः शुभ्रो वलक्षो धवलोऽर्जुनः ।	
Yellowish, white pale 5.	1 2 3 4 e 5 हरिणः पाण्डुरः पाण्डुरवदातश्च पाण्डरः ॥७३२॥	
	1 2 3 f 4 5 6 अरुणः शोणो रक्तो माञ्जिष्ठः पाटलस्तथा ताम्रः ।	
Red 7.	7 g लोहित इत्येकार्थाः कविभिः शब्दाः प्रयुज्यन्ते ॥७३३॥	
Black 9.	1 h 2 3 4 5 6 असितं शिति कृष्णं च कालं नीलं च मेचकम् ।	
	7 8 9 1 2 3 श्यामं तु श्यामलं रामं पालाशं हरितं हरित् ॥७३४॥	Green 3.
Tawny, brown 4.	1 2 3 4 हरिः कद्रुः कडारश्च पिङ्गलः परिकीर्तितः ।	
Yellow 2.	1 2 1 2 पीतं हारिद्रमाख्यातं श्यावं तु कपिशं स्मृतम् ॥७३५॥	Dark brown 2.

a वेचा b लिविराले c लिपिर्लेखाक्षरस्य d मुछादनमाहुः e पाण्डुरः, पाण्डुकः f मांजिष्टः g शब्दाः कविभिः h सिति, सित ।

Brown tawny 5.	पिङ्गः पिशङ्ग इत्युक्तो बभ्रुः कपिलः पिङ्गलः ।	
Variegated, speckled 2.	सारङ्गः शबलो वर्णः कल्माषः कृष्णपाण्डुरः ॥७३६॥	Greyish white 2.
Reddish yellow 2.	पिञ्जरः[a] पीतरक्तः स्याद्धूसरः स्तोकपाण्डुरः ।	Greyish white 2.
Dark red 2.	रक्तश्यामो[b] भवेद्धूम्रो धूमलः स च कथ्यते ॥७३७॥	
Lilyleaf like lady 2.	श्येनी कुमुदपत्राभा शुकाभा हरिणी स्मृता ।	Parrot like lady 2.
The lotus leaf like. lady; rose red lady 2.	जपाकुसुमसंकाशा लोहिनी परिकीर्तिता ॥७३८॥	
Regular course 2.	परिपाटयानुपूर्वी स्यादुपशायो[c]ऽनुपात्ययः ।	1. Sleeping in turn, rotation for sleeping with other.
Progression, succession 2.	अनुक्रमश्च पर्यायो विशायः परिकीर्तितः ॥७३९॥	2. Absence of neglect following the appointed order.
Envy, hypocrisy 5.	ईर्ष्या स्यात्कुहना दम्भो मिथ्याचर्या च कुक्कुटिः[d] ।	
Jugglery, delusion 5.	कुसृतिर्निकृतिर्[e]माया शाम्बरी पथकल्पना[f] ॥७४०॥	
Variegated, mixed 6.	चित्रकिर्मीर[g]कल्माषशबलोन्मिश्रकर्बुराः ।	
Combined, mixed 5.	करम्बः कवरः शारः सम्पृक्तः खचितः समाः ॥७४१॥	
Longing, strong desire 7.	आयल्लकमुत्कण्ठा स्यादुत्कलिका रतिश्च रणरणकम् ।	
	औत्सुक्यं हृल्लेखो विरहवियोगौ च तुल्यार्थौ ॥७४२॥	Separation 2.
Contrary, opposed 4.	प्रतिकूलं प्रतिलोमं प्रतीपमुक्तं प्रसव्यमेकार्थम् ।	
Covered, concealed 5.	अपवारितं च पिहितं संवीतं संवृतं स्थगितम् ॥७४३॥	
A part, a limb, a portion 5.	आहुः प्रतीकमवयवमपघनमङ्गं तथैकदेशं च ।	
Exceeding much 4.	उल्वणमुद्धतमुद्भटमुत्कटमिति नातिनानार्थाः ॥७४४॥	
Assembly 6.	समाजः संसदास्थानी सभा स्यात्परिषत्सदः ।	
Wonder, surprise 5.	चित्रमद्भुतमाश्चर्यं विस्मयश्चोद्यमुच्यते ॥७४५॥	

a पिञ्जिरः, पिंजिरः परिरत्तः b रक्तश्याम c स्यादुदाशयो, स्यादुप्तशपो d कुर्कुटिः, कुकुटिः e निष्कृतिं, निःकृति f-पृयुकल्पिनी g चित्रकर्मीर ।

Shaking, trembling 4.	1 2 3 4 प्रेङ्खोलितं तरलितं प्रेङ्खितं लुलितं स्मृतम् ।	
Proper, fit 5.	1 2 3 4 5 युक्तं स्यादुचितं न्याय्यं प्राप्तमौपयिकं तथा ॥७४६॥	
Placed in or upon 4.	1 2 3 4 आहितं निहितं न्यस्तमारोपितमिति स्मृतम् ।	
Put on, dressed 4.	1 2 3 4 बद्धं पिनद्धमामुक्तमपिनद्धं च कथ्यते ॥७४७॥	
Cheating 4.	1 2 3 वञ्चनं चातिसन्धानं व्यलीकं स्यात्प्रतारणम् ।	
Infraction of an engagement, deception 3.	1 2 3 a विप्रलम्भो विसंवादो विप्रलापश्च कीर्तितः ॥७४८॥	
Offence, fault 5.	1 2 3 4 5 व्यलीकमपराधः स्यादागो मन्तुश्च विप्रियम् ।	
Courtesy 4.	1 2 3 4 प्रणतिः स्यादनुनयः प्रणिपातश्च सान्त्वनम् ॥७४९॥	
Introduction; resolution; beginning 2.	1 2 1 2 3 उद्घात उक्तः प्रस्तावो वारश्चावसरः क्षणः ।	Opportunity 3.
Approached, near 3.	1 2 3 वदन्त्युपनतं प्राज्ञा उपसन्नमुपस्थितम् ॥७५०॥	
High, tall 5.	1 2 3 4 b 5 1 2 प्रांशूच्चमुन्नतं तुङ्गमुदग्रं दीर्घमायतम् ।	Long 2.
Unfettered, unrestrained 4.	1 2 3 4 अयन्त्रितं स्यादुद्दाममुच्छृङ्खलमनर्गलम् ॥७५१॥	
Clear, manifest 5.	1 2 3 4 5 विशदं प्रकटं स्पष्टं प्रकाशं स्फुटमिष्यते ।	
Forth with 2.	1 2 1 2 c तत्क्षणैकपदे तुल्ये सद्यः सपदि च स्मृते ॥७५२॥	On the spot 2.
Large, broad 4.	d 1 2 3 4 विशङ्कटं विशालं स्यात्करालं विकटं तथा ।	
Globular, round 3.	1 2 3 1 e 2 निस्तलं वर्तुलं वृत्तं स्थपुटं विषमोन्नतम् ॥७५३॥	Unevenly raised 2.
A bucket 2.	f 1 2 1 2 अवगाहो जलद्रोणी निर्वेदः खेद उच्यते ।	Grief 2.
Carelessness 2	1 2 g 1 2 प्रमादोऽनवधानं स्यादत्याधानमतिक्रमः ॥७५४॥	Transgression 2.
Enjoyment 2.	1 2 1 2 निर्वेश उपभोगः स्यादाभोगः परिपूर्णता ।	Fulness, completeness 2.
Well known, censured.	1 h 2 अवगीतं मुहुर्दृष्टमुपलब्धं च यद्भवेत् ॥७५५॥	

a कीर्त्यंते, कीत्यन्ते b तुगं उदंतं c स्मृतम् d विसंकटं e छपुटं, सपुटं f अवगादो g स्यावन्याधान, स्यावत्यादान h मुहुर्दिष्ट, मुहुर्दुष्ट ।

Left 2 — वामं[1] सव्यं[2] विदुः प्राज्ञा अपसव्यं[1] च दक्षिणम्[2] ॥ — Not left, right 2.

प्रतिकूलानुकूलार्थे[a] अपष्ठु[1] त्वनपष्ठु[2] च ॥७५६॥ — 1. Unfavourable. 2. Favourable.

Turned away, averted 4. — विपरीतं[1] पराचीनम[b 2]पाचीनं[3] पराङ्मुखम्[4] ।

Indolence, laziness 2. — स्मृतं कौसीद्य[1]मालस्य[2]मुपधा[1] तु परीक्षणम्[2] ॥७५७॥ — Trial of honesty 2.

A lath provided with slings at each end for carrying burden 4. — विवधो[1] वीवधो[2] भारः[3] पर्याहारश्च[4] कथ्यते ।

A looped string 2. — काचं[1] शिक्य[c 2]मिति प्रोक्तं भारयष्टि[1]र्विहङ्गिका[2] ॥७५८॥ — A pole for carrying burdens 2.

Excellence 2. — सौष्ठवं[1] स्यादवष्टम्भो[2] हठः[1] प्रसभ[d 2]मुच्यते । — Force, violence 2.

Captive, prisoner 2. — प्रग्रहो[1] ग्रहको[2] वन्दी[3] पणो[e 1]ऽक्षेषु ग्लहः[2] स्मृतः ॥७५९॥ — A stake at gambling 2.

Abstinence from all food 4. — प्रायः[1] स्याद्भोजनत्यागः[2] संन्यासो[3]ऽनशनं[4] स्मृतम् ।

In vain, useless, to no purpose 2. Fruitless 2. — मोघं[1] मुधा[2]ऽफलं[1] बन्ध्यं[2] नतं[1] नम्रं[2] च बन्धुरम्[3] ॥७६०॥ — Bent 3.

Trade traffic 3. — स्मृतं वणिज्यं[1] वाणिज्यं[2] वणिज्या[3] च समं त्रयम् ।

Fight, battle 3. — युद्धार्थे[1] द्वे प्रयुज्येते[f] दौर्मद्यं[2] च करीरकम्[3] ॥७६१॥

Intention, purpose 2. — आकूतं[1] स्यादभिप्रायो[2] व्याकूति[1]र्भङ्गि[2]रुच्यते । — Deception, crooked-ness 2.

A piece of ground purified by sacrifice 2. — स्थण्डिलं[1] संस्कृता[2] भूमिरयनं[1] स्थान[g 2]मुच्यते ॥७६२॥ — Site 2.

New, recent 2. — प्रत्यग्र[1]मुक्तं सद्यस्क[2]मुपाग्र[1]मुपसर्जनम्[2] । — Inferior 2.

A swing 3. — दोला[1] प्रेङ्खोलनं[2] प्रेङ्खा[3] उत्सवः[1] स्यान्महः[2] क्षणः[3] ॥७६३॥ — A festival 3.

A buffalo's horn 2. — गवलं[1] माहिषं[2] शृङ्गं दृति[1]श्चर्मप्रसेवकः[h 2] । — A pair of bellows 2.

A casket, a box 2. — समुद्गः[1] सम्पुटो[2] ज्ञेयो वडिशं[1] मत्स्यबन्धनम्[2] ॥७६४॥ — A fish-hook 2.

a प्रतिकुलोनुकूलार्थो अपष्ठुरमपष्णु च, प्रतिकूलानुकूलार्थे अपष्टुरमपच्छ च b पराचीनपाचीनं, पराचीनं परांग्मुखम् c शक्यमिति d प्रसभ उच्यते e पणाक्षेषु, पण्यक्षेषु, पण्याक्षेषु f प्रयुज्येतां दौर्मध्यं g स्थानमिष्यते h प्रसेधकः ।

Retaliated.	कृते प्रतिकृतं[1] प्राज्ञैः प्रतिनिर्यातनं[1] स्मृतम् ।	Retaliation.
Worrying to death.	सपत्नाकरणं[1] प्रोक्तं यत्परस्यातिपीडनम् ॥७६५॥	
Conciseness 4.	समासः[1] स्यात्समाहारः[2] संक्षेपः[3] सङ्ग्रहस्तथा[4] ।	
Expanse 3.	व्यासः[1] प्रपञ्चो[2] विस्तारः[3] स च शब्दस्य विस्तरः[1] ॥७६६॥	Copiousness.
Whet 2; thrown 2.	उन्नं[1] क्लिन्नं[2] स्मृतं नुन्नं[a1] क्षिप्तं[2] तुन्नं[1] च पीडितम्[2] ।	Hurt, injured 2.
Fallen 2.	पन्नं[1] तु पतितं[2] प्रोक्तं सन्नं[b1] शान्तं[2] च सूरिभिः ॥७६७॥	Becalmed 2.
Cast down 2.	न्यञ्चितं[1] स्यादधःक्षिप्तं[2] क्षिप्तमूर्ध्वमुदञ्चितम्[1,2] ।	Thrown upwards 2.
Suspended.	काचितं[1] सज्जितं[c2] प्रोक्तं रूषितं[1] गुण्डितं[d2] स्मृतम् ॥७६८॥	Crushed, pounded 2.
Obstacle, impediment 2.	विष्कम्भः[1] प्रतिबन्धो[2] विश्रम्भः[1] कथ्यते च विश्वासः[2] ।	Trust, confidence 2.
Pounding of fragrant substances 2.	सम्मर्दः[1] स्यात्परिमल[2] उपमर्दो[1] विप्रकारः[2] स्यात् ॥७६९॥	Hurt, injury 2.
Consideration of moral duties 2.	उपाधिर्धर्मचिन्ता[1,2] स्यान्निःशोध्यमनवस्करः[1,2] ।	Clean, unsoiled 2.
Wicked 2.	कुप्रियं[1] च जघन्यं[2] स्यान्निःशेषं[1] न्यक्षमिष्यते[2] ॥७७०॥	Whole 2.
Offence, injury 2.	अपकारो[1] भवेद् द्रोहो[2] दोष[1] आदीनवो[2] मतः ।	Fault 2.
Astringent 2.	कषायं[1] तुवरं[2] प्रोक्तं सुरुङ्गा[e1] सन्धिरुच्यते[2] ॥७७१॥	A tunnel 2.
	असौम्यं यद्भवेच्चक्षुरचक्षुस्तत्प्रचक्षते[1] ।	A bad or miserable eye; eye-less or blind.
Dissimulation, concealing or hiding one's mental disposition 2.	अवहित्थं[1] च शब्दज्ञा आकारस्य निगूहनम्[2] ॥७७२॥	
Familiarity 2.	संस्तवः[1] स्यात्परिचयः[2] प्रसादः[1] प्रणयः[2] स्मृतः ।	Affection, favour 2.
Grant of all things desired 2.	प्रवारणं[1] महादानं[2] सङ्कल्पः[1] कर्म मानसम्[2] ॥७७३॥	Resolve 2.
Readily prepared 2.	अनायासार्थकं[1] फाण्टमन्तर्गडु[2,1] निरर्थकम्[2] ।	Useless 2.
Independence 3.	स्वाच्छन्द्यं[1] निर्निमित्तं[2] च यदृच्छेत्यभिधीयते[3] ॥७७४॥	

a तुन्नं क्षिप्तं नुन्नं b शन्नं शांतं c शिक्यितं, सिक्यितं d गुडिनं e सुरङ्गा ।

First 2.	आद्यमादिममन्त्यं स्यादन्तिमं चाग्र्यमग्रिमम् ।	Last 2; prior 2.
Middle 2.	मध्यमं मध्यमीयं च मध्यन्दिनमुदाहृतम् ॥७७५॥	Midday, noon.
Adoration, reverance 2.	नमस्या वन्दना प्रोक्ता तपस्या [a] नियमस्थितिः ।	Steady observance of religion 2.
Renunciation of the world; ascetic devotion; religious austerity 2.	परिव्रज्या व्रतादानं [b] व्रज्याऽटचा च गतिः स्मृता ॥७७६॥	Walking. or the habit of roaming as a religious mendicant 2
Empty 2.	रिक्तं तुच्छमसारं तु फल्गु [c] व्युष्टिः फलं स्मृतम् ।	Vain 2. Result, product 2.
Inaccesisble 2.	कलिलं गहनं प्रोक्तं श्लथं शिथिलमुच्यते ॥७७७॥	Loose, lax 2.
Independence of action 2.	स्वतन्त्रवृत्तिर्व्युत्थानमभ्युत्थानं च गौरवम् ।	Dignity, respect 2.
Disposition 2.	संस्थानं संनिवेशः स्यादास्थानं नृपतेः सभा ॥७७८॥	A royal waiting room 2.
Conversation 2.	सङ्कथान्योन्यसङ्गीतिः प्रतिपत्तिः प्रगल्भता ।	Decision 2.
Effort 2.	उच्यत ऊर्जं उत्साहो [d] भृकुटिर्भ्रुकुटिस्तथा ॥७७९॥	Frown 2.
Disunion 2.	उपजापो भवेद्भेदः साम सान्त्वमिति स्मृतम् ।	Conciliation 2.
Trust, confidence2.	तथेति प्रत्ययः श्रद्धा संस्कारो वासना स्मृता ॥७८०॥	The realising of past perception 2.
Got, obtained.	स्मृतमास्थितमाक्रान्तं [e] प्रतीष्टं पतदाहृतम् ।	Accepted, received.
Covered 2.	प्रच्छादितं स्यात्संवीतं प्रशस्तं संस्कृतं स्मृतम् ॥७८१॥	Excellent 2.
Snare, a trap 2.	उन्माथः कूटयन्त्रं [f] स्यादवपातोऽवटः स्मृतः ।	A hole or cavity 2.
Nature 3.	धर्मः स्वभावः आत्मा [g] स्यादवेक्षा प्रतिजागरः ॥७८२॥	Attention, watchfulness 2.
Unkind, harsh 2.	स्मृतं परुषमस्निग्धमाचारातिक्रमः [h] क्रिया ।	Areligious rite.
Quick,expeditious2.	उच्चण्डमप्रलम्बं स्यान्माढिः [i] पत्रशिरा स्मृता ॥७८३॥	The vein of a leaf 2.

a नियमः स्थितिः b व्रज्याद्या, मीज्याज्या c व्युष्टचुफलं, व्युष्टिफल, व्युष्टफलं d भ्रुकुटिर्भ्रूकुटि, उत्साहो श्रुकुटि, भृकुटिर्भ्रकूटि e प्रतिष्ठं तु पदाध्रुतं, प्रतिष्टं तु यदाध्रुतं, प्रतीष्टं पतदाहृतं f स्यादवतापो, स्यादवपानो, स्यादवढः स्मृतः g स्यादपेक्षा, स्यादवेक्षा h माचारोतिक्रमः, माचारातिः कमक्षया i पत्रशरा ।

Emulation, Competition, assertion of superiority.

अहमहमिका[1] तु सा स्याद्यत्क्रियते स्पर्धयाधिकं[a] किञ्चित् ।

यत्र वृथाभिनिवेशस्तामाहोपुरुषिकां[1] विदुः प्राज्ञाः ॥७८४॥

Great self conceit or pride.

A war-cry 2.

सिंहनादो[1] भवेत् क्ष्वेडा[2] गण्डूषो[1] मुखपूरणम्[2] ।

A handful of water for rinsing the mouth 2.

Power 3.

प्रभावतां[b 1] वदन्त्यार्याः प्रभुतां[2] प्रभविष्णुताम्[3] ॥७८५॥

Superiority 2.

परभागो[1] गुणोत्कर्षः[2] स्पर्धा[1] संहर्ष[2] उच्यते ।

Rivalry 2.

Length 2.

आयामः[1] स्मृत आनाहः[2] परिणाहो[1] विशालता[2] ॥७८६॥

Width, breadth 2.

इति श्रीभट्टहलायुधकृतायामभिधानरत्नमालयां
सामान्यकाण्डं चतुर्थं समाप्तम् ॥ ४ ॥

a स्पर्द्धया किंचित्, स्पर्द्धयाधि किंचित्　b प्रभावती ।

पञ्चममनेकार्थकाण्डम्

एकोऽर्थो[a] बहुभिः शब्दैः कथितः कथ्यतेऽधुना ।
एकस्यैव तु शब्दस्य बहुष्वर्थेषु वर्तनम् ॥७८७॥

(1) Shiva.	रुद्रेऽपि[1] **खण्डपरशुर्**[1]**वैश्रवणेऽप्येककुण्डलः** प्रोक्तः ।	(1) Kubera.
(1) Door, gate.	द्वारेऽपि[1] **प्रतिहारः**[b] प्राकाराग्रेऽपि[c][1] **कपिशीर्षम्** ॥७८८॥	(1) The coping of a wall.
(1) Enough.	पर्याप्तेऽपि[1] **कृतं** स्यादाहवनीयादिषु[1] त्रिषु **त्रेता** ।	(1) The three sacred fires.
(1) Doubt.	सन्देहेऽपि[1] **द्वापरमाहुः** कलहेऽपि[1] **कलिशब्दम्** ॥७८९॥	(1) War, battle.
(1) An army.	सेनायामपि[1] **कटकं** **प्राणिद्यूतं** वदन्ति युद्धेऽपि[1] ।	(1) War.
(1) Demons.	रक्षस्यपि[1] **पुण्यजनं** मृद्भाण्डेऽप्युष्ट्रिकामार्याः[1] ॥७९०॥	(1) An earthen vessel.
(1) Silver.	**श्वेतं** रजतेऽप्युक्तं[1] **रजतं** हारे[1] शरेऽपि[1] **किंशारुः** ।	(1) Necklace. (1) An arrow.
(1) Hypocrisy.	दम्भेऽपि[1] **गह्वरं** स्यादुपह्वरं सन्निधानेऽपि[1] ॥७९१॥	(1) Vicinity.
(1) An eyelid.	नयनच्छदेऽपि[1] **वर्त्म** **प्रतिग्रहः** सैन्यपृष्ठभागेऽपि[1] ।	(1) The rear of an army.
(1) Phlegm.	श्लेष्मण्यपि[1] **खेटः** स्याज्जामिः कुलबालिकायां[1] च ॥७९२॥	(1) A respectable woman.
(1) A little, the mere scent of a thing.	**गन्धो** लेशेऽप्युक्तः[1] करुणाप्रतिपादने[1] **तपस्वी** च ।	(1) Exciting pity, pitiable.
(1) The distance from the wrist to the tip of the little finger.	मणिबन्धकनिष्ठिकयोर्मध्यविभागेऽपि[1] **करभः** स्यात् ॥७९३॥	

a एकार्थो b प्रतीहारः c प्राकाराग्रेपि कीर्तितम् ।

(1) Consideration, reflexion.	चिन्तायामपि **चर्चा** **जगती** [a]राजप्रधानलोकेऽपि ।	(1) The king and his subjects.
(1) The menses.	**ऋतु**[1]रङ्गनारजस्यपि **विकटं** [1]श्रेष्ठेऽपि निर्दिष्टम् ॥७९४॥	(1) Excellent.
(1) Mail, armour.	[1]कवचेऽपि **वारवाणं** **जीमूतं** [1]पर्वतेऽपि कथयन्ति ।	(1) a muntains.
(1) The array or arrangement of troops in particular position.	**व्यूहं** [1]रचनायामपि दार्वाघाटेऽपि **शतपत्रम्** ॥७९५॥	(1) The wood-peckers.
(1) The body.	**करणं** [1]कायेऽपि स्यादुष्णीषो मूर्धवेष्टनेऽप्युक्तः ।	(1) A turban.
(1) Goods, property.	**मात्रा** [1]परिच्छदेऽपि **क्षुद्रः** [1]क्रूरे [1]श्रुतौ **निगमः** ॥७९६॥	(1) Cruel. (1) The vedas.
(1) Curled hair.	**वृजिनः** [1]केशेऽप्युक्तः **स्थाणुः** [1]कीलेऽपि [1]कुञ्जरे **नागः** ।	(1) A stake. (1) An elephant.
(1) A store room.	**गञ्जो** [1]भाण्डागारे **गोमुख**[1]मुपलेपनेऽपि स्यात् ॥७९७॥	(1) Ointment.
(1) Splendour, light.	[1]तेजस्यपि **धाम** स्यादा[1]धारेऽप्य**आशयो** **घटा** [1]गोष्ठयाम् ।	(1) A receptacle. (1) An assembly.
(1) A noble, woman.	**कुल्या** [1]कुलस्त्रियामपि **तारो**[b] [1]मुक्तागुणेऽप्युक्तः ॥७९८॥	(1) A large pearl.
(1) The result of actions.	[1]कर्मविपाकेऽपि **दशागती** स्मृते [1]काननेऽपि **दवदावौ** ।	(1) A forest.
(1) The head.	**चूडाशिखे** [1]शिरस्यपि [1]हस्तिन्यां **धेनुकागणिके**[c] ॥७९९॥	(1) The female elephant.
(1) Intellect; intelligence.	**प्रतिपत्**[1]प्रति[2]पत्तावपि **शादः** [1]शष्पे **घृणा** [2]जुगुप्सायाम् ।	(1) Young grass (2) Disgust.
(1) High, tall.	**उत्ताल**[1]मुन्नतेऽपि [1]श्रेष्ठेऽपि निगद्यते **सुरभिः** ॥८००॥	(1) Excellent.
(1) A year.	**संवर्तः** **परिवर्तश्च** [1]हायने कथ्यते[1]ऽम्बरे **नाकः** ।	(1) Sky, heaven.
(1) A measure of quantity.	[1]परिमाणेऽपि **प्रस्थः**[d] [1]सर्वात्मनि **सर्वसन्नाहः** ॥८०१॥	(1) The universal spirit.
(1) a wife.	[1]पत्न्यामपि **द्वितीया** दर्भेऽपि **पवित्रमवधिर**[1]वटेऽपि ।	(1) Kusha grass. (1) A pit, a hole.
(1) Natured.	[1]प्रकृतावपि **प्रधानं** **विवक्षितं** [1]शोभनेऽपि स्यात् ॥८०२॥	(1) Handsome.
(1) Excessive.	अतिमात्रेऽप्य**तिवेलं** [1]कायेऽप्युत्सेध इष्यते सद्भिः ।	(1) The body.
(1) The spine.	[e][1]पृष्ठास्थन्यपि **वंशः** **कदली** [1]करिवैजयन्त्यां च ॥८०३॥	(1) A flag carried by an elephant.

a रा प्रधानं, राप्रधानं b तारा, धातारो c धेनुका गणिका d प्रस्थं e पृष्टास्थिन्यपि ।

(1) Deception.	जालं कपटेऽप्युक्तं कपालमुक्तं घटादिशकलेऽपि ।	(1) A fragment of earthen pot.
(1) Sin. (2) Misfortune.	रिष्टं पापाशुभयोररिष्टमशुभेऽपि निर्दिष्टम् ॥८०४॥	(1) Misfortune.
(1) Diffusion.	व्यासेऽपि विग्रहः स्यान्मानविशेषेऽपि पौरुषव्यामौ ।	(1) Measure.
Resolution.	हेला प्रस्तावेऽपि प्रग्रह आबन्धनेऽप्युक्तः ॥८०५॥	Captive, prisoner.
(1) An elephant's trunk.	कुञ्जरकरेऽपि शुण्डा[a] ग्रावा शैले भवश्च संसारे ।	(1) A mountain. (1) The world.
(1) Young.	बालेऽपि बालिशः स्यात्कलधौतं शातकुम्भेऽपि ॥८०६॥	(1) Gold.
Branch.	शाखायामपि परिधिर्वसतिर्जैनाश्रमेऽपि निर्दिष्टा ।	A Jain monastery.
(1) Searching.	अन्वेषणेऽपि मार्गो भद्रो[b] वृषभे वके ध्वाङ्क्षः ॥८०७॥	(1) A bull. (1) A crane.
(1) A defect in a jewel.	मणिदोषेऽपि त्रासो वत्सः संवत्सरेऽपि निर्दिष्टः ।	(1) A year.
(1) Adverse.	वामः प्रतिकूलेऽपि प्रोक्तौ शुक्लेऽपि शुचिरामौ ॥८०८॥	(1) White, bright.
(1) Yesterday.	ह्यस्तनदिनेऽपि कल्यं नेत्रं मूले रजस्यपि परागः ।	(1) Dust, powder.
(1) Pregnant.	भ्रूणो गर्भिण्यामपि भूतिर्विभवे बलः[c] काके ॥८०९॥	(1) Grandeur. (1) A crow.
(1) A tableland.	गिरिसानुन्यपि वप्रं तल्पं दारेषु चक्षुषि ज्योतिः ।	(1) A wife. (1) Eye.
(1) Injuring by theft.	चौर्यादावपि हिंसा प्रसरः प्रणयेऽपि निर्दिष्टः ॥८१०॥	(1) Affectionate solicitation.
Group, mass.	संघातेऽपि ग्रामो भूतेन्द्रियशब्दविषयकरणानाम् ।	(1) The complex of visible objects. (1) Senses.
Combined with names of trees it signifies a multitude.	षण्डश्च[d] पादपानां स्कन्धः करिनरतुरङ्गाणाम् ॥८११॥	(1) Signifying a multitude after. करि, नर and तुरङ्ग ।
10 Different kinds of trees.	नन्द्यावर्तः सरलः[e] शालः काको धवोऽञ्जनस्तिलकः ।	
	पद्मस्पन्दनमोक्षा वृक्षविशेषेऽपि दृश्यन्ते ॥८१२॥	
Fragrant.	कटुतिक्तकषायास्तु सौरभ्येऽपि प्रकीर्तिताः ।	
Splendour, elegance, beauty.	शोभार्थेऽपि प्रयुज्यन्ते लक्ष्मीश्रीकान्तिविभ्रमाः ॥८१३॥	

a सुंडा b रुद्रो वृषभे c बलः काले, वलिः काके, वलिकाले d खंड पादानां e सरलः शालः शाकोथवार्जुनतिलकः, सरलः शाकोथ-वार्जुनस्तिलकः, सरलः शालः शाको धवोऽजनस्तिलकः ।

(1) A guard of the woman's apartment.	आर्यः स्यात्सौविदल्लेऽपि[1] व्रीहावप्यणुरिष्यते ।	(1) A kind of grain.
(1) A man of a low and impure tribe.	चण्डालेऽपि दिवाकीर्तिर्विवस्वान् देवतास्वपि[1] ॥८१४॥	(1) A deity, a god.
(1) Affection.	स्नेहेऽप्यपह्नवः[1] प्रोक्तो द्वेषेऽप्यनुशयः[1] स्मृतः ।	(1) Enimity.
(1) Sexual intercourse.	सुरतेऽपि[1] व्यवायः स्यान्निगमश्च ऋतावपि[1][a] ॥८१५॥	(1) A road. (2) The vedas. (3) A trader.
1) A difficult road.	दुर्गमार्गेऽपि[1] कान्तारं गृहवाटयां[1] च निष्कुटः ।	(1) A garden attached to a house.
(1) An animal, a beast.	रूपं मृगेऽपि[1] विज्ञेयं बभ्रुः स्यान्नकुलेऽपि[1] च ॥८१६॥	(1) A mongoose.
(1) The intestines.	अन्तर्देहेऽपि[1] कोष्ठः स्याच्चत्वरं प्राङ्गणेऽपि[1] च ।	(1) A court yard.
(1) Leprous.	दुश्चर्मण्यपि[1] निर्दिष्टः शिपिविष्टो मनीषिभिः ॥८१७॥	
(1) A couch	संस्तरः प्रस्तरेऽप्युक्तो[1] हनौ[1] कुब्जो रणे[1] स्पशः ।	(1) The jaw. (1) War, battle.
(1) A thunder cloud.	गर्जन्मेघेऽपि[1] पर्जन्यः सन्धा स्यादवधावपि[1] ॥८१८॥	(1) A limit.
(1) Settled occupations, proper conduct.	व्यवस्थायां[1] च संस्था स्यात्संवित्तावपि[b] वेदना ।	(1) Perception, experience.
A march on.	यात्रा स्यादनुवृत्तौ[1] च संज्ञायां[1] च समाह्वयः ॥८१९॥	(1) Name, appellation.
(1) Impotent.	क्लीबो विक्रमहीनेऽपि[1] समयेऽपि[1] कटः स्मृतः ।	(1) Time.
(1) A stain, spot. (2) A fault.	कलङ्कं[c] लाञ्छने[1] दोषेऽप्य[2]द्रिः प्रोक्तो रवावपि ॥८२०॥	(1) The sun.
(1) Meeting. (2) Assembly.	समितिः सङ्गति[1]सभयोः[2] ककुदं श्रृङ्गे[1] विदुः[d] प्रधानेऽपि[2] ।	(1) The top of a mountain (2) Eminence, superiority.
(1) Pride, conceit. (2) An instrument for cleaning stones.	टङ्कः स्यादभिमाने[1] प्रस्तरघटनोपकरणे[2] च ॥८२१॥	
(1) A sign. (2) Consciousness.	सङ्केते[1] चैतन्ये[2] च सूरिभिः कथ्यते तथा संज्ञा ।	
(1) Punishment. (2) An army.	दण्डो दमने[1] सैन्ये[2] कुतपो दर्भेऽपराह्णे[1] च ॥८२२॥	(1) Kush grass. (2) After noon.
(1) Compassion, pity, kindness.	कारुण्येऽप्यनुषङ्गः[1] स्यात्प्रोक्तो गुह्येऽप्यवस्करः[1] ।	(1) A privity.
(1) Signet ring.	वेदिकाऽङ्गुलिमुद्रायां[1] लाक्षायां[1] च कृमिस्तथा ॥८२३॥	(1) Lac.

a दृतावपि b देवनम् c कललं d विदुः प्रभावेऽपि ।

(1) Capital, stock,	नीवी परिपणे[1]ऽप्युक्ता[a] कटिदेशे[1]ऽपि मेखला ।	(1) Loins.
(1) Privation. (2) Separation.	प्रत्यवाये[1]ऽपि विश्लेषे[2] विधुरं स्मर्यते बुधैः ॥८२४॥	
(1) End.	निदानमवसाने[1]ऽपि स्वामिन्यपि[1] भवेदिनः ।	(1) A master, a lord.
(1) Bard. (2) Old, ripe.	जठरः कठिने[1]ऽप्युक्तः प्राज्ञैः परिणते[2]ऽपि च ॥८२५॥	
(1) Time. (2) Ordinance.	काले[1] कल्पे[2]ऽपि विधिर्घनाघनः[b] शक्र[1][c]वर्षुकाम्बुदयोः[2] ।	(1) Indra. (2) Rainy cloud.
(1) Distress. (2) Transgression.	अत्ययशब्दः प्राज्ञैः कृच्छ्रे[1] चातिक्रमे[2] च निर्दिष्टः ॥८२६॥	
(1) The belly. (2) Water.	उदरे[1] जले[2] कूपीटं सम्बाधः सङ्कटे[1] भगे[2]ऽप्युक्तः ।	(1) Narrow. (2) Vulva.
(1) The rear of an army (2) The rear of a battle.	पार्ष्णिः प्रत्यासारे[1] च रणस्य च पश्चिमे[2] भागे ॥८२७॥	
(1) Sexual intercourse. (2) Enjoyment.	रति[1]भुक्तयोः[2] सम्भोगः पथिदेये[1] स्त्रीधने[2] च शुल्कं स्यात् ।	(1) Toll, custom, duty. (2) The property of the wife,
(1) The shoot of a bamboo. (2) A shrub.	वंशाङ्कुरे[1] करीरं वृक्षविशेषे[2]ऽपि कथयन्ति ॥८२८॥	
(1) Race, family. (2) Disposition.	अनूकमन्वये[1] शीले[2] गोत्रं नाम्नि[1] तथान्वये[2] ।	(1) Name. (2) Race, family.
(1) A lump of boiled rice.	पुलाकं भक्तसिक्थे[1] च क्षुद्रधान्ये[2] च कथ्यते ॥८२९॥	(2) Shrivelled grain.
(1) An improper act. (2) A privy part.	अकार्ये[1] गुह्ये[2] कौपीनं कीलालं रुधिरे[1] जले[2] ।	(1) Blood. (2) Water.
(1) A hole filled with stake. (2) Conflagration of husk.	कुकूलं शङ्कुमद्गर्ते[1] तुषाग्नौ[2] च निगद्यते ॥८३०॥	
(1) A building containing an image of Buddha.	चैत्यं बुद्धाण्डके[d][1]ऽप्युक्तं देवतायतने[2] तथा ।	(2) A temple.
(1) Mushroom. (2) A sort of tree.	छत्रके[1] वृक्षजातौ[2] च शिलीन्ध्रं[e] स्मर्यते बुधैः ॥८३१॥	
(1) Prodigal. (2) A beast of prey.	अर्थव्ययसहे[1] व्यालस्तथा हिंस्रपशौ[f][2] स्मृतः ।	
(1) A ploughshare (2) The snout of a hog.	पोत्रमित्युच्यते प्राज्ञैर्हल[1]शूकरयोर्[2]मुखम् ॥८३२॥	
(1) Slow. (2) Free.	मन्द[1]स्वच्छन्दयोः[2] स्वैरं कक्षः स्यात्कच्छ[1]वीरुधोः[2] ।	(1) The hem of an ornament or garment. (2) The creeper.
(1) The male elephant. (2) The female elephant.	करेणुर्गज[1]हस्तिन्योः[2] पीलुश्च गज[1]वृक्षयोः[2] ॥८३३॥	(1) The elephant. (2) A kind of tree.

a प्युक्तः, युक्तः b विधिर्धमार्घनः, विधिनाद्यनः, विंविधिनाद्यनः, विधिनाघनः c शक्रवर्ष d बुद्धांडके, बुद्धाडके, बुधांडक e शलन्ध्रं, शिलिंध्र, शिलन्ध्रं, f हिंस्रः ।

(1) A Spike. (2) A Javelin.	शलाका[1]युध[2]योः शल्यं बाधा दुःख[1]निषेध[2]योः ।	(1) Pain, trouble. (2) Hindrance, prohibition, opposition.
(1) A pillar. (2) Fixedness in stupor.	स्थूणा[1]स्तब्ध[2]त्वयोः स्तम्भ इला वाग[1]घ्न्य[2]योरपि ॥८३४॥	(1) Speech. (2) A cow.
(1) Worship. (2) Price.	अर्चना[1]मूल्य[2]योरर्घौ विसर्गौ मुक्ति[1]वर्चसोः[2] ।	(1) Giving up. (2) Excrements.
(1) Name of a saint. (2) A cock.	मुनि[1]कुक्कुट[2]योर्दक्षः सन्धिः संश्लेष[1]रन्ध्र[2]योः ॥८३५॥	(1) Union. (2) A crack.
(1) Surely, positively. (2) Much, exceedingly.	अवश्य[1][a]भृश[2]योर्बाढं दायाद[1]स्तुक्सपिण्ड[2]योः ।	(1) Male offspring. (2) A kinsman.
(1) Of noble descent. (2) Excellent.	कुलीन[1]श्रेष्ठ[2]योर्जात्यं कोटिरुत्कर्ष[1][b]संख्य[2]योः ॥८३६॥	(1) Excellence. (2) Ten millions.
(1) One of Shiva's attendant. (2) Shiva.	[c]ब्रध्न[1]स्तण्डु[2]गिरिशयोः स्थितिः स्थान[1]व्यवस्थ[2]योः ।	(1) Standing place. (2) A rule management.
(1) Man festation. (2) Privacy.	[d]वीकाशः स्फुट[1]रहसोः[2] काष्ठा काल[1]प्रकर्ष[2]योः ॥८३७॥	(1) A measure of time. (2) Excellence.
(1) A river. (2) A sea.	नदी[1][e]समुद्र[2]योः सिन्धुर्देश[1]पर्वत[2]योर्मरुः ।	(1) A desert. (2) A mountain.
(1) Pairing connection. (2) Sexual intercourse.	मैथुनं कथ्यते सद्भिः सम्बन्ध[1]ग्राम्यधर्म[2]योः ॥८३८॥	
(1) Crookedly. (2) Binding.	प्र[1]ह्व[2]बन्धनयोः प्राध्वं मोहः स्यान्मौढ्य[1][f]मूर्छ[2]योः ।	(1) Folly. (2) Loss of consciousness.
The ebb and flow of the Sea.	व्यवस्थाने[1]ऽम्भसो [g]वेला [h]रविः पर्वत[1]सूर्य[2][3]योः ॥८३९॥	(1) Mountain. (2) The sun.
(1) Fire. (2) Meteor.	अग्न्युत्पातौ[1][2] धूमकेतू श्वशुर्यौ श्याल[1]देवरौ[2] ।	(1) Wife's brother. (2) Husband's. brother.
(1) An ordeal. (2) A treasury.	दिव्यार्थ[1]संग्रहौ[2] कोशौ नरेन्द्रौ नृप[1]वार्त्तिकौ[2] ॥८४०॥	(1) A king. (2) A conveyor of news or intelligence.
	आडम्बरो गजानां [i]पटह[1]रवे गर्जिते[2] प्रपञ्चे[3] च ।	(1) The sounding of a trumpet. (2) The roaring of elephants (3) A show.
(1) Planet. (2) An imp, evil spirit (3) Perseverance.	ग्रहशब्दः सूर्यादिषु[1] भूतादिषु[2]अभिनिवेशे[3] च ॥८४१॥	
(1) The supreme spirit (2) A fool (3) Indistinct, unclear.	अव्यक्तः परमात्मनि[1] मूर्खे[2] स्पष्टेतरे[3] च निर्दिष्टः ।	
	कक्षा गुह्यपिधाने[1] काञ्च्यां[2] गेहे[3] [j]प्रकोष्ठे च ॥८४२॥	(1) A piece of cloth worn between the legs to conceal privities (2) A girdle (3) A court in a palace.
(1) Elaboration, preparation. (2) Desire, wish. (3) The taking prisoner.	प्रतियत्नः संस्कारे[1] लिप्सो[2]पग्रहण[3]योश्च निर्दिष्टः ।	
(1) The arming for a battle. (2) An attack. (3) Robbing.	अभिहारः सन्नाहे[1] स्यादभियोगे[2] परस्वहरणे[3] च ॥८४३॥	

a अवश्यं b कोटिरुत्कर्षशंखयोः c बुघ्नस्तंडु, ब्रघ्नस्तंडि, ब्रघ्नस्तुंडु d विकाश e समुद्रनदयोः f मूर्खयोः, मौर्ष्ययोः g हसो वला, हसोर्वेला, h सूर्यपर्वतयो रविः i पटहः स्वे, पटहः खे j गेहप्रकोष्ठे इत्यपि पाठः ।

(1) A special present. (2) Taking, receiving.	दानविशेषे[a 1] लब्धौ[2] **दायो** भागार्ह[3]पित्र्यरिक्थे[b] च ।	(3) Patrimony.
(1) A line in a manuscript consisting of about 32 syllables.	लिपिसंख्यायां[1] शास्त्रे[2] द्रव्ये[3] च **ग्रन्थ**शब्दमिच्छन्ति[c] ॥८४४॥	(2) A code. (3) Substance.
(1) Gambling (2) Die.	द्यूता[1]क्ष[2]सारिफलका[3]स्त्रयोऽप्या**कर्ष**संज्ञकाः ।	(3) A draught-board.
(1) Connexion, association (2) Defeat.	संसर्गा[1]भिभवा[2]क्रोशे[3]ष्व**भिषङ्गः**[d] प्रकीर्त्तितः ॥८४५॥	(3) Reviling, imprecation.
(1) A son of त्वष्टृ the perpetual enemy of Indra.	त्वाष्ट्रे[1] तमसि[2] शत्रौ[3] च वृत्रशब्दस्त्रिषु स्मृतः ।	(2) Darkness. (3) An enemy.
(1) Depression, sorrow (2) Sacrifice (3) Anger.	**मन्यु**र्दैन्ये[1] क्रतौ[2] कोपे[3] नाडी[1]स्वर्ग[2]क्षिति[3]ष्व**िडा** ॥८४६॥	(1) An artery (2) Heaven (3) The earth.
	उक्तानामप्यनुक्तानां शब्दानामिह संग्रहः ।	
(1) Pleasure (2) Wind (3) Water.	**कशब्दः** सुख[1]वाय्व[2]म्बु[3]ब्रह्म[4]मस्तक[5]वाचकः ॥८४७॥	(4) The god Brahma. (5) Head.
(1) An oath. (2) understanding. (3) Cause.	**प्रत्ययाः**[e] शपथ[1]ज्ञान[2]हेतु[3]विश्वास[4]निश्चयाः[5] ।	(4) Trust. (5) Certainty.
(1) Expansion. (2) Awning. (3) Empty.	विस्तारे[1] कदके[2] शून्ये[3] **वितानं** स्यात्क्रतौ[4] क्षणे[5] ॥८४८॥	(4) Sacrifice. (5) Opportunity.
(1) A side (2) Fortnight.	देहावयव[1]मासार्ध[2]पतत्र[3]गृहभित्तिषु[4]	(3) Wing (4) The wall of a house.
(5) A follower.	परिग्रहे[5] समीपे[6] च **पक्षः** षट्सु निगद्यते ॥८४९॥	(6) Neighbourhood.
(1) Fire (2) Wealth (3) The rays of the sun.	अग्नि[1]धन[2]रश्मि[3]रत्न[4]त्रिदशविशेषेषु[5] भवति **वसु**शब्दः ।	(4) A jewel, gem. (5) A class of gods 8 in number.
(1) Motion, action (2) Nature, character (3) Origin.	चेष्टा[1]त्म[2]जन्म[3f]सत्ता[4]भिप्राये[5]ष्वभिहितो **भावः** ॥८५०॥	(4) Existence (5) meaning, purport.
(1) A measure of time equal to 4 minutes.	कालविशेषे[1]ऽवसरे[2]ऽव्यापारे[3] पारतन्त्र्ये[4] च ।	(2) Opportunity. (3) Leisure. (4) Dependence.
(5) Middle.	मध्ये[5] तथोत्सवे[6] च **क्षण**शब्दः कथ्यते[g] सद्भिः ॥८५१॥	(6) Festival.
(1) Custom. (2) Senses.	आचारे[1] नयनादौ[2] द्यूतविशेषे[3] तथा रथावयवे[4] ।	(3) Playing at dice (4) An axle.
(5) Terminelia Balaria.	**अक्षं** विंभीतकेऽपि[5] प्रयुञ्जते[h] पञ्चसु प्राज्ञाः ॥८५२॥	
(1) Trouble (2) End (3) Good conduct.	**निष्ठा** क्लेशे[1]ऽवसाने[2] च व्यवस्थो[3]त्कर्षयो[4]र्व्रते[5] ।	(4) Excellence. (5) A vow.
(1) Excellent (2) Power (3) Wealth.	श्रेष्ठे[1] स्थाम्नि[2] धने[3] शुक्रे[4 i] मज्ज्ञि[5] **सार** उदाहृतः ॥८५३॥	(4) Semen, virile.; (5) Marrow.

a दाने विशेषे, दाने विशेषलब्धौ b पितृऋक्थे, पितृरिक्थे c ग्रन्थमिच्छन्ति d भिष्वङ्गः e प्रत्ययः f जन्ममत्वाभिप्रायेष्व g कथ्यते कृतिभिः h प्रयुज्यते i शुक्ले, शुल्के ।

(1) A quarter (2) Eye (3) Rays of the sun (4) Heaven. (9) The earth. (10) A cow.

दिग्दृष्टिदीधितिस्वर्गवज्रवाग्बाणवारिषु
भूमौ पशौ च गोशब्दो विद्वद्भिर्दशसु स्मृतः ॥८५४॥

(5) Thunder bolt (6) Speech (7) An arrow (8) Water.

(1) An ornament. (2) A tail. (3) Excellent (7) A flag (8) Mark, sign (9) Horse.

भूषायां लाङ्गूले प्रधानशृङ्गप्रभावपुण्ड्रेषु ।
ध्वजलक्ष्मतुरङ्गेषु च नवसु ललामं[a] प्रचक्षते प्राज्ञाः ॥८५५॥

(4) Horn (5) Power. (6) A mark on the forehead.

(1) The sun (2) A monkey (3) Frog. (7) A horse. (8) Lion.

अर्कमर्कटमण्डूकविष्णुवासववायवः ।
तुरङ्गसिंहशीतांशु[b]यमाश्च हरयो दश ॥८५६॥

(4) Vishnu (5) Indra (6) Wind. (9) The moon. (10) Pluto, Yama.

(1) An element of which five are enumerated (3) A metal (4) Natural condition.

पृथिव्यादिषु भूतेषु शरीरेषु रसादिषु ।
लोहेषु च स्मृतो धातुः स्वभावे गैरिकादिषु ॥८५७॥

(2) A constituent part of the body. (5) Mineral ore.

(1) The tip of an elephant's trunk (2) A lotus (3) The blade of a sword. (6) A medicine. (7) Water.

द्विरदकराग्रे पद्मे खड्गफले व्योम्नि वाद्यभाण्डमुखे ।
अगदे जले च तीर्थे पुष्करमष्टासु निर्दिष्टम् ॥८५८॥

(4) The sky (5) The head of a drum. (8) A place of pilgrimage.

(1) A living being. (3) Passed (4) An evil spirit in attendance on Rudra.

चतुर्विधेषु जीवेषु पृथिव्यादिषु पञ्चसु ।
अतीते देवयोनौ च भूतशब्दं प्रचक्षते ॥८५९॥

(2) An element.

(1) Colour (2) Caste (3) Beauty, splendour. (6) Arrangement of a song (7) Praise (8) Dress.

शुक्लादौ ब्राह्मणादौ च शोभायामक्षरे व्रते ।
गीतक्रमे स्तुतौ वेषे[c] वर्णशब्दं प्रचक्षते[d] ॥८६०॥

(4) Letter (5) Vow.

(1) A sentiment of which 9 are enumerated. (5) Juice (6) Semen, virile (7) Quality (8) Any constituent part of the body

शृङ्गारादिषु नवसु च [e]लवणादिषु षट्सु पारदे रागे ।
[f]निर्यासवीर्यगुणधातुविषघृतादौ रसः प्रोक्तः ॥८६१॥

(2) Taste (3) Mercury, quicksilver affection (4) Love. (9) Poison (10) Melted butter, Ghee.

(1) Vulva (2) A landing place at a river's side. (4) A holy place. (5) A vessel.

योनौ जलावतारे च मन्त्र्याद्यष्टादशस्वपि ।
पुण्यक्षेत्रे तथा पात्रे तीर्थं स्याद्दर्शनेषु च ॥८६२॥

(3) A minister and 18 other officers of state. (6) A school of Philosophy.

a ललामं च b सीताशुर्यमा हरयो, सीताशुरर्यमा हरयो c वर्षे d प्रयुंजते e लवणादिषु पारदे, लवणादिकषट्सु पारदे, लवणादिषु न सु, नवसु, लवणादिपु षट्सु पारदे च f निर्यासि गुणवीर्यें, गुर्णवीर्य, धातुगुणवृतादौ रसः शब्दः, निर्यासगुणवोर्य धातुविषघृतादौररसः प्रोक्तः, निर्यासवीर्यगुणधातुविषघृतातौ रसः प्रोक्तः ।

(1) A vowel (2) A musical note.	अकारादिषु[1] वर्णेषु षड्जादिषु[a][2] च सप्तसु ।	
(3) Accent (4) Articulate sound.	उदात्तादिषु[3] विज्ञेयः प्राणिनां[4] च स्वने **स्वरः** ॥८६३॥	* (i) Goodness (ii) foulness and (iii) darkness.
(1) The equipoise of the 3 qualities of nature viz. *	सत्त्वादीनां साम्यावस्थां[1] **प्रकृतिं** वदन्ति तत्त्वज्ञाः ।	
(2) A citizen. (3) A minister. (4) A cause.	पौरामात्यादीनि[2][3] च कारणकारुस्वरूपाणि[4][5][6] ॥८६४॥	(5) A mechanic (6) The natural form.
(1) The 3 qualities of nature (2) Shape.	सत्त्वादौ[1] रूपादौ[2] शौर्यादौ[3] तन्तुषु[4][b] प्रयोगज्ञाः ।	(3) Heroism. (4) Cord or string.
(5) A bowstring.	**गुणशब्दं** सिञ्जिन्यां[5] प्रयोजयन्त्यप्रधानेऽपि[6] ॥८६५॥	(6) A subordinate quality or inferior degree.
(1) A tool (2) An agent (3) Wealth.	उपकरणे[1] करणे[2] च द्रविणे[3] लिङ्गे[4] च यातनायां[5] च ।	(4) Penis. (5) Torture.
(6) A component part of an army.	सेनाङ्गे[6] संसिद्धौ[7] **साधनशब्दप्रयोगः** स्यात् ॥८६६॥	(7) Accomplishment.
(1) Meaning. (2) Purpose. (3) Motive.	अभिधेयाभिप्रायप्रयोजनद्रव्यवाचकेष्वर्थः[1][2][3][c][4] ।	(4) Wealth.
(1) Opportunity. (2) Multitude.	प्रस्तावे[1] संघाते[2] कुत्सायामायुधे[3][4] जले[5] **काण्डम्** ॥८६७॥	(3) Censure (4) An arrow (5) Water.
(1) The holy scripture, the Vedas (2) The supreme spirit.	वेदाध्यात्मब्राह्मणहिरण्यगर्भेषु[1][2][3][4] कथ्यते **ब्रह्म** ।	(3) A Brahman. (4) The creator of the universe.
(1) The 3 qualities of nature (2) Existence (3) Power.	प्रकृतिगुणे[1] सत्तायां[2] स्थामनि[d][3] भूते[4] च **सत्त्वं** स्यात् ॥८६८॥	(4) Living being.
(1) The earth. (2) Speech (3) Food.	**इराशब्दो** बुधैर्ज्ञेयो भुवि[1] वाच्यशनेऽम्भसि[2][3][4] ।	(4) Water.
(1) Time (2) Pluto.	निमेषादौ[1] यमे[2] वर्णे[3] **कालो** मृत्यौ[4] च कीर्त्यते ॥	(3) Black. (4) Death.
(1) Time. (2) Convention.	कालसङ्केताचारसिद्धान्ताः[1][2][e][3][4] **समयाः** समाः[f] ॥८६९॥	(3) Practice. (4) Dogma.
(1) A thread. (2) Mystic prayer.	**तन्त्रं**[g] तन्तुषु[1] मन्त्रेषु[2] सिद्धान्तपरिच्छदप्रधानेषु[3][4][5] ।	(3) Established doctrine. (4) Retinue. (5) Chief.
(1) Effort (2) informing against.	उत्साहनसूचनयोः[1][2] प्रकाशने[3] **गन्धनं** प्रोक्तम् ॥८७०॥	(3) Manifestation.
(1) Clothing (2) The middle (3) A hole.	वस्त्रे[1] मध्ये[2] तथा छिद्रे[3] व्यवधानेऽन्तरात्मनि[4][5] ।	(4) Intervention. (5) The soul.
(6) Opportunity. (7) Connexion with the exterior.	अवकाशे[6] बहिर्योगे[7] विशेषेऽवसरेऽन्तरम्[8][9] ॥८७१॥	(8) Difference. (9) Occasion.

a खड्गादिषु b तन्तुषु च c प्रयोजद्रव्य प्रयोजनकचकचकश्चार्थः
d स्थाम्नि e चारे, सिद्धान्तसमयाः f स्मृताः g तन्त्रेषु ।

A particle.	प्रागेव नामपर्याये निपाताः केऽपि कीर्तिताः ।	
Auspiciously.	कथ्यन्ते केचिदन्येऽपि **दिष्टया** स्यान्मङ्गलादिषु ॥८७२॥	
A long time.	[a]चिराय चिररात्राय [1]दीर्घकाले प्रयुज्यते ।	
(1) An alternative. (2) Analogy.	चिरं चिराच्चिरेणेति [b]**वा** [1]विकल्पो[2]पमानयोः ॥८७३॥	
All round.	[1]परितः [2]सर्वतो [3]विष्वक् [4]समन्ताच्च [5]समन्ततः ।	
(1) Visible. (2) Similar.	[1]प्रत्यक्ष[2]सदृशोः **साक्षा**[1]द्वार्त्ता[c 2]सम्भाव्ययोः **किल** ॥८७४॥	(1) As reported (2) Probably.
(1) Grief (2) Joy.	[1]शोचने [2]सम्प्रहर्षे च [d]**हन्त**शब्दः प्रयुज्यते ।	
(1) Grief (2) Anger. (3) Evidently. (4) Vicinity.	**ई** [1]दुःखभावने [2]क्रोधे [3]प्रत्यक्षे [4]सन्निधावपि ॥८७५॥	
Without.	[1]पृथ[2]ग्विना[3]न्तरे[4]णर्ते [5]व्यतिरेकार्थवाचकाः ।	
Repeatedly.	प्रत्यारम्भे [e]**मुहुः** प्रोक्तो **हुं** [1]सम्प्रश्न[2]वितर्कयोः ॥८७६॥	(1) A question. (2) A doubt.
(1) According to tradition.	**इतिह** स्यात्[1]सम्प्रदाये **प्रेत्यामुत्र** [2]भवान्तरे ।	(1) In the life to come (2) In a future world.
(1) Together.	(1)साकं (2)सार्धं (3)समं (4)सत्रं [1]सहार्थे सम्प्रकीर्तिताः ॥८७७॥	
(1) Below, beneath.	अधरस्तादधरतः स्यादधस्तादधो[1]ऽधरे ।	
(1) Therefore.	**अत** **इत्युच्यते** [1]हेतौ [1]निन्दायां [2]विस्मये **बत** ॥८७८॥	(1) Disapproval. (2) Surprise.
(1) Near.	**समयानिकषाशब्दौ** [1]सामीप्ये कीर्तितौ बुधैः ।	
(1) Perhaps. (2) Surely.	[f 1]तर्क[2]निश्चययोर्नूनं **कच्चित्**स्यात्[1]प्रश्न[2]काम[g]योः ॥८७९॥	(1) A question. (2) Wish, desire.
(1) Doubt.	**आहो उताहो** [1]सन्देहे **नु** [h]**स्वित्**[1]प्रश्न[2]वितर्कयोः ।	(1) Question. (2) A doubt.
(1) At present. (2) Fit, proper.	[1]वर्तमाने च [2]युक्ते च **साम्प्रतं** सम्प्रचक्षते ॥८८०॥	
(1) Manifestly. (2) Origin.	[1]प्रकाशे [2]सम्भवे **प्रादुः** [1]प्रधान[2]सदृशोः **प्रति** ।	(1) Chief. (2) Like.
(1) Distinction. (2) Cause.	**हि** स्या[1]द्विशेषणे [2]हेतौ **तु** स्या[1]द्भेदे[2]ऽवधारणे ॥८८१॥	(1) Difference. (2) Indeed.

a चिराच्चिरेण b च विकल्पौप्रधानयोः, च विकल्पोप्रधानयोः

c संभोव्यये किल d हन्त शब्दं प्रचक्षते e महः, हनः

f तर्कनिश्चतयो, तर्कनिश्चययो g काम्ययोः h नु श्चित् प्रश्न ।

अयि प्रश्ने[1] सानुनये[a 2] सत्ये[1] शीघ्रे[2] तथाञ्जसा ।

(1) A question. (2) A kind enquiry. — (1) Truly. (2) Quickly.

ईषत्[1]किञ्चित्[2]मनाक्[3] प्रोक्ताः[4] किञ्चनस्तोकवाचकाः[5] ॥८८२॥

Some, little.

तूष्णीं जोषं भवेन्मौने[1] स्म स्यात्संस्मरणादिषु[1]

(1) Silently. — (1) Remembrance.

अङ्गेत्यामन्त्रणे[1] हं हो भो भो इति च कथ्यते ॥८८३॥

Calling to, addressing a person.

अनेकार्थे[1] भवेन्नाना ननु प्रश्ने[1]ऽवधारणे[2] ।

(1) Variously. — (1) Question. (2) Surely.

आकस्मिकार्थे[1] सहसा तत्काले[b 2] च निगद्यते ॥८८४॥

(1) Suddenly. (2) Instantly.

विस्तारे[1]ऽङ्गीकृता[2]वूरी कथ्यत उररी तथा ।

(1) Expansion. (2) Acceptance.

असंशये[1] भवेद्बाढं सहार्था[2]न्तिकयो[3]रमा ॥८८५॥

(1) Surely. (2) Together. (3) Vicinity.

अथानन्तर[1]कल्याण[2]सम्प्रश्नादिषु[3] कथ्यते ।

(1) Then. (2) Auspicious. (3) Question.

अथो इति तथा प्रोक्तो नामाभ्युपगमादिषु[1] ॥८८६॥

(1) Granting, allowing.

सदा सना च नित्यत्वे[1] स्वस्ति स्यान्मङ्गलादिषु[1] ।

(1) Always. — (1) Hail.

इतिशब्दः स्मृतो हेतौ[1] प्रकारा[2]दिसमाप्तिषु[3] ॥८८७॥

(1) Cause. (2) Similarity. (3) End.

इति श्रीभट्टहलायुधकृतायामभिधानरत्नमालाया-
मनेकार्थकाण्डं पञ्चमं समाप्तम् ॥ ५ ॥

a सानुशये b नित्यार्थे ।

हलायुधकोशस्य

विवृतिसहितोऽकारादिशब्दानुक्रमकोशः

हलायुधकोशस्य अकारादिशब्दानुक्रमकोशः

विवृतिसहितः

अ

अंशुः पुं. [अंशयति इति । अंश् विभाजने, मृगय्वादित्वात् कु] सूर्यः; किरणः (३९) ; प्रभा; वेशः; सूत्रादिसूक्ष्मांशः; लेशः; ऋषिविशेषः; लतावयवः; सोमलतावयवः; भागः । ३६

अंशुकम् क्ली. [अंशून् कायति । अंशु + कै शब्दे, आत इति क, यद्वा अंशुभिः काशते, काश् दीप्तौ, अन्येष्वपीति ड] वस्त्रमात्रं; सूक्ष्मवस्त्रम्; उत्तरीयवस्त्रं; शुक्लवस्त्रम्; अधोवस्त्रम्; पत्रम् । ५४८

अंशुमान् [त्] पुं. [अंशवो विद्यन्ते अस्य इति । तदस्यास्तीति मतुप्] सूर्यः; असमञ्जसपुत्रः सूर्यवंशीयराजविशेषः; यथा–'सगरस्यासमञ्जस्तु असमञ्जादथांशुमान् ।' सूर्यवंशीयासमञ्जसो राजपौत्रः; यथा–'ततश्चकारासमञ्जा गङ्गानयनकारणम् । लक्षवर्षं तपस्तप्त्वा ममार कालयोगतः ॥ दिलीपस्तस्य तनयो गङ्गानयनकारणम् । तपः कृत्वा लक्षवर्षं ययौ लोकान्तरं नृपः । अंशुमांस्तस्य पुत्रोऽभूद्'–इत्यादि ब्रह्मवैवर्त्ते प्रकृतिखण्डे ८ अध्यायः । विश्वव्यापिप्रकाशः परमात्मा; अंशुयुक्ते त्रि., सोमलताया अवयवविशिष्टः । ३६

अंशुमाली [न्] पु. [अंशूनां माला अस्ति अस्य इति । व्रीह्यादित्वाद् इनि] सूर्यः; यथा–'आदित्य इवांशुमाली चचार'–इति विष्णुपुराणम् । ३५

अंसः पुं.–क्ली. [अंस्यते समाहन्यते । अंस् समाघाते, घञ् । यद्वा अमति अम्यते वा भारादिना, अम् गतौ, अमेः सन्] विभागे पुं., स्कन्धः । वस्त्वेकदेशः; रिक्तभागः; चतुर्थभागः; भाज्याङ्कः; रविमूर्तिविशेषः; आदित्यविशेषः, यथा–'धाता मित्रोऽर्यमा शक्रो वरुणस्त्वंस (श) एव च । भगो विवस्वान् पूषा च सविता दशमस्तथा । एकादशस्तथा त्वष्टा द्वादशो विष्णुरेव च । जघन्यजस्तु सर्वेषामादित्यानां गुणाधिकः'–इति महाभारते । ५२३

अंसकूटः पुं. [अंसे स्कन्धे कूट इव] ककुत्; 'डिल्ला' इति भाषा । २६६

अंसलः त्रि. [अंसोऽस्यास्तीति । 'वत्सांसाभ्यां कामबले' इति लच्] बलवान् । ३८१

अंहतिः स्त्री. [हन्ति दुरितमनया । 'हन्तेरंह च' इति अति] दानं; रोगः; त्यागः । ४१९

अंहती स्त्री. ['हन्तेरंह च' इति अति, बह्वादित्वाद् ङीष्] दानम् । ४१९

अंहितिः स्त्री. [हन् अति, अंहादेशः इडागमश्च] दानम् । ४१९

अंहः [स्] क्ली. [अमति गच्छति प्रायश्चित्तादिना । अम् गत्यादिषु, 'अमेर्हुक् च' इति असुन्, हुगागमश्च । अमति गच्छति अधोऽनेन वा । अहेरसुना सिद्धे अघेरसुनि अङ्घ इति मा भूदिति अमेर्हुक् चेति सूत्रम् । तथा च–'स्यान्मध्योष्मचतुर्थत्वमंहसो रंहसस्तथा'–इति द्विरूपकोषः । एवं च 'दत्तार्घाः सिद्धसङ्घैर्विदधतु घृणयः शीघ्रमङ्घोविघातम्'–इति सूर्यशतके पाठ अनुप्रासरसिकानां प्रामादिक इति वदन्ति] पापं; दुःखं; विघ्नः; स्वधर्मत्यागः । ६२७

अंह्रिः पुं. [अहि, क्रिन्, 'वङ्क्र्यादयश्च' इति उणादिसूत्रम्] पादः; वृक्षमूलम् । ५११

अंह्रिपः पुं. [अंह्रिभिः पिबति इति । पा पाने, सुपीति योगविभागात् क] वृक्षः । १७७

अकारः पुं. ['वर्णात्कारः' इति कारप्रत्ययः] आद्यस्वरवर्णः । अस्य तत्त्वं यथा—'शृणु तत्त्वमकारस्य अति-

गोप्यं वरानने ! शरच्चन्द्रप्रतीकाशं पञ्चकोणमयं सदा'—इति कामधेनुतन्त्रम् । ८६३

अकार्यम् क्ली. [न कार्यम्, नञ्समासः] कुकार्यम्; दुष्कर्म; अकर्म; अकृत्यं, यथा—'किमकार्यं कदर्याणां दुस्त्यजं किं धृतात्मनाम्'—इति भागवतम् । कार्याभावः । ८३०

अकिञ्चनः त्रि. [नास्ति किञ्चन यस्य । मयूरव्यंसकादित्वाद् बहुव्रीहिसमासः] दरिद्रः; 'अकिञ्चनः सन् प्रभवः स सम्पदाम्'— इति कुमारसम्भवे (५-७७) । ३४८

अकुप्यम् क्ली. [न कुप्यं, कुप्यादन्यदित्यर्थः । नञ्-समासः] स्वर्णं; रूप्यं; 'कुरूनकुप्यं वसु वासवोपमः'—इति भारविः (१-३५) । ८१

अकूपारः पुं. [न कूपारः । नञ्समासः । कुं पृथिवीं पिपर्ति इति । पॄ पालनपूरणयोः, कर्मणि अण्, अन्येषामपीति दीर्घः] समुद्रः; कूर्मराजः; पाषाणादिः; कमठः । ६५२

अक्षः पुं.–क्ली. [अक्षणोति अक्षति अक्ष्यते वा अनेन अत्र वा । अक्षू व्याप्तौ, पचाद्यच् घञ् वा । अश्नुते अत्यर्थम् । अशू व्याप्तौ, अशेर्देवने इति सो वा] पाशक्रीडा; यथाह मनुः—'मृगयाक्षो दिवास्वप्नः परीवादः स्त्रियो मदः ।' पाशकः; 'अक्षैरक्षान् वा दीव्यति'—इति सिद्धान्तकौमुदी । व्यवहारः (४२९); शकटः (४४८); अक्षं क्ली., इन्द्रियम् (५३५); यथा विष्णुपुराणे—'शब्दादिष्वनुरक्तानि निगृह्याक्षाणि योगवित् । कुर्याच्चित्तानुकारीणि प्रत्याहारपरायणः ॥' (६१८) कलिद्रुमः; बिभीतकवृक्षः, यथा छान्दोग्ये—'यथा वै द्वे आमलके द्वे कोले द्वौ वाक्षौ मुष्टिमनुभवति ।' व्यवहारः (८५२); चक्षुः; यथा रामायणे—'सर्वे तेऽनिमिषैरक्षैस्तमनुद्रुतचेतसः ।' रथावयवः; सौवर्चलं; तुत्थं; पुं., कर्षपरिमाणं; यथा—'ते षोडशाक्षः कर्षोऽस्त्री पलं कर्षचतुष्टयम् ।' ज्ञातार्थं; रुद्राक्षः; इन्द्राक्षः; सर्पः; चक्रं; चक्रधारणदारुभेदः; 'छिन्ननास्ये भग्नयुगे तिर्यक् प्रतिमुखागते । अक्षभङ्गे च यानस्य चक्रभङ्गे तथैव च ॥' आत्मा; रावणपुत्रः; यथा—'निशम्य राजा समरे सहोत्सुकं कुमारमक्षं प्रसमैक्षताथ वै'—इति रामायणे । जातान्धः; गरुडः; शिवः; 'अक्षश्च रथयोगी च सर्वयोगी महाबलः'—इति महाभारते । संस्कृतपलभा; 'चन्द्राश्विनिघ्ना पलभाद्धिता च लङ्कावधिः स्यादिह दक्षिणोऽक्षः'—इति भास्वती । 'प्रभा शरघ्ना स्वतुरीययोगादक्षः सदा दक्षिणदिक्प्रदिष्टः'—इति जातकार्णवः । 'दक्षिणोत्तररेखायां सा तत्र विषुवत्प्रभा । शङ्कुच्छायाहते त्रिज्ये विषुवत्कर्णभाजिते ॥ लम्बाक्षज्ये तयोश्चापे लम्बाक्षौ दक्षिणौ सदा'—इति सूर्यसिद्धान्तः । ३८८

अक्षदृक् [श्] पुं. [अक्ष+दृश्, क्विप्] अक्षदर्शकः; व्यवहारस्य ज्ञाता । ४२९

अक्षरम् क्ली. [न क्षरति इति] मोक्षः; ब्रह्म; कूटस्थः; नित्यः; आत्मा; गगनं; धर्मः; तपस्या; अपामार्गः; जलम् इति वेदप्रयोगः । पुं., शिवः; अजः; जीवः; अकारादिक्षकारान्तैकपञ्चाशद्वर्णाः (८६०); यथा बृहस्पतिः—'षाण्मासिके तु सम्प्राप्ते भ्रान्तिः संजायते यतः । धात्राक्षराणि सृष्टानि पत्रारूढान्यतः पुरा ॥' १२४

अक्षरजीवकः पुं. [अक्षरैः जीवति इति । ण्वुल्] लिपिकरः; 'लेखके क्षरपूर्वाः स्युश्चणजीवकचुञ्चवः'—इति हेमचन्द्रः । ५८६

अक्षरजीविकः पुं. [अक्षरैर्जीविका यस्य सः] कायस्थः; लेखकः; लिपिकरः; अक्षरजीवकः; अक्षरजीविनि त्रि. । ५८६

अक्षवती स्त्री. [अक्षाः पाशकाः सन्ति अस्याम् इति । मतुप्, लोकात् स्त्रीत्वम्] द्यूतक्रीडा; 'जूआ' इति भाषा । 'पराजितं सौबलेनाक्षवत्याम्'—इति महाभारते । ३८८

अक्षाग्रकीलकः पुं. [अक्षस्य नाभिक्षेप्यकाष्ठस्य अग्रे अन्ते बन्धनार्थं कीलकः] शकटचक्रपुरोवर्तिकीलकः; अणिः; अणी; आणिः । ४४८

अक्षाग्रकीलिका स्त्री. अक्षाग्रकीलकः [स्त्रियां टाप्] अर्थः पूर्ववत् । ४४८

अक्षि क्ली. [अश्नुते अनेन । अशू व्याप्तौ संघाते च. अशेर्निदिति क्सि । यद्वा अक्षति । अक्षू व्याप्तौ, इन्] चक्षुः; चक्षुर्गोलकः । ५१९

अक्षिगतः त्रि. [सप्तमीसमासः, अक्षिविषय इव खेदकृदित्यर्थः] द्वेष्यः । ३६६

अखिलम् त्रि. [न खिलमस्य] सर्वम् (खिलमप्रहतं स्थानम् । तत् न भवति इति) कृष्टस्थानम् । ७१३

अगः पुं. [न गच्छति । गम्लृ गतौ, अन्येभ्योऽपीति,

अन्येष्वपि इति वा ड। नगोऽप्राणिषु इति पाक्षिकोऽप्रकृतिभावः] वृक्षः; पर्वतः; सर्पः; सूर्यः। १७७

अगदः पुं. [गदविरुद्धः, न गदः अस्मात् इति] औषधम्; आयुर्वेदोक्ताष्टशाखान्तर्गतशाखाभेदः; 'औषधान्यगदो विद्या दैवी च विविधा स्थितिः। तपसैव प्रसिध्यन्ति'—इति मनुः। नीरोगे त्रि.। ६१३

अगरु क्ली.-पुं. [न गरुः दुर्भरः अस्मात् इति] अगुरु; सुगन्धिद्रव्यविशेषः। ५४५

अगस्तिः पुं.[विन्ध्याख्यमगम् अस्यति इति। अस्यतेः क्तिच् बाहुलकात् ति वा] अगस्त्यमुनिः; वकवृक्षः; यथा वैद्यके—'अगस्तिः पित्तकफजित् चतुर्थकहरो हिमः। रूक्षो वातकरस्तिक्तः प्रतिश्यायनिवारणः॥' ४१३

अगस्त्यः पुं. [अगं विन्ध्यं स्त्यायति स्तम्नाति वा। अग+स्त्यै संघाते, आतोऽनुपसर्गे इति क] मुनिविशेषः; मित्रावरुणयोः पुत्रः; कुम्भसम्भवः; मैत्रावरुणिः; अगस्तिः; पीताब्धिः; वातापिद्विट्; आग्नेयः; और्वशीयः; आग्निमारुतः; घटोद्भवः। ४१३

अगाधः पुं. [न गाधः स्थितिः अत्र। गाधृ प्रतिष्ठायाम्, घञ्, नञ्समासः] छिद्रम्; निम्नं; गर्तः; श्वभ्रं; शुषिरं; बिलं; रन्ध्रं; दरम्। अमरमते क्ली.। ६२४

अगाधः त्रि. [नास्ति गाधः स्थितिरत्र, नञोऽस्त्यर्थानामिति बहुव्रीहिः] अतिगभीरः; अतलस्पर्शः; अतिगम्भीरः; दुर्बोधाशयः। ६४९

अगारम् क्ली. [अगान् ऋच्छति। ऋ गतौ, कर्मण्यण्] आगारं; गृहं; 'शून्यानि चाप्यगाराणि वनान्युपवनानि च'—इति मनुः। २९१

अगुरु क्ली. [न गुरुः दुर्भरः अस्मात् इति बहुव्रीहिः] शिंशपावृक्षः; कालागुरु; सुगन्धिकाष्ठविशेषः; वंशिकं; राजार्हं; लोहं; क्रमिजं; जोङ्गकं; शृङ्गजं; कृष्णं; लोहाख्यं; लघु; पीतकं; वर्णप्रसादनम्; अनार्यकम्; असारं; क्रमिजग्धं; काष्ठकम्। 'अगर' इति भाषा। ५४५

अग्नायी स्त्री. [अग्नेः स्त्री इत्यस्मिन्नर्थे वृषाकप्यग्निकुसितेत्यादिसूत्रेण अग्निशब्दस्यैकारादेशो ङीप् च] अग्निभार्या; 'अग्नायी स्वाहा च हुतभुक्प्रिया'—इत्यमरः। त्रेतायुगम्। ६६

अग्निः पुं. [अङ्गयन्ति अग्र्यं जन्म प्रापयन्ति इति व्युत्पत्त्या हविःप्रक्षेपाधिकरणेषु गार्हपत्याहवनीयदक्षिणाग्निसभ्यावसथ्यौपासनाख्येषु षडग्निषु। यद्वा अङ्गति ऊर्द्ध्वं गच्छति इति। अगि गतौ, अङ्गेर्नलोपश्चेति नि, नलोपश्च] तेजःपदार्थविशेषः; धर्मस्य वसुभार्यायां जातः प्रथमोऽग्निः; तस्य पत्नी स्वाहा, पुत्रास्त्रयः—१ पावकः–२ पवमानः–३ शुचिः। षष्ठमन्वन्तरे अग्नेः वसोर्धारायां द्रविणकादयः पुत्राः, एतेभ्यः पञ्चचत्वारिंशदग्नयः जाताः। सर्वे मिलित्वा एकोनपञ्चाशदग्नयः। अस्य पर्यायाः– वैश्वानरः; वह्निः; वीतिहोत्रः; धनञ्जयः; कृपीटयोनिः; ज्वलनः; जातवेदाः; तनूनपात्; तनूनपाः; बर्हिःशुष्मा; बर्हिः; शुष्मा; कृष्णवर्त्मा; उषर्बुधः; आश्रयाशः; शोचिष्केशः; आशयाशः; बृहद्भानुः; कृशानुः; पावकः; अनलः; रोहिताश्वः; वायुसखा; वायुसखः; शिखावान्; शिखी; आशुशुक्षणिः; हिरण्यरेताः; हुतभुक्; हव्यभुक्; दहनः; हव्यवाहनः; सप्तार्चिः; दमुनाः; दमूनाः; शुक्रः; चित्रभानुः; विभावसुः; शुचिः; अप्पित्तः; वृषाकपिः; जुहुवालः; कपिलः; पिङ्गलः; अरणिः; अगिरः; पाचनः; विश्वप्साः; छागवाहनः; कृष्णार्चिः; जुहूवारः; उदर्चिः; भास्करः; वसुः; शुष्मः; हिमारातिः; तमोनुत्; सुशिखः; सप्तजिह्वः; अपपारिकः; सर्वदेवमुखः। ६२

अग्निभूः पुं. [अग्नेर्भवतीति। अग्नि+भू+क्विप्] कार्तिकेयः; जले क्ली., 'अग्नौ दत्ताहुतिः सम्यग् आदित्यमुपतिष्ठते। आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः।' १९

अग्रः त्रि. [अग्र्यते अगति वा। अग् कुटिलायां गतौ, ऋज्रेन्द्रेति साधुः] प्रथमः; श्रेष्ठः; उत्तमः; प्रधानम्। क्ली. उपरिभागः; शिरः; शिखरं; पुरस्तात्; अवलम्बनं; पलपरिमाणं; प्रान्तं; समूहः; भिक्षाविशेषः; ग्रासचतुष्टयम्; 'ग्रासप्रमाणा भिक्षा स्यादग्रं ग्रासचतुष्टयम्'—इति स्मृतेः। ७०७

अग्रजः पुं. [अग्रे जातः इति। सप्तम्यां जनेर्डः] ज्येष्ठभ्राता; पूर्वजः; अग्रियः; 'सर्वेषां धनजातानामाददीताग्र्यमग्रजः'—इति मनुः। ब्राह्मणः; अग्रे जाते त्रि.। ५०६

अग्रजन्मा [न्]पुं. [अग्रे जन्म यस्य सः। बहुव्रीहिः,जन्+भावे मनिन्] ब्राह्मणः; 'अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं

तथा। दानं प्रतिग्रहश्चैव षट् कर्माण्यग्रजन्मनः'—इति मनुः। ज्येष्ठभ्राता; ब्रह्मा। ३९१

अग्रणीः त्रि. [अग्रे नीयतेऽसौ। अग्र+नी+क्विप्। 'अग्रग्रामाभ्यामिति' णत्वम्] अग्रिमः; श्रेष्ठः। (वह्नौ च पुं., यथा चास्याग्रणीत्वं तथाग्निशब्दे निरुक्त-व्याख्यायामुक्तम्।) ६९०

अग्रमांसम् क्ली. [अग्रं भक्ष्यत्वेन प्रधानं मांसम्] बुक्कम्। ६३६

अग्रिमः त्रि. [अग्रे भवः। अग्र+डिमन्] प्रधानम्; उत्तमः; ज्येष्ठः; अग्रजः। ७७५

अग्रेसरः त्रि. [अग्रे सरति गच्छतीति। अग्रे+सृ+ट] अग्रे गमनकर्ता; पुरोगः; प्रेष्ठः; अग्रतःसरः; पुरःसरः; अग्रगामी; अग्रसरः; अग्रगः; पुरोगमः; पुरोगामी। ६९०

अग्र्यः त्रि. [अग्रे भवः। अग्र+यत्] प्रधानम्; उत्तमः; ज्येष्ठभ्रातरि पुं., ज्येष्ठः; अग्रजः; प्रधानम्; उत्तमः (७७५)। ६९०

अघम् क्ली. [अङ्घते गच्छति दानादिना। अघि गतौ, अच्, आगमानित्यत्वान्न नुम्] पापं; दुःखं; व्यसनम्।६२७

अघनम् क्ली. [न घनं, नञ्समासः] दधि; द्रप्सम्। २७५

अघ्न्या स्त्री. [न हन्यते या। हन्+अघ्न्यादयश्च इति यक्, स्त्रियां टाप्। 'पतिं वो अघ्न्यानां धेनूनामिति'-वेदः। 'अवध्यां च स्त्रियं प्राहुस्तिर्यग्योनिगतामपि'—इति निषेधात्] गौः; स्त्रीगवी। २९८

अङ्कः पुं. [अङ्कयति चिह्नयति, अङ्क् लक्ष्मणि, अच्] चिह्नम्; 'स्वनामकाङ्कं निचखान सायकम्'—इति रघुवंशे। क्रोडम् (५२८); 'सपत्नीतनयं दृष्ट्वा तमङ्कारोहणोत्सुकम्'—इति विष्णुपुराणे। रूपकविशेषः; अपराधः; रेखा; विभूषणं; समीपं; स्थानं; नाटकांशः; 'प्रत्यक्षनेतृचरितो रसभावसमुज्ज्वलः। भवेदगूढशब्दार्थः क्षुद्रचूर्णकसंयुतः। अन्तर्निष्क्रान्तनिखिलपात्रोऽङ्क इति कीर्तितः'—इति साहित्यदर्पणे। चित्रयुद्धं; शरीरं; नवसंख्या; कुचभूषायां; अगे; कटिप्रदेशे; कलङ्के; 'एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः'—इति कुमारसम्भवे। ४५

अङ्कपाली स्त्री. [अङ्केन क्रोडेन पालयति। अङ्क+पालि+इ, स्त्रियां वा ङीप्, पक्षे अङ्कपालिः] आलिङ्गनं; धात्री; वेदिकाख्यगन्धद्रव्यं; तस्य नामान्तरं कोटिः। ५६८

अङ्कुरः पुं. [अङ्क्+उरच्] बीजोद्भवः; नूतनोत्पन्नतृणादिः; अभिनवोद्भिद्; उद्भेदः; प्ररोहः; अकुरः; रोहः; अङ्करः; 'दर्भाङ्कुरेण चरणः क्षत इत्यकाण्डे, तन्वी स्थिता कतिचिदेव पदानि गत्वा'—इति शाकुन्तले। 'चूताङ्कुरास्वादकषायकण्ठः'—इति कुमारसम्भवे। जलं; रक्तं; लोम। १८५

अङ्कुशः पुं.-क्ली. [अङ्कयते हस्तिचालनार्थमाहन्यतेऽनेन। अङ्क्+उशच्] हस्तिचालनार्थंलोहमयवक्राग्रास्त्रं; शृणिः, सृणिः; अङ्कूरः; 'उष्ट्रान् हयान् खरान् नागान् जघ्नुर्दण्डकषाङ्कुशैः। कम्पना अङ्कुशा भल्लाः कालचक्रा गदास्तथा॥'—इति रामायणे। २२२

अङ्कुशवारणम् क्ली. [अङ्कुशेन वारणम्। वृ+ल्युट्] अङ्कुशद्वारा गजस्य पथप्रदर्शनं नियन्त्रणं वा। २२२

अङ्कूरः पुं. [अङ्क्+खर्जूरादित्वाद् ऊरच्] अङ्कुरः; अभिनवोद्भित्। १८५

अङ्गम् क्ली. [अङ्गं विद्यतेऽस्य। अङ्ग+अर्श आद्यच्; अम् गत्यादौ वा, गन्। अङ्गमङ्गनाद् अञ्चनाद् वा] गात्रम्; 'अङ्गानि चम्पकदलैः स विधाय धाता' —इति शृङ्गारतिलके। ५१०

अङ्गम् क्ली. [अगि गतौ, पचाद्यच्] शरीरादेरेकदेशः; अवयवः; प्रतीकः; अपघनः; अप्रधानम्; 'एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा। अङ्गमन्ये रसाः सर्वे कार्यनिर्वहणेऽद्भुतम्'—इति साहित्यदर्पणे। उपायः (अङ्ग्यते विषयो बुध्यते अनेन। अङ्ग+करणे घञ्, इति व्युत्पत्त्या) मनः; अङ्गं मनसि काये चेत्यभिधानान्तरदर्शनात्, यथा—'हिरण्यगर्भाङ्गभुवं मुनिं हरिः'—इति माघः। वेदाङ्गशास्त्राणि षट्; 'शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां चयः। ज्योतिषामयनं चैव वेदाङ्गानि षडेव तु॥' पुं. अङ्गदेशः; यथा—'वैद्यनाथं समारभ्य भुवनेशान्तगं शिवे। तावदङ्गाभिधो देशो यात्रायां न हि दुष्यति॥' 'अनङ्ग इति विख्यातस्ततः प्रभृति राघव। स चाङ्गविषयः श्रीमान् यत्राङ्गं स मुमोच ह॥' त्रि., अङ्गविशिष्टः; निकटः; 'अङ्गं गात्रे प्रतीकोपाययोः पुं-

भूम्नि नीवृति। क्लीवकत्वे त्वप्रधाने त्रिष्वङ्गवति चान्तिके'—इति मेदिनीकारः। ७४५

अङ्ग अव्य.—सम्बोधनम्; 'अङ्गावेक्षस्व सौमित्रे कस्येमां मन्यसे चमूम्'—इति रामायणे। पुनरर्थं। ८८३

अङ्गजः पुं. [अङ्गाद् जातः। अङ्ग+जन्, 'पञ्चम्यामजातौ' इति ड] कामदेवः; पुत्रः; केशः; मदः; गदः; स्त्रीणां यौवने सात्त्विकभावविशेषः; 'यौवने सत्त्वजास्तासामष्टाविंशतिसंख्यकाः। अलङ्कारास्तत्र भावहावहेलास्त्रयोऽङ्गजाः'—इति साहित्यदर्पणे। क्ली. रक्तम्। शरीरजे त्रि.। ३२

अङ्गदम् क्ली. [अङ्गं दयते, दायति, द्यति वा। देङ् पालने, दैप् शोधने, दोऽवखण्डने, अङ्ग+दा+क] केयूरम्। 'बाजूबंद' इति भाषा। 'धूयमानैश्च वासोभिः श्लक्ष्णैरङ्गदभूषणैः'—इति रामायणे। पुं. कपिभेदः; बालिनामवानरराजपुत्रः; 'कुमुदं पञ्चदशभिर्जाम्बवन्तं च सप्तभिः। अशीत्या बालिनः पुत्रमङ्गदं बिभिदे शरैः'—इति रामायणे। ५५७

अङ्गना स्त्री. [प्रशस्तानि अङ्गानि अस्याः] कामिनी; 'ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः'—इति मनुः। सुन्दराङ्गी; सार्वभौमनाम्न उत्तरदिग्गजस्य पत्नी; वृषकर्कटककन्यावृश्चिकमकरमीनराशयः। ४८१

अङ्गपालिः पुं. [अङ्गेन पाति सुखयति। अङ्ग+पा+अलि] आलिङ्गनम्; अङ्कपाली; अङ्कपालिः। स्त्रियां ङीप्, वेदिकाख्यगन्धद्रव्ये। ५६८

अङ्गनारजः [स्] क्ली [अङ्गनायाः रजः। षष्ठीसमासः] स्त्रीणाम् ऋतुः; आर्तवम्। ७९४

अङ्गमर्दी [न्] पुं. [अङ्गं साधु मर्दयति संवाहयति यः। अङ्ग+मर्द+णिनि] अङ्गमर्दः; अङ्गमर्दनकारकभृत्यः; संवाहकः; अङ्गमर्दकः। ५९०

अङ्गरागः पुं. [रज्यतेऽङ्गमलङ्क्रियतेऽनेन। रञ्ज्+करणे घञ्, 'घञि च भावकरणयोरिति' नलोपो वृद्धिश्च। अङ्गस्य रागः, षष्ठीतत्पुरुषः] गात्ररञ्जनम्; अङ्गे चन्दनादिलेपनं; विलेपनं; 'स्नानानि चाङ्गरागाश्च माल्यानि विविधानि च'—इति रामायणे। ५४५

अङ्गविक्षेपः पुं. [वि+क्षिप्+भावे घञ्। अङ्गस्य विक्षेपः, एकस्थानादन्यस्थाने चालनं, षष्ठीतत्पुरुषः] अङ्गहारः; अङ्गचालनरूपनृत्यम्। 'अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपः'—इत्यमरः। ९४

अङ्गहारः पुं. [अङ्गानां हारः। एकस्थानादन्यस्थाने चालनं, षष्ठीतत्पुरुषः] अङ्गानां स्थानात् स्थानान्तरनयनम्; अङ्गविक्षेपः; अङ्गहारिः (स्थिरहस्तपर्यस्तकादिको द्वात्रिंशत्प्रकारः—इति मधुः, वृश्चिकभ्रमरादिद्वात्रिंशद्रूपः—इति रायः, अङ्गुल्यादिविन्यासस्त्रिंशद्रूपः—इति कौमुदी) ९४

अङ्गारः पुं.-क्ली. [अगि+आरन्। इदित्वान्नुम्] दग्धकाष्ठखण्डं; तत्तु निरग्नि साग्नि च; अलातम्; उल्मुकम्; आलातम्; उल्मूकं; 'घृतकुम्भसमा नारी तप्ताङ्गारसमः पुमान्।' ३२३

अङ्गारकः पुं.-क्ली. [अङ्गार+स्वार्थे क] मङ्गलग्रह; 'धरात्मजः कुजो भौमो भूमिजो भूमिनन्दनः। अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः'—इति. वराहपुराणम्। 'दिवीव ग्रहयोर्घोर बुधाङ्गारकयोर्महत्। कौशलानां च नक्षत्रं ज्येष्ठा मैत्राग्निदैवतम्॥ आक्रम्याङ्गारकस्तस्थौ विशाखामपि चाम्बरे'—इति रामायणे। अङ्गारः; कुरुण्टकवृक्षः; भृङ्गराजः। ४६

अङ्गारशकटी स्त्री. [शक्नोति वोढुं शकटम्। शकट+स्त्रियां ङीप्, अल्पार्थे शकटी, अङ्गारस्य शकटी, षष्ठीतत्पुरुषः] अङ्गारधानिका। 'अँगीठी' इति भाषा। ३१४

अङ्गीकृतिः स्त्री. [अङ्गीति च्व्यन्तं तत्पूर्वकात् कृ+कर्मणि क्त] स्वीकृतिः। ८८५

अङ्गुरिः स्त्री. [अगि गतौ, ऋतन्यञ्जीति उलि, बालमूलेति लस्य र] पाणिपादाङ्गुली। ५१६

अङ्गुरी स्त्री. [अङ्ग+उलि पक्षे ङीप्] अङ्गुली। ५१६

अङ्गुलिः स्त्री. [अङ्ग+उलि] करशाखा; 'कायमङ्गुलिमूलेऽग्रे दैवं पित्र्यं तयोरधः'—इति मनुः। गजकर्णिका; हस्तिशुण्डाग्रभागः; अङ्गुष्ठः। ५१६.

अङ्गुलिमुद्रा स्त्री. [अङ्गुलेः मुदं लक्षणया धारयितुं हर्षं राति ददाति या। अङ्गुलिमुद्+रा+कर्तरि क] साक्षरोर्मिका; प्रभुनाम्ना स्वनाम्ना वा अङ्कितम् अङ्गुरीयकम्। 'मोहरछाप अँगूठी' इति भाषा। ५५९

अङ्गुली स्त्री. [अङ्ग+उलि स्त्रियां वा ङीप्] शरीरावयवविशेषः; 'कनिष्ठायामप्यङ्गुल्यां भ्रातुर्मम स राक्षसः।' 'ज्वालाङ्गुलीभिर्भगवान् विष्टम्यः स हुताशनः'—इति रामायणे। तस्याः पर्यायाः—करशाखा;

अङ्गुरिः; अङ्गुरी; अङ्गुलः। सा च क्रमेण पञ्चधा, यथा—१ अङ्गुष्ठः, २ तर्जनी, ३मध्यमा,४ अनामिका, ५ कनिष्ठा। हस्तिशुण्डाग्रम्। ५१६

अङ्गुलीयकम् क्ली.-पुं. [अङ्गुलौ भवम्। जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः, अङ्गुलीय+स्वार्थे क] अङ्गुलिभूषणम्; ऊर्मिका; अङ्गुरीयकम्; अङ्गुरीयः; अङ्गुलीयः; करारोटः; अङ्गुलीकः; 'अयं मैथिल्यभिज्ञानं काकुत्स्थस्याङ्गुलीयकः'—इति भट्टिः। ५५९

अङ्घ्रिः पुं [अङ्घ्यते गम्यतेऽनेन। अघि+करणे इक्] अङ्घ्रिः; पादः। ५११

अङ्घ्रिः पुं. [अङ्घ्यते गम्यतेऽनेन। अघि+करणे रि] पादः; 'शीर्णघ्राणाङ्घ्रिपाणीन्'—इति सूर्यशतके। वृक्षमूलम्। ५११

अङ्घ्रिपः पुं. [अङ्घ्रिणा पिबति। अङ्घ्रि+पा+ड] वृक्षः। १७७

अचक्षुः [स्] क्ली. [असौम्यं चक्षुः। नञोऽस्त्यर्थानामिति समासः] असौम्यं नेत्रम्; दुष्टनेत्रम्। ७७२

अचण्डी स्त्री. [चडि कोपने, पचाद्यच्, इदित्वान्नुम्, स्त्रियां ङीप्, नञ्समासः] सुशीला गौः 'सीधी गाय' इति भाषा। अकोपना स्त्री। २७०

अचलः पुं.[न चलति यः। चल्+पचाद्यच्, नञ्समासः] पर्वतः; 'आससाद ततो रामं स्थितं शैलमिवाचले'—इति रामायणे। कीलकः; अकम्पे त्रि., शिवः; स्थिरः; यदुक्तम्—'न स्वरूपान्न सामर्थ्यान्न च ज्ञानादिकाद् गुणात्। चलनं विद्यते यस्येत्यचलः कीर्तितोऽच्युतः।' अविकारी; कूटस्थः। १६५

अचला स्त्री. [न चला। नञ्समासः] पृथिवी; 'पृथिवीमपि कामं तं ससागरवनाचलाम्'—इति रामायणे। १५६

अचिरांशुः स्त्री. [अचिराः क्षणस्थायिनः अंशवः किरणाः यस्याः सा। बहुव्रीहिः] विद्युत्। ६०

अच्छः पुं.[न च्छयति निर्मलत्वाद् दृष्टिं नावृणोति। न+छो+कर्तरि क; उपपदसमासः] भालूकः; स्फटिकः, त्रि. (न च्छयति) स्वच्छः; निर्मलः; 'अच्छकपोलमूलगलितैः'-इत्यमरुशतके। अच्छम् अव्य. (न च्छयति सम्मुखत्वाद् दृष्टिं नावृणोति। न+छा+घञर्थे क, नञ्तत्पुरुषः) २२८

अच्छभल्लः पुं. [अच्छाः निर्मलाः भल्लाः शस्त्राणीव नखा यस्य सः। बहुव्रीहिः। यथा मेदिन्याम्—'भल्लः स्यात्पुंसि भल्लूके शस्त्रभेदे पुनर्द्वयोः।'] भालूकः (अच्छो भल्लश्चेति शब्दद्वयमपि)। २२८

अच्छोटनम् क्ली. [आ समन्तात् छोटनं छेदनम्। छुट् छेदने, पृषोदरादित्वादाङो ह्रस्वः] मृगया; मृगव्यं; पापर्द्धिः; आखेटकम्; आच्छोदनम्। ४३५

अच्युतः पुं. [न च्यवते स्वरूपतो न गच्छति यः, नित्य इति यावत्। च्यु+कर्तरि क्त, नञ्समासः] विष्णुः; 'पीताम्बरोऽच्युतः शार्ङ्गी'—इत्यमरः। 'तत्रावतीर्याच्युतदत्तहस्तः'—इति कुमारसम्भवे। स्थिरे त्रि. 'सोऽन्त्यवेलायामेतत्त्रयं प्रतिपद्येताक्षितमस्यच्युतमसि प्राणसंशितमसीति'—छान्दोग्योपनिषत्। २३

अजः पुं. [न जायते नोत्पद्यते यः। नञ्+जन्+ 'अन्येष्वपि दृश्यते' इति कर्तरि ड, उपपदसमासः] विष्णुः; 'न हि जातो न जायेऽहं न जनिष्ये कदाचन। क्षेत्रज्ञः सर्वभूतानां तस्मादहमजः स्मृतः'—इति भारते। 'यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम्'—इति भगवद्गीता। ब्रह्मा; शिवः; कामदेवः; सूर्यवंशीयराजविशेषः; रघुराजपुत्र; दशरथपिता; मेषः; माक्षिकधातुः; जन्मरहिते वाच्यलिङ्गः, त्रि.। छागः (२७७)। २५

अजगरः पुं. [अजं गिरति ग्रसते यः। गॄ+पचाद्यच् अजस्य गरः, षष्ठीतत्पुरुषः] स्वनामख्यातबृहत्सर्पः; शयुः; वाहसः। ६४२

अजगवम् क्ली. [अजयोर्विष्णुब्रह्मणोर्गं, त्रिपुरासुरवधे गीतं, तादृशं गीतं वाति सम्बध्नाति यत्। अजग+वा+कर्तरि क, उपपदसमासः। 'गं च गीतं च गौश्चैव गूश्च धेनुः सरस्वती'-इत्येकाक्षरीयकोषे] पिनाकः; शिवधनुः; अजकवम्; अजकावम्; अजोकम्; अजगावम्। १४

अजन्यम् क्ली. [न जन्यते सम्पाद्यते केनापि। न+जन्+णिच्+यत्] उत्पातः; शुभाशुभसूचकभूकम्पादिः, अजननीये त्रि.। १२७

अजर्यम् क्ली. [न जीर्यति। जॄ+कर्तरि 'अजर्यं सङ्गतमिति' सूत्रेण यत्। 'तेन सङ्गतमार्येण रामाजर्यं द्रुतमिति' भट्टिः] सङ्गतं; सौहार्दम्; अजरार्हे त्रि., यथा रघुवंशे—'मृगैरजर्यं जरसोपदिष्टमदेहबन्धाय पुनर्बबन्ध।' ७०६

अजस्रम् क्ली. [नञ्+जस्+'नमिकम्पिस्म्यजस' इत्यादिना र, नञ्समासः] निरन्तरं; सततम्; 'अजस्रदीक्षाप्रयतस्य मद्गुरोः क्रियाविघाताय कथं प्रवर्तसे'—इति रघुवंशे। ६९८

अजाजी स्त्री. [अजम्, अजति अत्युत्कटगन्धतया दूरं-क्षिपति। कर्मण्यण्, ङीप्, बहुलं तणीति व्यभावः। अजेन आजिरिति तृतीयातत्पुरुषो वा, ङीप्] जीरकः; श्वेतजीरकः; कृष्णजीरकः; काकोदुम्बरिका। ६१६

अजाजीवः पुं. [अजेन अजव्यवसायेन आजीवति सम्यक् प्राणान् धारयति यः। आ+जीव्+पचाद्यच्। अजेन आजीवः, तृतीयातत्पुरुषः] जाबालः; छागोपजीवी। ३८१

अजिनम् क्ली. [अजति धूल्यादिम् आवृणोति यत्। अज+'अजेरज च' इति वीभावं बाधित्वा इनच्] चर्म; 'गजाजिनं शोणितबिन्दुवर्षि च'–इति कुमारसम्भवे। ब्रह्मचर्यादिधार्यकृष्णसारादित्वक्। जिनभिन्ने त्रि.।६३०

अजिरम् क्ली. [अजति गृहान्निःसरति यत्र। अज+अधिकरणे किरच्] चत्वरम्। 'आँगन' इति भाषा। यथा विष्णुपुराणे—'पुनश्च भरतस्याभूदाश्रयस्योट-जाजिरे।' (अजति गच्छति यः) वायुः; (अजति गच्छति, क्षणभङ्गुरमिति यावत्) शरीरं; (अजन्ति इन्द्रियाणि गच्छन्त्यत्र) विषयः; मण्डूकः। २९९

अज्ञः त्रि. [ज्ञा+कर्तरि क, न ज्ञः, नञ्समासः] जडः; मूर्खः; यदुक्तम्—'अज्ञो भवति वै बालः पिता भवति मन्त्रदः। अज्ञं हि बालमित्याहुः पितेत्येव तु मन्त्रदम्॥' 'यथा चाज्ञेऽफलं दानं तथा विप्रोऽनृचोऽफलः।' 'इदं शरणमज्ञानाम्।' 'अज्ञेभ्यो ग्रन्थिनः श्रेष्ठा ग्रन्थिभ्यो धारिणो वराः। धारिभ्यो ज्ञानिनः श्रेष्ठा ज्ञानिभ्यो व्यवसायिनः॥' ३७७

अञ्चलः पुं. [अञ्चति प्रान्तभागं गच्छति। अञ्च्+अलच्] वस्त्रप्रान्तभागः। 'आँचल' इति भाषा। 'ऊरुः कुरङ्गकदृशश्चञ्चलचेलाञ्चलो भाति'—इति साहित्यदर्पणे। ५५०

अञ्जनः पुं. [अनक्ति प्रतीच्यां दिशि रक्षकत्वेन प्रकाशते यः। अञ्ज्+कर्तरि ल्युट्] पश्चिमदिग्गजः; नैर्ऋत्य-दिग्हस्ती। १०४

अञ्जनम् क्ली. [अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु+भावे ल्युट्, कज्जले तु गम्यमाने करणे ल्युट्] म्रक्षणं; गमनं; व्यक्तीकरणम् इति करणार्थकप्रत्ययान्ताञ्ज्-धात्वर्थः। कज्जलम्; 'दिवा न तु प्रयोक्तव्यं नेत्रयो-स्तीक्ष्णमञ्जनम्। विरेकदुर्बला दृष्टिरादित्यं प्राप्य सीदति'–इति आगमः। 'सौवीरं जाम्बलं तुत्थं मयूरश्री-करं तथा। दर्विका नीलमेघश्च अञ्जनानि भवन्ति षट्।' सौवीराञ्जनं; रसाञ्जनम्; अक्ति; मसी; अग्निः; आलङ्कारिकभाषया व्यञ्जनाख्यवृत्तिः; 'अनेकार्थस्य शब्दस्य वाचकत्वे नियन्त्रिते। संयोगाद्यैरवाच्यार्थधी-कृद्व्यापृतिरञ्जनम्—इति काव्यप्रकाशः। ५५०

अञ्जनः पुं. [अञ्जयति रवेण शुभाशुभे सूचयति। अञ्ज्+णिच्+ल्युट्] वृक्षविशेषः; ज्येष्ठी। ८१२

अञ्जनिका स्त्री. [अञ्जनम् अञ्जनवद् वर्णो विद्यतेऽस्याः सा। अञ्जन+अर्शआद्यच्, स्त्रियां टाप्, स्वार्थे क] ज्येष्ठीविशेषः; अञ्जनाधिका; हालिनी; हलाहलः; क्षुद्रमूषिका। २५७

अञ्जनी स्त्री. [अनक्ति चन्दनकुङ्कुमादिभिः शोभते। अञ्ज्+कर्तरि ल्युट्, स्त्रियां ङीप्] कटुकावृक्षः; कालाञ्जनीवृक्षः; लेप्यनारी; चन्दनादिलेपने योग्या। ८१२

अञ्जलिकारिका स्त्री. [अञ्जलेः कारिका] पुत्तलिका; लज्जालुलता। ४९३

अञ्जसा अव्य. [अञ्जं गतिं विलम्बं वा स्यति नाशयति। अञ्ज्+षो+कर्तरि क्विप्] द्रुतं; शीघ्रम्; 'आसमाप्तेः शरीरस्य यस्तु शुश्रूषते गुरुम्। स गच्छत्यञ्जसा विप्रो ब्रह्मणः सद्म शाश्वतम्'—इति मनुः। ६९०

अञ्जसा अव्य.—यथार्थं; प्रकृतं; सत्यं; शीघ्रम्। ८८२

अटनिः स्त्री. [अटति तथागच्छति ज्या यत्र। अट्+अधिकरणे अनि] धनुरग्रभागः। 'धनुष की नोक' इति भाषा। ४६५

अटनी स्त्री. [अटनि+स्त्रियां वा ङीष्] अटनिः; धनुष्कोटिः; 'ध्वनदगुरुगुणाटनीकृतकरालकोलाहलम्'—इति उत्तरचरिते। ४६५

अटरूषकः पुं. [अटति मृत्युग्रासे पतत्यनेन। अट्+घञर्थे क, अटं कासाख्यरोगं रोषति नाशयति। रूष्+कर्तरि क। अटस्य रूषो वा, षष्ठीतत्पुरुषः। 'वासकः कासनाशकः'–इति वैद्यके] वासकवृक्षः; अटरूषः। १९८

अटविः स्त्री. [अटति वार्द्धक्ये गच्छति यत्र। अट्+अधिकरणे अवि,'पञ्चाशति वनं व्रजेदिति'] वनम्।२१०

अटवी स्त्री. [अटवि+स्त्रियां ङीष्] वनम्; 'आनर्तांश्चैव मार्गस्त्वं कान्ताराण्यटवीस्तथा'—इति रामायणे। २१०

अट्टः पुं. [अट्टते एकं गृहमतिक्रम्य अन्योपरि गच्छति। अट्ट+अधिकरणे घञ्] गृहविशेषः; क्षौमः; हर्म्यादिगृहम्; प्राकाराग्रस्थितरणगृहं; प्राकारमण्डपस्योपरिशाला; हर्म्यादिवातकुटिका; मण्डपोपरि हर्म्यपृष्ठं; प्राकारधारणार्थोऽभ्यन्तरे क्षौमाख्योऽट्टः—इति भट्टः; अतिशयः; हट्टः। अट्टं क्ली. (अट्ट+अच्) शुष्कं; भक्तम्; अन्नम्; 'अट्टशूला जनपदाः'—इति भागवतमाहात्म्ये। २९४

अट्टालकः पुं. [अट्टवत् प्रासादगृहवत् अलति भवति। अट्ट+अल्+अच् स्वार्थे कन्] उपरितनगृहम्; अट्टालिकोपरिगृहं; क्षौमः; अट्टः। २९४

अटया स्त्री. [अटनम्, अट्+भावे क्यप्, स्त्रियां टाप्, समस्या इतिवत्] परिभ्रमणं; पर्यटनं; 'तीर्थत्रिकं वृथाटया च कामजो दशको गणः'—इति स्मृतिः। ७७६

अणकः त्रि. [अण्+अच्+कुत्सायां कन्] कुत्सितः; अधमः। ३३७

अणिः पुं.-स्त्री. [अणति शब्दायते। अण्+इन्, स्त्रियां वा ङीप्] अक्षाग्रकीलकः; रथचक्राग्रस्थितकीलः। ४४८

अणिः पुं.-स्त्री.-अश्रिः; सूच्याद्यग्रभागः; सीमा। तस्य रूपान्तरम् अणी, आणिः [अणति शब्दायते, अण्+'इञजादिभ्यः' इति इञ्, आजिः इतिवत्] ७२७

अणु त्रि. [अणति सूक्ष्मत्वं गच्छति। अण्+उन्] क्षुद्रं; सूक्ष्मं; 'लवलेशकणाणवः'—इत्यमरः। 'न गृह्णीयाच्छुल्कमण्वपि'—इति मनुः। ६८८

अणुः पुं. [अण्+उन्] व्रीहिविशेषः, सूक्ष्मधान्यं; लेशः। ८१४

अण्डम् क्ली. [अम् संयोगे, भावे क्विप्, अमं संयोगं डयन्ते गच्छन्त्यनेन। अम्+डी+करणे ड, पुंसोऽवयवभेदे मुष्के पक्षिडिम्बे] पक्ष्यादिप्रादुर्भावककोषः; पेशी; कोषः; पेशिः; कोशः; पेशीकोषः; डिम्बः; 'तदण्डमभवद्धैमं सहस्रांशुसमप्रभम्'—इति मनुः। 'नातिस्निग्धानि वृष्याणि स्वादुपाकरसानि च। वातघ्नान्यतिशुक्राणि गुरूण्यण्डानि पक्षिणाम्'-इति वैद्यके। (५२३) मुष्कः; अण्डकः; अण्डकोषः। वीर्यं; मृगनाभिः। २४०

अण्डजः पुं. [अण्डे जातः। अण्ड+जन्+कर्तरि ड, उपपदसमासः] पक्षी; सर्पः; मत्स्यः; कृकलासः; अण्डजमात्रे त्रि.। 'अण्डजाः पक्षिणः सर्पा नक्रा मत्स्याश्च कच्छपाः। यानि चैवंप्रकाराणि स्थलजान्यौदकानि च'—इति मनुः। २३८

अतलस्पर्शः त्रि. [नास्ति तलस्य अधोभागस्य स्पर्शो यस्य सः। बहुव्रीहिः] अगाधः; अतिगभीरः; अतलस्पृक् [श्]; आस्या; आस्थागम्; अस्ताघम्। ६४१

अतः [स्] अव्य. [एतस्मात्, एतद्+एतदोऽशिति पञ्चम्यर्थे तस्, एतद्शब्दस्य अशादेशः] कारणम्; अपदेशः; निदशः। ८७८

अतसी स्त्री. [अत्+असच्, स्त्रियां ङीप्] कृष्णपुष्पक्षुद्रवृक्षविशेषः; चणका; उमा; क्षौमी; रुद्रपत्नी; सुवर्चला; पिच्छिला; देवी; मदगन्धा; मदोत्कटा; क्षुमा;-हैमवती; सुनीला; नीलपुष्पिका; 'अतसी नीलपुष्पी च पार्वती स्यादुमा क्षुमा। अतसी मधुरा तिक्ता स्निग्धा पाके कटुर्गुरुः॥ उष्णा दृक्शुक्रवातघ्नी कफपित्तविनाशिनी'—इति भावप्रकाशः। शणवृक्षः। ५८२

अतिक्रमः पुं. [अतिक्रान्तः क्रमः नियमः। अति+क्रम्+भावे घञ् वृद्ध्यभावः] क्रमोल्लङ्घनम्; अतिपातः; उपात्ययः; पर्यायः; अभिक्रमः; रणे शत्रून् प्रति अभीतयोधादेर्गमनम्। ७५४

अतिगर्वितः त्रि. [अति अधिको गर्वः, कर्मधारयः, सोऽस्य जातः। अति गर्व+इतच्] महाहङ्कृतः; अतिशयगर्वयुक्तः; समुन्नद्धः; 'अतिदाने बलिर्बद्धः अतिगर्वेण रावणः। अतिरूपे हृता सीता सर्वमत्यन्तवर्जितम्'—इति चाणक्यः। ३८३

अतिथिः त्रि. [अतति सातत्येन गच्छति, न तिष्ठति। अत्+इथिन्] अज्ञातपूर्वगृहागतव्यक्तिः; आगन्तुः; आगन्तुकः; आवेशिकः; गृहागतः; आवेशिकी; अतिथी; आगान्तुः; प्रघूर्णः; अभ्यागतः; प्राघूर्णिकः; प्राघुणिकः; प्राघुणः; 'यस्य न ज्ञायते नाम न च गोत्रं न च स्थितिः। अकस्माद् गृहमायाति सोऽतिथिः प्रोच्यते बुधैः॥' 'अतिथिर्यस्य भग्नाशो गृहात्प्रतिनिवर्तते। स तस्मै दुष्कृतं दत्त्वा पुण्यमादाय गच्छति'— इति पुराणम्। कुशपुत्रः; कोपः। ३५८

अतिभीः स्त्री. [अतिबिभेत्यस्याः। अति+भी+अपादाने क्विप्] वज्रज्वाला। ५७

अतिमर्यादः त्रि. [मर्यादामतिक्रान्तः । प्रादिसमासः] अतिशयितः; अतिशये क्ली. । ७१९

अतिमात्रम् क्ली. [मात्रामल्पमतिक्रान्तम्, प्रादिसमासः] अतिशयः; तद्युक्ते त्रि. । 'अतिमात्रलोहिततलौ बाहू घटोत्क्षेपणात्'—इति शाकुन्तले । ८०३

अतिमुक्तकः पुं. [मुच्+भावे क्त, अतिशयेन मुक्तं बन्धशैथिल्यं यस्य सः । बहुव्रीहिः, कप्] माधवीलता; अतिमुक्तः; तिन्दुकवृक्षः; तिनिशवृक्षः; पुष्पवृक्षविशेषः; पुण्ड्रकः; मल्लिनी; भ्रमरानन्दा; कामुककान्ता; 'कर्णिकारान् कुरुवकान् चम्पकान् अतिमुक्तकान्'—इति रामायणे । २०८

अतिर(रि)क्ता स्त्री. [अत्यन्तं रक्ता, तीव्रज्वलनाद् इति भावः (अथवा रिक्ता, सर्वभस्मीकरणाद् इति भावः) प्रादिसमासः] अग्नेः सप्तजिह्वासु एका । ६८

अतिवाहिकः पुं. [अतीत्य देहम् अन्यदेहे, वाहः प्रापणम्, अतिवाहोऽस्त्यस्य, ठन्] प्रेतः । ६२५

अतिवेलम् क्ली. [वेलां मर्यादां कूलं वा अतिक्रान्तम्, अव्ययीभावसमासः] अतिशयिते त्रि., 'जलमतिवेलं पयोराशेः'—इति नीतिमाला । ७१९, ८०३

अतिसन्धानम् क्ली. [अत्यधिकं सन्धानम्, भावे ल्युट्] वञ्चनं; व्यलीकं; प्रतारणम् । ७४८

अतिसारः पुं. [अतिशयेन मलं द्रवीकृत्य सरति निःसारयति । अति+सृ+व्याधिमत्स्यबलेष्विति वक्तव्यमिति कर्त्तरि घञ्,वृद्धिः दीर्घश्च] बहुद्रवमलनिःसरणरोगः; अन्नगन्धिः; उदरामयः; अतीसारः; 'संशम्यापां धातुरग्निं प्रवृद्धः शकृन्मिश्रो वायुनाधः प्रणुन्नः । सरत्यतीवातिसारं तमाहु र्व्याधिं घोरं षड्विधं तं वदन्ति ।। आमपक्वक्रमं हित्वा नातिसारक्रिया यतः । अतोऽतिसारे सर्वस्मिन्नामं पक्वं च लक्षयेत्'–इति वैद्यके । ६०६

अतिसारकी [न्] त्रि. [अतिसार+स्वार्थे कन् । ततो मत्वर्थे इन्] सातिसारः; अतिसाररोगयुक्तः; उदरामयी । ६०६

अतीतः त्रि. [अति+इण्+कर्त्तरि क्त] गतः; भूतः; अतिक्रान्तः; यथा—'न नस्यं न्यूनसप्ताब्दे नातीताशीतिवत्सरे'—इति वैद्यकपरिभाषा । मानप्रभेदः (सङ्गीतशास्त्रमते); क्ली. भूतकालः । ८५९

अतीसारः पुं. [उपसर्गस्य घञीति बाहुलकाद्दीर्घः] अतिसाररोगः; 'गुर्वतिस्निग्धरूक्षोष्णद्रवस्थूलातिशीतलैः । विरुद्धाध्यशनाजीर्णैर्विषमैश्चापि भोजनैः ।। स्नेहाद्यैरतियुक्तैश्च मिथ्यायुक्तैर्विषैर्भयैः । शोकादुष्टाम्बुमद्यातिपानैः सात्म्यर्तुपर्ययैः ।। जलाभिरमणैर्वेगविघातैः कृमिदोषतः । नृणां भवत्यतीसारो लक्षणं तस्य वक्ष्यते ।।' ६०६

अत्ययः पुं. [अति+इण्+भावे अच्] मृत्युः । (८२६) कृच्छ्रम्; अतिक्रमः; 'जीवितात्ययमापन्नो योऽन्नमत्ति यतस्ततः । आकाशमिव पङ्केन न स पापेन लिप्यते' — इति मनुः । दण्डः; दोषः । ६२८

अत्यर्थम् क्ली. [अर्थमतिक्रान्तम् । अत्यादीति समासः] अतिशयः; तद्विशिष्टे त्रि., 'लक्ष्मणो राममत्यर्थमुवाच हितकाम्यया'—इति रामायणे । ७१९

अत्याकारः पुं. [अति, आधिक्येन आकारः तिरस्कारः । आ+कृ+भावे घञ्] तिरस्कारः; अतिशयितः; (अति आकारो देहः, कर्मधारयः) बृहद्देहः; (अतिशयितः आकारो यस्य सः । तद्विशिष्टः) ; न्यक्कारः । ७०४

अत्याधानम् क्ली. [अत्यन्तमाधानम्, प्रादिसमासः] अतिक्रमः; कपटः; छलम् । ७५४

अत्रिनेत्रप्रसूतः पुं. [अत्रिनेत्रात् प्रसूतः । पञ्चमीतत्पुरुषः] चन्द्रः; अत्रिनेत्रभूः; अत्रिनेत्रजः; अत्रिदृग्जः; अत्रिजातः; अत्रिपुत्रः । ४२

अथ अव्य. [अर्थ्+ड, पृषोदरादित्वाद् रस्य लोपः] अनन्तरं; मङ्गलं; प्रश्नः; आरम्भः; कार्त्स्न्यम्; अधिकारः; संशयः; विकल्पः; समुच्चयः; 'अथ तस्य विवाहकौतुकं ललितं बिभ्रत एव पार्थिवः'—इति रघुवंशे । ८८६

अथो अव्य. [अर्थ्+डो, पृषोदरादित्वाद् रलोपः] आनन्तर्यं; मङ्गलं; प्रश्नः; समुच्चयः; आरम्भः; कार्त्स्न्यम्; अधिकारः; संशयः; विकल्पः; 'स्त्रियो रत्नान्यथो विद्या धर्मः शौचं सुभाषितम् । विविधानि च शिल्पानि समादेयानि सर्वतः'—इति मनुः । ८८६

अदभ्रः त्रि. [दम्भ्+रक् अनिदित्वान्नलोपः, दभ्रमल्पं, न दभ्रं, नञ्समासः] प्रचुरः; बहुः; किरातार्जुनीये–'अदभ्रदर्भामधिशय्य स स्थलीं जहासि निद्रामशिवैः शिवारुतैः ।।' ७०१

अदितिः स्त्री. [दितिभिन्ना अदितिः,नञो दात्रो डितिरिति शाकटायनोक्तेर्डितिप्रत्ययान्तो वा, अदनाददितिः वा] दक्षप्रजापतिकन्या; कश्यपपत्नी; देवमाता; भूमिः; अखण्डः। ११९

अद्धा अव्य. [अतं सततं गमनं ज्ञानं वा दधाति। अत्+धा+क्विप्] यथार्थं; तत्त्वम्; अञ्जसा; 'अद्धा श्रियं पालितसङ्गराय प्रत्यर्पयिष्यत्यनघां स साधुः'—इति रघुवंशे। ८८५

अद्भुतः पुं. [अततीति, अत्+क्विप्, आकस्मिकार्थमव्ययं, तथा भाति, भा+डुतच्] शृङ्गारादिनवरसानां मध्ये रसविशेषः। ९२

अद्भुतम् क्ली.—अपूर्वं; विस्मयः; आश्चर्यं; चित्रं, तद्विशिष्टे वाच्यलिङ्गं त्रि., आश्चर्यम्; इङ्गम्। ७४५

अद्मरः त्रि. [अद् भक्षणे, सृघस्यदः क्मरच्] भक्षकः; भक्षणपरः। ३५०

अद्रिः पुं. [अदिशदीति क्रिन्] पर्वतः; वृक्षः (१७७); सूर्यः (८२०); परिमाणविशेषः; शाखी; मानभेदः; सप्ताङ्कः; पर्वतमूषिका। १६५

अद्वयवादी [न्] पुं. [अद्वयं सर्वमेव चित्स्वरूपं नात्मनोऽन्यत् किञ्चनेति वदति। अद्वय+वद्+णिनि] वैदान्तिकः; बुद्धः; अद्वयः; तथागतः; सुगतः। ८५

अद्विजः पुं. [न द्विजः, नञ्समासः। नञोऽत्र षडर्थेषु निन्द्यो रसनाग्नित्यागरूपम् अप्राशस्त्यमर्थः]त्यक्ताग्निः; वीरहा। (वह निन्दित ब्राह्मण जिसने नित्यहोम की अग्नि को त्याग दिया हो)। ४०४

अधमः त्रि. [अव् पालने+अम, वस्य धादेशः] न्यूनः; निन्दितः; अपकृष्टः; निकृष्टः; प्रतिकृष्टः; अर्वा; रेफः; याप्यः; अवमः, कुत्सितः; अवद्यः; कुपूयः; खेटः; गर्ह्यः; अणकः; रेपः; अरमः; आणकः; अनकः; 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा'—इति मेघदूते। उपपतिभेदे पुं.। ३३७

अधरः त्रि. [न धरः, नञ्समासः] हीनवादी। ३६४

अधरः पुं. [न ध्रियतेऽसौ। धृ+अच्, ततो नञ्समासः] मुखावयवविशेषः; ओष्ठः; रदनच्छदः; दशनवासः। पुरुषस्य रक्ताधरः प्रशस्तः, यथा—'पाणिपादतलौ रक्तौ नेत्रान्तरनखानि च। तालुकोऽधरजिह्वा च सप्त रक्तं प्रशस्यते'॥ स्त्रियास्तु—'पाटलावर्तुलः स्निग्धो रेखाभूषितमध्यभूः। सीमन्तिनीनामधरो राज्ञां चैव प्रियो भवेत्॥ श्यामः स्थूलोऽधरोष्ठः स्याद् वैधव्यकलहप्रदः। मसृणो मत्तकाशिन्याश्चोत्तरोष्ठः सुभोगदः'–इति सामुद्रकम्। 'पिबसि रतिसर्वस्वमधरम्'—इति शाकुन्तले। (८७८) अधरतः; अधस्तात्;, अधोभागः; अधः; नीचः; तलं; हीनः; अपकृष्टः (पुं., क्ली. न ध्रियते, कामुकस्य धैर्यं न तिष्ठिति यत्र) स्मरागारं; रतिगृहं; योनिः। ५२४

अधरतः [स्] अव्य. [अधर+तसिल्। प्रथमापञ्चमीसप्तम्यर्थवृत्तौ] अधस्तात्; अधोभागः। ८७८

अधरस्तात् अव्य. [अस्ताति] अधरतः। ८७८

अधः [स्] अव्य. [अधरस्य अधादेशः ततः असिच्] अधोभागः; 'लोकानुपर्युपर्यास्तेऽधोऽधोऽध्यधि च माधवः'—इति वोपदेवः। तलं; नीचः; पातालं; योनिः। ८७८

अधःक्षिप्तः त्रि. [अधः, अधोभागे क्षिप्तः पतितः] अधस्त्यक्तवस्तु। ७६८

अधस्तात् अव्य. [अधर+अस्ताति] अधोभागः; 'तस्याधस्ताद् वयमपि रतास्तेषु पर्णोटजेषु'—इति उत्तरचरितम्। 'तथा निमज्जतोऽधस्तादज्ञौ दातृप्रतीच्छकौ'–इति मनुः। पश्चाद्भागः (८७८); रतिगृहं; भगम्। १०२

अधिकम् त्रि. [अध्यारूढ एव। अधि+स्वार्थे कन्] अतिरिक्तः; अनेकः; 'पुमान् पुंसोऽधिके शुक्रे स्त्री भवत्यधिके स्त्रियाः'—इति मनुः। क्ली., काव्यालङ्कारभेदः, तस्य लक्षणम्—'अधिकं पृथुलाधारादाधेयाधिक्यवर्णनम्।' उदाहरणं यथा—'ब्रह्माण्डानि जले यत्र तत्र मान्ति न ते गुणाः'—इति कुवलयानन्दे अप्पयदीक्षितः। ७८४

अधिकृतः पुं. [अधि+कृ+क्त] अध्यक्षः; आयव्ययावेक्षकः; 'आचार इत्यधिकृतेन मया गृहीता या वेत्रयष्टिरवरोधगृहेषु राज्ञः'—इति शाकुन्तले। (४२९) त्रि. कृताधिकारद्रव्ये। ४२७

अधित्यका स्त्री. [अधिरूढा पर्वतोपरिभागम्। अधि+त्यकन्, स्त्रियां टाप्] पर्वतोपरि भूमिः; 'उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमिरूर्ध्वमधित्यका'—इत्यमरः। 'अधित्यकायामिव धातुमय्यां लोध्रद्रुमं सानुमतः प्रफुल्लम्'—इति रघुवंशे (२-२९)। २११

अधिपः त्रि. [अधिपाति रक्षति । अधि+पा+क] अधिपतिः; स्वामी; राजा; यथा रघुवंशे—'अथ प्रजानामधिपः प्रभाते।' ३४३

अधिपतिः पुं. [अधिपाति रक्षति। अधि+पा+उति] प्रभुः; स्वामी; 'वचो निशम्याधिपतिर्दिवौकसाम्'—इति रघुवंशे। ३४३

अधिभूः पुं. [अधि+भू+कर्त्तरि क्विप्] स्वामी; प्रभुः। ३४३

अधिरोहिणी स्त्री. [अधिरोहः आरोहणं तदेव साधनत्वेन विद्यतेऽस्य। अधि+रोह्+इन्, स्त्रियां+ङीप्] वंशकाष्ठादिनिर्मितारोहणमार्गः; निःश्रेणिः; निःश्रेणी [अधिरोहणी इत्यपि पाठः+अधिरुह्यते अनया। अधिरुह् +करणे ल्युट्, स्त्रियां ङीप्] 'सीढ़ी' इति भाषा।३०१

अधिश्रयणी स्त्री. [अधिश्रियते पच्यतेऽत्र। अधि+श्रि+अधिकरणे ल्युट्, स्त्रियां ङीप्] चुल्ली। 'चूल्हा' इति भाषा। ३१३

अधिष्ठानम् क्ली. [अधिष्ठीयतेऽत्र। अधि+स्था+अधिकरणे ल्युट्] नगरं; चक्रं; प्रभावः; अध्यासनम्; अवस्थानम्। 'यद्भयात् सम्परित्यज्य स्वमधिष्ठानमृद्धिमत्। कैलासं पर्वतश्रेष्ठमध्यास्ते नरवाहनः'—इति रामायणे। २८५

अधीरः त्रि. [न धीरः स्थिरः। नञ्समासः] चञ्चलः; कातरः; यथा नागानन्दे—'निर्व्याजं विधुरेष्वधीर इति मां येनाभिधत्ते भवान्।' ६९५

अधीशः त्रि. [अधिक ईशः। कर्मधारयः] अधिपतिः; प्रभुः; स्वामी; 'चन्द्रे मण्डलसंस्थे विगृह्यते राहुणा दिनाधीशः'—इति पञ्चतन्त्रे। ३४३

अधुना अव्य. [अस्मिन्काले। इदंशब्दस्य रूपं निपातनात्] अस्मिन् काले; इदानीं; सम्प्रति; साम्प्रतम्। ७८७

अधृष्टः त्रि. [धृष्+क्त, न धृष्टः, नञ्समासः] सलज्जः; अप्रगल्भः; शारदः; अप्रतिभः; शालीनः। ३७५

अधोक्षजः पुं. [अधः ज्ञातृत्वाभावात् हीनम् अक्षजं प्रत्यक्षज्ञानं यस्मै सः। अक्षात् इन्द्रियात् जातम्। अक्ष+जन्+ड] विष्णुः; 'अधो न क्षीयते जातु यस्मात्तस्मादधोक्षजः'—इति महाभारते। २३

अधोभुवनम् क्ली. [अधः नीचदेशस्थं भुवनं लोकः, कर्मधारयः] पातालम्। ६२३

अधोमुखः पुं. [अधो मुखं यस्य सः] अधोवदनः; पातालमुखः; अवाङ्मुखः; अवाचीनः; अधोमुखनक्षत्रगणः; 'अश्लेषवह्नियमपित्र्यविशाखयुक्तं पूर्वत्रयं शतभिषा च नवाप्युडूनि। एतान्यधोमुखगणानि शुभानि नित्यं विद्यार्थभूमिखननेषु च शोभितानि'—इति ज्योतिःसारसङ्ग्रहः। ३८५, ४५८

अध्यक्षः त्रि. [अक्षमिन्द्रियमधिगतः, प्रादिसमासः] अधिकृतः; आयव्ययादिनिरीक्षकः; प्रत्यक्षः; इन्द्रियजन्यज्ञानं; कुमारसम्भवे—'यदध्यक्षेण जगतां वयमारोपितास्त्वया।' पुं. [अध्यक्ष्णोति समन्ताद् व्याप्नोति। अधि+अक्ष्+अच्] छत्रधारणादिव्यवहारेष्वधिकृतः; व्यापकः; क्षीरिकावृक्षः। ४२७

अध्ययनम् क्ली. [अधि+इङ्+भावे ल्युट्] पठनं; ब्राह्मणस्य षट्कर्मान्तर्गतमिदम्, गुरुमुखादानुपूर्वीश्रवणम्। ३९७

अध्यात्मम् क्ली. [आत्मनः सम्बद्धम्, आत्मनि अधिकृते वा] ब्रह्म; 'अक्षरं परमं ब्रह्म स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते'—इति भगवद्गीतायाम् (८–३)। ८६८

अध्यापकः त्रि. [अधि+इङ+णिच्+ण्वुल्] अध्यापनकर्ता; पाठगुरुः; अध्यापयिता; उपाध्यायः। ४००

अध्येषणा स्त्री. [अधि+इष्+णिच्, भावे युच्, स्त्रियां टाप्] याच्ञा; आराध्यस्यादरपूर्वकं कर्मणि नियुक्तकरणं; गुर्वादेः सत्कारपूर्वकं क्वचिदर्थे नियोजनं सनिः; सनी। ३६०

अध्वगः पुं. [अध्वना पथा गच्छति। अध्वन्+गम्+ड, उपपदसमासः] पथिकः; उष्ट्रः; सूर्यः; खेसरः। 'खच्चर' इति भाषा। ३५७

अध्वा [न्] पुं. [अत्ति गमनेन बलं नाशयति। अद्+बाहुलकात् क्वनिप्, पृषोदरादित्वाद्दकारस्य धः] पन्थाः; कालः; संस्थानम्; अवस्कन्दः; शास्त्रं; स्कन्धः; अध्वगमनजन्यगुणः; मेदःकफस्थूलतासौकुमार्यनाशित्वम्। २६०

अध्वनीनः त्रि. [अध्वनि साधुः। अध्वन्+ख तस्य ईन्] पथिकः; पान्थः; अध्वगः। ३५७

अध्वन्यः त्रि. [अध्वनि साधुः। अध्वन्+यत्] पथिकः; 'अध्वन्येन विमुक्तकण्ठमखिलां रात्रिं तथा क्रन्दितम्'—इति अमरुशतकम्। पारियानिकः (४४५); 'बग्घीगाडी' इति भाषा। ३५७

अध्वरः पुं. [अध्वानं सन्मार्गं राति ददति। अध्वन्+रा+क। उपपदसमासः] यज्ञः; 'तमध्वरे विश्वजिति क्षितीशम्'—इति रघुवंशे। वसुभेदः; सावधानः।४१४

अनङ्गः पुं. [नास्ति अङ्गं कायो यस्य सः] कामदेवः; क्ली. (नास्ति अङ्गमवयवो यस्य तत्) आकाशं; मनः। अङ्गरहिते वाच्यलिङ्गः। 'अनङ्गो मदनेऽनङ्गमाकाशमनसोरपि'—इति मेदिनी। ३३

अनड्वान् [डुह्]पुं. [प्रथमैकवचनम्। अनः शकटं वहति। अनस्+वह्+क्विप् डादेशः] वृषः; गौः; भद्रः; बलीवर्दः; दम्यः; दान्तः; स्थिरः; बली; उक्षा; ककुद्मान्; ऋषभः; वृषभः; धुर्यः; धुरीयः; धौरेयः; शाङ्करः; शिववाहनः; रोहिणीरमणः; वोढा; गोनाथः; सौरभेयकः। 'अजमेषावनड्वाहं खरं हत्वैकहायनम्'—इति मनुः। २६३

अनडुही स्त्री. [अनडुह्+गौरादित्वाद्ङीष्] अनड्वाही। 'गाय' इति भाषा। २६८

अनड्वाही स्त्री. [अनडुह्+गौरादित्वाद् ङीष्, आमागमश्च, आमभावपक्षे केवलं ङीष्] अनडुही; स्त्रीगवी। 'गाय' इति भाषा। २६८

अनन्तः पुं. [नास्ति अन्तः विनाशो यस्य सः] शेषनागः; बलदेवः; बलरामः; विष्णुः; अनन्तजिन्नाम जिनः; वासुकिः; सिन्दुवारवृक्षः। क्ली. (नास्ति अन्तः सीमा यस्य तत्) आकाशम्; अभ्रकम्। त्रि. (नास्ति अन्तः सीमा विनाशो वा यस्य सः) अन्तररहितः; अनवधिः; अशेषः; असीमः; यथा कुमारसम्भवे—'अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य।' २८

अनन्ता स्त्री. [नास्ति अन्तो यस्याः सा] पृथिवी; पार्वती; अग्निशिखावृक्षः; श्यामलता; दूर्वा; पिप्पली; दुरालभा; हरीतकी; आमलकी; गुडूची; यवासः; श्वेतदूर्वा; नीलदूर्वा; अग्निमन्थवृक्षः; अनन्तमूलं; गोपवल्ली; कराला; सुगन्धा; भद्रवल्लिका; भद्रा; नागजिह्वा; गोपी; श्यामा; शारिवा; उत्पलशारिवा। १५६

अनन्तरम् त्रि. [नास्ति अन्तरमवकाशो यस्य तत्] अनवकाशम्; अन्तररहितम्; अव्यवहितं; संसक्तम्; अपटान्तरम्। क्ली. पश्चादर्थे, पश्चात्; ततः परं; यथा रघुवंशे—'पितुरनन्तरमुत्तरकोशलान्।' ८८६

अनपष्ठ क्ली. [न अपष्ठु, अप+स्था+कु] अनुकूलम्; अवामम्। ७५६

अनयः पुं. [अयः शुभावहो विधिस्तद्भिन्नः। नञ्समासः] विपद्; 'अनयो नयसम्पन्ने यत्र ते विकृता मतिः'—इति रामायणे। दैवम्; अशुभं; व्यसनम्। १२६

अनर्गलम् त्रि. [नास्ति अर्गलं प्रतिबन्धो यस्य तत्] निरर्गलं; प्रतिबन्धकरहितम्; अबाधम्; उच्छृङ्खलम्; उद्दाम; अनियन्त्रितं; निरङ्कुशं; यथा रघुवंशे (३–३९)—'ततः परं तेन मखाय यज्वना तुरङ्गमुत्सृष्टमनर्गलं पुनः।' ७५१

अनर्थकम् क्ली. [नास्ति अर्थः यस्य तत्। समासान्तः कप्रत्ययः] निरर्थकम्; अर्थशून्यवाक्यम्; अबद्धम्; अवद्यम्। १५०

अनलः पुं. [नास्ति अलः बहुदाह्यवस्तुदहनेऽपि तृप्तिर्यस्य सः। कृत्तिकानक्षत्रे, वत्सरे, भगवति वासुदेवे] अग्निः; आग्नेयदिक्स्वामी; वसुभेदः; चित्रकः; रक्तचित्रकः; भल्लातकः; पित्तम्। ६२,१००

अनवधानम् क्ली. [न अवधानं मनोयोगः। नञ्समासः] चित्तस्य विक्षेपः; अमनोयोगः; अप्रणिधानं; तद्विशिष्टे त्रि.। ७५४

अनवधानता स्त्री. [नास्ति अवधानं मनोयोगो यस्य सः, तस्य भावः। ततस्तल्, स्त्रियां टाप्] मनोयोगशून्यता; चित्तस्यानन्यविषयाभावत्वं; कार्ये अनवहितत्वं; प्रमादः; 'कर्तव्याकरणं यत्र समर्थस्य क्वचिद्भवेत्। उच्यते द्वितयं तत्र प्रमादोऽनवधानता'—इति शब्दरत्नावली। ७५४

अनवरतम् क्ली. [अव+रम्+भावे क्त, नास्ति अवरतं विरतिर्यत्र तत्] निरन्तरं; सततम्; अनारतम्; अश्रान्तं; सन्ततम्, अविरतम्, अनिशं; नित्यम्; अजस्रं; प्रसक्तम्, आसक्तम्; अनद्धं, तद्विशिष्टे वाच्यलिङ्गम्। 'अनवरतधनुर्ज्यास्फालनक्रूरकर्मा'—इति शाकुन्तले। ६९८

अनवस्करम् त्रि. [अव अधोवर्त्मना कीर्यते क्षिप्यते। अव+कृ+अप् 'वर्चस्केऽवस्करः' इति सुडागमः, नास्ति अवस्करो मलं यस्य तत्] निर्मलं; शोधितम्। ७७०

अनशनम् क्ली. [अश्, भावे ल्युट्, न अशनं भोजनं, नञ्समासः] भोजनाभावः; उपवासः। तद्वति त्रि.। प्रायोपवेशनम्—'तदहमनशनं कृत्वा प्रातः प्राणानुत्सृजामि'—इति पञ्चतन्त्रे। ७६०

अनश्वरम् त्रि. [नश्+कर्तरि वरच्, न नश्वर, नञ्-समासः] सनातनं; नित्यं; ध्रुवं; शाश्वतम्; 'मत्वा विश्वमनश्वरं निविशते संसारकारागृहे'—इति वैराग्य-शतके । १२५

अनः [स्] क्ली. [अनिति जीवत्यनेन, जीविकोपायत्वात् । अन्+असुन्] शकटं; यथा मनुः—'होता वापि हरेद-श्वमुद्गाता चाप्यनः क्रये ।' अन्नं; जननी; जन्म; जन्मी । ४४४

अनादरः पुं. [आ+दृ+भावे अप्, न आदरः, नञ्-समासः] निरादरः; परिभवः; परिभावः; तिरस्क्रिया; रीढा; अवमानना; अवज्ञा; अवहेलम्; असूक्षणम्, असुक्षणम्; असुक्षणम्; असूक्षणम् । 'गुणेषु रागो व्यसनेष्वनादरः'—इति पञ्चतन्त्रम् । ७०४

अनादिवार्ता स्त्री. [अनादेः अज्ञातकालस्य वार्ता] ऐतिह्यं; परम्परागतकथा । १४७

अनादृतः त्रि. [आ+दृ+कर्मणि क्त, न आदृतः, नञ्-समासः] कृतनिरादरः; अवज्ञातः; अवमानितः । ७१४

अनामा स्त्री. [नास्ति ब्रह्मशिरश्छेदनसाधनतया प्रशस्तं नाम यस्याः सा । अनया अङ्गुल्या शिवेन ब्रह्मशिर-श्छिन्नम् । डाप्] अनामिकाङ्गुली । ५३८

अनायासार्थकम् क्ली. [अनायासः पेषणकुट्टनादिरहितः अर्थः प्रयोजनं यस्य] फाण्टम्; अनायासकृतम् । ७७४

अनायासकृतम् त्रि. [अनायासेन अक्लेशेन कृतं, तृतीया-तत्पुरुषः] अनायासेन यत् क्रियते स्म तत्; विना यत्नेन कृतं; फाण्टम् । ७७४

अनारतम् क्ली. [आ+रम्+क्त, ततो नञ्समासः] अनवरतं; सततं; नित्यम्; 'अनारतं तेन पदेषु लम्भिता विभज्य सम्यग् विनियोगसत्क्रिया'—इति किरातार्जुनीये । ६९८

अनार्तः पुं. [नञ्समासः] कल्यः; वार्तः; निरामयः; रोगमुक्तः । ३८०

अनाविलः त्रि. [न आविलः । नञ्समासः] आविलशून्यः; निर्मलः; स्वच्छः; 'पद्मगन्धि शिवं वारि सुखं शीतम-नाविलम्'—इति रामायणे । स्वास्थ्यकरः; 'जाङ्गलं सस्यसम्पन्नमार्य्यप्रायमनाविलम्'—इति मनुः । १३२

अनिबद्धम् क्ली. [न निबद्धम्, योग्यता काङ्क्षादिरहित-मित्यर्थः] उच्चावचम्; असम्बद्धवचनम् । १३९

अनिमिषः पुं.–स्त्री. [नास्ति निमिषः निमेषः चक्षुस्पन्दनं यस्य सः] देवता; मत्स्यः (६५७); निमेषरहितः; स्थिरदृष्टिः; सावधानः; अप्रमत्तः; 'सुरेषु नापश्य-दवेक्षताक्ष्णो नृपे निमेषं निजसम्मुखे सति'—इति नैषधे । ४

अनिरुद्धः पुं. [न निरुध्यतेऽसौ । नि+रुध+कर्मणि क्त, ततो नञ्समासः] कामदेवपुत्रः; उषापतिः; ब्रह्मसूः; विश्वकेतुः; भगवतश्चतुर्व्यूहान्तर्गतव्यूहः; 'तमसो ब्रह्म सम्भूतं तमोमूलामृतात्मकम् । तद्विश्वभावसंज्ञान्तं पौरुषीं तनुमाश्रितम् ॥ सोऽनिरुद्ध इति प्रोक्तस्तत् प्रधानं प्रचक्षते'—इति महाभारते । त्रि. रोधशून्यः; अप्रतिबद्धः; चरः । ३४

अनिलः पुं. [अनिति जीवत्यनेन । अन्+इलच्] वायुः; वसुविशेषः; शरीरस्थप्राणादिवायुः; वातरोगः; स्वाति-नक्षत्रम् । १५

अनिशम् क्ली. [निशा रात्रिः, उपचाराद् व्यापाररहित्यम्, नास्ति निशा यस्मिन् तत् । क्रियाविशेषणत्वे अस्य क्लीवत्वं, द्रव्यविशेषणत्वे तु त्रिलिङ्गत्वम्] अनवरतं; सततम्; 'निजमैक्षि मन्दमनिशं निशितैः कृशितं शरीर-मशरीरशरैः'—इति माघे । ६९८

अनिष्टः त्रि. [इष्+कर्मणि क्त । न इष्टः, नञ्समासः] अनभिलषितः; अवाञ्छितः । 'इष्टनाशादनिष्टाप्तेः करुणाख्यो रसो भवेत्'—इति साहित्यदर्पणे । १२६

अनीकः पुं.–क्ली. [नास्ति नीः स्वर्गप्रापको यस्मात्, कन्, अर्द्धर्चादित्वात् पुंस्त्वं क्लीवत्वं च] युद्धं; सैन्यम् (४५७) । ४५४

अनुकूलः त्रि. [अनुकूलं करोति । अनुकूल+करोत्यर्थे णिच्, पचाद्यच्] अप्रतिकूलः; दक्षिणः; सहायः; 'मयानुकूलेन नभस्वतेरितम्'—इति भागवते । [पुं. अनुकूलयति केवलं स्वपत्नीं सुखयति । अनुकूल+करो-त्यर्थे+णिच्+अच्] पतिभेदः; 'एकस्यामेव नायिका यामासक्तोऽनुकूलनायकः'—इति साहित्यदर्पणे । ७५६

अनुक्रमः पुं. [क्रममनुगतः, प्रादिसमासः] यथाक्रमम्; आनुपूर्वी; परिपाटी; आवृत्; पर्यायः; प्रतिसंक्रमणम्; अनुक्रमणिका; यथा—'द्वादशे तु पुराणोक्तसर्वार्थानुक्रमः कृतः । प्रथमस्कन्धमारभ्य प्राधान्येन समासतः'—इति भागवते १२ स्कन्धे १२ अध्यायटीकायां श्रीधरः ।

'कनिष्ठा देशिन्यङ्गुष्ठमूलान्यग्रं करस्य च। प्रजापतिपितृब्रह्मदेवतीर्थान्यनुक्रमात्'—इति याज्ञवल्क्यः। ७३९

अनुक्रोशः पुं. [अनु+क्रुश्+घञ्] करुणा; दया; 'सौहार्दाद्वा विधुर इति वा मय्यनुक्रोशबुद्ध्या'—इति मेघदूते। ७२४

अनुगः त्रि. [अनुगच्छति, अनु+गम्+ड] पश्चाद्गामी; अनुचरः; अनुसरः; अन्वक्; अन्वक्षः; अनुपदः; सेवकः; दासः; 'येषां शास्त्रानुगा बुद्धिर्न ते मुह्यन्ति भारत'—इति महाभारते। पतिः (४९७)। ४२८

अनुचरः त्रि. [अनु पश्चात् साहित्येन वा चरति गच्छति। अनु+चर्+ट] सहचरः; सहायः; दास; 'अनुचरेण धनाधिपतेरथो'—इति भारविः। 'पैतृकं वाञ्छतो राज्यं पार्थस्यानुचरा व्यधुः'—इति रामायणे। ४२८

अनुच्छिष्टः त्रि. [उत्+शिष्+क्त, नञ्समासः] उच्छिष्टभिन्नः; पवित्रः; 'लक्ष्म्या निमन्त्रयाञ्चक्रे तमनुच्छिष्टसम्पदा'—इति रघुवंशे। ४०२

अनुजः पुं. [अनु पश्चाज् जातः। अनु+जन्+ड] कनिष्ठभ्राता; जघन्यजः; कनिष्ठः; यवीयान्; अवरजः; कनीयान्; यविष्ठः; जघन्यः; क्ली. प्रपौण्डरीकनाम सुगन्धद्रव्यम्। ५०६

अनुजीवी [न्] त्रि. [अनुजीवति, अनु+जीव्+णिनि] दासः; सेवकः; अर्थी; अनुचरः; 'अनुजीविना पराधिकारचर्चा न कर्तव्या'—इति हितोपदेशः। ४२८

अनुतर्षः पुं. [अनु+तृष्+भावे करणे वा घञ्], मद्यपानपात्रं; तृष्णा; अभिलाषः। ३२७

अनुतापः पुं. [अनु+तप्+भावे घञ्] पश्चात्तापः; 'पछताना' इति भाषा। 'चिरसम्मोहशयनादुत्थितस्य य आत्मनः। हाहाकारोऽनुतापः स्यात्स्वकर्मस्मृतिसम्भवः॥' 'ख्यापनेनानुतापेन तपसाध्ययनेन च। पापकृन्मुच्यते पापात्तथा दानेन चापदि'—इति मनुः। ७१६

अनुत्तमः त्रि. [नास्ति उत्तमः उत्कृष्टो यस्मात् सः] श्रेष्ठः; प्रधानम्; 'श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठन् हि मानवः। इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तमं सुखम्'—इति मनुः (२।९)। (नञ्समासे तु अधमः) ६८९

अनुत्तरम् त्रि. [नास्ति उत्तरः प्रधानं यस्मात्, न उत्तरम् इति नञ्समासो वा] प्रत्युत्तरहीनं; मुख्यं; श्रेष्ठं; प्रतिजल्पविवर्जितं; स्थिरम; अधः; दक्षिणदिक्। प्रत्युत्तराभावे क्ली., यथा—'भवत्यवज्ञा च भवत्यनुत्तरात्।' ३७७

अनुनयः पुं. [अनु+नी+भावे अच्] विनयः; प्रणिपातः; प्रणतिः; 'कथं नु शक्योऽनुनयो महर्षेर्विश्राणनाच्चान्यपयस्विनीनाम्'—इति रघुवंशे। सदाचारः; मोघोपनयः; 'एवं रामवचः श्रुत्वा लक्ष्मणानुनयं तथा'—इति रामायणे। ७४९

अनुपदम् अव्य. [पदस्य पश्चात् इति, अव्ययीभावे] अन्वक्; अनन्तरम्; अव्यवहितोत्तरकालम्; 'अमोघाः प्रतिगृह्णन्तावर्घ्यानुपदमाशिषः।' 'आशिषामनुपदं समस्पृशत् दर्भपाटिततलेन पाणिना।'—इति रघुवंशे। ७३१

अनुपदी [न्] त्रि. [अनुपदमन्वेष्टा, अनुपद+इन्] अन्वेष्टा; अन्वेषणकर्ता। ३८०

अनुपदीना स्त्री. [अनुपद+अनुपदं बद्धा इत्यर्थे ख, तस्य ईन, स्त्रियां टाप्] पदायतोपानत्; 'जूता' 'बूट' इत्यादि भाषा। ३११

अनुपात्ययः पुं. [उप+अति+इण् गतौ, एरच् भावे। ततो नञ्समासः] क्रमानुसरणम्; आज्ञापालनम्; अपेक्षणम्। ७३०

अनुमतिः स्त्री. [कलाहीनत्वेऽपि पूर्णिमाविहितयागादिकरणाय अनुज्ञायतेऽस्याम्। अनु+मन्+अधिकरणे भावे वा क्तिन्] न्यूनेन्दुकला पूर्णिमा, चतुर्दशीयुक्ता पूर्णिमा; 'कुह्वै चैवानुमत्यै च प्रजापतय एव च। सह द्यावापृथिव्योश्च तथा स्विष्टकृतेऽन्ततः'—इति मनुः (३।८६)। ११२

अनुमानोक्तिः स्त्री. [अनुमानेन उक्तिः कथनं, तत्पुरुषः] तर्कः; ऊहः। १०

अनुयोगः पुं. [अनु+युज्+घञ्] प्रश्नः। १५४

अनुलाप पुं. [अनु वारं वारं लपनम्। अनु+लप्+भावे घञ्] पुनः पुनः कथनं; पुनरुक्तिः; मुहुर्भाषा। १५०

अनुलेपनम् क्ली. [अनु+लिप्+भावे ल्युट्] मस्तकादौ गन्धद्रव्यादिलेपनं तद् द्रव्यं च। 'निरस्तमाल्याभरणानुलेपनाः'—इति ऋतुसंहारे। ५४२

अनुवृत्तिः स्त्री. [अनु+वृत्+क्तिन्] अनुवर्तनम्; अनुरोधः; पूर्वसूत्रस्थितपदस्य परसूत्रेषूपस्थितिः; अधिकारः; अनुसरणम्; अनुमोदनम्; अनुरञ्जनम्;

'अमङ्गलाभ्यासरतिं विचिन्त्य तं तवानुवृत्तिं न च कर्तुमुत्सहे'—इति कुमारसम्भवे। अनुकरणम्; 'यासां सत्यपि सद्गुणानुसरणे दोषानुवृत्तिः परा'—इति साहित्यदर्पणे। ८१९

अनुशयः पुं. [अनु+शी+भावे अच्, शयं हस्तमनुगतः, प्रादिसमासः] अनुतापः; 'अनुशयादनुरोदिमि चोत्सुकः।' 'अनुशयदुःखायेदं हतहृदयं सम्प्रति विबुद्धम्'—इति शाकुन्तले। द्वेषः (८१५); दीर्घद्वेषः; पूर्ववैरिता; अनुबन्धः; क्रोधः; विप्रतिपत्तिः (पश्चात्तापादिकारणात्); 'क्रयविक्रयानुशयो विवादः स्वामिपालयोः'—इति मनुः। ७१६

अनुषङ्गः पुं. [अनु+सञ्ज्+भावे घञ्] कारुण्यं; दया; एकत्रान्वितपदस्यान्यत्रान्वयः; तर्कशास्त्रे उपनयस्थायमितिशब्दोपलक्षितस्य निगमनेऽनुषङ्गः; यथा—वह्निव्याप्यधूमवांश्चायं, तस्माद्वह्निमान्। प्रसङ्गः; अन्योद्देशेन प्रवृत्तावन्यस्यापि सिद्धिः; यथा—'नित्यक्रियां तथा चान्ये ह्यनुषङ्गफलां श्रुतिम्'—इति स्मृतिः। ८२३

अनूकम् क्ली. [अनु+उच्, घञर्थे क, 'न्यङ्क्वादीनाञ्च' इति कुत्वम्] वंशः; कुलं; शीलं; स्वभावः; पुं. गतजन्म; पूर्वजन्म; 'अनूकं तु कुले शीले पुंसि स्याद् गतजन्मनि'—इति मेदिनी। ८२९

अनूचानः त्रि. [अनु+वच्+लिट् तस्य कानच्, वेदस्यानुवचनं कृतवान्। उपेयिवानित्यादिना साधुः] साङ्गवेदविचक्षणः; शिक्षाकल्पादिषडङ्गसहितवेदाध्ययनकारी; यथा—'इदमूचुरनूचानाः प्रीतिकण्टकितत्वचः'—इति कुमारसम्भवे। 'ऋषयश्चक्रिरे धर्मं योऽनूचानः स नो महान्'—इति मनुः। विनीतः; सविनयः; 'अनूचानो विनीते स्यात् साङ्गवेदविचक्षणे'—इति मेदिनी। ३९५

अनृतम् क्ली. [न ऋतं, नञ्समासः] मिथ्या; 'विवाहकाले रतिसम्प्रयोगे प्राणात्यये सर्वधनापहारे। विप्रस्य चार्थे ह्यनृतं वदेत पञ्चानृतान्याहुरपातकानि'—इति महाभारते कर्णपर्वणि अर्जुनं प्रति श्रीकृष्णवचनम्। कृषिः। १४४

अनेकधा अव्य. [प्रकारार्थे धा] अनेकप्रकारं; बहुधा; 'पाटीसूत्रोपमं बीजं गूढमित्यवभाषते। नास्ति गूढमगूढानां नैव षोढेत्यनेकधा'—इति लीलावती। अनेकवारार्थेऽपि क्वचित् प्रयोगः। ४३७, ६४७

अनेकपः पुं. [अनेकाभ्यां मुखशुण्डाभ्यां पिबति। अनेक+पा+क, उपपदसमासः] हस्ती। २१४

अनेकार्थः पुं. [अनेके अर्थाः यस्य] बह्वर्थः; नानार्थः; विविधार्थद्योतकः। ८८४

अनेडमूकः त्रि. [नास्ति एडः वधिरः मूकः वाक्शक्तिरहितश्च यस्मात् सः] श्रुतिवाग्विहीनः; 'गूंगा-बहरा' इति भाषा। धूर्तः; शठः। ६०९

अनेहा [स्] पुं. [न हन्यते, न+हन्+असुन्। पृषोदरादित्वात् हन्स्थाने एहादेशः, ततः सौ कृते अनङादेशः] कालः; समयः; 'तस्युस्तस्यान्तिके द्रोहनिद्रानेहःप्रतीक्षिणः'—इति राजतरङ्गिणी। १०५

अनोकहः पुं. [अनसः शकटस्य अकं गमनं, षष्ठीतत्पुरुषः, तत् हन्ति। अनोक+हन्+ड] वृक्षः; 'पृक्तस्तुषारैर्गिरिनिर्झराणाम् अनोकहाकम्पितपुष्पगन्धी'—इति रघुवंशे। १७७

अन्तःपुरम् क्ली. [अन्तर्मध्यवर्ति पुरं गृहं, कर्मधारयः] राज्ञः स्त्रीगृहम्; अवरोधनम्; अवरोधः; शुद्धान्तः; 'दाक्षिण्येन ददाति वाचमुचितामन्तःपुरेभ्यो यदा'—इत्यभिज्ञानशाकुन्तलम्। ४२९, ४९१

अन्तःपुरप्रेष्या स्त्री. [अन्तःपुरस्य प्रेष्या] चेटी; दासी; संचारिका; असिक्नी। ४९१

अन्तःपुरेष्वधिकृतः त्रि. [अन्तःपुरेषु राजपत्नीवर्गे अधिकृतः अवेक्षणाधिकारी] वर्षवरः; क्लीवः; वृद्धो विश्वस्तसेवकः। ४२९

अन्तकः पुं. [अन्तं विनाशं करोति। अन्त+करोत्यर्थे णिच्, ततो ण्वुल्] यमः; 'ऋषिप्रभावान्मयि नान्तकोऽपि प्रभुः प्रहर्तुं किमुतान्यहिंस्राः'—इति रघुवंशे। ७२

अन्तरम् क्ली. [अन्तं राति ददाति। अन्त+रा+क, उपपदसमासः] छिद्रं; (८७१) परिधानं; मध्यं; व्यवधानम्; अन्तरात्मा; अवकाशः; बहिर्योगः; भेदः; विशेषः; अवसरः; अवधिः; अन्तर्धानं; तादर्थ्यं; आत्मीयः; विना; सदृशः। अवकाशे—'मृणालसूत्रान्तरमप्यलभ्यम्'—इति कुमारसम्भवे। अवधौ—'निरन्तराभ्यन्तरवातवृष्टिषु।' परिधाने—'अन्तरे शाटकाः, परिधानीयाः' इत्यर्थः। अन्तर्द्धौ—'पर्वतान्तरितो रविः।' भेदे—'यदन्तरं सर्षपशैलराजयोः, यदन्तरं वायसवैनतेययोः'—इति रामायणे। तादर्थ्ये—'त्वामन्तरेण ऋणं

गृहीतम्, त्वदर्थमित्यर्थः। छिद्रे—'प्रहरेदन्तरे रिपुम्'। आत्मीये—'अयमप्यन्तरो मम।' विनार्थे—'हरे त्वदालोकनमन्तरेण।' बहिरर्थे—'अन्तरे चण्डलगृहाः, बाह्याः' इत्यर्थः। अवसरे—'अत्रान्तरे च कुलटा कुलवर्त्मपातेत्यादि।' मध्ये—'आवयोरन्तरे जाताः पर्वताः परितो द्रुमाः।' सदृशे—'हकारस्य घकारोऽन्तरतमः'—इति भरतः। ८७१

अन्तरात्मा [न्] पुं. [अन्तः हृदयमध्ये स्थितः आत्मा। शाकपार्थिवादिः] प्रत्यगात्मा; साक्षी–ईश्वरः। ८७१

अन्तरायः पुं. [अन्तरं व्यवधानम् एति। अन्तर+इण्+अच्, षष्ठीतत्पुरुषः] विघ्नः; 'स चेत्स्वयं कर्मसु धर्मचारिणां त्वमन्तरायो भवसि च्युतो विधिः'—इति रघुवंशे। ४०१

अन्तरालम् क्ली. [अन्तरा मध्यं लाति। अन्तरा+ला+क] मध्यदेशः; अभ्यन्तरम्; अन्तरालकम्; 'मुहुरन्तरालभुवमस्तगिरिः सवितुश्च योषिदमिमीत दृशा'—इति माघे। 'उदेति भानुर्गगनान्तराले'—इति पद्ममाला। १०२

अन्तरि (री) क्षम् क्ली. [अन्तर्मध्ये ऋक्षाणि नक्षत्राणि यस्य तत्। पृषोदरादित्वाद् ऋकारस्य इकारः। अन्तरीक्षमिति पाठे, ऋकारस्य ईकारः] अन्तरीक्षम्; आकाशः; 'अन्तरिक्षगतांश्चैव मुनीन् देवांश्चपीडयेत्'—इति मनुः। १३७

अन्तरीपम् क्ली.–पुं. [अन्तर्गता आपोऽत्र, समासान्तः अ, द्व्यन्तरुपसर्गेभ्य इति अप ईदादेशः] द्वीपम्। ६७०

अन्तरीयम् क्ली. [अन्तरस्य परिधानस्य इदम्। अन्तर+छ तस्य ईय] अधोवस्त्रं; परिधानवस्त्रम्; 'नाभौ धृतञ्च यद्वस्त्रम् आच्छादयति जानुनी। अन्तरीयं प्रशस्तं तद् अच्छिन्नमुभयोस्तयोः।' ५४६

अन्तरीक्षम् क्ली. [अन्तर्मध्ये ऋक्षाणि नक्षत्राणि यस्य तत्। पृषोदरादित्वाद् ऋकारस्य ईकारः] गगनं; अभ्रकधातुः। १३८

अन्तर्गडुः त्रि. [अन्तर्मध्ये गडुः ग्रीवाप्रदेशजातगलमांसपिण्डमिव निरर्थकः] निरर्थकः; वृथा; 'काव्यान्तर्गडुभूता या सा तु नेह प्रशस्यते'—इति साहित्यदर्पणे। ७७४

अन्तर्देहम् क्ली. [देहस्य अन्तः मध्यम्। अव्ययीभावः] अशितपीतादेः पाचनस्थानं; कोष्ठः। ८१७

अन्तर्द्धिः पुं. [अन्तर्+धा+भावे कि] अन्तर्द्धानम्; अपवारणम्; अदर्शनम्। ७१९

अन्तर्वंशिकः पुं. [वंशः स्वावलम्बनयष्टिर्विद्यतेऽस्य। वंश+ठक्, तस्य इक्, अन्तः नृपान्तःपुरे वंशिकः यष्टिधारी नियुक्तः पुरुषः] अन्तःपुराधिकृतः; अन्तःपुराध्यक्षः। ४२९

अन्तर्वत्नी स्त्री. [अन्तर्गर्भमध्यस्थमपत्यं विद्यतेऽस्याः। अन्तर्+मतुप्, 'अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक्' इति ङीप् नुगागमश्च] गर्भिणी; 'तस्यामेवास्य यामिन्यामन्तर्वत्नी प्रजावती। सुतावसूत सम्पन्नौ कोषदण्डाविव क्षितिः'—इति रघुवंशे। ४९७

अन्तर्वाणिः त्रि. [अन्तः अन्तःकरणे वाणी शास्त्रविहिता वाक् यस्य सः, समासे ह्रस्वः] शास्त्रवित्; शास्त्रज्ञः। ३९९

अन्तावशायी [न्] पुं. [अन्ते नीचजातितया ग्रामसीमायामवशेते तिष्ठति। अन्त+अव+शी+णिनि, उपपदसमासः] चण्डालः; मुनिविशेष; नापितः। ५९८

अन्तिकम् त्रि. [अन्तः सामीप्यं विद्यतेऽस्य। अन्त+ठन्, तस्य इक्] निकटम्; क्ली. सामीप्यम् (८८५); 'अन्तर्गतप्रार्थनमन्तिकस्थम्' 'स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः'—इति शाकुन्तले। 'ननु मां प्रापय पत्युरन्तिकम्'—इति कुमारसम्भवे। ६९२

अन्तिमः त्रि. [अन्त+डिमच्, अन्ते भवः] चरमः; अन्त्यः; 'अजातमृतमूर्खाणां वरमाद्यौ न चान्तिमः। सकृद् दुःखकरावाद्यावन्तिमस्तु पदे पदे'—इति हितोपदेशः। अतिनिकटः। ७७५

अन्तेवासी [न्] पुं. [अन्ते विद्यामध्येतुमध्यापकसमीपे वसति। चण्डालपक्षे तु नीचजातितया ग्रामप्रान्ते वसति। शयवासेत्यलुक्, अन्त+वस्+णिनि] शिष्यः; छात्रः; 'कृशाश्वान्तेवासी कुशिकपतिराज्ञापयति वः'—इति महावीरचरिते। 'तात! प्राचेतसान्तेवासी लवोऽभिवादयते—'इति उत्तरचरिते। चण्डालः। प्रान्तस्थायिनि त्रि.। ४४०

अन्त्यः त्रि. [अन्ते भवः। अन्त+यत्] अन्तिमः; चरमः; शेषः; 'असह्यपीडं भगवन् ऋणमन्त्यमवेहि मे।'—इति रघुवंशे। अन्ते भवः; शेषोत्पन्नः; अधमः; जघन्यः; पुं. मुस्ता; म्लेच्छः; क्ली. अन्ते भवम्; दशसागरसंख्या;

सहस्रलक्षकोटिः; 'वृन्दं खर्वो निखर्वश्च शङ्खं पद्मश्च सागरः। अन्त्यं मध्यं परार्धञ्च दशवृद्धया यथाक्रमम् ॥' द्वादशलग्नम्। ७७५

अन्त्यजः पुं. [अन्त्याद् विराट्चरणदेशात् जातः। अन्त्य+जन्+ड] शूद्रः; रजकादिसप्तजातयः, यथा—'रजकश्चर्मकारश्च नटो वरुड एव च। कैवर्तमेदभिल्लाश्च सप्तैते अन्त्यजाः स्मृताः'—इति यमवचनम्। जघन्यजे त्रि.। ३९२

अन्त्यजातिः पुं. [अन्त्या जातिर्जन्म यस्य सः] चाण्डालादिः। ५९९

अन्त्यवर्णः पुं. [अन्त्यः वर्णः जातिः, कर्मधारयः] शूद्रः। ५८६

अन्त्रम् क्ली. [अन्त्यते कायः सम्बध्यतेऽनेन। अति बन्धने, करणे ष्ट्रन्] पुरीतत्। 'अँतड़ी, आँत' इति भाषा। ६३५

अन्दुकः पुं. [अन्द्यते बध्यतेऽनेन। अदि+करणे उण् बाहुलकात् ततः स्वार्थे कन्] हस्तिनिगडः; हस्तिपादबन्धनशृङ्खलः; निगडः; पादालङ्कारविशेषः; पादकटकः; स्त्रीपादभूषणम्। २२३

अन्धः त्रि. [अन्ध्+अच्] चक्षुर्द्वयहीनः; अदृक्; 'वृद्धोऽन्धः पतिरेष मञ्चकगतः'—इति साहित्यदर्पणे। 'अन्धो मत्स्यानिवाश्नाति स नरः कण्टकैः सह। यो भाषतेऽर्थवैकल्पमप्रत्यक्षं सभाङ्गतः'—इति मनुः (८।९५)। क्ली. अन्धकारः; 'सीदन्नन्धे तमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा'—इति उत्तरचरिते। जलम्। ६०६

अन्धकरिपुः पुं. [अन्धकस्य असुरस्य रिपुः नाशकतया शत्रुः। षष्ठीतत्पुरुषः] शिवः। ११

अन्धकारः पुं.-क्ली. [अन्धमन्धवत् करोति। अन्ध्+कृ+अण्] तेजःसामान्याभावः; ध्वान्तं; तमिस्रं; तिमिरं; तमः; भूच्छायं, (महान्धकारे अन्धतमसं; सर्वव्यापकान्धकारे सन्तमसम्; अल्पान्धकारे अवतमसम्)। ११०

अन्धतमसम् क्ली. [अन्धयति, अन्ध्+अच्, अन्धं तमः, कर्मधारयः, समासान्तः अच्] निविडान्धकारम्; 'प्रध्वंसितान्धतमसस्तत्रोदाहरणं रविः'—इति माघे।११०

अन्धः [स्] क्ली. [अन्ध्+असुन्] अन्नम्। ३१९

अन्धुः पुं. [अन्धु+उण्] कूपः। ६८४

अन्नम् क्ली. [अद्+कर्मणि+क्त] स्विन्नतण्डुलं; भक्तम्; अन्धः; भिस्सा, ओदनं; दीदिविः; भिस्मा; कूरम्; अट्टं; कसिपुः; जीवातुः; कूरम्; आपूपिकं; जीवन्तिः; प्रसादनं; धान्यम्; अदनीयद्रव्यमात्रम्। 'सस्यं क्षेत्रगतं प्राहुः सतुषं धान्यमुच्यते। आमं वितुषमित्युक्तं स्विन्नमन्नमुदाहृतम् ॥' 'वारिदस्तृप्तिमायाति सुखमक्षय्यमन्नदः।' 'ब्रह्महत्याकृतं पापमन्नदानात् प्रणश्यति। अन्नदः पापकर्मापि पूतः स्वर्गे महीयते ॥' 'अन्ने प्रतिष्ठिता लोका अन्नमाश्वक्षयं परम्। तस्मादन्नं प्रशंसन्ति सदैव पितृमानवाः॥' 'अन्नस्य हि प्रदानेन नरो याति परां गतिम्। सर्वकामसमायुक्तः प्रेत्य चेहाधिकं शुभम् ॥' 'अन्नमूर्ज्जस्वलं लोके दत्त्वोर्जस्वी भवेन्नरः। सतां पन्थानमाश्रित्य सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥' 'अन्नदः पशुमान् पुत्री धनवान् भोगवानपि। प्राणवांश्चापि भवति रूपवांश्च तथा नृप! ॥' 'अन्नदस्य मनुष्यस्य बलमोजो यशांसि च। कीर्तिश्च वर्द्धते शश्वत्त्रिषु लोकेषु पाण्डव! ॥' 'तस्मादन्नं सदा देहि श्रद्धया नृपसत्तम! ब्रह्महत्यादिकं पापमन्नदस्य प्रणश्यति ॥' 'अन्नदानात् परं दानं न भूतं न भविष्यति। पुण्यं यशस्यमायुष्यं बलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥' 'तरुणादित्यसङ्काशं विमानं हंसवाहनम्। अन्नदो लभते तिस्रः कल्पकोटीस्तथैव च॥ अन्नदानात् परं दानं न भूतं न भविष्यति। अन्नाद् भूतानि जायन्ते जीवन्ति च न संशयः॥ जीवदानात् परं दानं न किञ्चिदपि विद्यते। अन्नाज्जीवति त्रैलोक्यं त्रैलोक्यस्येह तत्फलम् ॥' ३१९

अन्यभृतः पुं. [अन्यया स्वमातृभिन्नया भृतः पालितः तृतीयातत्पुरुषः] कोकिलः; 'कलमन्यभृतासु भाषितं कलहंसीषु मदालसं गतम्'—इति रघुवंशे। २४३

अन्योन्यम् त्रि. [अन्य+व्यतिहारार्थे द्वित्वं, ततः पूर्वपदात्परः सुश्च] उभयतः; इतरेतरं; परस्परम्; 'अन्योन्यप्रतिघातसङ्कुलचलत्कल्लोलकोलाहलैः —इति उत्तरचरिते। ७२०

अन्योन्यसंगीतिः स्त्री. [अन्योन्यं परस्परं संगीतिः] संकथा; परस्परवार्ता; परस्परकथा। ७७९

अन्वक् [च्] त्रि. [अनु पश्चाद् अञ्चति गच्छति। अनु+अञ्च्+क्विन्] पश्चाद्गामी; अनुपदं; पश्चात्; 'तां देवतापित्रतिथिक्रियार्थामन्वग् ययौ मध्यमलोकपालः'—इति रघुवंशे। ७३१

अन्वक्षः त्रि. [अनु+अक्ष्+पचाद्यच्। अक्षमिन्द्रिय–

मनुगतः। प्रादिसमासः, प्रत्यक्षे, अनुगते, अनुपदे] पश्चाद्गामी। ७३१

अन्वयः पुं. [अनु+इण्+भावे अच्] वंशः; कुलम्; 'तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः'—इति रघुवंशे। वंश-परम्परा; 'रघूणामन्वयं वक्ष्ये तनुवाग्विभवोऽपि सन्'—इति रघुवंशे। 'काव्यदेव्यभिधा शूरवधूः शुद्धान्वया'—इति राजतरङ्गिणी। वंशजाताः; पुत्रपौत्रादयः; 'मातुर्दुहितरोऽभावे दुहितॄणां तदन्वयः'—इति नारदः। 'स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः'—इति मनुः। पदानां परस्पराकाङ्क्षा योग्यता च; परस्पर-सम्बन्धः। ३९६

अन्ववायः पुं. [अनु+अव+इण्+भावे अच्] वंशः; कुलं; 'कथमेकान्ववायोऽयमस्माकम्'—इति शकुन्तले। ३९६

अन्वासनम् क्ली. [अनु+आस्+ल्युट्] शिल्पादिगृहं; स्नेहवस्तिः; अनुशीलनम्; उपासना; अनुवासनं; पश्चात्तापः। २९७

अन्वेषणम् क्ली. [अनु+इष्+ल्युट्] अन्वेषणा; परीष्टिः; पर्येषणा; गवेषणा; अनुसन्धानम्; 'सुग्रीवो राममित्रं क्व जनकतनयान्वेषणे प्रेषितोऽहम्'—इति महानाटकम्। 'दोषान्वेषणमेव मत्सरजुषां नैसर्गिको दुर्ग्रहः'—इत्युद्भटः। ८०७

अन्वेष्टा [ऋ] त्रि. [अनु+इष्+तृच्] अन्वेषणकर्ता; आनुपद्यः; 'अन्वेष्टारो ब्राह्मणाश्च भ्रमन्ति शतशो महीम्'—इति नलोपाख्यानम्। ३८०

अपकारः पुं. [अप+कृ+भावे घञ्] दुष्कृतिः; मन्दकरणम्; अनिष्टसाधनम्; असद्व्यवहारः; अत्याचारः; द्वेषः; 'उपकर्त्रारिणा सन्धिर्न मित्रेणापकारिणा। उपकारापकारौ हि लक्ष्यं लक्षणमेतयोः'—इति माघे। ७७१

अपकृष्टम् त्रि. [अप+कृष्+क्त] जघन्यम्; अधमं; निकृष्टम्; अणकं; गर्ह्यम्; अवद्यं; काण्डं; कुत्सितं; प्रतिकृष्टं; याप्यं; खेपः; रेफः; अवमं; ब्रुवं; खेटं; पापम्; अपशब्दं; कुपूयं; चेतम्; अवंचम्। ३३७

अपघनः पुं. [अपहत्य मिलित्वा वियुज्यते। अप+हन्+'अपघनोऽङ्ग' मिति पाणिनिसूत्रेण अप् हस्थाने घ] देहावयवः; अङ्गम्; 'घृणिभिरपघनैर्घर्घरव्यक्तघोषान्'—इति सूर्यशतके। ७४४

अपचितः त्रि. [अप+चाय्+पूजार्थे कर्मणि क्त, 'अपचितश्चेति' पक्षे चाय्स्थाने चिभावः। अप+चि+क्त] पूजितः; हीनः; व्ययितः; अवयवाद्यपचययुक्तः; क्षीणः; कृशः; 'अपचितमपि गात्रं व्यायतत्वादलक्ष्यम्'—इति शाकुन्तले। ३८४

अपज्ञानम् क्ली. [अपह्नुतं ज्ञानम्, शाकपार्थिवादिः] ज्ञानापनयनम्; अपलापः; अपात्ययः। ७३०

अपटी स्त्री. [अल्पः पटः, अल्पार्थे नञ्समासः, गौरादित्वाद् ङीष्] वस्त्रप्रावरणं, चन्द्रः; जवनिका। 'पर्दा' इति भाषा। ३०९

अपत्यम् क्ली. [न पतति वंशो यस्मात्। पत्+बाहुलकाद् यत् ततो नञ्समासः] पुत्रः; कन्या; सन्तानः; तोकं; सन्ततिः; प्रसूतिः; 'अस्मिंस्तु निर्गुणे गोत्रे नापत्यमुपजायते'—इति हितोपदेशे। 'महीभृतः पुत्रवतोऽपि दृष्टिस्तस्मिन्नपत्ये न जगाम तृप्तिम्।'—इति कुमारसम्भवे। ४९७

अपत्रपा स्त्री. [अपत्रपणम्, त्रपूष्+षित्वादङ टाप्] अन्यस्मात् पित्रादेः लज्जाकरणम्; लज्जामात्रम्। (अपगता त्रपा अन्यतो लज्जा यस्याः सा), लज्जाहीना; लज्जाशून्या। ५६७

अपदान्तरः त्रि. [नास्ति पदान्तरं व्यवधानं यत्र सः] सन्निकर्षः; सान्निध्यं; सामीप्यं; नैकट्यम्; अव्यवहितः; संयुक्तः; अभिन्नपदे क्ली.। ६९२

अपमित्यकम् क्ली. [अपमित्यापमानं स्वीकृत्य गृह्यते। अप+मेङ प्रणिदाने, क्त्वा तस्य ल्यप्, 'मयतेरिदन्यतरस्या' मिति आस्थाने इत्, ततः कन्] ऋणम्।५७२

अपरम् क्ली. [नास्ति परो यस्मात्] प्राग्र्यं; (न पूर्यते, पृ+अप्, ततो नञ्समासः) हस्तिपश्चाद्भागः; गजान्त्यजङ्घादिभागः; त्रि. (न पृणाति प्रीणयति। पृ+पचाद्यच्, ततो नञ्समासः) अन्यः; इतरः; अर्वाचीनः। ६८९

अपराजिता स्त्री.—आस्फोता; गिरिकर्णी; विष्णुक्रान्ता; आस्फोटा; गवाक्षी; अश्वखुरी; श्वेता; श्वेतभण्डा; गवादनी; अद्रिकर्णी; कटभी; दधिपुष्पिका; गर्दभी; सितपुष्पी; श्वेतस्पन्दा; भद्रा; सुपुत्री; विषहन्त्री; नगपर्यायकर्णी; अश्वाह्वादिखुरी; पुष्पलताविशेषः; जयन्तीवृक्षः; अशनपर्णी; स्वल्पफला; शेफाली;

शमीभेदः; शङ्खिनी; हपुषाभेद। दुर्गा; यथा—'दशम्यां च नरैः सम्यक् पूजनीयाऽपराजिता। मोक्षार्थं विजयार्थं च पूर्वोक्तविधिना नरैः॥ नवमीशेषयुक्तायां दशम्यामपराजिता। ददाति विजयं देवी पूजिता जयवर्द्धिनी'—इति स्कान्दे। २०२

अपराद्धेषुः पुं. [अपराद्धः लक्ष्यात् च्युतः इषुः बाणो यस्य सः] लक्ष्यच्युतसायकः; अपराद्धपृषत्कः; यस्य बाणो लक्ष्यात् च्युतः सः। ४७१

अपराधः पुं. [अप+राध्+भावे घञ्] अकार्यादि-दोषः; आगः; मन्तुः; 'अहन्यहनि यो मर्त्यो गीताध्यायं तु संपठेत्। द्वात्रिंशदपराधैस्तु अहन्यहनि मुच्यते॥ तुलस्या कुरुते यस्तु शालग्रामशिलार्चनम्। द्वात्रिंशद-पराधांश्च क्षमते तस्य केशवः॥ द्वादश्यां जागरे विष्णोर्यः पठेत्तुलसीस्तवम्। द्वात्रिंशदपराधानि क्षमते तस्य केशवः॥ यः करोति हरेः पूजां कृष्णशस्त्राङ्कितो नरः। अपराधसहस्राणि नित्यं हरति केशवः'—इति हरिभक्तिविलासे ८ विलासः। ७४९

अपराह्णः पुं. [अह्नः अपरः, एकदेशिसमासः, समासान्तः टच्, अहः स्थाने अह्नादेशः] शेषम् अहः; दिनशेषभागः; 'रामाणां रमणीयतां विदधति ग्रीष्मापराह्णागमे'—इति अमरुशतके। 'तथा श्राद्धस्य पूर्वाह्णादपराह्णो विशिष्यते'—इति मनुः। ८२२

अपर्णा स्त्री. [नास्ति पर्णं तपस्यायां पर्णभक्षणवृत्तिर्वा यस्याः सा। टाप्] दुर्गा; पार्वती; 'स्वयंविशीर्णद्रुम-पर्णवृत्तिता परा हि काष्ठा तपसस्तया पुनः। तदप्यपा-कीर्णमतः प्रियंवदां वदन्त्यपर्णेति च तां पुराविदः'—इति कुमारसम्भवे (५–२८)। पत्रशून्ये त्रि.। १६

अपलापः पुं. [अप+लप्+भावे घञ्] सतोऽप्यसत्त्वेन कथनं; ज्ञातस्य गोपनं; निह्नुतिः; अपह्नुतिः; अपह्नवः; निह्नवः; प्रेम। ७३०

अपवरकः पुं. [अपव्रियन्ते लोकाः सम्भज्यन्तेऽत्र। अप+वृ+'ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च' इति अप्, ततः स्वार्थे कन्। अथवा अप्+वृ+ण्वादिभ्यः संज्ञायां वुन् तस्य अक] अन्तर्गृहं; गर्भागारं; वासौकः; शयनास्पदं; 'दीपोऽपवरकस्यान्तर्वर्तते तत्प्रभा बहिः।' २९२

अपवर्गः पुं. [अपवृज्यते संसारः मुच्यतेऽनेन। अप+वृज्+घञ् कुत्वम्] मोक्षः; त्यागः; क्रियावसान-साफल्यं; कर्मफलं; क्रियान्तः; कार्यसमाप्तिः; पूर्णता; निर्वाणं; मुक्तिः; 'अपवर्गमहोदयार्थयोर्भुव-मंशाविव धर्मयोर्गतौ'—इति रघुवंशे। समाप्तिः; अवसानम्; 'क्रियापवर्गेष्वनुजीविसात्कृताः कृतज्ञतामस्य वदन्ति सम्पदः'—इति भारविः। १२४

अपवर्जनम् पुं. [अप+वृज्+भावे ल्युट्] दानं; मोक्षः; त्यागः। ४१९

अपवादः पुं. [अप+वद्+भावे घञ्] निन्दा; अवर्णः; आक्षेपः; निर्वादः; परीवादः; उपक्रोशः; जुगुप्सा; कुत्सा; गर्हणं; वचनीयम्; 'लोकापवादाद्भयम्'—इति नीतिशतके। 'देव्यामपि हि वैदेह्यां सापवादो यतो जनः।' 'हा कथं सीतादेव्या ईदृशमचिन्तनीयं जनापवादं देवस्य कथयिष्यामि'—इति उत्तरचरिते। आज्ञा; अनुमतिः; आदेशः; 'ततोऽपवादेन पताकिनी-पतेश्चचाल निर्ह्रादवती महाचमूः'—इति भारविः। विश्वासः; विशेषः; बाधकं; 'क्वचिदपवादविषये-ऽप्युत्सर्गोऽभिनिविशते'—इति व्याकरणम्। रज्जु-विवर्त्तस्य सर्पस्य रज्जुमात्रत्ववद् वस्तुविवर्त्तस्यावस्तुनो-ऽज्ञानादेः प्रपञ्चस्य वस्तुमात्रत्वम्; तदुक्तं—'सतत्त्व-तोऽन्यथा प्रथा विकार इत्युदीरितः। अतत्त्वतोऽन्यथा प्रथा विवर्त इत्युदाहृतः।' अस्य फलम्, आभ्याम-ध्यारोपापवादाभ्यां तत्त्वम्पदार्थशोधनमपि सिद्धं भवति'—इति वेदान्तसारः। १४८

अपवारणम् क्ली. [अप+वृ+णिच् भावे ल्युट्] व्यवधानम्; अन्तर्द्धानम्। ७१९

अपवारितम् त्रि. [अप+वृ+णिच्, कर्मणि क्त] अन्तर्हितम्। ७४३

अपविद्धः त्रि. [अप+व्यध्+क्त] प्रत्याख्यातः; निरा-कृतः; त्यक्तः; प्रतिक्षिप्तः; 'कुवेरस्य मनःशल्यं शंसतीव पराभवम्। अपविद्धगदो बाहुर्भग्नशाख इव द्रुमः'—इति कुमारसम्भवे। चूर्णीकृतः; दलितः; 'मृदिताश्चापवि-द्धाश्च दृश्यन्ते कमलस्रजः'—इति रामायणे। ७०३

अपष्ठुः पुं. [अप+स्था+कु, सुषामादित्वात् षत्वम्] प्रतिकूलः; विपरीतः; 'तव धर्मराज इति नाम कथमि-दमपष्ठु पठ्यते। भौमदिनमभिदधत्यथवा भृशमप्रशस्त-मपि मङ्गलं जनाः'—इति माघे। वामः; दक्षिणेतरः; समयः; असत्यः; विरुद्धार्थः। वामे त्रि.। ७५६

अपष्ठु अव्य. [अप+स्था+'अपदुःसुषु: स्थः' इति कु, सुषामादित्वात् षत्वम्] विपरीतं; शोभनं; निरवद्यम् । ७५६

अपसदः पुं. [अपसीदति अपकृष्टत्वं प्राप्नोति । अप+सद्+पचाद्यच्] नीचः; इतरलोकः; 'विप्रस्य त्रिषु वर्णेषु नृपतेर्वर्णयोर्द्वयोः । वैश्यस्य वर्णे चैकस्मिन् षडेतेऽपसदाः स्मृताः'—इति मनुः (१०–१०) । इति मनूक्ते अनुलोमस्त्रीजाते वर्णसङ्करभेदे क्षत्रियादौ पुं. स्त्री. । ३३७

अपसर्पः त्रि. [अपसर्पति, अप+सृप्+कर्तरि अच्] चरः; 'हरकारा' इति प्रसिद्धः; गूढचरः; स्पशः; 'सर्पाधिराजोरुभुजोऽपसर्पं पप्रच्छ भद्रं विजितारि; भद्रः'—इति रघुवंशे । 'यथार्हवर्णः प्रणिधिरपसर्पश्चरः स्पशः । चारश्च गूढपुरुषश्चाप्तः प्रत्ययितस्त्रिषु'—इत्यमरः । ४२५

अपसव्यः त्रि. [सव्यादपक्रान्तः, 'निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्याः' इति समासः] शरीरदक्षिणभागः; प्रतिकूलः; विपरीतः; 'वाता मण्डलिनश्चैनमपसव्यं प्रचक्रमुः'—इति रामायणे । ७५६

अपस्करः पुं. [अपकीर्यते, अप+कॄ+अप्, 'अपस्करो रथाङ्गमिति' सुडागमः] रथाङ्गम्; अक्षयुगचक्रादि; गुह्यद्वारं; विष्ठा । ४४८

अपस्नानम् क्ली. [अप+स्ना+भावे ल्युट्] मृतस्नानं; मृतोद्देश्यकस्नानम्; अपवित्रस्नानं; स्नानावशिष्टजलेन स्नानं; स्नानोदकं; स्नानावशिष्टं जलम्; 'उद्वर्तनमपस्नानं विण्मूत्रे रक्तमेव च । श्लेष्मनिष्ठ्यूतवान्तानि नाधितिष्ठेत्तु कामतः'—इति मनुः (४–१३२) । ६३९

अपहस्तितः त्रि. [अपहस्त्यतेऽसौ, तत्करोतीति ण्यन्तात् क्त] अनादृतः; अवज्ञात; तिरस्कृतः । ७१४

अपहृतम् क्ली. [अप+हृ+क्त] कृतचौर्यं वस्तु । ३३९

अपह्नवः पुं. [अप्+ह्नु+भावे अप्] अपलापः; स्नेहः (८१५) ; 'ऋणे देये प्रतिज्ञाते पञ्चकं शतमर्हति । अपह्नवे तद् द्विगुणं तन्मनोरनुशासनम्'—इति मनुः (८–१३९) । ७३०

अपाक् [च्] त्रि. [अप+अञ्च्+क्विन् न लोपः] दक्षिणदिग्भववस्तु; अपाचीनम्; अपाची । १०३

अपाङ्गः पुं. [अपाञ्चति वक्रं गच्छति चक्षुर्यत्र । अप+अञ्च्+अधिकरणे घञ्] नेत्रयोरन्तः; चक्षुष्कोणः; 'चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीम्'—इति शाकुन्तले । 'कुवलयदृशां लोललोलैरपाङ्गैः'—इति शान्तिशतके । तिलकः; अङ्गहीने त्रि. । ५२०

अपाचीनम् त्रि. [अपाच्यां दक्षिणस्यां दिशि भवम् । अपाची+ख, तस्य ईन] दक्षिणदिक्स्थम्; अपाचीभवं; अपाक्; विपरीतं (७५७); विपर्यस्तम् । १०३

अपाटवम् क्ली. [पटोर्भावः, पटु+भावे अण्, नास्ति पाटवं पटुता यत्र] रोगः; (पटोर्भावः पाटवं ततो नञ्समासः) अपटुता; जडता । ६००

अपात्ययः पुं. [अप+अति+इण् भावे अप्] अपलापः; ज्ञातस्यापह्नवः; अपज्ञानम्; अपव्ययः । ७३०

अपानम् क्ली. [अपानयति मलादिनिःसारणेन जीवयति । अप+अन्+णिच्+पचाद्यच्] मलद्वारं; गुदं; पायुः; गुह्यं; गुदवर्त्म; तनुह्रदः; मार्गः; चूतिः; चूतः; चुतः; पुं. गुदस्थवायुः; 'अवाग्गमनवान् पाय्वादिस्थानवर्ती वायुः'—इति वेदान्तसारः । 'अधो नयत्यपानं तु आहारं च नृणामधः । मूत्रशुक्रवहो वायुरपान इति कथ्यते ।' 'प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ'—इति भगवद्गीतायाम् । ५१३

अपाम्पित्तम् क्ली. [अपां पित्तमिव । अलुक्समासः, तदुत्पन्नत्वात्] अग्निः; चित्रकवृक्षः; वह्निसंज्ञकः; इत्यमरेणोक्तत्वात् । ६३

अपारम् क्ली. [नास्ति पारं यस्य तत्] अवारं, नद्यादेरर्वाक्पारम्; असीमे त्रि. । ६६७

अपाश्रयः पुं. [अपाश्रियते आच्छाद्यतेऽनेन । अप+आ+श्रि+करणे अच्] प्राङ्गणावरणं; मत्तालम्बः; प्रग्रीवः; मत्तवारणः । 'सामियाना, चँदोवा' इति भाषा । आश्रयशून्ये त्रि., चन्द्रातपः; निराश्रयः; आश्रितः; अधीनः; 'ब्राह्मणापाश्रयो नित्यमुत्कृष्टां जातिमश्नुते'—इति मनुः । ३०७

अपिनद्धम् त्रि. [अपि+नह्+कर्मणि क्त, भागुरिमते पिनद्धं च] परिहितवस्त्रादिः; आमुक्तः; प्रतिमुक्तः; पिनद्धः । ७४७

अपुनर्भवः पुं. [न पुनर्भवति न पुनरुत्पद्यतेऽस्मात् । न पुनर्+भू+अपादाने अप्, मयूरव्यंसकादित्वात् समासः] मुक्तिः; कैवल्यं; पुनर्जन्माभावः; 'हेतौ

लिङ्गं प्रशमने रोगाणामपुनर्भवे। ज्ञानं चतुर्विधं यस्य स राजार्हो भिषक्तमः'—इति चरकः। कर्तरि अचि तु पुनर्जन्मशून्यः; मुक्तः इति यावत्। १२४

अपूपः पुं. [न पूयते विशीर्यति। न+पूय्+बाहुलकात् प, यलोपः] पिष्टकः; 'भीमेनातिबलेन मत्स्यभवनेऽपूपा न संघट्टिताः।' गोधूमः; 'वृथा कृसरसं यावं पायसापूपमेव च'—इति मनुः। ३१९

अप्रधानम् क्ली. [न प्रधानं, नञ्समासः] प्राधान्यरहितम्; अप्राग्र्यम्; उपसर्जनं, वाच्यलिङ्गोऽप्ययम्। ८६५

अप्रलम्बम् क्ली. [प्र+लम्ब्+घञ्, नञोऽस्त्यर्थानामिति समासः]· अविलम्बं; शीघ्रं; तद्वति त्रि., सत्वरः; विलम्बरहितः; झटिति। ७८३

अप्रहतम् त्रि. [न प्रहण्यते स्म। प्र+हन्+क्त, नञ्समासः] अकृष्टभूमिः; खिला भूमिः; वस्त्रविशेषः; 'ईषद्धौतं नवं श्वेतं सदशं यन्न धारितम्। निर्णेजकाक्षालितं चाप्रहतं वास उच्यते।' १५८

अप्सरसः स्त्री. [अद्भ्यः समुद्रजलात् सरन्ति उद्यन्ति। अप्+सृ+असुन्] स्वर्वेश्याः उर्वशीमेनकाद्याः। बहुवचनान्तोऽयं शब्दः। ८८

अप्सरा स्त्री.—स्वर्वेश्या; 'स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्यादेकत्वेऽप्सरा अपि'—इति शब्दार्णवे। ८७

अफलः त्रि. [नास्ति फलं वृक्षोत्पन्नं धर्मोत्पन्नं वा यस्य सः] विफलः; निष्फलः; बन्ध्यः; अवकेशी; फलकाले अनुत्पन्नफलकवृक्षः; झावुकवृक्षः। ७६०

अबद्धम् त्रि. [बन्ध्+क्त, नञ्समासः] प्रकृतानुपयोगिवचनं; समुदायार्थशून्यवाक्यम्; अनर्थकं; यथा—'जरद्गवः कम्बलपादुकाभ्यां द्वारि स्थितो गायति मङ्गलानि। तं ब्राह्मणी पृच्छति पुत्रकामा राजन् रुमायां लशुनस्य कोऽर्थः॥' अनियन्त्रितः; स्वाधीनः; मुक्तः; बन्धनशून्यम्। १४१

अबला स्त्री. [नास्ति बलं यस्याः सा] नारी; 'तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी'—इति मेघदूते। ४८२

अब्जः पुं. [अद्भ्यः जातः। अप्+जन्+ड] चन्द्रः; धन्वन्तरिः; निचुलवृक्षः; पुं.–क्ली. शङ्खः; जलभवशुक्तिमुक्तादिकम्; 'अब्जमश्ममयञ्चैव राजतञ्चानुपस्कृतम्।' 'अब्जेषु चैव रत्नेषु सर्वेष्वश्ममयेषु च'—इति मनुः। ४२

अब्जम् क्ली. [अप्सु जातम्। अप्+जन्+कर्तरि ड, उपपदसमासः] पद्मं; दशार्बुदसंख्या; शतकोटिः। ६७९

अब्दः पुं. [आप्यते, आप्लृ व्याप्तौ, 'अब्दादयश्च' इति दन् ह्रस्वश्च। मेघपर्वतविशेषपक्षे तु अपो ददाति, अप्+दा+कर्तरि क] मेघः; वत्सरः (११६); मुस्ता; पर्वतप्रभेदः। ५८

अब्रह्मण्यम् क्ली. [ब्रह्मणि, ब्राह्मणोचितकर्मणि, अहिंसादौ साधु। ब्रह्मन्+यत्, नञ्समासः] अवध्ययाच्ञा; अवध्योक्तिः; नाट्योक्तौ नायं वध्य इत्याकारोक्तिः; 'नेपथ्ये अब्रह्मण्यमब्रह्मण्यम्, अत्रान्तरे ब्राह्मणेन मृतं पुत्रमुत्क्षिप्य राजद्वारे सोरस्ताडनमब्रह्मण्यमुद्घोषितम्'—इति उत्तरचरिते। वेदविरुद्धम्; अतिनिन्दितं कर्म; निरतिशयव्यसनशोकादिप्रकाशोक्तिरियम्। ४०६

अभया स्त्री. [नास्ति भयं यस्याः सकाशात् सा] हरीतकी; चम्पादेशजातपञ्चशिरा हरीतकी, सा नेत्ररोगे प्रशस्ता; दुर्गा। ६१८

अभिकः त्रि. [अभिकामयते इति। 'अनुकाभिके' तिसाधुः] कामी; कामुकः। ४९७

अभिख्या स्त्री. [अभि+ख्या+अङ] कीर्तिः; शोभा (५६५); नाम; आख्यानं; सौन्दर्यं; रमणीयता; 'काप्यभिख्या तयोरासीद् व्रजतोः शुद्धवेशयोः'—इति रघुवंशे। 'कामप्यभिख्यां स्फुरितैरपुष्य—दासन्नलावण्यफलोऽधरोष्ठः'—इति कुमारसम्भवे। १५३

अभिजनः पुं. [अभिजायतेऽत्र। अभि+जन्+आधारे घञ्, वृद्ध्यभावः] वंशः; अन्वयः; कुलम्; 'अभिजनतपोविद्यावीर्यक्रियातिशयैर्निजैः'—इति महावीरचरिते। 'कथं दशरथाज्जातः शुद्धाभिजनकर्मणः'—इति रामायणे। ख्यातिः; जन्मभूमिः; कुलश्रेष्ठः। ३९६

अभिजातः त्रि. [अभि+जन्+भावे क्त, अभिमतं प्रशस्तं जातं जन्म यस्य सः] कुलीनः; श्रेष्ठवंशोद्भवः; 'जातस्तेनाभिजातेन शूरः शौर्यवता कुशः। अमन्यतैकमात्मानमनेकं वशिनां वशी'—इति रघुवंशे। 'न म्लेच्छितव्यं यज्ञादौ स्त्रीषु नापकृतं वदेत्। सङ्कीर्णं नाभिजातेषु नाप्रबुद्धेषु संस्कृतम्'—इति मनुः। सुन्दरः; न्याय्यः; कुलजः; बुधः; पण्डितः; उचितः; उपयुक्तः; योग्यः; सुरूपः; मनोहरः; मान्यः; पूज्यः; धन्यः; श्लाघ्यः; भगवान्; समृद्धः। ३८९

अभिज्ञः त्रि. [अभि साकल्येन जानाति। अभि+ज्ञा+कर्तरि क] प्रवीणः; निपुणः; विज्ञः; बोद्धा; दक्षः; कुशलः। 'अभिज्ञाश्छेदपातानां क्रियन्ते नन्दनद्रुमाः' 'अनभिज्ञास्तमिस्राणां दुर्दिनेष्वभिसारिकाः।' ३३५

अभिज्ञानम् क्ली. [अभिज्ञायतेऽनेन। अभि+ज्ञा+करणे ल्युट्] चिह्नम्; अङ्कः; लक्षणम्; 'एतस्मान्मां कुशलिनमभिज्ञानदानाद्विदित्वा, मा कौलीनाच्चकितनयने मय्यविश्वासिनी भूः'—इति मेघदूते। 'एवमुक्तस्तु रामेण हनूमान् वानरर्षभः। पूर्ववृत्तमभिज्ञानं भूयः संप्रत्यभाषत'—इति रामायणे। सोऽयमितिज्ञान साधनं चिह्नं; स्मरणार्थमङ्गुरीयादिकं चिह्नम्; 'अयं मैथिल्यभिज्ञानं काकुत्स्थस्याङ्गुरीयकः'—इति भट्टिकाव्ये। ४५

अभिधा स्त्री. [अभि+धा+करणे भावे च अङ, स्त्रियां टाप्] नाम; आख्या; आह्वा; अभिधानं; नामधेयम्। न्यायमते शब्दशक्तिः; मीमांसामते विधिसमवेतविधिव्यापारीभूतपदार्थः; 'स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते'—इति काव्यप्रकाशः। 'सङ्केतितार्थस्य बोधनादग्रिमाभिधा' इति साहित्यदर्पणम्। १५२

अभिधानम् क्ली. [अभिधीयते अनेन। अभि+धा+करणे ल्युट्] कथनम्; उक्तिः; 'तवाभिधानाद्व्यथते नताननः'—इति भारविः। नाम; आख्या; नामधेयम्; 'आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च'—इत्यमरः। 'शिखरिणि क्व नु नाम कियच्चिरं किमभिधानमसावकरोत्तपः'—इति साहित्यदर्पणे। उल्लेखः; निर्देशः। १३८

अभिधेयम् क्ली. [अभिधीयते अनेनेति, करणे यत्] अभिधानं; नाम; 'इति प्रयोजनाभिधेयसम्बन्धाः' इति वोपदेवः। त्रि. (अभि+धा+कर्मणि यत्) अभिधागम्यं; वाच्यं; प्रतिपाद्यम्। ८६७

अभिनयः पुं. [अभिनयति हृद्गतक्रोधादिभावं प्रकाशयति। अभि+नी+अच्] व्यञ्जकः; हृद्गतक्रोधादिभावाभिव्यञ्जकः; अङ्गुल्यादिना व्यक्तीकृतमनःकार्यं; दृश्यकाव्यं; रङ्गादिभिर्नटैः रामयुधिष्ठिरादीनामवस्थानुकरणम्; 'तामेतां परिभावयन्त्वभिनयैर्विन्यस्तरूपा बुधाः, शब्दब्रह्मविदः कवेः परिणतप्रज्ञस्य वाणीमिमाम्'—इति उत्तरचरिते। ९४

अभिनवः त्रि. [अभि+नु+भावे अप्] नूतनः; 'अभिनवमधुलोलुपस्त्वं तथा परिचुम्ब्य चूतमञ्जरीम्—इति शाकुन्तले। ७११

अभिनिर्याणम् क्ली. [शत्रुमभिलक्षीकृत्य निर्याणं निर्गमः] विजिगीषोः प्रयाणं; युद्धयात्रा; जिगीषया गमनम्। ४६१

अभिनिवेशः पुं. [अभि+नि+विश्+भावे घञ्] दृढसङ्कल्पः; 'इत्युक्तवन्तं जनकात्मजायां नितान्तरूक्षाभिनिवेशमीशम्'—इति रघुवंशे। 'अथानुरूपाभिनिवेशतोषिणा कृताभ्यनुज्ञा गुरुणा गरीयसा'—इति कुमारसम्भवे। आसक्तिः (८४१); अनुरागः; अभिलाषः; 'बलीयान् खलु मेऽभिनिवेशः'—इति शाकुन्तले। मनःसंयोगविशेषः; मनोनिवेशः; आवेशः; शास्त्रादौ प्रवेशः; निबन्धः। योगशास्त्रमते 'मरणजन्यभयजनकाविद्याविशेषः।' आग्रहः; अवश्यमिदं कर्तव्यमित्यादिरूपोऽध्यवसायः। ७८४

अभिन्नम् त्रि. [न भिन्नं, नञ्समासः] भेदहीनं; भिन्नरहितम्। ४३५

अभिप्रायः पुं. [अभि+प्र+इण्+भावे अच्] इच्छाविशेषः; आशयः; छन्दः; आकूतं; भावः; अभिसन्धिः; हृद्गतो भावः; 'दुर्योधन! ममाप्येतद् हृदि सम्परिवर्तते। अभिप्रायस्य पापत्वान्नैवं तु विवृणोम्यहम्'—इति महाभारते। 'तेषां त्वं स्वमभिप्रायमुपलभ्य पृथक् पृथक्'—इति मनुः। ७६२

अभिभवः पुं. [अभि+भू+भावे अप्] गर्वनाशः; परिभवः; पराभवः; तिरस्कारः; 'रघोरभिभवाशङ्कि चुक्षुभे द्विषतां मनः'—इति रघुवंशे। 'बलवानपि निस्तेजाः कस्य नाभिभवास्पदम्'—इति हितोपदेशे। पराजयः (८४५)। ७०४

अभिमन्त्रणम् क्ली. [अभि+मन्त्र्+करणे ल्युट्] मन्त्रपाठेन संस्कारकरणम्; 'दत्वान्नं पृथि पात्रमिति पात्राभिमन्त्रणम्'—इति याज्ञवल्क्यः। आह्वानम्; आकारणम्। १५४

अभिमानः पुं. [अभि+मन्+भावे घञ्] अवलेपः; अवश्यायः; टङ्कः; दर्पः; अहङ्कारः; गर्वः; स्मयः; ज्ञानं; बोधः; प्रणयः; प्रेमप्रार्थना; हिंसा; हननं; 'गर्वो मदोऽभिमानः स्यादहङ्कारस्त्वहङ्कृतिः। स्यादु-

द्धतमनस्कत्वे मानश्चित्तसमुन्नतिः ॥ अहङ्कारस्य पर्य्याया इति केचित्प्रचक्षते'—इति शब्दरत्नावली। ८२१

अभियातिः पुं. [युद्धार्थमभिमुखं याति, गच्छति। अभि+या+क्तिच्] अरातिः; शत्रुः। ४५५

अभियोगः पुं. [अभि+युज्+भावे घञ्] अभिग्रहः; अपकारकरणेच्छापूर्वकाक्रमणम्; उद्योगः; 'स प्रापदप्राप्तपराभियोगं नरेन्द्रगुप्तं नगरं मुहूर्तात्'—इति कुमारसम्भवे। अपराधादियोजनम्; अन्येन विरोधे स्वार्थसम्बन्धितया राजसमीपे कथनम्; 'रपट, नालिश' इति भाषा। 'अभियोगमनिस्तीर्य नैनं प्रत्यभियोजयेत्'—इति याज्ञवल्क्यः। युद्धार्थाह्वानम्। ८४३

अभिरूपः त्रि. [अभिरूपयति शास्त्रार्थं निरूपयति, अभिरूप+णिच्+अच्] पण्डितः; 'इयं हि रसभावविशेषदीक्षागुरोः विक्रमादित्यस्याभिरूपभूयिष्ठा परिषद्'—इति शाकुन्तले। मनोहरः। ३३२

अभिलाषः पुं. [अभि+लष्+भावे घञ्] लोभः; आकाङ्क्षा; स्पृहा; ईहा; तृट्; वाञ्छा; लिप्सा; कामः; तर्षः; मनोरथः; काङ्क्षा; कान्तिः; रुक्; रुचिः; दोहदः; अभिलासः; श्रद्धा; तृष्णा; मतिः; छन्दः; इच्छा; सङ्गमेच्छा; 'भव हृदय साभिलाषं सम्प्रति सन्देहनिर्णयो जातः'—इति शाकुन्तले। 'अतोऽभिलाषे प्रथमं तथाविधे'—इति रघुवंशे। ३६४

अभिलाषुकः त्रि. [अभि+लष्+शीलार्थे उकञ्] अभिलाषयुक्तः; लुब्धः; गृध्नुः; गर्द्धनः; लोभी; विलासविभवमानसः; 'जयमत्रभवान् नूनमरातिष्वभिलाषुकः'—इति भारविः। ३६३

अभिवादनम् क्ली. [आभिमुख्येन वाद्यते आशीः कार्यतेऽनेन। ण्यन्ताद् वदेः करणे ल्युट्] नामोच्चारणपूर्वकनमस्कारः; 'अभिवादये भो अमुकशर्माहम्' इत्येवं रूपः; पादस्पर्शपूर्वकनमस्कारः; पादग्रहणम्; 'अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः। चत्वारि सम्प्रवर्द्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्'—इति मनुः। ३९८

अभिवाद्यः त्रि. [अभिवादयितुं योग्यः। यत्] अभिवादनीयः; अभिवादनपूर्वकं वन्दनीयः; अभिनन्दनीयः; प्रणम्यः ३९८

अभिषङ्गः पुं. [अभि+सन्ज्+घञ्, उपसर्गादिति षः] सर्वतोभावेन सङ्गः; पराजयः; आक्रोशः; शपथः; मिथ्यापवादः; आलिङ्गनं; भूताद्यावेशः; 'अभिघाताभिचाराभ्यामभिषङ्गाभिशापतः'—इति माधवकरः। पराभवः; परिभवः; परिभूतिः; 'जाताभिषङ्गो नृपतिनिषङ्गादुद्धर्तुमैच्छत् प्रसभोद्धृतारिः'—इति रघुवंशे। 'तीव्राभिषङ्गप्रभवेण वृत्तिं मोहेन संस्तम्भयतेन्द्रियाणाम्'—इति कुमारसम्भवे। शोकः; दुःखम्; 'अभिषङ्गजडं विजज्ञिवान् इति शिष्येण किलान्वबोधयत्'—इति रघुवंशे। ८४५

अभिषवः पुं. [अभि+सु+अप्, गुणः, षत्वं च] काञ्जिकम्। 'काँजी' इति भाषा। स्नानं; यज्ञः; सुरासंधानम्। ३१८

अभिषेणनम् क्ली. [सेनया अभियानम्, सेनाशब्दाद् णिच्, ल्युट्, उपसर्गात् सुनोतीति षत्वम्] शत्रुं प्रति सेनासहितगमनं; सेनया सह करणभूतया वा विजिगीषोः शत्रोराभिमुख्येन गमनम्; 'यत् सेनयाभिगमनमसौ तदभिषेणनम्'—इत्यमरः। ४६१

अभिसम्पातः पुं. [अभिसम्पात्यते योद्धा यत्र। अभि+सम्+पत्+आधारे घञ्] युद्धम्। ४५४

अभिसारः पुं. [अभि+सृ+आधारे घञ्] युद्धं; बलं; सहायः; साधनं; स्त्रीपुंसयोरन्यतरस्यान्यतरार्थं सङ्केतस्थलगमनम्; 'रतिसुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेशम्'—इति गीतगोविन्दे। 'एवं कृताभिसाराणां पुंश्चलीनां विनोदने'—इति साहित्यदर्पणे। ४६१

अभिसारिका स्त्री. [अभिसरति कान्तनिर्दिष्टसङ्केतस्थानं गच्छति या। अभि+सृ+ण्वुल्, स्त्रियां टाप्] स्वीयादिषोडशनायिकामध्ये नायिकाभेदः; कुलटा। 'कान्तार्थिनी तु या याति सङ्केतं साभिसारिका'—इत्यमरः। 'अभिसारयते कान्तं या मन्मथवशंवदा। स्वयं वाभिसरत्येषा धीरैरुक्ताभिसारिका।'—इति साहित्यदर्पणे। ४९६

अभिहारः पुं. [अभि+हृ+घञ्,] सन्नहनं; कवचधारणं; चौर्यं; सम्मुखे हरणम्; अभिग्रहणम्; अभियोगः; अपचिकीर्षयाभिगम्याक्रमणं; साहसं; अपहरणम्; 'यस्याभिहारं कुर्याच्च स्वयमेव नराधिपः।'—इति महाभारते। ८४३

अभीकः पुं. [अभि+कन् 'अनुकाभिकाभीकः कमिता' इति निपातितः] स्वामी; कविः; पतिः; कामुकः;

कामी; 'ददृशे पर्णशालायां राक्षस्याभीकयाथ सः'—इति भट्टिकाव्ये। उत्सुकः; क्रूरः; निष्ठुरः; निर्भयः; निःशङ्कः; 'अभीकः कामुके क्रूरे निर्भये त्रिषु ना कवौ'—इति मेदिनी। ४९७

अभीक्ष्णम् अव्य. [अभि + क्ष्णु तेजने, डमु, पृषोदरादित्वाद् दीर्घः, 'स्वरादिनिपातमव्ययम्' इति अव्ययत्वम्] पुनः पुनः; अनारतम् ; अभीक्ष्णं; क्ली. (क्षणमभिगतं, प्रादिसमासः पृषोदरादित्वाद् दीर्घः, अलोपश्च) भृशं; नित्यम्; तद्युक्तक्रिययोस्त्रि.। पुनः पुनः; शश्वत्; अविरतं, निरन्तरम्; 'उदीर्णरागप्रतिरोधकं जनैः अभीक्ष्णमक्षुण्णतयातिदुर्गमम्'—इति माघे। 'इच्छन्त्यभीक्ष्णं क्षयमात्मनोऽपि न ज्ञातयस्तुल्यकुलस्य लक्ष्मीः।'—इति भट्टिकाव्ये। ७२४

अभीरुः स्त्री. [भी + कर्तरि क्रुः शीलार्थे नञ्समासः] शतमूली; शतमूलिका। पुं. भैरवः; यथा—'अभीरुभैरवो भीरुर्भूतपो योगिनीपतिः'—इति वटुकभैरवस्तवः। निर्भये त्रि. निर्भीकः; भयहीनः; निःशङ्कः; 'स्थाने युद्धे च कुशलानभीरूनविकारिणः'—इति मनुः (७-१९०)। ६१९

अभीशुः पुं. [अभितः श्यति, मुखं तनूकरोति। अभि+शो+कु, पृषोदरादित्वाद् दीर्घः] किरणः; प्रग्रहः; 'बागडोर' इति भाषा। 'स्थिरा वसन्तु नेयो रथो अश्वा स एषां सुसंस्कृता अभीशवः'—इति ऋग्वेदे। स्त्री. (अभितः अश्नुते व्याप्नोति। अभि + अश् + कर्तरि उन्, पृषोदरादित्वाद् अलोपो दीर्घः) अङ्गुलिः। ३८

अभीषुः पुं. [अभि+इष्+उ] किरणः; कामः; अनुरागः। ३८

अभ्यग्रम् त्रि. [अभिमुखमग्रं यस्य तत्] समीपं; निकटम्। ६९२

अभ्यर्णम् त्रि. [अभि+अर्द् + क्त, आविदूर्ये इडभावः, णत्वम्] निकटं; समीपं; सन्निधानम्; अन्तिकम्; 'अभ्यर्णे परिरभ्य निर्भरमुरः प्रेमान्धया राधया'—इति गीतगोविन्दे। ६९२

अभ्यवहारः पुं [अभि+अव+हृ+भावे घञ्] भक्षणम्; आहारः। ३२५

अभ्यागमः पुं. [अभि + आ+गम्+अप्] युद्धं; समीपम्; अन्तिकं; सन्निधानं; मारणं; घातः; प्रहारः; वैरं; शत्रुता; विरोधः; अभ्युत्थानम्; अभ्युद्गमनं; सम्मुखागमनम्ः; उपस्थितिः; 'का त्वं शुभे कस्य परिग्रहो वा किं वा मदभ्यागमकारणं ते'—इति रघुवंशे। ४५३

अभ्यागारिकः त्रि. [अभ्यागारे तद्गतकर्मणि व्यापृतः, ठन् तस्य इक] कुटुम्बव्यापृतः; पुत्रदारादिपोषणव्यग्रः। ३५७

अभ्याशः त्रि. [आभिमुख्येनाश्यते व्याप्यते, अशू व्याप्तौ, घञ्] समीपम्। ६९२

अभ्यासः त्रि. [आभिमुख्येनास्यते क्षिप्यते, असु क्षेपे, कर्मणि घञ्] समीपम्; अभ्यसनम्; आवृत्तिः; शराभ्यासः; चित्तस्यैकस्मिन्नभ्यन्तरे बाह्ये वा प्रतिमादावालम्बने सर्वतः समाहृत्य पुनः पुनः स्थापनमभ्यासः। यथा—'अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनञ्जय!'—इति भगवद्गीताटीकायां नीलकण्ठः। ६९२

अभ्यासः पुं. [भावे घञ्] खुरली; योग्या; शराभ्यासः। ४७०

अभ्युत्थानम् क्ली. [अभि + उत्+स्था+भावे ल्युट्] गौरवम्; आसनादेरुत्थान; यथा—'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।'—इति भगवद्गीता। ७७८

अभ्युपगमः पुं. [अभि + उप+गम्+भावे अप्] स्वाकारः; अङ्गीकारः; प्रतिज्ञा; 'प्रसीदेति ब्रूयामिदमसति कोपे न घटते,करिष्याम्येवं नो पुनरिति भवेदभ्युपगमः'—इति रत्नावली। अनुमतिः; अनुमोदनं; निकटागमनम्। ८८६

अभ्युषः पुं. [अभ्युष्यते अग्निना दह्यतेऽसौ। अभि + उष्+बाहुलकात् कर्मणि क] अभ्यूषः; पौलिः। ५८५

अभ्यूषः पुं. [अभि+ऊष्+बाहुलकात् कर्मणि क] पाकावस्थागतकलायादिः; आरब्धपाकयवसर्षपादिः; वह्निना ईषद्दग्धः 'चुट-चुट' शब्दवान् इति केचित; दरदग्धः; आपक्वं; पौलः; अभ्युषः; अभ्योषः; पोलिका। 'रोटी, रोट' इति भाषा। ईषत्पक्वम्; 'आपक्वमवपक्वं स्यादाभ्युषः पौलिपौलिके। अभ्यूषोऽभ्यौष इत्येते ईषत्पक्वयवादिषु'—इति शब्दरत्नावली। ५८५

अभ्योषः पुं. [अभ्युष्यते अग्निना दह्यतेऽसौ। अभि+ऊष्+कमणि घञ्] अभ्यूषः; अभ्युषः; पौलिः। ५८५

अभ्रम् क्ली. [अपो बिभर्ति इति। अप्+भृ+क। अथवा न भ्रश्यन्त्यापो यस्मात्, अन्येभ्योपीति ड] मेघः; मेषः;

(२७९); आकाशं; स्वर्णम्; उपधातुविशेषः; अभ्रकधातुः; 'अभ्रं कषायं मधुरं सुशीतम्, आयुष्करं धातुविवर्द्धनं च। हन्यात्त्रिदोषं व्रणमेहकुष्ठं, प्लीहोदरग्रन्थिविषकृमींश्च॥ रोगान् हन्ति द्रढयति वपुर्वीर्यवृद्धिं विधत्ते, तारुण्याढ्यं रमयति शतं योषितां नित्यमेव। दीर्घायुष्कान् जनयति सुतान् विक्रमैः सिंहतुल्यान्, मृत्योर्भीतिं हरति सततं सेव्यमानं मृताभ्रम्॥ पीडां विधत्ते विविधां नराणां, कुष्ठं क्षयं पाण्डुगदं च शोथम्। हृत्पार्श्वपीडाञ्च करोत्यशुद्धम्, अभ्रं ह्यसिद्धं गुरुतापदं स्यात्॥' ५८

अभ्रमातङ्गः पुं. [अभ्रस्य मेघस्य अधिष्ठाता मातङ्गः। शाकपार्थिवादित्वात् समासः] ऐरावतः; इन्द्रहस्ती; समुद्रजातः; पूर्वदिङ्नागः। ६१

अभ्रमाला स्त्री. [अभ्राणां माला श्रेणी, षष्ठीतत्पुरुषः] मेघश्रेणी; मेघसमूहः; घनघटा; कादम्बिनी। ५९

अमत्रम् क्ली. [अमति प्राप्नोति अन्नमत्र। अम् गत्यादिषु, आधारे अत्रन्] पात्रं; भाजनं; भोजनपात्रं; स्थालं; स्थानमित्यपि पाठः। ३२७

अमरः पुं. [मृ+कर्तरि अच्, नञ्समासः] देवः; 'विबभौ देवसङ्काशो वज्रपाणिरिवामरैः'—इति महाभारते। 'फलं कर्मायत्तं किममरगणैः किञ्च विधिना'—इति शान्तिशतके। कुलिशवृक्षः; अस्थिसंहारवृक्षः; पारदः; अमरसिंहः; आदिशाब्दिकः; नागलिङ्गानुशासननामककोषकारः; विक्रमादित्यनवरत्नान्तर्गतरत्नविशेषः; 'इन्द्रश्चन्द्रः काशकृत्स्नापिशली शाकटायनः। पाणिन्यमरजैनेन्द्रा जयन्त्यष्टादिशाब्दिकाः'—इति कविकल्पद्रुमः। ४

अमरावती स्त्री. [अमरा विद्यन्तेऽस्याम्। अमर+मतुप्, वत्वं दीर्घश्च] इन्द्रनगरी; पूषभासा; देवपूः; अमरा; सुरपुरी; सहस्राक्षपुरी; महेन्द्रनगरी; 'निष्प्रत्यूहं क्रतुशतं यः कश्चित् कुरुतेऽवनौ। जितेन्द्रियोऽमरावत्यां स प्राप्नोति पुलोमजाम्'—इति स्कान्दे काशीखण्डे १० अध्यायः। ५५

अमर्त्यभवनम् क्ली. [अमर्त्यानां देवानां भुवनं वासस्थानम्] स्वर्गः। ३

अमर्षः पुं. [मृष्+भावे घञ्, नञ्समासः, नास्ति मर्षः तितिक्षा यस्य] क्रोधः; 'कश्चित्पितृवधामर्षात् पुनर्नोत्सादयिष्यति'—इति रामायणे। अक्षमा; असहिष्णुता; इष्टघाते असहिष्णुत्वम्; 'यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः। हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः'—इति भगवद्गीता। ३६२

अमर्षणः त्रि. [मृष्+बाहुलकात् कर्तरि ल्युट्, नञ्समासः] क्रोधी; क्रोधनः; कोपनस्वभावः; अतिसंक्रुद्धः; प्रकोपितः; 'रघोरवष्टम्भमयेन पत्रिणा हृदि क्षतो गोत्रभिदप्यमर्षणः'—इति रघुवंशे। असहनः; असहिष्णुः; परकृतापमानादेरसहनशीलः; 'गत्वा ह्रदे वासुदेवेन सार्द्धममर्षणं धर्षयतः सुतं मे'—इति महाभारते। 'अमर्षणः शोणितकाङ्क्षया किं पदा स्पृशन्तं दशति द्विजिह्वः।'—इति रघुवंशे। ३६१

अमलानकम् क्ली. [न म्लायति न शीर्यते, ल्युट्, पृषोदरादिः] अम्लानपुष्पवद्वृक्षविशेषः; वर्णपुष्पम्। २०७

अमा अव्य. [न मा+स्वरादित्वादव्ययत्वम्] सह; निकटम्। ८८५

अमात्यः पुं. [अमा सह विद्यते। अमा+त्यप्] मन्त्री; 'शान्तो विनीतः कुशलः सत्कुलीनः शुभान्वितः। शास्त्रार्थतत्त्वगोऽमात्यो भवेद्भूमिभुजामिह'—इति युक्तिकल्पतरुः। 'भृता हि पाण्डुनामात्या बलं च सततं भृतम्। मान्यानन्यानमात्यांश्च ब्राह्मणांश्च तपोधनान्।'—इति महाभारते। ४२६

अमावस्या स्त्री. [अमा साहित्येन वसतश्चन्द्रार्कौ यस्याम्। अमा+वस्+आधारे ण्यत्, स्त्रियां टाप्] कृष्णपक्षान्ततिथिः; अमावास्या, दर्शः; सूर्येन्दुसङ्गमः; पञ्चदशी; अमावसी; अमावासी; अमामसी; अमामासी। ११२

अमावास्या स्त्री. [अमा सह चन्द्रार्कौ वसतो यत्र तिथौ सा। अमा+वस्+आधारे ण्यत्, स्त्रियां टाप्, णित्वाद् वृद्धिः] अमावसीतिथिः; 'अमावास्यां भवेद्वारो यदि भूमिसुतस्य च। गोसहस्रफलं दद्यात् स्नानमात्रेण जाह्नवी।' 'अमावास्यां तु कन्यार्के तीर्थप्राप्तौ तथा नृप! कृत्वा श्राद्धं विधानेन दद्यात् षोडशपिण्डकम्।' ११२

अमित्रः पुं. [अम् रोगे, इत्रच्] शत्रुः; रिपुः; शत्रुपक्षीयः; प्रतिकूलः; 'मातृरूपे ममामित्रे नृशंसे राज्यकामुके। अमित्रो मित्ररूपेण भ्रातुस्त्वमसि लक्ष्मण!'—इति रामायणे। ४५५

अमुक्तम् क्ली. [मुच्+क्त, न मुक्तम्, विरोधे नञ्समासः] छुरिकादिशस्त्रम्; मुक्तिरहिते अत्यक्ते च त्रि.। अप्राप्तमोचनः; अस्वतन्त्रः; 'अमुक्ता भवता नाथ मुहूर्तमपि

सा पुरा'—इति साहित्यदर्पणे। 'अमुक्तो मानसैर्दुः-खैरिच्छाद्वेषसमुद्भवैः'—इति महाभारते। खड्गादिकम्; 'खड्गादिकममुक्तं च नियुद्धं विगतायुधम्।' ४६२

अमुत्र अव्य. [अमुष्मिन्, अदस्+त्रल् उत्वमत्वे] जन्मान्तरं; परलोकः; अमुष्मिन् इत्यर्थस्य वाचकः; 'अनेनैवार्भकाः सर्वे नगरेऽमुत्र भक्षिताः'—इति कथा-सरित्सागरे। भवान्तरे; जन्मान्तरे; 'तथैव यः क्षमाकाले क्षत्रियो नोपशाम्यति। अप्रियः सर्वभूतानां सोऽमुत्रेह च नश्यति॥' 'इच्छद्भिः सततं श्रेय इह चामुत्र चोत्तमम्'—इति महाभारते। ८७७

अमृतम् क्ली. [मृ+भावे क्त। नास्ति मृतं मरणं यस्मात् तत्, तत्पायिनां मरणाभावात् तस्य तथात्वम्] मुक्तिः। (१३३) पीयूषं; पेयूषं; सुधा; समुद्रोद्भवदेवभक्ष्या-मरत्वजनकद्रव्यविशेषः; निर्जरं; समुद्रनवनीतकम्; 'यदा पृथुराजभयेन पृथ्वी गौर्भूता तदा देवा इन्द्रं वत्सं कृत्वा हिरण्मयपात्रेऽमृतरूपं पयोऽदूदुहन्, तत्तु दुर्वाससः शापात् समुद्रमध्ये गतं पश्चात् समुद्रमथनेऽमृतपूर्णकलसं गृहीत्वा धन्वन्तरिरुत्थितः'-इति भारत-भागवते। जलं (६४८); घृतं; यज्ञशेषद्रव्यम्; अयाचितवस्तु; दुग्धम्; औषधं; विषसामान्यं; वत्सनाभः; पारदः; अन्नं; धनं; स्वर्णं; भक्षणीयद्रव्यं; हृद्यं; स्वादुद्रव्यं; पुं. धन्वन्तरिः; देवता; वाराहीकन्दः; वनमुद्गः; हृद्यः; सुन्दरः; अतिहृद्यः; आत्मा; सूर्यः; सुरपतिः; इन्द्रः; मरणर-हिते त्रिः; 'अमृते जारजः कुण्डः'—इत्यमरः। आत्मनि; 'इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः। मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान्परः। महतः परमव्यक्त-मव्यक्तादमृतः परः। अमृतान्न परं किंचित् सा काष्ठा सा परा गतिः।' १२४

अमृता स्त्री. [नास्ति मृतं मरणं यस्याः सा] गुडूची; मदिरा; इन्द्रवारुणी; ज्योतिष्मती; गोरक्षदुग्धा; अतिविषा; रक्तत्रिवृत्; दूर्वा; आमलकी; हरीतकी; तुलसी; पिप्पली; चम्पादेशजस्थूलमांसा हरीतकी; सूर्यदीधितिविशेषाः; 'सौरीभिरिव नाडीभिरमृता-ख्याभिरम्मयः।'—इति रघुवंशे। ६

अमृताशनः पुं. [अमृतम् अश्नाति भुङ्क्ते। अश्+बाहु-लकात् कर्तरि ल्युट्। अमृतस्य अशनः, षष्ठीतत्पुरुषः] देवता। ४

अम्बकम् क्ली. [अम्बति नक्षत्रपर्यन्तं गच्छति। अम्ब्+ण्वुल्। वा अम्ब्यते भूगर्भे प्राप्यते। अम्ब्+कर्मणि घञ्, स्वार्थे कन्] नेत्रं; चक्षुः; 'आसीनमासन्न-शरीरपातः त्रियम्बकं संयमिनं ददर्श'—इति कुमार-सम्भवे। ताम्रम्। ५१९

अम्बरम् क्ली. [अबि शब्दे+भावे घञ्, अम्बः शब्दस्तं राति आदत्ते। अम्ब+रा+क] वस्त्रम्; 'एवमुक्त्वा सुमित्रां सा विवर्णा मलिनाम्बरा'—इति रामायणे। आकाशं, (१३७); 'दावाग्निः कथमम्बरे'—इति साहित्यदर्पणे। कार्पासः; सुगन्धिद्रव्यविशेषः; अभ्रधातुः। ५४८

अम्बरिषम् क्ली. [अम्ब्यते पच्यतेऽत्र। अबि+अरिष वा दीर्घः निपातनात्] भ्राष्ट्रः; भर्ज्जनपात्रम्। ३१३

अम्बरीषम् क्ली. [अबि गतौ+कर्मणि घञ् अम्बा लब्धा ईर्ष्या यस्मात् तत्, सिंहवत् पृषोदरादित्वात् रवर्णविपर्ययेण साधु] भ्राष्ट्रः; भर्जनपात्रं; युद्धम्; पुं. (अम्ब्यते पच्यते अत्र, निपातनात् साधुः) विष्णुः; शिवः; किशोरः; भास्करः; नृपभेदः; सूर्यवंशीय-नाभागराजपुत्रः; 'भगीरथसुतो राजा श्रुत इत्यभि-विश्रुतः। नाभागस्तु श्रुतस्यासीत् पुत्रः परमधार्मिकः॥ अम्बरीषस्तु नाभागिः सिन्धुद्वीपपिताऽभवत्'—इति हरिवंशे। नरकभेदः; आम्रातकवृक्षः; अनुतापः। ३१३

अम्बा स्त्री. [अम्ब्यते स्नेहेनोपगम्यते। अबि गतौ+घञ्, स्त्रियां टाप्] जननी; 'अम्ब! यत्त्वमिदं प्रात्थ प्रशमाय वचो मम।' 'नान्यदत्तमभीप्सामि स्थानमम्ब! स्व-कर्मणा'—इति विष्णुपुराणे। पाण्डुराजमातुः स्वसा; अम्बष्ठा; दुर्गा। ५०४

अम्बिका स्त्री. [अम्बा+स्वार्थे कन्, स्त्रियां टाप्] दुर्गा; पार्वती; शिवा; 'ईप्सितार्थक्रियोदारं तेऽभिनन्द्य गिरेर्वचः। आशीर्भिरेधयामासुः पुरःपाकाभिरम्बि-काम्'—इति कुमारसम्भवे। माता; जैनदेवीविशेषः; कटुकीवृक्षः; अम्बष्ठा; काशीराजस्य मध्यमदुहिता; विचित्रवीर्यस्य पत्नी; धृतराष्ट्रमाता; 'अम्बा ज्येष्ठा-ऽभवत्तासामम्बिका त्वथ मध्यमा। अम्बिकाम्बालिके भार्ये प्रादाद् भ्रात्रे यवीयसे॥ भीष्मो विचित्रवीर्याय विधिदृष्टेन कर्मणा'—इति महाभारते। १५

अम्बु क्ली. [अबि शब्दे, उण्] जलं; पानीयं; 'भुक्ता-

मृणालपटली भवता निपीतान्यम्बूनि यत्र नलिनानि निषेवितानि'—इति भामिनीविलासे। 'अम्बुजमम्बुनि जातं क्वचिदपि न जायतेऽम्बुजादम्बु'—इत्युद्भटः। 'गङ्गामम्बु सितमम्बु यामुनम्'—इति काव्यप्रकाशे। बालनामौषधिः। ६४८

अम्बुजम् क्ली. [अम्बुनि जातम्। अम्बु+जन्+ड] पद्मम्; 'इन्दीवरेण नयनं मुखमम्बुजेन'—इति शृङ्गारतिलके। वज्रं; पुं. [अम्बुसमीपे जातः] हिज्जलवृक्षः; निचुलवृक्षः; 'अम्बुजं कमले क्लीवं हिज्जले तु पुमानयम्' —इति शब्दरत्नावली। 'अम्बुजो निचुले पुंसि कमले तु नपुंसकम्'—इति मेदिनी। ६७९

अम्बुदः पुं. [अम्बु जलं ददाति। दा दाने+क] मेघः; 'सदा मनोज्ञाम्बुदनादसोत्सुकम्'—इति ऋतुसंहारे। 'शशाक निर्वापयितुं न वासवः स्वतश्चुतं वह्निमिवाद्भिरम्बुदः'—इति रघुवंशे। मुस्तकं; 'कणीसविश्वानलदं सहाम्बुदम्'—इति वैद्यकम्। ८६२

अम्बूकृतम् क्ली. [अनम्बु अम्बु सम्पद्यमानं कृतम्। अम्बु+कृ+क्त, अभूततद्भावे च्वि] 'श्लेष्मकणनिर्गमसहितवाक्यं; सनिष्ठीवं; सथूत्कारं; सनिष्ठीवमुखरावः; 'दधति कुहरभाजामत्र भल्लूकयूनामनुरसितगुरूणि स्त्यानमम्बूकृतानि'—इति उत्तरचरिते। १४२

अम्भः [स्] क्ली. [आप्यते, आप्+'उदके नुम्भौ च' इत्यसुन् ह्रस्वः] जलं; बालनामौषधं; ज्योतिषे लग्नादितश्चतुर्थराशिः; अङ्कशास्त्रे चतुर्थसंख्या; वैदिकच्छन्दोभेदः। १६६, ६४८, ६६८

अयः पुं. [एति सुखमनेन। इण्+करणे अच्] शुभावहविधिः; मङ्गलानुष्ठानं; कल्याणदायकं; दैवम्; 'स गुप्तमूलप्रत्यन्तः शुद्धपार्ष्णिरयान्वितः'—इति रघुवंशे। नरकभेदः; अयःपानम्। १२६

अयः [स्] क्ली. [इण् गतौ, असुन्] लौहं; गुडूच्यादिलौहम्; 'आयुः प्रदाता बलवीर्यधाता, रोगापहर्ता मदनस्य कर्ता। अयःसमानं न हि किञ्चिदस्ति, रसायनं श्रेष्ठतमं नराणाम्॥' 'गुडूचीसारसंयुक्तं त्रिकत्रयसमन्वयः। वातरक्तं निहन्त्याशु सर्ववातहरं परम्॥' १७१

अयनम् क्ली. [अय्+भावे ल्युट्] पन्थाः; सूर्यस्य उत्तरदक्षिणदिग्गमनं; यथा—माघादिषण्मासा उत्तरायणं, श्रावणादिषण्मासा दक्षिणायनम। गमनम्; स्थानम् (७६२); रविसंक्रान्तिविशेषः; शास्त्रं; 'ज्योतिषामयनं नेत्रं निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते'—इति तिथ्यादितत्त्वम्। २६०

अयन्त्रितः त्रि. [न यन्त्रितः, नञ्समासः] अबाधः; अनर्गलः; अनियन्त्रितः; अनियमितः; स्वाधीनः; 'सावित्री मात्रसारोऽपि वरं विप्रः सुयन्त्रितः। नायन्त्रितस्त्रिवेदोऽपि सर्वाशी सर्वविक्रयी'—इति मनुः। ७५१

अयस्कान्तः पुं. [अयस्सु कान्तः रमणीयः] लौहविशेषः; कान्तलोहं; कान्तं; लौहकान्तकं; कान्तायसं; कृष्णलोहं; महालोहं; चुम्बकप्रस्तरः; चुम्बकः; प्रस्तरप्रभेदः; स तु चतुर्विधः—भ्रामकः, चुम्बकः, रोमकः, स्वेदकः। एते रसायने उत्तरोत्तरगुणिनः। 'उमारूपेण ते यूयं संयमस्तिमितं मनः। शम्भोर्यतध्वमाक्रष्टुमयस्कान्तेन लोहवत्'—इति कुमारसम्भवे। १६९

अयानयम् क्ली. [अयश्च अनयश्च तयोः समाहारः] इष्टानिष्टफलम्। १२६

अयि अव्य. [इण्+इन्] प्रश्ने; अनुनये; सम्बोधने; अनुरागे। 'अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम्'—इति उत्तरचरिते। 'अयि घनोरु! पदानि शनैः शनैः'—इति वेणीसंहारे। 'अयि जीवितनाथ! जीवसीत्यभिधायोत्थितया तया पुरः,।' 'अयि सम्प्रति देहि दर्शनम्'—इति च कुमारसम्भवे (४-२७)। ८८२

अरम् क्ली. [इयर्ति गच्छत्यनेन, ऋ+अच्] शीघ्रं; चक्राङ्गं; शीघ्रगे त्रि.। पुं., जिनानां कालचक्रस्य द्वादशांशः; स तु अवसर्पिण्याः षष्ठभागः; जिनानामष्टादशतीर्थङ्करः। ६९७

अरघट्टकः पुं. [अरं शीघ्रं घटयते चाल्यतेऽसौ। अर+घट्ट+अच्, अरघट्ट+स्वार्थे कन्] जलोदञ्चनयन्त्रं; पादावर्तः। 'रहट' इति भाषा। ६८५

अरणिः पुं.-स्त्री. [ऋ+अनि] निर्मन्थ्यदारु; अग्निसाधनीभूतकाष्ठं; घर्षणद्वाराग्निजनककाष्ठम्; अग्निमन्थनकाष्ठम्; अग्न्युत्पादनाय यत्काष्ठं काष्ठान्तरेण घृष्यते तदरणिनामकं काष्ठम्; 'विपक्षवक्षोऽरणिमन्थनोत्थः प्रतापवह्नेरिव धूमलेखा'—इति धनञ्जयविजयव्यायोगे। गणिकारिकावृक्षः; सूर्यः। (ङ्यन्तत्वेन दीर्घान्तोऽपि) अरणी; यथा—'विधिना मन्त्रयुक्तेन रूक्षापि मथितापि च। प्रयच्छति फलं भूमिररणीव हुताशनम्॥'—इति पञ्चतन्त्रे। ४१५

अरण्यम् क्ली. [अयंते मृगैः। ऋ गतौ, अर्त्तेर्निच्चेति अन्य] वनम्; मोक्षप्रदं दण्डकादिकं नवारण्यम्; 'दण्डकं सैन्धवारण्यं जम्बुमार्गञ्च पुष्करम् । उत्पलावर्तकारण्यं नैमिषं कुरुजाङ्गलम्। हिमवानर्बुदश्चैव नवारण्यं विमुक्तिदम्॥' कट्फलवृक्षः; स्वनामख्यातो रैवतस्य मनोः पुत्रः; 'अरण्यश्च प्रकाशश्च निर्मोहः सत्यवान् कृती। रैवतस्य मनोः पुत्राः पञ्चमं चैतदन्तरम्—इति हरिवंशे। २१०

अरण्यश्वा [न्] पुं. [अरण्ये श्वेव हिंस्रः] वृकः। 'भेड़िया' इति भाषा। २२८

अरतिः स्त्री. [रम्+क्तिन्, नञ्समासः] औत्सुक्यम्; उद्वेगः; अनवस्थितचित्तत्वं; क्रीडाभावः; रतिविरहः; विरक्तिः; प्रीतिविरहः; अनुरागराहित्यम्; उत्साहहीनता; उद्यमाभावः; उद्योगराहित्यं; निश्चेष्टता; सुखाभावः; दुःखं; क्लेशः; इष्टवियोगाच्चित्तस्याकुलीभावः; यदुक्तं—'स्वाभीष्टवस्त्वलाभेन चेतसो यानवस्थितिः। अरतिः सा तु विज्ञेया।' सुस्थताभावः; अस्वास्थ्यम्; 'श्रमोऽरतिर्विवर्णत्वं वैरस्यं नयनप्लवः'—इति सुश्रुते। पुं. क्रोधः। ७४२

अरत्निः पुं. [ऋ+कत्निः, रत्निः बद्धमुष्टिकरः, स नास्ति यस्य] विस्तृतकनिष्ठाङ्गुलिमुष्टिकहस्तः; कूर्परः; कफोणिः; 'एकविंशतियूपास्ते एकविंशत्यरत्नयः'—इति रामायणे। हस्तः; करतलपार्श्वः; बद्धमुष्टिहस्तः; 'घूँसा' इति भाषा। 'पदा मूर्ध्नि महाबाहुः प्राहरद् विलपिष्यतः। तस्य जानु ददौ भीमो जघ्ने चैनमरत्निना' —इति महाभारते। ५३६

अररम् त्रि. [ऋ+अरच्] कवाटं; कपाटम्; अररिः; शरीरकोषः; आच्छादनं; पुं. रणः; युद्धं; यज्ञाङ्गं; चर्मकर्त्तनच्छुरिकाभेदः। २८८

अरविन्दम् क्ली. [अराकाराणि दलानि तत्सादृश्यात् अराः, तान् विन्दति लभते इत्यर्थे विद्+श] पद्मं; कमलं; ताम्रं; रक्तकमलं; नीलोत्पलं; सारसपक्षी। कमले—'उन्मीलितं तूलिकयेव चित्रं सूर्यांशुभिर्भिन्नमिवारविन्दम्'—इति कुमारसम्भवे। 'अरविन्दमिदं वीक्ष्य खेलत्खञ्जनमञ्जुलम्। स्मरामि वदनं तस्याश्चारुचञ्चललोचनम्।'—इति साहित्यदर्पणे। ६८०

अरातिः पुं. [न राति ददाति सुखम्। रा+क्तिच्, नञ्समासः] शत्रुः; 'अरातिविक्रमालोकविकस्वरविलोचनः'—इति साहित्यदर्पणे। 'अनेकयुद्धविजयी सन्धानं यस्य गच्छति। तत्प्रभावेण तस्याशु वशं गच्छन्त्यरातयः।'—इति पञ्चतन्त्रे। ४५५

अरालम् त्रि. [ऋ+विच्, अरम् आलाति। अर+आ+ला+क] कुटिलं; वक्रम्; 'अरालैः स्वाभाव्यादलिकरभकश्रीभिरलकैः'—इति आनन्दलहरी। पुं. सर्ज्जरसः; मत्तहस्ती; वक्रहस्तः। ६९६

अरिः पुं. [ऋ+इन्] शत्रुः; रिपुः; वैरी; 'उपकर्त्रारिणा सन्धिर्न मित्रेणापकारिणा'—इति हितोपदेशे। 'अनन्तरमरिं विद्यादरिसेविनमेव च'—इति मनुः (७–१५८)। चक्रं; खदिरभेदः; सन्दानिका; दाली; खदिरपत्रिका। ४५५

अरित्रम् क्ली. [ऋच्छत्यनेन। ऋ+इत्र] कर्णः; कोटिपात्रं; केनिपातकः; केनिपातः; 'डाँड़ा' इति भाषा। 'लोलैररित्रैश्चरणैरिवाभितः'—इति माघे। ६७२

अरिष्टम् क्ली. [रिष् हिंसायां, क्त, नञ्समासः] उपद्रवः; उपलिङ्गः; उपसर्गः; अजन्यम्; ईतिः; उत्पातः; तक्रं (२७५); अशुभं (८०४); सूतिकागृहम्; 'अरिष्टशय्यां परितो विसारिणा सुजन्मनस्तस्य निजेन तेजसा'—इति रघुवंशे। मरणचिह्नम्; 'रोगिणो मरणं यस्मादवश्यंभावि लक्ष्यते। तल्लक्षणमरिष्टं स्याद्रिष्टमप्यभिधीयते॥' मद्यं; यथा—द्राक्षारिष्टं; दशमूलारिष्टं; बब्बूलारिष्टम्; 'अरिष्टं लघुपाकेन सर्वतश्च गुणाधिकम्। अरिष्टस्य गुणा ज्ञेया बीजद्रव्यगुणैः समाः।'—इति वैद्यके। १२७

अरिष्टः पुं. [न रिष्टम् अशुभं यस्मात्। रिष् हिंसायां, क्त, नञ्समासः] पिचुमन्दः; निम्बवृक्ष; काकः (२४५); लशुनः; फेनिलवृक्षः; अरिष्टकः; 'रीठा' इति भाषा। कङ्कपक्षी; वृषभासुरः; मद्यविशेषः; 'द्रवेषु चिरकालस्थं द्रव्यं यत्सहितं भवेत्। आसवारिष्टभेदैस्तत् प्रोच्यते भेषजोचितम्॥ यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः। अरिष्टः क्वाथसिद्धः स्यात्तयोर्मानं पलोन्मितम्'—इति शार्ङ्गधरः। 'अरिष्टो द्रव्यसंयोगसंस्कारादधिको गुणैः। बहुदोषहरश्चैव दोषाणां शमनश्च सः॥ दीपनः कफवातघ्नः सरः पित्तविरोधनः। शूलाध्मानोदरप्लीहज्वराजीर्णार्शसां हितः॥'—इति सुश्रुतश्च। १९६

अरिष्टगृहम् क्ली. [न रिष्यते हिंस्रैः, एवंभूत गृहम्] सूतिकाभवनम्; 'जच्चाखाना','सौरी' इति भाषा। ४९९

अरुणः पुं. [ऋ+उनन्] ईषद्रक्तवर्णः; सूर्यसारथिः; विनतापुत्रः; गरुडज्येष्ठभ्राता; सूरसूतः; अनूरुः; काश्यपिः; गरुडाग्रजः; सूर्यः; अर्कवृक्षः; अव्यक्तरागः; सन्ध्यारागः; शब्दरहितः; कपिलवर्णः; कुष्ठभेदः; पुन्नागवृक्षः; गुडः; त्रि रक्तः; कपिलवर्णयुक्तः; कृष्णमिश्रितरक्तवर्णविशिष्टः; 'कपोताङ्गारुणो धूमो दृश्यते विमलाम्बरे'—इति रामायणे। ७३३

अरुन्तुदः त्रि. [अरूंषि मर्माणि तुदति। अरुष्+तुद्+खश्, मुम्] मर्मपीडकः; मर्मस्पृक्; मर्मपीडाकरः; हृदयग्रन्थिरूपमर्मस्थानस्पर्शकारी; 'नारुन्तुदः स्यादार्त्तोऽपि न परद्रोहकर्मधीः'—इति मनुः। 'तीक्ष्णा नारुन्तुदा बुद्धिः कर्म शान्तं प्रतापवत्'—इति माघे। 'अरुन्तुदमिवालानमनिर्वाणस्थ दन्तिनः'—इति रघुवंशे। परुषः; कठोरः; श्रवणकटुः; 'माकन्दं मकरन्दतुन्दिलममुं गाहस्व काक स्वयं, कर्णारुन्तुदमन्तरेण रणितं त्वां मन्महे कोकिलम्'—इति भामिनीविलासे। ३७१

अरुः (स्) पुं.– क्ली. [ऋ+उस्] व्रणं; क्षतं; पुं. [ऋ+उसि] सूर्यः; रक्तखदिरः; अव्य. मर्म; सन्धिस्थानम्। ६३०

अर्कः पुं. [अर्च्+कर्मणि घञ्, कुत्वम्] सूर्यः; इन्द्रः; ताम्रं; स्फटिकः; पण्डितः; ज्येष्ठभ्राता; रविवारः; वृक्षविशेषः; क्षीरदलः; पुच्छी; प्रतापः; क्षीरकण्डकः; विक्षीरः; क्षीरी; खर्जुघ्नः; शीतपुष्पकः; जम्भनः; क्षीरपर्णी; विकीरणः; सदापुष्पः; सूर्याह्वः; आस्फोतकः; तूलपलः; शुकफलः; वसुकः; आस्फोतः; गणरूपः; मन्दारः; अर्कपर्णः। अथ श्वेतार्कपर्यायाः—अलर्कः; राजार्कः; प्रतापसः; गणरूपी। अथ रक्तार्कपर्यायाः—विश्वोरः; सदापुष्पी; सूपिका; आदित्यपुष्पिका; दिव्यपुष्पिका; अर्कः। ३६

अर्काश्मा [न्] पुं. [अर्कस्य अनुगतः अश्मा। मध्यपदलोपी कर्मधारयः] सूर्यकान्तमणिः; अरुणोपलः; प्रस्तरप्रभेदः। १७६

अर्गला स्त्री. [अर्ज्+कलच्, स्त्रियां टाप्] अर्गलं; कपाटावरोधककाष्ठविशेषः; 'ससम्भ्रमेन्द्रद्रुतपातितार्गला निमीलिताक्षीव भियामरावती'—इति काव्यप्रकाशे। 'तां सत्यनाम्नीं दृढतोरणार्गलां गृहैर्विचित्रैरुपशोभितां शिवाम्'—इति रामायणे। प्रतिबन्धः; प्रत्यवायः; अन्तरायः; 'ईप्सितं तदवज्ञानाद् विद्धि सार्गलमात्मनः।' कल्लोले त्रि.। देवीमाहात्म्यपाठस्यादौ पाठ्यस्तोत्रविशेषः। ३००

अर्घः पुं. [अर्घ्+घञ्] दूर्वाक्षतसर्षपपुष्पादिविरचितो देवब्राह्मणादिसम्मानार्थः पूजोपचारभेदः; पूजाविधिविशेषः; अर्चना; पूजा; 'अये वनदेवतेयं फलकुसुमपल्लवार्घेण मामुपतिष्ठते'—इति उत्तरचरिते। 'स प्रत्यग्रैः कुटजकुसुमैः कल्पितार्घाय तस्मै'—इति मेघदूते। 'दूर्वासर्षपपुष्पाणां दत्वार्घं पूर्णमञ्जलिम्'—इति याज्ञवल्क्यः। मूल्यं; 'कुर्युरर्घं यथापण्यं ततो विंशं नृपो हरेत्।' 'मणिमुक्ताप्रबालानां लोहानां तान्तवस्य च। गन्धानां च रसानां च विद्यादर्घबलाबलम्'—इति मनुः। ८३५

अर्चना स्त्री. [अर्च्+युच्+टाप्] पूजा; अर्चा। ८३५

अर्चा स्त्री. [अर्च्+आधारे अङ्] पूजा; देवादीनां पूजनम्; 'अर्चा चेद् विधितश्च ते वद तदा किं मोक्षलाभक्लमैः'—इति शिवशतके। प्रतिमा (१३१)। १२८

अर्चिष्मान् [तु] पुं. [अर्चिर्विद्यतेऽस्य। अर्चिस्+मतुप्] अग्निः; वह्निः; सूर्यः; देवर्षिभेदः; 'अर्चिष्मांस्तम्बरुश्चैव भारिश्च वदतां वरः। नेतारो देवदेवानामेते हि तपसान्विताः' इति हरिवंशे। त्रि. दीप्तः; तेजोविशिष्टः; प्रभावान्। ६२

अर्चिः [स्] स्त्री.–क्ली. [अर्च्+इसि] अग्निशिखा; किरणः; दीप्तिः (अयं शब्दः सान्त इदन्तश्च) 'हर्म्याणां हेमशृङ्गश्रियमिव निचयैरर्चिषामादधानः।' 'विरम विरम वह्ने! मुञ्च धूमानुबन्धं, प्रकटयसि किमुच्चैरर्चिषां चक्रवालम्'—इति रत्नावली।

अर्जुनम् क्ली. [अर्ज्+उनन्] तृणं; नेत्ररोगः; 'एको यः शशरुधिरोपमस्तु बिन्दुः, शुक्लस्थो भवति तमर्जुनं वदन्ति'—इति माधवनिदाने। 'नीरुक् श्लक्ष्णोऽर्जुनं बिन्दुः शशलोहितलोहितः।'—इति वाग्भटश्च। १९०

अर्जुनः पुं. [अर्ज्+उनन्] वृक्षविशेषः, नदीसर्जः; वीरतरुः; इन्द्रद्रुः; ककुभः; शम्बरः; पार्थः; चित्रयोधी; धनञ्जयः; वैरातङ्कः; किरीटी; गाण्डीवी; शिवमल्लकः; सव्यसाची; कर्णारिः; करवीरकः; कौन्तेयः; इन्द्रसूनुः; वीरद्रुः; कृष्णसारथिः; पृथाजः;

फाल्गुनः; धन्वी; 'अर्जुनस्य त्वचा सिद्धं क्षीरं दद्याद् धृदामये'—इति वैद्यके । पाण्डुराजस्य तृतीयपुत्रः; फाल्गुनः; जिष्णुः; किरीटी; श्वेतवाहनः; बीभत्सुः; विजयः; कृष्णः; सव्यसाची; धनञ्जयः; पार्थः; शक्रनन्दनः; गाण्डीवी; मध्यपाण्डवः; मध्यमपाण्डवः; श्वेतवाजी; कपिध्वजः; राधाभेदी; सुभद्रेशः; गुडाकेशः; बृहन्नलः; ऐन्द्रिः । कार्तवीर्यार्जुनः; मयूरः; मातुरेकसुतः; श्वेतवर्णः । १९५

अर्जुनः त्रि. [अर्ज् + उनन्] श्वेतः । ७३२

अर्जुनी स्त्री. [अर्ज् + उनन्, गौरादित्वाद् ङीष्] धेनुः; करतोयानदी; कुट्टनी; उषा । २६८

अर्णः [स्] क्ली. [ऋच्छति, ऋ गतौ, 'उदके नुट् चे' त्यर्त्तेरसुन् तस्य च नुट्] जलम् । ६४८

अर्णवः पुं. [अर्णांसि जलानि सन्त्यस्मिन् । 'अर्णसो लोपश्चेति' व सलोपश्च] समुद्रः; 'अधृष्यश्चाभिगम्यश्च यादोरत्नैरिवार्णवः–' इति रघुवंशे । ६५२

अर्तिः स्त्री. [अर्द् + क्तिन्] पीडा; 'चूर्णं समं रुचकहिङ्गुमहौषधानां शुण्ठ्यम्बुना कफसमीरणसम्भवासु । हृत्पार्श्वपृष्ठजठरार्तिविसूचिकासु पेयन्तथा यवरसेन च विड्विबन्धे'—इति वैद्यके । धनुरग्रभागः । ६२६

अर्थः पुं. [अर्थ् + घञ्] धनम्; 'अर्थेन बलवान् सर्वः अर्थाद्भवति पण्डितः'—इति हितोपदेशे । (८६७) अभिधेयः; शब्दप्रतिपाद्यः; 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये'–रघुवंशे (१-१) । कारणम्; अभिप्रायः; प्रयोजनं; वस्तु; द्रव्यं; पदार्थः; विषयः; याच्ञा; निवृत्तिः; प्रकारः । ८०

अर्थवादः पुं. [अर्थस्य लक्षणया स्तुत्यर्थस्य निन्दार्थस्य वा वादः । अर्थ + वद् + करणे घञ्] निन्दाप्रशंसाकरणम्; 'विरोधे गुणवादः स्यादनुवादोऽवधारिते । भूतार्थवादस्तद्धानावर्थवादस्त्रिधा मतः'—इति भट्टः । १४५

अर्थव्ययसहः पुं. [अर्थव्ययस्य सहः । अर्थ + व्यय + सह् + अच्] अपव्ययी; व्यालः । ८३२

अर्थसंग्रहः पुं [अर्थस्य संग्रहः] धनसञ्चयः; कोशः; हेमरूप्यम् । ८४०

अर्थागमः पुं. [अर्थस्य आगमः । षष्ठीतत्पुरुषः] धनागमः; आयः; 'अर्थागमो नित्यमरोगिता च प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च । वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन् !'—इति हितोपदेशे । ४३३

अर्थी [न्] त्रि. [अर्थयते इत्यर्थी] याचकः; धनी [अर्थो विद्यतेऽस्येति]; सहायः; सेवकः; विवादी । ३५९

अर्धम् क्ली. [ऋध् + घञ्] समानांशः; समभागः; 'आधा' इति भाषा । समभागेऽर्द्धशब्दः पुमान् क्लीवं च । अर्द्धशब्दः पुंल्लिङ्गः खण्डपर्यायः एव, विभागीकृत्य वण्टितस्य तुल्यवण्टिते क्लीवमेवेति । ५६२

अर्धः पुं. [ऋध् + घञ्] एकदेशः; भित्तं; शकलं; खण्डं; 'पश्चार्द्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद्भूयसा पूर्वकायम्'—इति शाकुन्तले । 'सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डितः । अर्धेन कुरुते कार्यं सर्वनाशो हि दुःसहः'—इति पञ्चतन्त्रे । ७१३

अर्धगुच्छः पुं. [अर्धचन्द्रसमः गुच्छः] चतुर्विंशतिगुच्छकहारः । ५६२

अर्धचन्द्रः पुं. [अर्धं चन्द्रस्य] बाणविशेषः; 'चतुर्भिरर्धचन्द्रैश्च जघान चतुरो हयान्'—इति रामायणे । नखक्षतं; गलहस्तः; 'शृगालाः सर्वेऽर्धचन्द्रं दत्त्वा निःसारिताः'—इति पञ्चतन्त्रे । 'गर्दनिया' इति यस्य प्रसिद्धिः । चन्द्रकः; चन्द्रखण्डम्; मयूरपुच्छशीर्षकम् । ४६९

अर्धोरुकम् क्ली. [अर्धमूरोः अर्द्धोरु, तत्र काशते । काश् + ड] उत्तमस्त्रीणाम् अर्धोरुपर्यन्तं चेलनाकारपरिधेयवस्त्रं; चण्डातकम् । 'लहँगा' इति भाषा । ५४७

अर्भकः पुं. [ऋधू वृद्धौ, वुन् भान्तादेशश्च] शिशुः; 'अभूच्च नम्रः प्रणिपातशिक्षया पितुर्मुदं तेन ततान सोऽर्भकः'—इति रघुवंशे । मूर्खः; कृशः; स्वल्पः; सदृशः । ५०२

अर्यः पुं. [ऋ + यत्] स्वामी; प्रभुः; वैश्यः; त्रि. श्रेष्ठः; उत्कृष्टः; न्याय्यः । ३४३

अर्यमा [न्] पुं. [अर्यं श्रेष्ठं मिमीते । अर्य + मा + कनिन्] सूर्यः; 'प्रोषितार्यमणं मेरोरन्धकारस्तटीमिव'—इति माघे । 'सूर्योऽर्यमा भगस्त्वष्टा पूषार्कः सविता रविः । गभस्तिमानजः कालो मृत्युर्धाता प्रभाकरः'—इति महाभारते । द्वादशादित्यविशेषः; 'मारीचात् कश्यपाज्जातास्तेऽदित्या दक्षकन्यया । तत्र शक्रश्च विष्णुश्च जज्ञाते पुनरेव ह ॥ अर्यमा चैव धाता च त्वष्टा पूषा च भारत ।

विवस्वान् सविता चैव मित्रो वरुण एव च॥ अंशो भगश्चातितेजा आदित्या द्वादश स्मृताः'—इति हरिवंशे। अर्कवृक्षः; पितृदेवविशेषः। ३५

अर्यः पुं. [ऋ + यत्] स्वामी; प्रभुः; 'अर्यः प्रेम्णा नो तथा वल्लभस्य'—इति माघे (१८-५२)। वैश्यः। त्रि. श्रेष्ठः; उत्कृष्टः; न्याय्यः। ३४३

अर्वती स्त्री. [अर्व् + वनिप् + ङीप्] घोटकी; कुट्टनी। ४४०

अर्वा [न्] त्रि. [ऋ+वनिप्] कुत्सितः; (४३६) पुं., घोटकः; माघे (१२-३१)। इन्द्रः; गोकर्णपरिमाणम् ४४०

अर्वाक्कूलम् क्ली. [अर्वाक् च तत्कूलम्] अवारम्; अर्वाक्तीरम्। 'इस पार' इति भाषा। ६६७

अर्शम् क्ली. [ऋश् + अच्] अर्शोरोगः; कलिकाकारगुह्यस्थरोगभेदः। ६०६

अर्शः [स्] क्ली. [ऋ+असुन्+शुट्] पायुरोगः; दुर्नामकं; दुर्नाम; गुदकीलः; गुदाङ्कुरः; अनामकम्; अर्शोरोगः। 'मरिचमहौषधचित्रकशूरणभागो यथोत्तरं द्विगुणः। सर्वसमो गुडभागः सेव्योऽयं मोदकः प्रसिद्धफलः। ज्वलनं ज्वलयति जाठरमुन्मूलयति शूलगुल्मगदान्। निःशेषयति श्लीपदमर्शांसि विनाशयत्याशु'— इति वैद्यके। ६०५

अर्शसः त्रि. [अर्शस् + अस्त्यर्थे अच्] अर्शोरोगयुक्तः; 'अन्नपानौषधं सर्वं तत्सेव्यं नित्यमर्शसाम्। हस्ते पादे मुखे नाभ्यां गुदे वृषणयोस्तथा॥ शोथो हृत्पार्श्वशूलं च यस्यासाध्योऽर्शसो हि सः'—इति भावप्रकाशः। ६०६

अर्हन् [त्] पुं. ['अर्हः प्रशंसायामिति' शतृ] क्षपणकः; बुद्धः; जिनः; पारगतः; त्रिकालवित्; क्षीणाष्टकर्मा; परमेष्ठी; अधीश्वरः; शम्भुः; स्वयम्भूः; भगवान्; जगत्प्रभुः; तीर्थङ्करः; तीर्थंकरः; जिनेश्वरः; वादी; अभयदः; सार्वः, सर्वज्ञः, सर्वदर्शी, केवली, देवाधिदेवः, बोधदः, पुरुषोत्तमः, वीतरागाप्तः; त्रि. पूज्यः; मान्यः; स्तुत्यः; 'यदध्यासितमर्हद्भिस्तद्धि तीर्थं प्रचक्षते'—इति कुमारसम्भवे। 'त्वमर्हतामग्रसरः स्मृतोऽसि नः'—इति शाकुन्तले। ८६

अलम् क्ली. [अल्+अच्] वृश्चिकपुच्छकण्टकः। 'बिच्छू का डंक' इति भाषा। हरितालम्; अव्य. भूषणं; पर्याप्तिः; वारणं; निरर्थकं; शक्तिः; अव्यर्थं; 'सर्वं मे विमलं वदामलमलं गोलं विजानासि चेत्'—इति लीलावती। ६४५

अलकः पुं.– क्ली. [अलति भूषयति मुखम्। अल्+क्वुन्] कुटिलकुन्तलः; चूर्णकुन्तलः; भङ्गियुतः केशः; [कर्पूरादेः क्षोदश्चूर्णं तत्सहिताः कुन्तलाश्चूर्णकुन्तलाः, तद्धि तत्र न्यस्यते। अलति भूषयति मुखमित्यलकम्।] 'कर्णेषु योग्यं नवकर्णिकारं स्तनेषु हारा अलकेष्वशोकम्'—इति ऋतुसंहारे। 'हस्ते लीलाकमलमलके बालकुन्दानुविद्धम्'—इति मेघदूते। पुं. [अल्+क्वुन्] अलर्कः; विक्षिप्तकुक्कुरः। ५३१

अलका स्त्री. [अल्+क्वुन्+टाप्] कुबेरनगरी; अष्टवर्षावधि दशवर्षपर्यन्तवयस्का कन्या। ८३

अलक्तकः पुं. [न रक्तोऽस्मात्। रस्य लत्वम्। अलक्तः, स्वार्थे कन्] निर्भर्त्सनम्; अलक्तः; लाक्षा; वृक्षनिर्यासविशेष; राक्षा; जतु; यावः; द्रुमामयः; रक्षा; अरक्तः; जतुकं; यावकः; रक्तः; पलङ्कषा; कृमिः; वरवर्णिनी; लाक्षारसः; जतुरसः; रागः; जननी; जनकरी; सम्पद्या; चक्रवर्तिनी; 'अलक्तकाङ्कानि पदानि पादयोः'—इति कुमारसम्भवे। 'पादालक्तकरक्तमौक्तिकशिलः सिद्धाङ्गनानाङ्गतैः'—इति नागानन्दे। ५५५

अलक्ष्मीः स्त्री. [न लक्ष्मीः, नञत्र विरोधे] नरकदेवता; निर्ऋतिः; कालकर्णी; कालकर्णिका; ज्येष्ठा देवी; दरिद्रा देवी; 'अलक्ष्मीस्त्वं कुरूपासि कुत्सितस्थानवासिनी। सुखरात्रौ मयादत्तां गृह्ण पूजां च शाश्वतीम्॥' 'एवं गते निशीथे तु नारीभिः स्वगृहाङ्गनात्। अलक्ष्मीश्च बहिष्कार्या अमन्त्रं च यथाविधि॥' 'एवं गते निशीथे तु जने निद्रार्धलोचने। तावन्नगरनारीभिः शूर्पडिण्डिमवादनैः। निष्काश्यते प्रहृष्टाभिरलक्ष्मीः स्वगृहाङ्गनात्'—इति निर्णयसिन्धौ मदनरत्नधृतभविष्यपुराणम्। ८६

अलगर्दः पुं. [लगति स्पृशति, क्विप्, लग्। अर्दयति, अर्द् + अच्, अर्दः, लक् चासौ अर्दश्चेति लगर्दः, लग्नः सन् पीडकः इत्यर्थः, नञ्समासे अलगर्दः। निर्विषत्वात् तद्भिन्नः] जलसर्पः (जलवोडा, अलाध); सविषो जलव्यालभेदः। 'तत्र सविषाः कृष्णाः कर्बुरा अलगर्दा इन्द्रायुधाः सामुद्रिका गोचनन्दाश्चेति'—सुश्रुते।

अलगर्द्धः, पुं. [अलं गृध्यति इति, गृध्+अच्, पृषोदरादित्वात् साधुः] जलव्यालः। ६४३

अलङ्करणम् क्ली. [अलम्+कृ+भावे ल्युट्] भूषणम्। ५५८

अलङ्कर्मीणः त्रि. [अलं समर्थः कर्मणे, ख] कार्यकुशलः; कर्मक्षमः; चतुरः। ३७०

अलङ्कारः पुं. [अलम्+कृ+भावे घञ्] भूषणम्; आभरणं; परिष्कारः; विभूषणं; मण्डनम्; अलङ्क्रिया; भूषा; अलङ्करणं; कलापः। 'रेवत्यश्विधनिष्ठासु हस्तादिष्वपि पञ्चसु। गुरुशुक्रबुधस्याह्नि वस्त्रालङ्कारधारणम्।' काव्यालङ्कारः; स च द्विविधः, शब्दालङ्कारः अर्थालङ्कारश्च। तस्य लक्षणं 'काव्यशोभाकरो धर्मः'—इति काव्यादर्शः। ५३९

अलर्कः पुं. [अलमर्कतेऽर्च्यते वा। अर्क्+अच्, अर्च्+घञ् वा] क्षिप्तकुक्कुरः, विक्षिप्तकुक्कुरः। 'पागल कूकुर' इति भाषा। 'आलर्कं विषमिव सर्वतः प्रसृप्तम्'—इति उत्तरचरिते। श्वेतार्कवृक्षः; 'अलर्को गुणरूपः स्यान् मन्दारो वसुकोऽपि च। श्वेतपुष्पः सदापुष्पः स बालार्कः प्रतापसः॥ रक्तोऽपरोऽर्कनामा स्यादर्कपर्णो विकीरिणः। रक्तपुष्पः शुक्लफलः तथास्फोटः प्रकीर्तितः'—इति भावप्रकाशः। तत्पर्यायाः—प्रतापसः; राजार्कः; गणरूपी; 'सफेद मदार' इति भाषा। शूकराकाराष्टपादतीक्ष्णदन्तसूच्याकृतिलोमजन्तुविशेषः। दंशनामासुरो भृगुशापाद् अयं जन्तुर्भूत्वा कर्णस्योरुं भित्वा परशुरामदृष्टिपातात् शापमुक्तः पूर्वरूपो बभूव। यथा—'ददर्श रामस्तं चापि कृमिं शूकरसन्निभम्। अष्टपादं तीक्ष्णदंष्ट्रं सूचीभिरिव संवृतम्॥ रोमभिः संनिरुद्धाङ्गमलर्कं नाम नामतः। सोऽब्रवीदहमासं प्राग् दंशो नाम महासुरः। पुरा देवयुगे तात! भृगोस्तुल्यवया इव॥ सोऽहं भृगोः सुदयितां भार्यामपहरं बलात्। महर्षेरभिशापेन कृमिभूतोऽपतं भुवि'—इति महाभारते राजधर्मे। नृपतिविशेषः—स्वनामख्यातो राजा; 'शैब्यः श्येनकपोतीये स्वमासं पक्षिणे ददौ। अलर्कश्चक्षुषी दत्त्वा जगाम गतिमुत्तमाम्'—इति रामायणे। स्वनामख्यातकाशिराजः; 'वत्सपुत्रस्त्वलर्कस्तु सन्नतिस्तस्य चात्मजः। अलर्कः काशिराजस्तु ब्रह्मण्यः सत्यसङ्गरः॥ षष्टिवर्षसहस्राणि षष्टिवर्षशतानि च। तस्यासीत् सुमहद्राज्यं रूपयौवनशालिनः'—इति हरिवंशे। २८२

अलसः त्रि. [न लसति व्याप्रियते। लस्+अच्] आलस्ययुक्तः; मन्दः; तुन्दपरिमृजः; आलस्यः; शीतकः; अनुष्णः; शीतलः; कुण्ठः; मुखनिरीक्षकः; क्रियामन्दः; क्रियाजडः; अवश्यकर्तव्येषु अप्रवृत्तिशीलः; 'अव्यवसायिनमलसं दैवपरं साहसाच्च परिहीनम्। प्रमदेव वृद्धपतिं नेच्छत्युपगूहितुं लक्ष्मीः'—इति हितोपदेशे। पुं. वृक्षविशेषः; पादरोगभेदः; 'दुष्टकर्दमसंस्पर्शाः कण्डूक्लेदान्वितान्तराः। अङ्गुल्योऽलसमित्याहुः'—इति वाग्भटः। 'करञ्जबीजं रजनी कासीसं पद्मकं मधु। रोचना हरितालं च लेपोऽयमलसे हितः'—इति भावप्रकाशः। ३८७

अलातम् क्ली. [ला+क्त, नञ्समासः] अङ्गारः; अर्द्धदग्धकाष्ठं; 'कुरुतेऽस्मिन्नमोघेऽपि निर्वाणालातलाघवम्'—इति कुमारसम्भवे। ६७

अलाबूः पुं.–स्त्री. [न लम्बते। न+लबि+ऊणित् नलोपश्च वृद्धिः] लताविशेषः; तत्फलं च; तुम्बः; तुम्बकः; तुल्बा; तुम्बी; पिण्डफला; महाफला; आलाबुः; एलाबुः; लाबुः; लाबुका; तुम्बिका; तुम्बिः; 'लाउ, लौकी, तुमड़ी' इति भाषा। 'अलाबुः कथिता तुम्बी द्विधा दीर्घा च वर्तुला। मिष्टं तुम्बीफलं दीर्घं पित्तश्लेष्मापहं गुरु॥ वृष्यं रुचिकरं प्रोक्तं धातुपुष्टिविवर्धनम्'—इति भावप्रकाशः। 'वर्चोभेदीन्यलाबूनि रूक्षशीतगुरूणि च'—इति चरकः : 'अलाबुर्भिन्नविट्का तु रूक्षा गुर्व्यतिशीतला'—इति सुश्रुतः। २०९

अलिः पुं.-स्त्री. [अलति दंशे समर्थो भवति यः। अल+इन्] भ्रमरः; 'अलिपङ्क्तिरनेकशस्त्वया गुणकृत्ये धनुषो नियोजिता'—इति कुमारसम्भवे। 'अनुगतमलिवृन्दैर्गण्डभित्तीर्विहाय'—इति रघुवंशे। वृश्चिकः; काकः; कोकिलः; मदिरा; वृश्चिकराशिः। २५५

अलिकम् क्ली. [अल्यते भूष्यते, अल्+कर्मणि इकन्] ललाटम्; 'अलिकेन च हेमकान्तिना'—इति भामिनीविलासे (२-१७१)। ५२५

अलिञ्जरः पुं. [अल्+इन्, अलिं सामर्थ्यं जरयति जृणाति वा। अलि+जृ+अच्, पृषोदरादित्वात् साधुः] मणिकं; मृण्मयं; बहुजलधरपात्रम्;

अलंजरः; मृदादिनिर्मितजलाधारविशेषः; 'घड़ा' इति भाषा। 'उदकान्तमुपानीय मत्स्यं वैवस्वतो मनुः। अलिञ्जरे प्राक्षिपत्तं चन्द्रांशुसदृशप्रभम्'—इति महाभारते। ३१७

अलिन्दकः पुं. [अल्यते भूष्यते, अल्+कर्मणि बाहुलकात् किन्दच्+स्वार्थे कन्] बहिर्द्वारिसंलग्नचतुरस्रकृत्रिमभूमिः; प्रघाणः; प्रघणः; बहिर्द्वारप्रकोष्ठः; आलिन्दः; अलिन्दः; गृहद्वारपिण्डकः; 'प्रघाणप्रघणालिन्दा द्वारबाह्यप्रकोष्ठके । गृहाभ्यन्तरशय्यार्थपिण्डिकायामपि त्रयम् ॥ आलिन्दः स्यादलिन्दोऽपि स्यादलिन्दक इत्यपि' —इति शब्दरत्नावली। २९९

अली [न्] पुं. [अलं वृश्चिकपुच्छस्थकण्टकं विद्यतेऽस्य । इनि] भ्रमरः; 'अलिनि मालिनि माधवयोषिताम्'—इति माघे। वृश्चिकः। २५५

अलीकम् क्ली. [अल्+ईकन्] मिथ्या; मृषा; 'ज्ञातेऽलीकनिमीलिते नयनयोः'—इति अमरुशतके। अप्रियं; 'तद्यथा स महाराजो नालीकमधिगच्छति'—इति रामायणे। स्वर्गः; ललाटम्। १४४

अल्पम् त्रि. [अल्+प] किञ्चित्; ईषत्; मनाक्; स्तोकं; खुल्लकं; श्लक्ष्णं; दभ्रं; कृशं; तनुः; तनूः; त्रुटिः; त्रुटी; मात्रा; लवः; लेशः; कणः; कणी; कणिका; अणुः; सूक्ष्मं; क्षुल्लं; क्षुल्लकं; खुल्लं; कणा; अतिसामान्यः; 'अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन् विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्'—इति रघुवंशे। संक्षिप्तम्; अदीर्घम्; 'अनन्तपारं किल शब्दशास्त्रं स्वल्पं तथायुर्बहवश्च विघ्नाः'—इति पञ्चतन्त्रम्। ६८८

अवकरः पुं. [अव+कृ+अप्] सम्मार्जन्यादिनिःक्षिप्तधूल्यादिः; सङ्करः; अवस्करः; सङ्कारः; 'कूड़ा' इति भाषा। 'अवकरनिकरं विकिरति तत् किं कृकवाकुरिव हंसः'–इति नीतिशतके । ३०२

अवकाशः पुं. [अव+काश्+घञ्] अवसरः; अवस्थानदेशः; व्याप्तिरहितस्थानम्; 'न सूक्ष्मतन्तोरपि तावकस्य तत्रावकाशो भवतः कथं स्यात्'—इति रत्नावली। 'अवकाशेषु चोक्षेषु नदीतीरेषु चैव हि। विविक्तेषु च तुष्यन्ति दत्तेन पितरः सदा'—इति मानवे (३-२०७)। प्रशस्तप्रदेशः; 'अवकाशो विविक्तोऽयं महानद्योः समागमे'—इति रामायणे। द्रव्यादिसञ्चयस्थानम्; अवस्थानं; स्थितिः; 'अवकाशं किलोदन्वान् रामायाभ्यर्थितो ददौ'—इति रघुवंशे। ८७१

अवकीर्णः त्रि. [अव+कॄ+क्त] अवचूर्णितः; अवध्वस्तः; विस्तृतः; प्रसृतः; विक्षिप्तः; 'भुक्तानि यौवनसुखानि यशोऽवकीर्णं, राज्ये स्थितं स्थिरधिया चरितं तपोऽपि'—इति नागानन्दे। उल्लङ्घितः; अतिक्रान्तः। ७१४

अवकीर्णी [न्] त्रि. [अवकीर्णमनेन । अव+कॄ+क्त+इनि। अवकीर्णं ध्वस्तं व्रतमिति शेषः, अस्यास्तीति] क्षतव्रतः; स्त्रीसंसर्गादिना त्यक्तनियमः; 'कुशीलवोऽवकीर्णी च वृषलीपतिरेव च। पौनर्भवश्च काणश्च यस्य चोपपतिर्गृहे'—इति मनुः। ४०४

अवकृष्टः त्रि. [अव+कृष्+क्त] नीचः; निकृष्टः; 'प्रतिकर्तुं प्रकृष्टस्य नावकृष्टेन युज्यते'–इति रामायणे। हीनजातीयः; नीचजातीयः; अपकृष्टवर्णः; 'चान्द्रायणं चरेत् सर्वानवकृष्टान् निहत्य तु'—इति याज्ञवल्क्यः। गृहादिसम्मार्जनोदकवाहादि-कर्मकरः; 'पणो देयोऽवकृष्टस्य षडुत्कृष्टस्य वेतनम्। षाण्मासिकस्तथाच्छादो धान्यद्रोणस्तु मासिकः'—इति मनुः। बहिष्कृतः; दूरीकृतः; निष्काशितः; निःसारितः; निर्गमितः; बहिष्कारितः; निर्गलितः, आकृष्टः; 'एकाकिनापि हि मया रभसावकृष्टनिस्त्रिंशदीधितिसटाभरभासुरेण' –इति नागानन्दे । ३३७

अवकेशी [न्] त्रि. [अवच्युतं कं सुखं यस्मात्, अवकं फलशून्यतामीशितुं शीलमस्य। अवक+ईश्+णिनि] बन्ध्यः; अफलः; फलकालेऽप्यनुत्पन्नफलो वृक्षादिः। १७८

अवक्रयः पुं. [अवक्रीयते प्रतिरूपदानेन स्वाधीनं क्रियतेऽनेन। अव+क्री+अच्] एतावत्कालमुपयोगार्थं भाण्डवस्त्राश्वादिर्मया दीयते, मह्यं च युष्माभिरेतावद्धनं देयमित्येवंविधं भाटकम्; 'भाड़ा' इति भाषा। क्रयसाधनद्रव्यं; मूल्यं; राजग्राह्यं द्रव्यं; वणिग्भिः शुल्कस्थाने प्रतिभाण्डमधिपतये देयम्; 'विक्रयावक्रयाधानयाचितेषु पणान् दश'—इति याज्ञवल्क्यः। ५७३

अवगादः पुं. [अव+गद्+घञ्] जलद्रोणी; नौकाजलसेचनकाष्ठपात्रम्। 'अवगाहः' इत्यपि पाठः क्वचित्पुस्तके। ७५४

अवगीतः त्रि. [अव+गै+क्त] मुहुर्दृष्टः; ख्यात-

गर्हणः; निन्दितः; 'विधुरं किमतः परं परैरवगीतां गमिते दशामिमाम्'—इति भारविः। दुष्टः; क्ली. निर्वादः; लोकापवादः; गीतादिना निन्दाख्यापनम्; असाधुगीतम्; अशोभनगानम्। 'अवगीतं तु निर्वादेऽनूक्तदुष्टे विगर्हिते'—इत्यजयः। ७५५

अवग्रहः पुं. [अव+ग्रह्+घञ्] हस्तिललाटं; वृष्टिरोधः; अनावृष्टिः; 'वृष्टिर्भवति सस्यानामवग्रहविशोषिणाम्।' 'नभोनभस्ययोर्वृष्टिमवग्रह इवान्तरे'—इति रघुवंशे. प्रतिबन्धकः; गजसमूहः; स्वभावः; 'तौ स्थास्यतस्ते नृपतेर्निदेशे परस्परावग्रहनिर्विकारौ'—इति मालविकाग्निमित्रे। ज्ञानविशेषः; शापः; ग्रहणं; स्वीकारः; हरणम्; अपसारणं; निरोधः; अवरोधः; 'स रोचयामास परश्च बन्धं, प्रसह्य रक्षोभिरवग्रहं च'—इति रामायणे। अवान्तरपदसंज्ञां सूचयितुं पदपाठकाले किञ्चित् कालमवसानम्; अनादरः; निन्दासूचकवाक्यप्रयोगः। २१८

अवचूलः पुं. [अवनता चूडा यस्य, वा डस्य लः] ध्वजाग्रबद्धाधोमुखवस्त्रम्। ४५८

अवज्ञा स्त्री. [अव+ज्ञा+अङ्] अनादरः; अवहेला; 'आत्मन्यवज्ञां शिथिलीचकार'—इति रघुवंशे। ७१५

अवज्ञातम् त्रि. [अव+ज्ञा+क्त] अवमानितम्; अनादृतं; तिरस्कृतम्; 'अवज्ञाता भविष्यामो लोकस्य जगतीपते'—इति महाभारते। ७१४

अवटः पुं. [अव्+अटन्] गर्तः; खिलं; कूपः; 'रक्षसां गतसत्त्वानाम् एष धर्मः सनातनः। अवटे ये निधीयन्ते तेषां लोकाः सनातनाः'—इति रामायणे। कुहकजीवी। ७०२

अवटुः पुं.-स्त्री. [अव+टीक्+मितद्र्वादित्वाड् डु] ग्रीवापश्चाद्भागः; गर्तः (६२४); कूपः; वृक्षविशेषः। ५२५

अवतंसः पुं.-क्ली. [अव+तंस्+घञ् । शेखरः; शिरोभूषणं; वतंसः; उत्तंसः; मुकुटं; मकुटं; मौलिः; मौलीकः; उष्णीषकः; कौटीरकं; कोटीरं; शिरोमणिः; कर्णभूषणं; कर्णपूरः; कर्णपुरः; कुण्डलं; कर्णवेष्टनम्; दन्तपत्रं; कर्णकम्। ५५४

अवतमसम् क्ली. [अवततं व्याप्तं तमः, प्रादिसमासः;, अच्] अल्पान्धकारः; 'क्षीणेऽवतमसं तमः'—इत्यमरः। 'अवतमसभिदायै भास्वताभ्युद्गमेन प्रसभगुणमणोऽसौ दर्शनीयोऽप्यपास्तः'—इति माघे (११-५७)। ११०

अवतोका स्त्री. [अवपतितं तोकमस्याः सा] पतद्गर्भा गौः; स्रवद्गर्भा। २७०

अवदंशः पुं. [अव+दंश्+घञ्] चक्षणं; विदंशः; सन्धानं; रोचकः; सुरापानरुचिजनकचर्वणद्रव्यम्। ३२८

अवदातः त्रि. [अव+दै+क्त] पाण्डुरः; शुक्लगुणविशिष्टः; 'कुन्दैः सविभ्रमवधूहसितावदातैः'—इति ऋतुसंहारे। पीतवर्णयुक्तं; निर्मलं; 'तत्त्वं क्रमेण विदुषां करुणावदाते, श्रद्धावतां हृदि मदं स्वयमादधाति'—इति शान्तिशतके। मनोज्ञम्; पुं. श्वेतवर्णः; पीतवर्णः। ७३२

अवद्यम् त्रि. [न वदति परं गुणम्। 'अवद्यावमाधमार्वरेफाः कुत्सिते'—इति वदेर्नञि कर्तरि यत्] अधमं; कुत्सितं; गर्हितं; निकृष्टम्; क्ली. अनिष्टं; पापम्; 'उदवहदनवद्यां तामवद्यादपेतः'—इति रघुवंशे। ३३७

अवधारणम् क्ली. [अव+धृ+णिच्+ल्युट्] निश्चयः; 'हि हेतावधारणे'—इत्यमरः। ८८१, ८८४

अवधिः पुं. [अव+धा+कि] सीमा; बिलम् (८०२); कालः; 'अथ चेदवधिः प्रतीक्ष्यते'—इति भारविः। अवधानम्। २५९

अवध्यम् त्रि. [वधमर्हति, यत्, ततो नञ्समासः] मारणानर्हं; वधायोग्यम्; अनर्थकवाक्यम्। ४०६

अवध्वस्तः त्रि. [अव+ध्वंस्+क्त] अवचूर्णितः; परित्यक्तः; निन्दितः। ७१४

अवनिः स्त्री. [अव्+अनि] पृथिवी; 'तामुन्निद्रामवनिशयनां सौधवातायनस्थः'—इति मेघदूते। १५६

अवनी स्त्री. [अव्+अनि+ङीप्] पृथ्वी; त्रायमाणा लता। १५६

अवन्तिः पुं. [अव्+झिच्] अवन्तीदेशः; नदीविशेषः। २८७

अवन्तिसोमम् क्ली. [अवन्तिषु अभिषुतं सोमम्। शाकपार्थिवादित्वात् समासः] काञ्जिकम्; 'काँजी' इति भाषा। ३१८

अवन्ती स्त्री. [अव्+झिच्+ङीप्] मालवदेशस्य नगरी; उज्जयिनी; विशाला; पुष्पकरण्डिनी; अवन्तिका;

'प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्'—इति मेघदूते। 'उत्पन्नोऽर्कः कलिङ्गे तु यमुनायां च चन्द्रमाः। अवन्त्यां च कुजो जातो मागधे च हिमांशुजः'—इति मत्स्यपुराणम्। २८७

अवपातः पुं. [अव+पत्+घञ्] रन्ध्रं; गर्तः; अधःपतनं; गजादीनां ग्रहणार्थं कृतस्तृणादिप्रच्छन्नो गर्तः; 'अवपातस्तु हस्त्यर्थे गर्तश्छन्नस्तृणादिना'—इति यादवः (वैजयन्तीकोशः)। 'रोधांसि निघ्नन्नवपातमग्नः करीव वन्यः परुषं ररास'—इति रघुवंशे। नाटकादौ भयादिजनितपलायनसम्भ्रमादिवर्णनेन प्रस्तुतस्य परिवर्तः; 'अवपातं तु निष्क्रामप्रवेशत्रासविद्रवैः'—इति दशरूपके। ७८२

अवभृथः पुं. [अवभ्रियते अनेन, अव+भृ+क्थन्] दीक्षान्तयज्ञः; प्रधानयागसमापकापरयज्ञः; यज्ञादेर्न्यूनाधिकदोषशान्तिनिमित्तकशेषकर्तव्यहोम इति यावत्; यज्ञावशेषस्नानं; 'ततश्चकारावभृथं विधिदृष्टेन कर्मणा'—इति भारते। 'भुवं कोष्णेन कुण्डोध्नी मेध्येनावभृथादपि'—इति रघुवंशे। ४१७

अवमः त्रि. [अवति अस्माद् आत्मानम्। अव् रक्षणादौ, 'अवद्येति' सूत्रेण अवतेः अमप्रत्ययो निपातितः] अधमः; निन्दितः; 'अनलकान् अलकान् अवमां पुरीम्'—इति रघुवंशे। क्ली. तिथ्यन्तद्वयस्पृष्टैकदिनवारः। ३३७

अवयवः पुं. [अवयौति इति, 'यु मिश्रणे'+पचाद्यच्] अङ्गं; 'स्वैरेवावयवैः प्रियस्य विशतस्तन्व्या कृतं मङ्गलम्'—इति अमरुशतके। उपकरणम्; अंशः; एकदेशः; 'तेषामवयवान् सूक्ष्मान् षण्णामप्यमितौजसाम्'—इति मनुसंहितायाम्। न्यायमते आरम्भद्रव्यं च, तद् उपादानकारणतया च व्यवह्रियते, यदुक्तम्—'अनित्या तु तदन्या स्यात् सैवावयवयोगिनी'—इति भाषापरिच्छेदे। 'प्रतिज्ञाहेतूदाहरणोपनयनिगमान्यनुमानावयवाश्च।' ७४४

अवरजः पुं. [वृ+अप्, ततो नञ्समासः, अवर+जन्+ड] कनिष्ठभ्राता; 'अस्य चावरजं विद्धि भ्रातरं मां तु लक्ष्मणम्'—इति रामायणे। हीनवंशजातः; 'द्वौ शूरादरजौ धीरविश्रपाख्यौ निजाख्यया'—इति राजतरङ्गिण्याम्। शूद्रः; 'यदि स्त्री यद्यवरजः श्रेयः किञ्चित् समाचरेत्। तत्सर्वमाचरेद् युक्तो यत्र वास्य रमेन्मनः'—इति मानवे। ५०६

अवरोधः पुं. [अव+रुध्+अधिकरणे घञ्] राजस्त्रीगृहं; राजगृहम्; 'आपानभूमिगमनमवरोधस्य दर्शनम्'—इति रामायणे। राजदाराः; 'यस्यावरोधस्तनचन्दनानां प्रक्षालनाद्वारिविहारकाले। कलिन्दकन्या मथुराङ्गतापि गङ्गोर्मिसंसक्तजलेव भाति'—इति रघुवंशे। निरोधः; बाधा; अन्तरायः; आच्छादनं; केदारादिवेष्टनं; [भावे घञ्] तिरोधानम्। ४८०

अवरोहः पुं. [अव+रुह्+कर्तरि संज्ञायां घञ्] लतोद्गमः; वृक्षमूलादग्रपर्यन्तं गता लता; शाखा; शिफा; 'सुदूरमथ गत्वा तौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ। अवरोहशताकीर्णं वटमासाद्य तस्थतुः'—इति रामायणे। स्वर्गः; [अव+रुह्+भावे घञ्] अवतरणम्; आरोहणम्। १८४

अवर्णवादः पुं. [वर्ण्यते प्रशस्यते अनेन इति वर्णः, ततो विरोधे नञ्समासः। अवर्णः+वादः] निन्दा; परीवादः; 'सोढुं न तत्पूर्वमवर्णमीशे आलानिकं स्थाणुमिव द्विपेन्द्रः'—इति रघुवंशे। १४८

अवलग्नः पुं.-क्ली. [अवलग्यते इति, अव+लग्+क्त, लस्ज्+क्त वा] मध्यदेशः; 'विपुलतरोन्मुखलोचनावलग्नम्'—इति माघः। त्रि. संलग्नः; संयुक्तः। ५१७

अवलीढा स्त्री. [अव+लिह्+भावे क्त, टाप्] अवज्ञा; अवहेलनम्। ७१५

अवलीला स्त्री. [अवरा लीला] हेला; अनायासः; 'रतिज्ञं नूतनं प्राप्य विषतुल्यं पुरातनम्। कान्तं दृष्ट्वा हिनस्त्येव सोपायेनावलीलया'—इति ब्रह्मवैवर्ते। 'शूलं च भ्रमणं कृत्वा पपात दानवोपरि। चकार भस्मसात्तञ्च सरथं चावलीलया'—इति च ब्रह्मवैवर्ते। ७१५

अवलेपः पुं. [अव+लिंप्+भावे घञ्] अहङ्कारः; 'दिङ्नागानां पथि परिहरन् स्थूलहस्तावलेपान्'—इति मेघदूते। लेपनं; दूषणं; सङ्गः। ७२२

अवलोकनम् क्ली. [अव+लुक्+भावे ल्युट्] दर्शनम्; आलोकनं; 'जलवेलावलोकनकुतूहली'—इति नागानन्दे। ५६६

अवश्यम् अव्य. [न वश्यं] निश्चयः; नूनं; निश्चितम्; 'अवश्यं याति तिर्यक्त्वं जग्ध्वा चैवाहुतं हविः'—इति

मनुः। त्रि. [न+वश्+ण्यत्] अनायत्तः; स्वाधीनः; स्वतन्त्रः। ८३६

अवश्यायः पुं. [अवश्यायते शैत्यमापद्यते इति। 'श्यैङ् गतौ' श्याद्व्यधेति ण, ततो 'आतो युगिति' युक्] हिमम्; 'अवश्यायनिपातेन किञ्चित्प्रक्लिन्नशाद्वला'—इति रामायणे। गर्वः। ६५०

अवष्टम्भः पुं. [अव+ष्टभि प्रतिबन्धे, घञ् षत्वं च] सौष्ठवम्; स्तम्भः; प्रारम्भः; अवलम्बनं; बोधनं; निष्पन्दता; स्वर्णं; 'रघोरवष्टम्भमयेन पत्रिणा हृदि क्षतो गोत्रभिदप्यमर्षणः'—इति रघुवंशे। ७५९

अवसरः पुं. [अव+सृ+अच्] अवकाशः; क्षणम्; योग्यकालः; क्रियास्थितियोग्यतासम्पादकरूपः कालः; 'कामस्तु बाणावसरं समीक्ष्य'—इति कुमारसम्भवे। शिष्यजिज्ञासानिवृत्तावावश्यवक्तव्यरूपः सङ्गतिविशेषः; अनन्तरवक्तव्यम्; 'उपमानेऽवसरसङ्गतिः' इति जगदीशः। प्रस्तावः; मन्त्रविशेषः; वर्षणं; वत्सरः। ७५०

अवसानम् क्ली. [अव+सो+ल्युट्] क्रियासमाप्तिः; सातिः; विरामः; मृत्युः; 'पुंसोऽवसानं व्रजतोऽपि निष्ठुरैरिष्टैर्धनैः पञ्चपदीनमुच्यते'—इति पञ्चतन्त्रे। सीमा। ८२५

अवस्कन्दः पुं. [अव+स्कन्द्+अच्] विजिगीषूणां निवेशस्थानं; शिविरम्; अवगाहनम्; अवस्कन्दनं; 'लतानुपातं कुसुमान्यगृह्णात् स नद्यवस्कन्दमुपास्पृशच्च। कुतूहलाच्चारुशिलोपवेशं काकुत्स्थ ईषत् स्मयमान आस्त'—इति भट्टौ (२–११) (नद्यामवस्कन्दोऽवगाहो यत्र स्नानक्रियायाम्)। आक्रमणम्; 'अवस्कन्दभयाद् राजा प्रजागरकृतश्रमम्। दिवासुप्तं समाहन्यान्निद्राव्याकुलमन्तिकम्'—इति हितोपदेशे। ४५२

अवस्करः पुं. [अवकीर्यते क्षिप्यते इति। अव+कृ+अप्+सुट्] विष्ठा; गुह्यं (८२३); संमार्जन्यादिनिक्षिप्तधूल्यादिः। ६३७

अवहारः पुं. [अव+हृ+घञ्] ग्राहनामा जलजन्तुः; नक्रराजः; अवग्राहः; अवहारकः; चौरः; द्यूतयुद्धादिविश्रामः; निमन्त्रणम्; उपनेतव्यद्रव्यं; धर्मान्तिरम्; आह्वानम्; स्वधर्मपरित्यागपूर्वकधर्मान्तिरग्रहणम्; अन्यधर्मग्रहणम्; प्रत्यर्पणम्। ६५६

अवहित्थम् क्ली. [न बहिस्तिष्ठतीति। अबहिः+स्था+क, पृषोदरादित्वम्] आकारगुप्तिः; अवहित्था। ७७२

अवहित्था स्त्री. [न बहिस्तिष्ठतीति। अबहिः+स्था+क+टाप्] आकारगुप्तिः; रत्यादिसूचको मुखरागादिराकारः; अङ्गवैकृतं; भयलज्जादिना तस्य गोपनं; 'भयगौरवलज्जादेर्हर्षाद्याकारगुप्तिरवहित्था। व्यापारान्तरसक्त्यान्यथाभाषणविलोकनादिकरी' — इति साहित्यदर्पणे। यथा कुमारसम्भवे—'एवं वादिनि देवर्षौ पार्श्वे पितुरधोमुखी। लीलाकमलपत्राणि गणयामास पार्वती।' 'लज्जावशात्। कमलदलगणनाव्याजेन हर्षं जुगोप इत्यर्थः। अनेन अवहित्थाख्यसञ्चारी भाव उक्तः, तदुक्तम्—'अवहित्था तु लज्जादेर्हर्षादाकारगोपनम्'—इति मल्लिनाथः। ७७२

अवहेलम् क्ली.—स्त्री. [अव+हेड्+घञ्, डस्य लः, डलयोरेकत्वस्मरणात्] अनादरः; अवज्ञा; अवहेलनम्; अवमानना, अवहेला। ७१५

अवाक् [च्] त्रि. [नास्ति वाक् यस्य सः। क्विबन्तवच् धातोर्नञ्समासेऽयं प्रयोगः] अधोमुखं [अवपूर्व—अञ्च्धातोः प्रयोगः] दक्षिणं; वाक्यरहितः; मूकः। 'गूंगा' इति भाषा। १०२

अवाक्श्रुतिः त्रि. [नास्ति वाक् उच्चारणशक्तिः, श्रुतिः श्रवणेन्द्रियं च यस्य] कल्लमूकः; एडमूकः ६०९।

अवाग्भागः पुं. [अवाक् अधश्चासौ भागश्च] बुध्नः; निम्नभागः; मूलम्। १८१

अवाची स्त्री. [अव+अञ्च्+क्विन्+ङीप्] दक्षिण दिक्; अधोमुखी। १०१

अविः पुं. [अव्+इन्] मेषः; 'श्वशूकरखरोष्ट्राणां गोऽजाविमृगपक्षिणाम्'—इति मनुः। 'मूत्राणि हस्तिकरभमहिषीखरवाजिनाम्। गोजावीनां स्त्रियां पुंसां मत्रवर्ग उदाहृतः'—इति वैद्यके। सूर्यः; पर्वतः; नाथः; मूषिककम्बलः; प्राचीरं; वायुः; स्त्री. ऋतुमती; अवी। २७९

अविदूसम् क्ली. [अवेर्मेष्या दुग्धम्। 'अवेर्दुग्धे सोढदूसमरीसचः' इति दूसप्रत्ययः] मेषीदुग्धम्। २७९

अविनीता स्त्री. [न विनीता, नञ्तत्पुरुषः] पुंश्चली; असती; कुलटा। ६९६

अविमरीसम् क्ली. [अवि+मरीसच्, अवेर्दुग्धे मरीसच प्रत्ययः] मेषीदुग्धम्। २७९

अविरतम् क्ली. [न विरतम्, नञ्तत्पुरुषः] सततम्; अनवरतम्; 'अविरतोज्झितवारिविपाण्डुभिः, विरहितै-रचिरद्युतितेजसा'—इति किरातार्जुनीये। ६९८

अविसोढम् क्ली. [अवेर्दुग्धम्, अवि+सोढच्] मेषी-दुग्धम्। २७९

अविस्पष्टम् क्ली. [वि+स्पश्+क्त, ततो नञ्समासः] अस्पष्टवाक्यं; म्लिष्टं; 'नाविस्पष्टमधीयीत न शूद्र-जनसन्निधौ'–इति मनुः। त्रि. अस्फुटः; यथा—'विवृद्धि कम्पस्य प्रथयतितरां साध्वसवशादविस्पष्टां दृष्टिं तिरयति पुनर्वाष्पसलिलैः'—इति रत्नावल्याम्। १४१

अवी स्त्री. [अवत्यात्मानं लज्जया। अव्+ई] ऋतु-मती; रजस्वला। ४८८

अवेक्षा स्त्री. [अव+ईक्ष्+अ+टाप्] प्रत्यवेक्षणं; प्रत्यक्षदृष्टिः; प्रतिजागरः; अवधानम्; अनुसन्धानं; यथा—'अलब्धमिच्छेद्दण्डेन लब्धं रक्षेदवेक्षया। रक्षितं वर्द्धयेद् वृद्धया वृद्धं दानेन निक्षिपेत्'—इति मनुः। 'यदि रामस्य नावेक्षा त्वयि स्यान्मातृवत्सदा'–इति रामायणे ७८२

अव्यक्तः पुं. [वि+अञ्ज्+क्त, ततो नञ्समासः] मूर्खः; क्ली. परमात्मा; त्रि. अस्फुटः; विष्णुः; शिवः; कन्दर्पः; क्ली. प्रकृतिः; आत्मा; महदादि; अज्ञात-राश्यादिः; अदृश्यः; प्रधानं महदादि; ब्रह्म; पर-ब्रह्म। ८४२

अव्यक्तवाक् पुं. [अव्यक्ता अस्फुटा वाक् यस्य सः] लोहलः; अस्पष्टभाषणकर्ता। ३८७

अव्यञ्जनः पुं. [नास्ति व्यञ्जनं शुभलक्षणं श्रृङ्गं यस्य] श्रृङ्गहीनपशुः; अस्फुटे त्रि., अनुद्भिन्नरजस्वलाचिह्ना कन्या; यथा—'असम्प्राप्तरजा गौरी प्राप्ते रजसि रोहिणी। अव्यञ्जना भवेत्कन्या कुचहीना च नग्निका'– इति पञ्चतन्त्रे। २७८

अव्यापारः पुं. [न व्यापारः] व्यापाराभावः; कर्म-विरतिः; क्षणः। ८५१

अशनम् क्ली. [अश्+ल्युट्] अन्नम्; भक्षणं (३२५); 'शीतं निर्झरवारि, पानमशनं कन्दाः सहाया मृगाः'—इति नागानन्दे। 'विशिष्टमिष्टसंस्कारैः पथ्यरिष्टैरसादिभिः। मनोज्ञं शुचि नात्युष्णं प्रत्यग्रमशनं हितम्'—इति सुश्रुतः। पुं. असनवृक्षः; पीतशालवृक्षः। ३१९

अशनाया स्त्री. [अशन+क्यच्] भोजनेच्छा; क्षुधा; बुभुक्षा। ३६१

अशनिः पुं.–स्त्री. [अश्नाति संहारं करोति। निप्रत्ययः] वज्रं; विद्युत्; 'अथवा मम भाग्यविप्लवाद् अशनिः कल्पित एष वेधसा'—इति रघुवंशे। ५६

अशुभम् क्ली. [न शुभम्, नञ्तत्पुरुषः। नास्ति शुभं यस्येति समासे वाच्यलिङ्गः] पापम्; अमङ्गलं, (८०४); 'न च किञ्चिदुवाचैनं शुभं वा यदि वाशुभम्। मा च वोऽस्त्वशुभं किञ्चित्सर्वथा पाण्डुनन्दनाः'—इति भारते। तद्युक्ते त्रि., यथा—'सर्वाशुभानां परिमोक्षकारि सम्पूजनं देववरस्य विष्णोः'—इति ज्योतिषतत्त्वे। 'अशुभं खञ्जनं दृष्ट्वा देवब्राह्मणपूजनम्। दानं कुर्वीत कुर्याच्च स्नानं सर्वौषधीजलैः'—इति तिथ्यादि-तत्त्वे। ६२७

अशोकः पुं. [नास्ति शोको यस्मात्] वृक्षविशेषः; शोकनाशः; विशोकः; वञ्जुलद्रुमः; वञ्जलः; मधु-पुष्पः; अपशोकः; कङ्केलिः; केलिकः; रक्तपल्लवः; चित्रः; विचित्रः; कर्णपूरः; सुभगः; दोहली; ताम्र-पल्लवः; रोगितरुः; हेमपुष्पः; रामा, वामाङ्घ्रि-घातनः; पिण्डीपुष्पः; नटः; पल्लवद्रुः; 'पादाघाता-दशोको विकसति वकुलो योषितामास्यमद्यैः'—इति साहित्यदर्पणे। 'पादाहतः प्रमदया विकसत्यशोकः शोकं जहाति वकुलो मुखशीधुसिक्तः।' त्रि. शोकरहितः; 'त्वामशोक हराभीष्ट मधुमाससमुद्भव। पिबामि शोक-सन्तप्तो मामशोकं सदा कुरु॥' पुं. दशरथस्य मन्त्री; यथा—धृष्टिर्जयन्तो विजयः सिद्धार्थोऽप्यर्थसाधकः। अशोको धर्मपालश्च सुमन्त्रश्चाष्टमोऽभवत्'—इति रामायणे। नृपतिविशेषः; 'अशोको नाम राजा-भून्महावीर्योऽपराजितः। तस्मादवरजो यस्तु राजन्न-श्वपतिः स्मृतः'—इति भारते। क्ली. पारदम्। १९२

अश्मः पुं.—पर्वतः; मेघः। वैदिकशब्दोऽयम्। १६९

अश्मगर्भः पुं. [अश्मेव गर्भो यस्य] हरिन्मणिः; मरकतम्; अश्मगर्भजम्। 'पन्ना' इति भाषा। ७५

अश्मा [न्] पुं. [अश्नुते इति, अशूङ व्याप्तौ, मनिन्] शिला; दृषत्। १६८

अश्मन्तकम् क्ली. [अश्मन्त+स्वार्थे कन्] चुल्ली; मल्लिकाच्छादनं; दीपाधाराच्छादनम्। ३१३

अश्मसारः पुं.—क्ली. [अश्मनः सारः] लौहः; 'प्राणाः सत्वरमश्मसारकठिना गच्छन्ति गच्छन्त्वमी'—इति साहित्यदर्पणे। १७१

अश्रम् क्ली. [अश्नुते व्याप्नोति नेत्रं कण्ठं वा। अश्+रक्] नेत्रजलं; 'तामप्यश्रं नवजलमयं मोचयिष्यस्यवश्यम्'—इति मेघदूते। 'सखीभिरश्रोत्तरमीक्षितामिमाम्'—इति कुमारसम्भवे। रक्तम्। ५१९

अश्रः पुं.—अस्रः; कोणः; अश्रिः। ७२७

अश्रान्तम् क्ली. [अविद्यमानं श्रान्तमत्र। नञ्समासः] नित्यम्; अनवरतं; श्रमरहिते त्रि., यथा—'अश्रान्तश्रुतिपाठपूतरसनाविर्भूतभूरिस्तवा जिह्मब्रह्ममुखौघविघ्नितनवस्वर्गक्रिया केलिना। पूर्वं गाधिसुतेन साभिघटिता मुक्ता नु मन्दाकिनी यत्प्रासाददुकूलवल्लिरनिलान्दोलैरखेलद्दिवि'—इति नैषधे १ सर्गः। ६९८

अश्रिः स्त्री. [अश्नाति अश्नुते वा। अश् भोजने, अशू व्याप्तौ वा। आश्रीयते प्रहारार्थम्, 'आङि श्रिहनिभ्यां ह्रस्वश्चेति' इण् स च डित्, डित्वाट् टिलोप आङो ह्रस्वश्च] गृहादेः कोणः; अस्त्रादेरग्रभागः। ७२७

अश्रु क्ली. [अश्नुते नेत्रमिति। अश्+रुक्। अथवा न श्रयति इति। न+श्रि+डुन्] चक्षुर्जलं; नेत्राम्बु; रोदनम्; अश्रम्; अस्रम्; अस्रु; वाष्पं; 'श्रुतदेहविसर्जनः पितुश्चिरमश्रूणि विमुच्य राघवः'—इति रघुवंशे। ५१९

अश्लीलः त्रि. [न श्रियं लाति, ला+क] ग्राम्यः। 'गँवारू' इति भाषा। १४२

अश्वः पुं. [अश्नुते मार्गं व्याप्नोति। अशू व्याप्तौ, अशूप्रुषिलटीति क्वन्] घोटकः; पीतिः; पीती; वीतिः; घोटः; तुरगः; तुरङ्गः; तुरङ्गमः; वाजी; वाहः; अर्वा; गन्धर्वः; हयः; सैन्धवः; सप्तिः; 'जितसिंहभया नागा यत्राश्वा बिलयोनयः'—इति कुमारसम्भवे। 'गच्छन्तमुच्चलितचामरचारुमश्वम्'—इति माघे। वृष्णिवंशीयो नृपतिश्चित्रकस्य पुत्रः; 'चित्रकस्याभवन् पुत्राः पृथुर्विप्रथुरेव च। अश्वग्रीवोऽश्वबाहुश्च सुपार्श्वकगवेषणौ॥ अरिष्टनेमिरश्वश्च'—इति हरिवंशे। दानवविशेषः; अश्वासुरः; 'चत्वारिंशद्दनोः पुत्राः ख्याताः सर्वत्र भारत। स्वर्भानुरश्वोऽश्वपतिर्वृषपर्वाजकस्तथा'—इति महाभारते। ४३६

अश्वतरः पुं.—स्त्री. [तनुः अश्वः। वत्सोक्षाश्वर्षभेभ्यश्च तनुत्वे' इति ष्टरच्। अश्वत्वं च जातिः। तत्सहचरितस्योक्तधर्मस्य तनुत्वम् अन्यपितृकत्वात्] अश्वायां गर्दभेन जातः पशुविशेषः; वेसरः; 'खच्चर' इति भाषा। 'हयानश्वतरानुष्ट्रांस्तथैव सुरभेः सुतान्'—इति रामायणे। 'सकृद्दुष्टं हि यो मित्रं पुनः सन्धातुमिच्छति। स मृत्युमुपगृह्णाति गर्भादश्वतरी यथा'—इति पञ्चतन्त्रे। पुं. वेगसरः; नागराजविशेषः; 'कम्बलाश्वतरौ चापि नागः कालीयकस्तथा। ऐरावतो महापद्मः कम्बलाश्वतरावुभौ'—इति महाभारते। गन्धर्वविशेषः; पुंवत्सः। ४५०

अश्वत्थः पुं. [अश्वत्थं जलमस्यास्ति। मूले सिक्तत्वात्। अर्श आद्यच्। अश्वत्थवत् कामकर्मवातेरितनित्यप्रचलितस्वभावत्वाद् आशुविनाशित्वेन श्वोऽपि स्थास्यतीति विश्वासानर्हत्वाच्च मायामयः संसारवृक्षः। शाल्मलिवटाद्यपेक्षया न श्वश्चिरं तिष्ठति, अश्व इव तिष्ठति वा। स्था गतिनिवृत्तौ। पृषोदरादित्वात् पूर्वोत्तरपदान्ताद्योः सकारयोस्तकारौ 'सुपिस्थः' इति क] वृक्षविशेषः; बोधिद्रुमः; चलदलः; पिप्पलः; कुञ्जराशनः; अच्युतावासः; चलपत्रः; पवित्रकः; शुभदः; बोधिवृक्षः; याज्ञिकः; गजभक्षकः; श्रीमान्; क्षीरद्रुमः; विप्रः; मङ्गल्यः; श्यामलः; गुह्यपुष्पः; सेव्यः; सत्यः; शुचिद्रुमः; धनुवृक्षः; 'अश्वत्थं वन्दयेन्नित्यं पूर्वाह्णे प्रहरद्वये। अत ऊर्द्ध्वं न वन्देत अश्वत्थं तु कदाचन॥'१९६

अश्वमुखः पुं. [अश्वस्य मुखमिव मुखं यस्य] किन्नरः; स्त्री. किन्नरी; किम्पुरुषस्त्री; 'न दुर्वहश्रोणिपयोधरार्ता भिन्दन्ति मन्दां गतिमश्वमुख्यः'—इति कुमारसम्भवे। ८२

अश्वारोहः त्रि. [अश्वमारोहतीति। अश्व+आ+रुह्+अण्] अश्वपृष्ठस्थितयोधा; सादी; अश्ववाहः; अश्ववारः; तुरगी; 'घोड़सवार' इति भाषा। ३९८

अश्विनौ पुं. द्विव. [प्रशस्ता अश्वाः सन्ति ययोः, इनि। यद्वा अश्विन्याम् जातौ। सन्धिवेलेत्यणो नक्षत्रेभ्यो बहुलमिति लुकि, लुक्तद्धितलुकीति ङीपो लुक्] अश्विनीकुमारौ; देवभिषजौ; 'त्वाष्ट्री तु सवितुर्भार्या वडवारूपधारिणी। असूयत महाभागा सान्तरीक्षेऽश्विनावुभौ'—इति महाभारते। ८४

अष्टापदम् पुं.-क्ली. [अष्टसु धातुषु पदं प्रतिष्ठा यस्य, पङ्क्तौ पङ्क्तौ अष्टौ पदानि यस्येति वा। अष्टनः संज्ञायामिति दीर्घः] स्वर्णं; धुस्तूरः; शारीणां फलकः; 'स रामकरमुक्तेन निहतो द्यूतमण्डले। अष्टापदेन बलवान् राजा वज्रधरोपमः'—इति हरिवंशे। पुं. [अष्टौ पदानि यस्य] शरभः; मर्कटः; लूता; चन्द्रमल्ली; क्रिमिः; कैलासपर्वतः; कीलकः; स्त्री. [अष्टौ पादा यस्याः। संख्यासुपूर्वस्येति पादस्यान्तलोपे पादोऽन्यतरस्यामिति ङीपि पादः पत्] चन्द्रमल्ली। १७३

अष्ठीवान् [त्] पुं.-क्ली. [अतिशयितमस्थि यस्मिन्। अस्थि+मतुप्, मस्य वः। 'आसन्दीवदष्ठीवदिति' निपातनादस्थिशब्दस्याष्ठीभावः] जानु। ५१५

असंशयम् क्ली. [नास्ति संशयो यत्र] अद्धा; निश्चितम्। ८८५

असकृत् अव्य. [न सकृत्, नञ्समासः] पुनः पुनः; वारं वारम्; 'अनेकस्यैकधा साम्यमसकृद्वाप्यनेकधा'—इति साहित्यदर्पणे। 'अन्नाद्येनासकृच्चैतान् गुणैश्च परिचोदयेत्'—इति मानवे। ७२४

असक्तम् अव्य. [सक्तस्य अभावः, सज्ज्, भावे क्त, नञाव्ययसमासः] अविरतम्; अनारतं; निरन्तरम्; असज्जनम्। ६९८

असती स्त्री. [न सती साध्वी, नञ्समासः] भ्रष्टा; व्यभिचारिणी; पुंश्चली; धर्षिणी; बन्धकी; कुलटा; इत्वरी; स्वैरिणी; पांशुला; धृष्टा; दुष्टा; धर्षिता; लङ्का; निशाचरी; त्रपारण्डा; 'आबाल्यादसती सती सुरपुरीं कुन्ती समारोहयत्'—इति धर्मविवेके। ४९६

असनः पुं. [अस्यते इति, अस्+ल्युट्] वृक्षविशेषः; महासर्जः; सौरिः; बन्धूकपुष्पम्; प्रियकः; नीलकः; बीजवृक्षः; प्रियसालकः; पियाशालः; 'प्रियविमानितमानवतीरुषां निरसनैरसनैरवृथार्थता'—इति माघे। 'बीजकः पीतसारश्च पीतशालक इत्यपि। बन्धूकपुष्पः प्रियकः सर्जकश्चासनः स्मृतः'—इति भावप्रकाशे। क्ली. क्षेपणं; 'तृणनिरसने विनियोगः।' १९९

असम्पूर्णम् त्रि. [न सम्पूर्णं, नञ्तत्पुरुषः] समाप्तिरहितम्; असमाप्तम्; अनिष्पन्नम्; अपूर्णम्। ७१३

असम्मतः त्रि. [न सम्मतः, नञ्समासः] अनभिमतः; प्रणाय्यः; 'असम्मतः कस्तव मुक्तिमार्गे पुनर्भवक्लेशभयात् प्रपन्नः'—इति कुमारसम्भवे। ३६६

असहनः पुं.-स्त्री. [न सहनः, नञ्समासः] शत्रुः; अधीरः; असहिष्णुः; 'कस्मात्प्राप्य तिरस्क्रियामसहनोऽप्यस्थादिति प्रस्तुते'—इति महावीरचरिते। 'प्रिया मुञ्चत्यद्य स्फुटमसहना जीवितमसौ'—इति रत्नावल्याम्। क्षमाराहित्यम्; 'अधिक्षेपापमानादेः प्रयुक्तस्य परेण यत्। प्राणात्ययेऽप्यसहनं तत्तेजः समुदाहृतम्'—इति साहित्यदर्पणे। ४५५

असारम् त्रि. [नास्ति सारो यस्य] साररहितं वस्तु; स्थिरांशशून्यं; फल्गु; निःसारं; निष्फलं; वात्तम्। ७७७

असिः पुं. [असतीति, अस् दीप्तौ, इन्] अस्त्रभेदः; खड्गः; निस्त्रिंशः; चन्द्रहासः; रिष्टिः; कौक्षेयकः; मण्डलाग्रः; करपालः; कृपाणः; प्रबालकः; भद्रात्मजः; रिष्टः; ऋष्टिः; धाराविषः; कौक्षेयः; तरवारिः; तलवारिः; तरवाजः; कृपाणकः; करवालः; कृपाणीः; शस्त्रः; विशसनः; 'पर्णशालामथ क्षिप्रं विकृष्टासिः प्रविश्य सः। वैरूप्यपौनरुक्तेन भीषणां तामयोजयत्'—इति रघुवंशे (१२-४०) 'असिर्विशसनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः। श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मपालो नमोऽस्तुते'—इति वाराहीतन्त्रम्। ४७२

असिक्नी स्त्री. [न सिता शुक्लकेशा। छन्दसि क्नमेव इति तस्य क्न्, नान्तत्वाद् ङीप् च] अवृद्धान्तःपुरचारिणी प्रेष्या; असिक्निका; नदीविशेषः; दक्षपत्नी; वीरणसुता; 'असिक्नीमावहत्पत्नीं वीरणस्य प्रजापतेः। सुतां सुतपसा युक्ताम्'—इति हरिवंशे। ४९१

असितः पुं. [न सितः शुक्लः। नञ्समासः] शनिग्रहः, कृष्णपक्षः (५०); त्रि. कृष्णः (७३४); श्यामः, 'असितगिरिनिभं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रम्'—इति पुष्पदन्तः। 'चकाशे विनिविष्टेन स सन्ध्येव निशाऽसिता'—इति रामायणे। कृष्णवर्णः; सूर्यवंशोद्भवभरतपुत्रो राजा; 'भरतात् तु महातेजा असितो समजायत'—इति रामायणे। व्यासशिष्यो मुनिः; 'असितस्यैकपर्णा तु देवलस्य महात्मनः'—इति हरिवंशे। पर्वतप्रभेदः; अद्रिभेदः; गिरिविशेषः; 'तत्र पुण्यह्रदः ख्यातो मैनाकश्चैव पर्वतः। बहुमूलफलोपेतस्त्वसितो नाम पर्वतः'—इति भारते। ४८

असिधेनुः स्त्री. [असिर्धेनुरिव यस्याः। असेर्धेनुसादृश्येन छुरिकायास्तद्वत्ससादृश्यम्] छुरिका; असिधेनुका। 'छुरी' इति भाषा। ४७३

असिपुत्रिका स्त्री. [असेः पुत्रीव] छुरिका; असिपुत्री। ४७३

असुः पुं. [अस्यते इति, अस्+उ] प्राणः; पञ्चप्राणेषु बहुवचनान्तः। असवः। 'तेजस्विनः सुखमसूनपि संत्यजन्ति'—इति नीतिशतके। १३४

असुरः पुं.-स्त्री. [अस्यति देवान् क्षिपति इति। अस्+उरन्। यद्वा न सुरः, विरोधे नञ्तत्पुरुषः। यद्वा नास्ति सुरा यस्य सः] सुरविरोधी; स तु कश्यपाद् दितिगर्भजातः। दैत्यः; दैतेयः; दनुजः; इन्द्रारिः; दानवः; शुक्रशिष्यः; दितिसुतः; पूर्वदेवः; सुरद्विट्, देवरिपुः; देवारिः; 'सुराः प्रतिग्रहाद्देवाः सुरा इत्यभिविश्रुताः। अप्रतिग्रहणात्तस्य दैतेयाश्चासुराः स्मृताः—इति रामायणे। [असति दीप्यते इति, उरन्] सूर्यः; राहुः। ५

असुहृत् पुं. [न सुहृद्, नञ्समासः] शत्रुः; रिपुः; वैरिः। ४५५

असृक् [ज्] क्ली. [न+सृज्+क्विप्] रक्तम्; 'पानमप्यसृजः क्षिप्रं स्वपीडायै जलौकसाम्'—इति दृष्टान्तशतकम्। 'रसासृग्मांसमेदोऽस्थिमज्जशुक्राणि धातवः। तस्य पित्तमसृङ्मासं दग्ध्वा रोगाय कल्पते'॥ मङ्गलग्रहः; कुङ्कुमं; विष्कुम्भादि-सप्तविंशति-योगान्तर्गतषोडशयोगः; यथा—'धनी कुरूपः कुमतिर्दुरात्मा, विदेशगामी रुधिरप्रकोपः। महाप्रलोभी पुरुषो बलीयान् असृक् प्रसूतौ किल यस्य जन्तोः'—इति कोष्ठीप्रदीपः। ६३२

असृग्धरा स्त्री. [असृक् शोणितं धरतीति। असृज्+धृ+अच्] चर्म। ६३०

असृग्वरा स्त्री.—त्वक्; चर्म। ६३०

असेचनकम् त्रि. [न सिच्यते मनो यस्मिन्। न सिच्+ल्युट्। संज्ञायां कन्] यस्य दर्शनात् तृप्तेरन्तो नास्ति तत्; अत्यन्तप्रियदर्शनम्; 'नयनयुगासेचनकं मानसवृत्त्यापि दुष्प्रापम्'—इति साहित्यदर्पणे। ३५०

असौम्यम् त्रि.—कठोरं; कठिनम्। ७७२

अस्तिमान् [त्] त्रि. [अस्ति विद्यमानं (धनं) विद्यते यस्य। अस्ति+मतुप्] धनी; धनवान्। ३६९

अस्त्रम् क्ली. [अस्यते क्षिप्यते यत्। अस्+ष्ट्रन्] प्रहारयोग्यद्रव्यमात्रम्; आयुधं, प्रहरण, शस्त्रं, खड्गः; धनुः; क्षेपणयोग्यबाणादि (४६४); 'प्रयुक्तमप्यस्त्रमितो वृथा स्यात्'—इति रघुवंशे। 'प्रत्याहतास्त्रो गिरिशप्रभावात्'—इति रघुवंशे। ४६२

अस्थागम् त्रि. [अस्थामस्थितिं गच्छति प्राप्नोति। न+स्था+गम्+ड] अगाधम्; अतिगभीरम्; अतलस्पर्शम्। ६४९

अस्थि क्ली. [अस्यते क्षिप्यते यत्। अस्+क्थिन्] शरीरस्थसप्तधात्वन्तर्गतधातुविशेषः; कीकसं; कुल्यं; मेदोजम्; 'मेदसोऽस्थि ततो मज्जा मज्जातः शुक्रसम्भवः'—इति सुश्रुतः। ६३२

अस्थिपञ्जरः पुं. [अस्थि पञ्जर इव] शरीरास्थिसमूहः; करङ्कः; कङ्कालः। ६३३

अस्निग्धम् त्रि. [न स्निग्धं, नञ्समासः] कठोरं; कठिनम्। ७८३

अस्रम् क्ली. [अस्यते क्षिप्यते यत्। अस्+र] रक्तं; रुधिरम्; 'पिपासादाहपित्तास्रयुक्तं पित्तज्वरं जयेत्'—इति शार्ङ्गधरः। 'क्षीणेऽस्रे मधुराकाङ्क्षा मूर्च्छा च त्वचि रूक्षता। शैथिल्यं च शिराणां स्याद्वातादुन्मार्गगामिता'—इति भावप्रकाशः। अस्रु; नेत्रजलं; 'कुर्यात्सास्रं शिराहर्षं तेनाक्ष्युद्वीक्षणाक्षमम्'—इति वाग्भटः। ६३२

अस्रः पुं. [अस्+रक्] कोणः; केशः। ७२१

अस्रुः क्ली. [अस्यते क्षिप्यते। अस्+रु] चक्षुर्जलं; नेत्राम्बु; रोदनम्; अस्रम्; अश्रु; वाष्पं; 'श्रुत्वा श्रुत्वास्रुधारां त्यजति'—इति कीचकवधः। 'रागास्रुवेदनाशान्तौ परं लेखनमञ्जनम्'—इति वाग्भटः। ५१९

अस्वप्नः पुं. [नास्ति स्वप्नो निद्रा यस्य] देवता; निद्राभावः; निद्राशून्यम्; 'अस्वप्नः सन्ततारुक् च मज्जास्थिकुपितेऽनिले'—इति माधवकरः। 'मज्जस्थोऽस्थिषु सौषिर्य्यमस्वप्नं स्तब्धतां रुजम्'—इति वाग्भटः। ४

अस्वाध्यायः पुं. [न विद्यते स्वाध्यायो वेदाध्ययनं यस्य] विधिपूर्वकवेदाध्ययनहीनः; निराकृतिः; अनध्यायः; अध्ययने निषिद्धदिनम्। ४०५

अहंयुः त्रि. [अहमस्यास्तीति। अहंशब्दात् 'अहंशुभमोर्युस्' इति युस्] अहङ्कारयुक्तः; गर्वान्वितः; अहङ्कारवान्; 'अहंयुनाथ क्षितिपः शुभंयुः'—इति भट्टिः। ३७९

अहः [न्] क्ली. — दिवा, दिनम्। १०६

अहङ्कारः पुं. [अहमिति ज्ञानं क्रियतेऽनेन। अहम् कृ+घञ्] अहङ्कृतिः, गर्वः, अभिमानः; मदः; स्मयः; अवलेपः; दर्पः; मानः; उद्धतमनस्कत्वं; समुन्नतिः [अहमित्यव्ययं तस्य करणम्। अहमिति किरति अत्रेति वा अहङ्कारः। करोतेः किरतेर्वा घञ् कारप्रत्यय इत्यन्ये] 'गर्वो मदोऽभिमानः स्यादहङ्कारस्त्वहंकृतिः। स्यादुद्धतमनस्कत्वे मानश्चित्तसमुन्नतिः॥ अहङ्कारस्य पर्याया इति केचित्प्रचक्षते'—इति शब्दरत्नावली। ७२२

अहङ्कारी [न्] त्रि. [अहङ्कारो विद्यते यस्येति। अस्त्यर्थे णिन् प्रत्ययेन निष्पन्नः] गर्वयुक्तः; अभिमानी; गर्वान्वितः; अहङ्कारवान्; अहंयुः; अहङ्कारान्वितः; गर्वितः; 'धीरोद्धतस्त्वहङ्कारी चलश्चण्डो विकत्थनः' –इति दशरूपके। ३७९

अहतम् क्ली. [हन्+क्त। ततो नञ्समासः] नवाम्बरं; नूतनवस्त्रम्; 'ईषद्धौतं नवं श्वेतं सदशं यन्न धारितम्। अहतं तद्विजानीयात् पावनं सर्वकर्मसु'–इति महाभारते। 'अहतैश्चैव वासोभिर्माल्यैरुच्चावचैरपि' 'अहतानि च वासांसि रथञ्च शुभलक्षणम्'—इति रामायणे। अनाहते त्रि.। ५५०

अहमहमिका स्त्री. [अहमहंशब्दोऽस्त्यत्र, वीप्सायां द्वित्वम्। व्रीह्यादित्वात् ठन् ततष्टाप्] परस्पराहङ्कारः; परस्परं परमपेक्ष्यापरस्यापरमपेक्ष्य परस्य योऽहङ्कारोऽहमेव श्रेष्ठोऽहमेव श्रेष्ठ इति मानः; 'इत्यञ्चाहमहमिकया तयोर्विवदतोः'—इति पञ्चतन्त्रे। ७८४

अहर्पतिः पुं. [अह्नः पतिः। पक्षे अहःपतिः] सूर्यः; 'द्यावापृथिव्योः प्रत्यग्रमहर्पतिरिवातपम्'—इति रघुवंशे। ३७

अहार्यः पुं. [हृ+ण्यत्, ततो नञ्समासः] पर्वतः; त्रि. [न हार्यं, नञ्समासः] हर्तुमशक्यम्; अहर्तव्यम्, अहरणीयम्; 'अहार्यं ब्राह्मणद्रव्यं राज्ञा नित्यमिति स्थितिः। तत्रात्मभूतैः कालज्ञैरहार्यैः परिचारकैः'—इति मनुः (९-१८९)। १६५

अहिः पुं. [आहन्तीति। आ+हन्+इण्। हन् हिंसागत्योः 'आङि श्रिहनिभ्यां ह्रस्वश्चेति' इण्,स च डित्। डित्वाट् टिलोप आङो ह्रस्वश्च] सर्पः; वृत्रासुरः; सूर्यः; पथिकः; राहुः; सीसकं; वप्रः; आश्लेषानक्षत्रं; खलः; 'विषधरतोऽप्यतिविषमः खल इति न मृषा वदन्ति विद्वांसः। यदहिर्नकुलद्वेषी स्वकुलद्वेषी पुनः पिशुनः'—इति वासवदत्तायाः प्रस्तावनाश्लोकः। ६४०

अहितः त्रि. [न हितः, नञ्समासः] शत्रुः; माघे (१-५७)। 'स ययौ प्रथमं प्राचीं तुल्यः प्राचीनबर्हिषा। अहितानिलोद्धूतैस्तर्जयन्निव केतुभिः'–इति रघुवंशे (४-२८) अपथ्यम्; 'एकान्ताहितानि दहनपचनमारणादिषु प्रवृत्तान्यग्निक्षारविषादीनि'—इति सुश्रुते। प्रतिकूलः; अशुभकरः; 'लोकस्तथाप्यहितमाचरतीति चित्रम्'—इति वैराग्यशतके। 'परोऽपि हितवान् शत्रुर्बन्धुरप्यहितः परः। अहितो देहजो व्याधिर्हितमारण्यमौषधम्'—इति हितोपदेशः। ४५५

अहिब्रध्नः पुं. [अहिः ब्रध्ने यस्य] शिवः; 'अजैकपादहिर्ब्रध्नः पिनाकी चापराजितः'—इति हरिवंशे। रुद्रविशेषः; 'सुरभिः कश्यपाद्रुद्रानेकादश विनिर्ममे। महादेवप्रसादेन तपसा भाविता सती॥ अजैकपादहिर्ब्रध्नस्त्वष्टा रुद्राश्च भारत!'—इति हरिवंशे। १३

अहीरणिः पुं. [अहीन् ईरयति दूरीकरोति, अहि+ईर्+अणि] द्विमुखसर्पः। ६४३

अहोरात्रः पुं. [अहश्च रात्रिश्च द्वयोः समाहारः। 'रात्राह्नाहाः पुंसि। अहः सर्वैकदेशेति' टच्] दिवानिशं; सूर्योदयद्वयपरिच्छिन्नत्रिंशन्मुहूर्तात्मकः कालः। १०५

अह्नाय अव्य. ['ह्नुङ अपनयने', बाहुलकाद्भावे घञ्, वृद्धिः। पृषोदरादित्वाद् वस्य यः। ततो नञ्समासः] झटिति; द्रुतम्; 'झट' इति भाषा। 'अह्नाय सा नियमजं क्लममुत्ससर्ज'—इति कुमारसम्भवे। 'अह्नाय तावदरुणेन तमो निरस्तम्'–इति रघुवंशे। 'स्वच्छन्दोच्छलदच्छकच्छकुहरच्छातेतराम्बुच्छटा मूर्च्छन् मोहमहर्षिहर्षविहितस्नानाह्निकाह्नाय वः'—इति काव्यप्रकाशे। ६९७

आ

आकरः पुं. [आकीर्यन्ते धातवोऽत्र। आङ+कॄ+अप्, यद्वा आकुर्वन्ति सङ्वीभूय कुर्वन्ति खननादिव्यवहारमत्रेति वा, आ+कृ+घ] धातुरत्नादेरुत्पत्तिस्थानं; खनिः;

खानिः; 'आकरे पद्मरागाणां जन्म काचमणेः कुतः'–इति हितोपदेशे। 'शैलेन्द्रो हिमवान् नाम धातूनामाकरो महान्'—इति रामायणे। समूहः; 'शब्दाकरकरग्राममर्थ-मण्डलमण्डलम्'—इति कविकल्पद्रुमः। श्रेष्ठः। १६९

आकर्षः पुं. [आकृष्यते इति। आ+कृष्+घञ्] अक्ष-क्रीडा; पाशकः; 'पासा' इति भाषा। सारिफलकः; 'आकर्षस्ते वाक्फलः सुप्रणीतो हृदि प्ररूढो मन्त्रपदः समाधिः'—इति महाभारते। इन्द्रियं; धनुरभ्यास-वस्तु; आकर्षणम्; [आकृष्यते अनेन, यथा—'आकर्ष इव श्वा आकर्षश्वः'—इति मुग्धबोधव्याकरणम्। आकर्षतुल्य इति ज्ञापनार्थम् इव शब्दः] अयस्कान्तः; निकषोपलः। ८४५

आकल्पः पुं. [आ+कृप्+घञ्] मण्डनं; वेशः; 'अकृत-कविधिसर्वाङ्गीनमाकल्पजातं विलसितपदमाढ्यं यौवनं सा प्रपेदे'—इति रघुवंशे। 'स्तोकाप्याकल्परचना विच्छित्तिः कान्तिपोषकृत्'—इति साहित्यदर्पणे। रोगः आकल्पं; कल्पपर्यन्ते अव्ययम्; 'आकल्पं नरकं भुङ्क्ते'—इति स्मृतिः। ५३९

आकल्यम् [कलयति चेष्टाम्। अघ्न्यादयश्चेति यक्, कल्यः नीरोगः। न कल्यः अकल्यः; अकल्यस्य भावः] रोगः; गदः; मान्द्यम्। ६००

आकस्मिकम् त्रि. [अकस्मात् भवम्, अकस्मात्+ठञ्] अकस्माद्भवं; हठाज्जातम्; 'आकस्मिकप्रत्यवभासां च देवीं वाचमानुष्टुभेन छन्दसा परिणतामभ्युदैरयत्'—इति उत्तररामचरिते। ८८४

आकारः पुं. [आ+कृ+घञ्] इङ्गितम्; अभिप्राया-नुरूपचेष्टाविष्करणं; सङ्केतः; 'तस्य संवृतमन्त्रस्य गूढाकारेङ्गितस्य च'—इति रघुवंशे। आकृतिः; 'आकारैरिङ्गितैर्गत्या चेष्टया भाषितेन च'—इति हितोपदेशे। मूर्तिः; 'आकारसदृशप्रज्ञः'—इति रघौ (१-१५)। ७७२

आकारणम् क्ली. [आङ+कृ+णिच्+ल्युट्] आह्वा-नम्; 'ललकार' इति भाषा। 'तैश्च मणिभद्राकारणाय कश्चित् प्रेषितः'—इति पञ्चतन्त्रम्। १५४

आकुलम् त्रि. [आङ+कुल्+क] व्याकुलं; व्यस्तम्; अप्रगुणम्; 'विभवगुरुभिः कृत्यैस्तस्य प्रतिक्षणमाकुला'—इति शाकुन्तले। ८०२

आकुलकम् त्रि. [आङ+कुल्+क+स्वार्थे कन्] व्याकुलं; व्यस्तम्; अप्रगुणम्; आकुलम्। १३१

आकूतम् क्ली. [आङ+कूङ+क्त] अभिप्रायः; आशयः; तात्पर्यम्, इच्छा; 'हसन्नेत्रार्पिताकूतं लीला-पद्मं निमीलितम्'—इति साहित्यदर्पणे। 'हृदय-निहितं भावाकूतं वमद्भिरिवेक्षणैः'—इति शाकु-न्तले। ७६२

आक्रन्दः पुं. [आङ+क्रन्द्+घञ् अच् वा] दारुण-युद्धम्; मित्रं; भ्राता; रोदनं; 'तासामाक्रन्दशब्देन सहसोद्भ्रान्तलोचनः'—इति रामायणे। ध्वनिः; 'तत्रैव निशि नागानामाक्रन्दः श्रूयते महान्'—इति रामायणे। नाथः; 'पार्ष्णिग्राहं च संप्रेक्ष्य तथाक्रन्दं च मण्डले'—इति मानवे। आह्वानम्। ४५३

आक्रान्तः त्रि. [आङ+क्रम्+क्त] आक्रमणविशिष्टः; कृताक्रमणः; अधिक्रान्तः; अभिभूतः; पराभूतः; वशीभूतः; 'न पाषण्डिगणाक्रान्ते नोपसृष्टेऽन्त्यजै-र्नृभिः'—इति मनुः। ७८१

आक्रोशः पुं. [आङ+क्रुश्+घञ्] क्रोधकर्तव्यनिश्चयः; आक्षेपः; अभिषङ्गः; शापः; 'आक्रोशं मम मातुश्च प्रमार्ज्य पुरुषर्षभ'—इति रामायणे। १४९

आक्षेपः पुं. [आङ+क्षिप्+घञ्] अपवादः; आक्रो-शनम्; अभिशापः; अभिषङ्गः; अभीषङ्गः; भर्त्सनं; 'क्षान्तेवाक्षेपरूक्षाक्षरमुखरमुखान् दुर्मुखान् दूषयन्तः; सन्तः साश्चर्यचर्या जगति बहुमताः कस्य नाभ्यर्थनीयाः'—इति नीतिशतके। आकर्षणं; 'नवपरिणयलज्जाभूषणां तत्र गौरीं, वदनमपहरन्तीं तत्कृपाक्षेपमीशः'—इति कुमारसम्भवे (७-९५)। विन्यासः; स्थापनं; 'गोरोचना-क्षेपनितान्तगौरे, तस्याः कपोले परभागलाभात्'—इति कुमारसम्भवे (७-१७)। अपहरणं; 'यत्रांशुकाक्षेपविल-ज्जितानाम्'—कुमारसम्भवे। उपस्थितिः; 'मुख्यार्थस्ये-तराक्षेपो वाक्यार्थेऽन्वयसिद्धये'—इति साहित्यदर्पणम्। काव्यालङ्कारः; 'आक्षेपोऽन्यो विधौ व्यक्ते निषेधे च तिरोहिते।' 'आक्षेपे हतकः स्मृतः' (३७८)। १४९

आखण्डलः पुं. [आङ+खण्ड्+कलच्] इन्द्रः; 'आख-ण्डलः काममिदं बभाषे'—इति कुमारसम्भवे। ५३

आखातम् पुं.—क्ली. [आङ+खन्+क्त] अखातं; देवखातम्। ६७५

आखुः पुं. [आङ+खन्+कु] मूषिकः; खनकः; मूषकः; 'कृत्वाखुर्विवरं स्वयं निपतितो नक्तं मुखे भोगिनः।' शूकरः; चौरः; देवताडवृक्षः। 'आखोर्मांसं सपदि बहुधा खण्डखण्डीकृतं यत्, तैले पाच्यं द्रवति निरतं यावदेतन्न सम्यक्'—इति वैद्यके। २३५

आखुरथः पुं. [आखुः मूषिकः रथो वाहनं यस्य] गणेशः। १८

आखेटकम् पुं.-क्ली. [आङ+खिट्+ण्वुल्] मृगया, आखेटः; 'शिकार' इति भाषा। 'आखेटकस्य धर्मेण विभवाः स्युर्वशे नृणाम्। नृप्रजाः प्रेरयत्येको हन्त्यन्योऽत्र मृगानिव'—इति पञ्चतन्त्रे। ४३५

आख्या स्त्री. [आङ+ख्या+अङ्+टाप्] नाम; संज्ञा; 'उमेति मात्रा तपसो निषिद्धा पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम'—इति कुमारसम्भवे (१-२६)। १५२

आख्यानम् क्ली. [आङ+ख्या+ल्युट्] कथनं; 'कथितं षष्ट्युपाख्यानं ब्रह्मपुत्र यथागमम्। देवी मङ्गलचण्डी या तदाख्यानं निशामय'—इति ब्रह्मवैवर्ते १५२

आख्यायिका स्त्री. [आङ+ख्या+ण्वुल्+टाप्] उपलब्धार्थकथा; इतिहासः; उपन्यासः; 'प्रबन्धकल्पनां स्तोकसत्यां प्राज्ञाः कथां विदुः। परस्पराश्रया या स्यात्सा मताख्यायिका क्वचित्॥' 'आख्यायिका कथावत्स्यात्कवेर्वंशादिकीर्तनम्'—इति साहित्यदर्पणे। १५२

आगः [स्] क्ली. [इ+असुन्+आगादेशः] पापम्; अपराधः; 'सहिष्ये शतमागांसि सूनोस्त इति यत्त्वया'—इति माघे।१४९

आगन्तुः त्रि. [आङ+गम्+तुन्] अतिथिः; आगमनशीलः; अनियतः; 'अकस्मादागन्तुना सह विश्वासो न युक्तः'—इति हितोपदेशे। आकस्मिकरोगादिः; 'आगन्तवोऽपि शरीरशल्यव्यतिरेकेण यावन्तो भावा दुःखमुत्पादयन्ति'—इति सुश्रुतः। ३५८

आगमः पुं. [आ+गम्+अच्] शास्त्रमात्रं; वेदः; 'आगमादिव तमोपहादितः सम्भवन्ति मतयो भवच्छिदः'—इति किराते। आगमनम्; अर्थादीनामागमः; 'नित्यव्यया प्रचुरनित्य (रत्न) धनागमा च'—इति नीतिशतके। प्राप्तिः; उपार्जनं; 'नाधर्मेणागमः कश्चिन्मनुष्यान् प्रति वर्तते'-इति मनुः। साक्षिपत्रादिः; प्रकृतिप्रत्ययानुपघाति कार्यं; शास्त्रज्ञानं; श्रुतवत्ता; 'आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः।' 'तामर्पयामास च शोकदीनां तदागमप्रीतिषु तापसीषु'—इति रघौ। ९

आगूः [र्] स्त्री.-आगूः; प्रतिज्ञा। ७१५

आगूः स्त्री. [आ+गमेः क्विपि 'गमः क्वावि'त्यन्तलोपे 'ऊ च गमादीनामि' त्यूकारादेशः] प्रतिज्ञा। ७१५

आग्नेयी स्त्री. [अग्नि+ढक्+ङीप्] स्वाहा; अग्निपत्नी; अग्निकोणम्। ६६

आघाटः पुं. [आङ+घट्+घञ्] सीमा; अपामार्गः। २५९

आघारः पुं. [आङ+घृ+घञ्] घृतम्। २७५

आङ्गिरसः पुं. [अङ्गिरस्+अण्] वृहस्पतिः; 'अध्यापयामास पितॄन् शिशुराङ्गिरसः कविः। पुत्रका इति होवाच ज्ञानेन परिगृह्य तान्'-इति मनुः (२-१५१)।४७

आचमनम् क्ली. [आङ+चम्+ल्युट्] वैधकर्मारम्भात् पूर्वं वारत्रयं जलपानपूर्वकं यथाक्रमाष्टाङ्गस्पर्शरूपशुद्धिजनकक्रिया; उपस्पर्शः; आचमः; शुचिप्रणीः; उपस्पर्शनम्। ४०८

आचारः पुं. [आङ+चर्+घञ्] व्यवहारः; चरितं; चरित्रं; चारित्रं; चरणं; वृत्तं; शीलं; विचारः; 'आचारेणावसन्नोऽपि पुनर्लेखयते यदि। सोऽभिधेयो जितः पूर्वं प्राङ्न्यायस्तु स उच्यते'—इति व्यवहारतत्त्वम्। चरित्रम्; 'आचारलाजैरिव पौरकन्याः'—इति रघुवंशे (२-१०)। ८५२, ८६९

आचारातिक्रमः पुं. [आचारस्य अतिक्रमः] अशिष्टाचारः; असद्व्यवहारः; अयोग्यक्रिया। ७८३

आचितः त्रि. [आङ्+चि+क्त] संगृहीतः; छन्नः; एकत्रसन्निवेशितः; आकीर्णः; व्याप्तः; ग्रथितः; गुम्फितः; 'कचाचितौ विष्वगिवागजौ गजौ'—इति भारविः। 'अर्द्धाचिता सत्वरमुत्थितायाः पदे पदे दुर्निमिते गलन्ती'—इति रघुवंशे। ७०२

आच्छादः पुं. [आङ्+छद्+घञ्] वस्त्रम्; आच्छादनम्। १२१

आच्छादनम् क्ली. [आङ्+छद्+ल्युट्] संपिधानम्, अपवृतिमात्रं; वलभी; वस्त्रं (५४८); 'तस्मादेताः सदा पूज्या भूषणाच्छादनाशनैः'—इति मनुः। ३०३

आच्छोवनम् क्ली. [आङ+छिद्+ल्युट् ततः पृषोदरादित्वाद् इत ओत्] मृगया; आखेटः। ४६५

आजानेयः पुं.– स्त्री. [अज्+घञ्+आज+आनेय] कुलीनाश्वः; श्रेष्ठघोटकः; 'शक्तिभिर्भिन्नहृदयाः स्खलन्तोऽपि पदे पदे। आजानन्ति यतः संज्ञामाजानेयास्ततः स्मृताः'—इति अश्वतन्त्रम्। ४३९

आजिः स्त्री. [अज्+इन्] युद्धं; रणः; संग्रामः; समरः; 'आवृण्वती लोचनमार्गमाजौ रजोऽन्धकारस्य विजृम्भितस्य'—इति रघुवंशे (७-४२)। आक्षेपः; क्षणं; समानभूमिः। ४५६

आजीवः पुं. [आङ+जीव्+घञ्] जैनः (५७०); जीविका; वृत्तिः; 'बहुमूलफलो रम्यः स्वाजीवः प्रतिभाति मे'—इति रामायणे। ३४५

आज्यम् क्ली. [आङ्पूर्वात् अञ्जेः संज्ञायामिति क्यप्] घृतं; श्रीवासः; यागक्रियादिसाधनं तैलदुग्धादिकमपि आज्यशब्देनोच्यते। यदुक्तं गृह्यसंग्रहे—'घृतं वा यदि वा तैलं पयो वा दधि यावकम्। आज्यस्थाने नियुक्तानामाज्यशब्दो विधीयते'—इति गृह्यसंग्रहे। 'तत्रार्चितो भोजपतेः पुरोधा हुत्वाग्निमाज्यादिभिरग्निकल्पः'—इति रघुवंशे (७–२०)। २७५

आटिः पुं. [आङ+अट्+इन्] पक्षिविशेषः; 'शरालि' इति ख्यातः। 'टिटिहिरी' इति भाषा। २४९

आटोपः पुं. [आङ+टुप्+घञ्] दर्पः, गर्वः, सम्भ्रमः, संरम्भः, 'विषं भवतु मावाभूत् फटाटोपो भयङ्करः'—इति पञ्चतन्त्रे। 'साटोपमुर्वीमनिशं नदन्तः'–इति माघे। 'आटोपहृल्लासवमीगुरुत्वस्तैमित्यमावाहकफप्रसेकैः' —इति माधवकरः। ७२२

आडम्बरः पुं. [आङ+दम्+वरच्, ततः द स्थाने ड। आडम्ब्यते 'डबि क्षेपे' घञ्, भावे वा। आडम्बं राति रमयति वा, आतोनुपेति क, मूलविभुजेति वा क। आडम्बयति वा, बाहुलकादरन्] तूर्यरवः; पटहरवः; गजेन्द्रगर्जनं; प्रपञ्चः; पटहः; आरम्भः; पक्ष्मः; दर्पः; क्रोधः; हर्षः; आयोजनम्; एकत्रसन्निवेशः; 'धातः किं नु विधौ विधातुमुचितो, धाराधराडम्बरः'—इति भामिनीविलासे। युद्धम्; रवार्थे यथा,–'असारस्य पदार्थस्य प्रायेणाडम्बरो महान्। नहि तादृग्ध्वनिः स्वर्णे यथा कांस्ये प्रजायते।' ८४१

आढकी स्त्री. [आङ+ढौकृ गतौ, अच्, गौरादित्वाद् ङीप्] शमीधान्यविशेषः; तुवरी; वर्या; करवीरभुजा; वृत्तबीजा; पीतपुष्पा; 'अरहर' इति भाषा। 'आढकी तुवरी चापि सा प्रोक्ता शणपुष्पिका। आढकी तुवरी रूक्षा मधुरा शीतला लघुः। ग्राहिणी वातजननी वर्ण्या पित्तकफास्रजित्'—इति भावप्रकाशः। 'मृदुः कषाया च सरक्तपित्तं निहन्ति कासानतिवातला स्यात्। गुल्मज्वरारोचककासछर्दिहृद्रोगदुर्नामहराढकी स्यात्'—इति हारीतः। 'आढकी कफपित्तघ्नी वातला'—इति चरकः। 'आढकी कफपित्तघ्नी नातिवातप्रकोपनी'—इति सुश्रुतः। ५८४

आढ्यः त्रि. [आढौकते, आ, ढौकृ गतौ, बाहुलकाड् डय] धनवान्; युक्तः; विशिष्टः; अन्वितः; यथा—धनाढ्यः; गुणाढ्यः—'चत्वारस्तूपचीयन्ते विप्र आढ्यो वणिङ् नृपः'—इति मनुः (८–१६९)। 'आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया'—इति भगवद्गीता। ३५६

आतङ्कः पुं [आङ+तकि+घञ्] रोगः; 'दृष्ट्वा पथि निरातङ्कं कृत्वा वा ब्रह्महा शुचिः'—इति याज्ञवल्क्यः। सन्तापः; शङ्का; 'आतङ्कश्रमसाहसव्यतिकरोत्कम्पः क्षणं सह्यताम्'—इति महावीरचरिते। मुरजध्वनिः; ज्वरः; 'नानातन्त्रविहीनानां भिषजामल्पमेधसाम्। सुखं विज्ञातुमातङ्कमयमेव भविष्यति—इति माधवकरः। 'ज्वरो विकारो रोगश्च व्याधिरातङ्क एव च। एकार्थनामपर्यायैर्विविधैरभिधीयते'—इति चरकः। रोगार्थे उदाहरणम्—'प्रश्नेन च विजानीयाद् देशं कालं जातिं सात्म्यमातङ्कसमुत्पत्तिं वेदनासमुच्छ्रायं बलमित्यादि'—इति सुश्रुते। ६००

आतपः पुं [आङ+तप्+अच्] रौद्रं; प्रकाशः; द्योतः; दिनज्योतिः; सूर्यालोकः; दिनप्रभा; रविप्रकाशः; प्रद्योतः; तमारिः; तापनः; द्युतिः; 'उजाला, घाम' इत्यादि भाषा। 'आतपः कटुको रूक्षः स्वेदमूर्च्छातृषावहः। दाहवैवर्ण्यजननो नेत्ररोगप्रकोपनः ॥' 'आतपः पित्ततृष्णाग्निस्वेदमूर्च्छाभ्रमास्रकृत्। दाहवैवर्ण्यकारी च'—इति सुश्रुतः। 'कथमातपे गमिष्यसि परिबाधाकोमलैरङ्गैः'

—इति शाकुन्तले। 'मृगाः प्रचण्डातपतापिता भृशम्'—इति ऋतुसंहारे (११)। ४८

आतपत्रम् क्ली. [आङ+तप्+अव्=आतप+त्रै+क] छत्रम्; आतपत्रकम्; आतपवारणम्; 'राज्यं स्वहस्तधृतदण्डमिवातपत्रम्'—इति शाकुन्तले। 'पाण्डरेणातपत्रेण ध्रियमाणेन मूर्द्धनि'—इति रामायणे। ४२३

आतरः पुं. [आङ+तॄ+अप्, आतरत्यनेन, 'पुंसि संज्ञायामिति' घ] नद्यादितरणाय देयकपर्दकादिः, तरपण्यम्; 'उतराई','नौकाभाड़ा' इत्यादि भाषा। ६७१

आतापी [न्] पुं. [आङ+तप्+णिनि] आतायी; चिल्लः; पक्षिभेदः; 'चील' इति ख्यातः। असुरभेदः। २५०

आतायी [न्] पुं. [आङ+ताय्+णिनि] चिल्लः, आतापी। २५०

आतिः पुं. [अत्+इण्] प्लवजातिकः पक्षी; शरारिः; आटिः; आडिः; चिल्लः। २४९

आतिथेयः त्रि. [अतिथि+ढञ्। अतिथौ साधुः] अतिथिसेवाकारकः; अतिथिभक्षणादिद्रव्यं; 'प्रत्युज्जगामातिथिमातिथेयः'—इति रघुवंशे (५-२)। 'तंमातिथेयो बहुमानपूर्वया सपर्यया'—इति कुमारसम्भवे (५-३१)। 'दैवपित्र्यातिथेयानि तत्प्रधानानि यस्य तु'—इति मनुः (३-१८)। ३५९

आतिथेयी स्त्री.– आतिथ्यम्, अतिथ्यर्थवस्तु। ३५९

आतिथ्यम् त्रि. [अतिथि+ञ्य] अतिथ्यर्थवस्तु; अतिथिभक्षणादिद्रव्यम्; अतिथिसेवा; 'अरावप्युचितं कार्यमातिथ्यं गृहमागते'—इति हितोपदेशे। पुं. आतिथ्यः; अतिथिः। ३५९

आतोद्यम् क्ली. [आङ+तुद्+ण्यत्] वाद्यं तच्चतुर्विधम्। वीणादिवाद्यं ततं १, मुरजादिवाद्यम् आनद्धं २, वंशादिवाद्यं शुषिरं ३, कांस्यतालादिवाद्यं घनम् ४। 'स्त्रजमातोद्यशिरो निवेशिताम्'—इति रघुवंशे (८-३४)। 'आतोद्यं ग्राहयामास समत्याजयदा युधम्'—इति रघुवंशे (१५-८८)। ९३

आत्मजः पुं. [आत्मन्+जन्+ड। 'आत्मा वै जायते पुत्र' इति श्रुतेः] पुत्रः; आत्मजन्मा; 'तस्यार्थे सर्वभूतानां गोप्तारं धर्ममात्मजम्'—इति मनुः (११-१४)। 'दिशः प्रस्थापयामास दिदृक्षुर्जनकात्मजाम्'—इति रामायणे। ४९७

आत्मभूः पुं. [आत्मन्+भू+क्विप्) विष्णुः; कामदेवः (३३); ब्रह्मा; शिवः; 'सर्वज्ञस्त्वमविज्ञातः सर्वयोनिस्त्वमात्मभूः'—इति रघुवंशे (१०-२०)। २४

आत्मा [न्] पुं. [अतति सन्ततभावेन जाग्रदादिसर्वावस्थासु अनुवर्तते। 'अत् सातत्यगमने'+मनिन्] जीवः; स्वभावः (७८२); यत्नः; धृतिः; बुद्धिः; ब्रह्म; देहः; मनः; परव्यावर्तनं; पुत्रः; अर्कः; हुताशनः; वायुः; 'यदा यदात्मा कृतिमानयं भवेत् तदामनस्तत्त्वधितिष्ठतीन्द्रियम्। ततो मनोऽधिष्ठितमिन्द्रियं घटे प्रवर्तते संशयबुद्धिसम्भवे'—इति वैद्यकवादार्थदर्पणम्]। १३४

आत्मीयः त्रि. [आत्मन्+छ] स्वकीयः; अन्तरङ्गः; 'प्रसादमात्मीयमिवात्मदर्शः'—इति रघुवंशे। 'किमिदं द्युतिमात्मीयां न बिभ्रति यथा पुरा'—इति कुमारसम्भवे (२-१९)। ५०९

आत्रेयिका स्त्री. [अत्रि+ढक्+कन्+टाप्] ऋतुमती; पुष्पवती स्त्री; आत्रेयी; रजस्वला। ४८८

आदर्शः पुं. [आङ+दृश्+घञ्] दर्पणम्; 'धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च। यथोल्वेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्'—इति भगवद्गीता। ५५५

आदिः पुं. [आङ+दा+कि] पूर्वः; प्रथमः; पदान्ते गणसूचकः; यथा—इत्यादिः। प्रारम्भः; प्राक्सत्ता; नियतपूर्ववृत्ति कारणम्; उत्पत्तिहेतुः; सामीप्ये; व्यवस्थायां; प्रकारे; अवयवार्थे; 'सामीप्येऽथ व्यवस्थायां प्रकारेऽवयवे तथा। आदिशब्दं तु मेधावी चतुर्ष्वर्थेषु लक्षयेत्।' 'अप एव ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत्'—मानवे (१-८)। 'जगदादिरनादिस्त्वम्'—इति कुमारसम्भवे (१-९)। ७०७

आदित्यः पुं. [अदितेरादित्यस्य वा अपत्यम्+ण्य] देवः; अदितिपुत्रः; आदितेयः; सूर्यः (३५)। द्वादशादित्यगणे बहुवचनान्तः; तत्प्रत्येकनामानि—विवस्वान् १, अर्यमा २, पूषा ३, त्वष्टा ४, सविता ५, भगः ६, धाता ७, विधाता ८, वरुणः ९, मित्रः १०, शक्रः ११, उरुक्रमः १२। एते कश्यपाद् अदित्यां भार्यायां जाताः। कल्पान्तरे त्वष्टृकन्या संज्ञा आदित्यपत्नी आदित्यस्य तेजः सोढुमसमर्था। अतः तस्याः पितृकृतादित्यद्वादशखण्डा द्वादशादित्याः, तेषां द्वादशमासेषु एकैकस्योदयः—इति पुराणम्। आदित्यमण्डलस्थितो

हिरण्मयो विष्णुः। 'आदित्यस्य गतागतैरहरहः संक्षीयते जीवितम्'—इति शान्तिशतके (४-२४)। 'आदित्य-चन्द्रावनिलोऽनलश्च द्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च'—इति महाभारते। अर्कवृक्षः। ४

आदिमम् त्रि. [आदौ भवम्, 'अग्रादिपश्चाड् डिमच्', यद्वा 'मध्यान्म' इत्यत्रादेशेति वचनान् म] आद्यम्, प्रथमभववस्तु; 'एते पञ्चान्यथासिद्धा दण्डत्वादि-कमादिमम्। आदिमः श्येनशैलादिसंयोगः परिकीर्तितः' —इति भाषापरिच्छेदे। ७७५

आदीनवः पुं. [दीङ क्षये, भावे क्त, स्वादय ओदितः, ओदितश्चेति नत्वम्, आदीनस्य वानम्। घञर्थे क इति बाहुलकात् वातेः क] दोषः; दुरन्तः; 'यद्वासुदेवेना-दीनमनादीनवमीरितम्'—इति माघे (२-२२)। क्लेशः। ७७१

आदेशी [न्] पुं. [आङ+दिश्+णिनि] दैवज्ञः; गणकः; त्रि. आदेशकर्ता; उपदेष्टा; 'कपोलपाटलादेशि बभूव रघुचेष्टितम्'—इति रघुवंशे (४-६८)। ४०३

आदेष्टा [ऋ] पुं. [आदिशति ऋत्विगादीन् यागादिष्विष्टसम्पादनाय प्रेरयति। आङ+दिश् अति-सर्जने+तृच्] यागविषये ममेष्टसम्पादनाय यथार्थं कर्म कुर्विति ऋत्विजामादेशकः; व्रती; यष्टा; यजमानः; अन्वादेष्टा; याजकः; आदेशकर्ता; उपदेष्टा। ४२०

आद्यः त्रि. [आदौ भवः, 'दिगादिभ्यो यत्', यद्वा अद्यते यः। अद् + कर्मणि ण्यत्] प्रथमः; 'तोषितोऽहं नृपश्रेष्ठ त्वयेहाद्येन कर्मणा'। ७७५

आद्यूनः त्रि. [आङपूर्वाद् दीव्यतेरकर्मत्वात् क्त, 'दिवो-विजिगीषायामिति' निष्ठातस्य नत्वं, 'यस्य विभाषेति' नेट्, च्छ्वोरित्यूठ्] औदरिकः; 'पेटू' इति भाषा। 'आद्यूनः स्यादौदरिके विजिगीषाविवर्जिते'—इत्यमरः। 'आद्यूनः सद्गृहिण्येव प्रायो यष्ट्यावलम्बितः'—इति किराते (११-५)। आदिहीनः। ३५०

आधारः पुं. [आध्रियन्ते अस्मिन् आधारः,'अध्यायन्यायेति' सूत्रे अवहाराधारेत्युपसंख्यानादधिकरणे घञ्। व्याकरण-शास्त्रे अधिकरणकारकम्। 'आधारोऽधिकरणम्'] तडागः; आशयः (७९८); अधिकरणम्; आल-बालम्; अम्बुधारणं; क्षेत्रादिसेकार्थं सेतुना बहुनालं जलं निरुद्धय यत्र स्थाप्यते स आधारः बद्धकन्दरादिः; 'बाँध' इति ख्यातः। सस्याद्यर्थं जलबन्धनं; क्षेत्रादिसेकार्थं जलाधारस्थानम्; 'आधारबन्धप्रमुखैः प्रयत्नैः संवर्द्धि-तानां सुतनिर्विशेषम्। कच्चिन्न वाय्वादिरुपप्लवो वः श्रमच्छिदामाश्रमपादपानाम्'—इति रघुवंशे (५-६)। 'तथात्मकोऽप्यनेकस्तु जलाधारेष्विवांशुमान्'—इति याज्ञवल्क्यः। ६७६

आधिः पुं. [आङ+धा+कि] मनःपीडा; 'आधि-व्याधिपरीताय अद्य श्वो वा विनाशिने। को हि नाम शरीराय धर्मापेतं समाचरेत्'—इति हितोपदेशे। 'आधिव्याधिशतैर्जनस्य विविधैरारोग्यमुन्मूल्यते'—इति वैराग्यशतके। ५३५

आधोरणः पुं. [आधोरयति, 'धोरृगतिचातुर्ये', कर्तरि ल्यु] हस्तिपकः; 'महावत' इति भाषा। 'आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः'—इत्यमरः। 'आधो-रणानां गजसन्निपाते शिरांसि चक्रैर्निशितैः क्षुराग्रैः'—इति रघुवंशे (७-४६)। २२५

आनकः पुं. [आङ+अन्+ण्वुल्] पटहः; भेरी; मृदङ्गः; 'ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः'—इति भगवद्गीता (१-१३)। शब्दयुक्तमेघः। ९७

आनकदुन्दुभिः पुं. [आनकाः दुन्दुभयो देववाद्यविशेषाः दध्वनुः यस्य जन्मनि। वसुदेवजन्मनि देवा दुन्दुभिध्वनिं चक्रुः] वसुदेवः; कृष्णपिता; 'वसुदेवो महाबाहुः पूर्वमानकदुन्दुभिः। जज्ञे यस्य प्रसूतस्य दुन्दुभ्यः प्रानदन् दिवि। आनकानां च संह्लादः सुमहानभवद्दिवि'—इति हरिवंशे। २७

आननम् क्ली. [आनिति अनेन। आङ+अन्+ल्युट्] आस्यं; लपनं; वक्त्रं; मुखं; 'तदाननं मृत्सुरभि क्षिती-श्वरः'—इति रघुवंशे (३-३)। ५१८

आनन्दः पुं. [आङ+नन्द्+घञ्] आह्लादः; आनन्दथः; शर्म; शातं; सुखं; मुत्; प्रीतिः; प्रमोदः; हर्षः; प्रमदः; आमोदः; संमदः; 'यत्रानन्दाश्च मोदाश्च यत्र स्निग्धाश्च सम्पदः'—इति उत्तरचरिते। 'आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन'—इति तैत्तिरीये। वासुदेवस्य बलविशेषः; त्रि. [आनन्द+अर्श आदित्वा-दच्] आनन्दविशिष्टः; हर्षयुक्तः; सुखी। १२३

आनायः पुं. [आङ+नीञ्+घञ्] जालम्। ५९४

आनाहः पुं. [आङ+नह्+घञ्] दैर्घ्यं; दीर्घत्वम्;

आयामः; आरोहः; मूत्रपूरीषरोधकरोगः; विबन्धः; विष्टम्भः; मलरोधनः; 'आनाहार्तं ततो दृष्ट्वा तत्सैन्यमसुखार्दितम्'—इति महाभारते। 'यस्य वातः प्रकुपितः कुक्षिमाश्रित्य तिष्ठति। नाधो व्रजति नाप्यूर्ध्वं चानाहस्तस्य जायते'—इति चरकः। ७८६

आनुपूर्वी स्त्री.– क्ली. [अनुपूर्व+अण्,ङीप्] परिपाटी; अनुक्रमः; 'षडानुपूर्व्या विप्रस्य क्षत्रस्य चतुरोऽवरान्'— मनुः (३–२३)। 'आनुपूर्व्यान् स धर्मज्ञः पप्रच्छ कुशलं कुले।' ७३९

आपगा स्त्री. [अपां समूहः आपम्, 'तस्य समूहः' इत्यण्, तत आपेन जलसमूहेन गच्छति प्रचलतीति। आप+गम्+ड+टाप्] नदी; 'आपगाः कृतपुण्यान्ताः पद्मिन्यश्च सरांसि च'—इति रामायणे। 'सम्भूयाम्भोधिमभ्येति महानद्या नगापगा'—इति माघे (२–१००)। ६६५

आपणः पुं. [आङ+पण्+अच्] पण्यविक्रयशाला; निषद्या; विपणिः; पण्यवीथिका; 'दुकान' इति भाषा। (एतच्चतुष्कं हट्टे; आपणादिद्वयं हट्टे; विपण्यादिद्वयं हट्टगृहे—इति केचित्।) 'माल्यापणेषु राजन्ते नाद्य पण्यानि वै तथा'—इति रामायणे। 'भक्ष्यमाल्यापणानां च ददृशुः श्रियमुत्तमाम्'—इति महाभारते। २९६

आपन्नसत्त्वा स्त्री. [आपन्नं प्राप्तं सत्त्वं गर्भरूपेण जन्तुर्यया] गर्भवती; 'सममापन्नसत्त्वास्ता रेजुरापाण्डुरत्विषः'—इति रघुः (१०–५९)। 'नार्याश्चापन्नसत्त्वायास्तथातिद्रुतमश्नतः'—इति सुश्रुतः। ४९८

आपानम् क्ली. [आपीयते अस्मिन्। आङ+पा+अधि० ल्युट्] मद्यपानार्थसभा, पानगोष्ठिको; पानगोष्ठी; 'गन्धर्वाप्सरसो भद्रे मामापानगतं सदा।' 'आपाने पानकलिता दैवेनाभिप्रणोदिताः।' 'ददर्श यदुवीराणाम् आपाने वैशसं महत्'—इति च महाभारते। ३२८

आपीडः पुं. [आङ+पीड्+पचाद्यच्] शिखास्थितमाल्यं; शेखरः; 'तस्मिन् कुलापीडनिभे विपीडं सम्यङ महीं शासति शासनाङ्काम्'—इति रघुवंशे (१८–२९)। ५५४

आपीनम् क्ली. [ओप्यायी वृद्धौ, आङ+प्याय्+क्त, 'प्यायः पी' निष्ठायां न] ऊधः; 'आपीनभारोद्वहनप्रयत्नाद् गृष्टिर्गुरुत्वाद्वपुषो नरेन्द्रः'—इति रघुवंशे (२–१८)। पुं. कूपः; त्रि. [आङ+प्याय्+क्त] ईषत्स्थूलः, सम्यक् स्थूलः। २७१

आप्तः त्रि. [आप्+क्त] आत्मीयः; सन्निकृष्टः; 'असपिण्डं द्विजं प्रेतं विप्रो निर्हृत्य बन्धुवत्। विशुध्यति त्रिरात्रेण मातुराप्तांश्च बान्धवान्'—इति मनुः (३–१२)। प्रत्ययितः; विश्वस्तः; 'सांवत्सरिकमाप्तैश्च राष्ट्रादाहारयेद् बलिम्'—इति मानवे (७–८०)। प्राप्तः; लब्धः; 'तेभ्यः किमाप्तं मया'—इति कालिदासः। सत्यं; हितः; कुशलः; 'कुमारभृत्याकुशलैरनुष्ठिते भिषग्भिराप्तैरथ गर्भभर्मणि'—इति रघुवंशे (३–१२)। बहुः; अधिकः; 'यजेत राजा क्रतुभिर्विविधैराप्तदक्षिणैः'—इति मनुः। (राजा नानाप्रकारान् बहुदक्षिणान् अश्वमेधादियज्ञान् कुर्यात्'—इति तट्टीका)। ५०९

आप्लवनम् क्ली. [आङ + प्लु + ल्युट्] स्नानम्; आप्लावः; आप्लवः। ४०८

आबन्धः पुं. [आबध्यतेऽनेन। आङ+बन्ध्+घञ्] योत्रं; भूषणं; प्रेम; बन्धनं; 'गते प्रेमाबन्धे प्रणयबहुमाने विगलिते'—इति अमरुशतके (३८)। ५७५

आबन्धनम् क्ली. [आङ+बन्ध्+ल्युट्] प्रग्रहः। ८०५

आबाधा स्त्री. [आ+बाधृ विलोडने, गुरोश्चेति अ, टाप्] वेदना; अतिपीडा। ६२६

आविद्धः त्रि. [आङ+व्यध्+क्त] वक्रः; क्षिप्तः; पराहतः; मूर्खः। ६९६

आभरणम् क्ली. [आभ्रियतेऽनेन। भृञ् भरणे, ल्युट्] भूषणम्; अलङ्कारः; 'स्याद्भूषणं त्वाभरणं चतुर्धा परिकीर्तितम्। आवेध्यं बन्धनीयं च क्षेप्यमारोप्यमेव तत्' 'वाहनानि च सर्वाणि शस्त्राण्याभरणानि च'— मनुः (७–२२२)। 'किमित्यपास्याभरणानि यौवने धृतं त्वया वार्धकशोभि वल्कलम्'—इति कुमारसम्भवे (५।४४)। ५३९

आभीरः पुं. [आ समन्ताद् भियं राति, रा दाने, आत इति क] गोपः। 'अहीर' इति भाषा। ५८७

आभीरपल्लिः स्त्री. [आभीराणां पल्लिः] गोपपल्ली। 'अहीरों का गाँव' इति भाषा। २६१

आभीरपल्ली स्त्री. [आभीराणां पल्ली] गोपगृहसमूहः; गोपग्रामः; गोपगृहं; गोपस्थानं; घोषः। २६१

आभीलः त्रि. [आङ+भी+ला+क] भयानकः; 'आभीलं न द्वयोः कृच्छ्रे वाच्यलिङ्गं भयानके'—इति मेदिनी। कष्टयुक्तः; क्ली. [आ समन्ताद् भियं लाति जनयति; आङ+भी+ला+क] कष्टं; कृच्छ्रं; भयावहः; भीतिजनकः; 'रात्रौ निशीथे स्वाभीले गतेऽर्द्धसमये नृप। प्रचारे पुरुषादानां रक्षसां घोरकर्मणाम्'—इति महाभारते। ७०५

आभेरी स्त्री.– रागिणीविशेषः। १०३ अ.

आभोगः पुं. [आङ+भुज्+घञ्] परिपूर्णता; 'मण्डाभोगात्कठिनविषमामेकवेणीं करेण'—इति मेघदूते। 'अकथितोऽपि ज्ञायत एव यथायमाभोगस्तपोवनस्य'—इति शाकुन्तले। वरुणस्य छत्रं; यत्नः; कविनामयुक्तगानसमापककविता; 'यत्रैव कविनाम स्यात् स आभोग इतीरितः'—इति सङ्गीतदामोदरः। ७५५

आमः पुं. [अम्+घञ्] रोगमात्रं; रोगभेदः; मलवैषम्यरोगः; 'पिबेत् स परिकर्तामि मले वा दाडिमाम्बुना, विडेन लवणं पिष्ठं विल्वं चित्रकनागरम्'—इति चरकः। ६००

आमगन्धिकम् क्ली. [आमस्यापक्वस्य गन्ध इव गन्धो यत्र, आमगन्धि+स्वार्थे कन्] आमगन्धि; अपक्वमांसादिगन्धविशिष्टं; विस्रं; विश्रं; चिताधूमादिगन्धयुक्तम्। ६३१

आमन्त्रणम् क्ली. [आ+मन्त्र्+भावे ल्युट्] सम्बोधनम्; आपृच्छनं; निमन्त्रणं; निमन्त्रणविशेषः। ८८३

आमयः पुं. [अम् रोगे+भावे घञ्। मीञ् हिंसायाम्, करणे अच् वा] रोगः; 'तद्युक्तं विविधैर्योगैर्निहन्यादामयान् बहून्'—इति सुश्रुतः। 'तत्र व्याधिरामयो गद आतङ्को यक्ष्मा ज्वरो विकारो रोग इत्यनर्थान्तरम्'–इति चरकः। ६००

आमलकी स्त्री. [आङ+मल+क्वुन्+जातेरिति ङीष्] फलवृक्षविशेषः; तिष्यफला; अमृता; वयस्था; वयःस्था; कायस्था; श्रीफला; धात्रिका; शिवा; शान्ता; धात्री; अमृतफला; वृष्या; वृत्तफला; रोचनी; कर्षफला; तिष्या; 'आँवला, आमला' इत्यादि भाषा। 'तुष्यत्यामलकैर्विष्णुरेकादश्यां विशेषतः। श्रीकामः सर्वदा स्नानं कुर्वीतामलकैर्नरः'—इति गारुडे (२१५ अध्यायः)। 'त्रिष्वामलकमाख्यातं धात्री तिष्यफलामृता। हरीतकीसमन्धात्रीफलं किन्तु विशेषतः॥ रक्तपित्तप्रमेहघ्नं परं वृष्यं रसायनम्। हन्ति वातं तदम्लत्वात् पित्तं माधुर्यशैत्यतः॥ कफं रूक्षकषायत्वात् फलं धात्र्यास्त्रिदोषजित्। यस्य यस्य फलस्येह वीर्यं भवति यादृशम्॥ तस्य तस्यैव वीर्येण मज्जानमपि निर्दिशत्'—इति भावप्रकाशः। ६१८

आमिक्षा स्त्री. [आमिष्यते, आ+मिषु सेचने, बाहुलकात् सक्] श्रृतोष्णदुग्धेदधियोगसम्भवा या; दधिकूर्चिका; पयस्या; क्षीरसन्तानिका; तक्रकूर्चिका। 'छेना' इति ख्याता। ४१६

आमिषम् क्ली.—पुं. [आमिष्यते भुज्यते, आ+मिष् श्लेषणे, घञ्, संज्ञापूर्वकत्वान्न गुणः] उत्कोचः; लञ्चा; मांसम् (६३१); भोग्यवस्तु; संभोगः; सुन्दराकाररूपादि; लोभसञ्चयः; लाभः; कामगुणः; रूपं; भोजनम्। ४३४

आमीक्षा स्त्री. [आमिष्यते,आ+मिषु सेचने, बाहुलकात् सक्, दीर्घः] आमिक्षा; तक्रकूर्चिका; आवर्तिते तप्ते क्षीरे दधियोगाद् या वटिकाकारा विकृतिः जायते सा। ४१६

आमुक्तः त्रि. [आङ+मुच्+क्त] पिनद्धः; परिहितवस्त्रादिः; परिहितकवचव्यक्तिः। ७४७

आमुष्यायणः त्रि. [अमुष्य अपत्यम्+फक्+अलुक्] ख्यातवंशोद्भवः; सत्कुलजातः। ३९५

आमोदः पुं. [आङ+मुद्+घञ्] अतिदूरगामिगन्धः; गन्धः; सुमहद्गन्धः; 'आमोदमुपजिघ्रन्तौ स्वनिःश्वासानुकारिणम्'—इति रघुवंशे (१–४३)। हर्षः। ७७

आम्नायः पुं. [आङ+म्ना+घञ्, युक्] श्रुतिः; वेदः; आगमः; निगमः; 'तृतीयो ह्येष मेध्योऽग्निराम्नायः पञ्चमोऽथवा'—इति महावीरचरिते। 'समांसो मधुपर्क इत्याम्नायं बहु मन्यमानाः'—इति उत्तरचरिते। सम्प्रदायः (४०२); गुरुपरम्पराप्राप्तोपदेशः; उपदेशः; कुलक्रमः; कुलं; शिक्षादानं; तन्त्रशास्त्रम्; अभ्यासः; आम्रेडनम्; आलोचनम्। ९

आम्रः पुं. [अम्यते, अम् गत्यादौ, अमितम्र्योर्दीर्घश्चेति रक्, दीर्घश्च] फलवृक्षविशेषः; चूतः; रसालः; अतिसौरभश्चेत् सहकारः; कामशरः; कामवल्लभः; कामाङ्गः; कीरेष्टः; माधवद्रुमः; भृङ्गाभीष्टः;

सीधुरसः; मधूली; कोकिलोत्सवः; वसन्तदूतः; अम्ल-फलः; मोदाख्यः; मन्मथालयः; मध्वावासः; सुमदनः; पिकरागः; नृपप्रियः; प्रियाम्बुः; कोकिलावासः; माकन्दः; षट्पदातिथिः; मधुव्रतः; वसन्तद्रुः; पिक-प्रियः; स्त्रीप्रियः; गन्धबन्धुः; अलिप्रियः; मदिरा-सखः; 'आम्रमामं जलस्विन्नं मर्दितं दृढपाणिना। सिताशीताम्बुसंयुक्तं कर्पूरमरिचान्वितम् ॥ प्रपाणकमिदं श्रेष्ठं भीमसेनेन निर्मितम्। सद्यो रुचिकरं बल्यं शीघ्र-मिन्द्रियतर्पणम्'—इति राजनिघंण्टः। १९२

आम्रेडितम् क्ली. [आङ+म्रेडि+क्त] द्विस्त्रिरुक्तम्। 'दो-तीन बार कहा हुआ' इति भाषा। १५३

आयः पुं. [आङ्+या+ड] धनागमः; प्राप्तिः; लाभः; 'अहन्यहन्यवेक्षेत कर्मान्तान् वाहनानि च। आयव्ययौ च नियतावाकरान् कोषमेव च'—इति मनुः (८–४१९)। स्त्र्यगाररक्षकः; ज्योतिषप्रसिद्ध-मेकादशभवनम्। ४३३

आयःशूलिकः त्रि. [अयःशूलेन अर्थानन्विच्छति। 'अयः-शूलदण्डाजिनाभ्यां ठक्ठञाविति' ठक्] तीक्ष्णकर्मा; क्षिप्रकारी; 'तीक्ष्णोपायेन योऽन्विच्छेत्स आयःशूलि-को जनः।' ३७१

आयतः त्रि. [आङ+यम्+क्त] दीर्घः; 'लम्बा'-इति भाषा। विस्तृतः; विशालः; आकृष्टः; 'तन्तवोऽप्यायता नित्यं तन्तवो बहुलाः समाः'—इति पञ्चतन्त्रे। ७५१

आयतनम् क्ली. [आङ+यत्+ल्युट्] यज्ञस्थानं; देव-स्थानं; चैत्यम्; 'येभ्यः प्रणमसे पुत्र! चैत्येष्वायतनेषु च।' 'समित्कुशपवित्राणि वेद्यश्चायतनानि च। स्थण्डि-लानि च विप्राणां शैला वृक्षा ह्रदाः क्षुपाः।' आश्रयः; विश्रामस्थानम्; 'नासमीक्ष्य परं स्थानं पूर्वमायतनं त्यजेत्'—इति चाणक्यः। 'स्नेहस्तदेकायतनं जगाम'—इति कुमारसम्भवे (७–५)। भद्रासनम् भिदा इत्यादि-ख्यातो वास्तुदेशः; 'आरामायतनग्रामनिपानोद्यान-वेश्मसु'—इति याज्ञवल्क्यः। २९३

आयतिः स्त्री. [आङ+यम्+क्तिन्] उत्तरकालः; भविष्यत्कालः; 'यदावगच्छेदायत्यामाधिक्यं ध्रुवमा-त्मनः। तदात्वे चाल्पिकां पीडां तदा सन्धिं समाश्रयेत्'-इति मनुः (७–१६९)। 'आयतिं सर्वकार्याणां तदात्वं च विचारयेत्'—इति मनुः (७–१७८)। प्रभावः; कोषदण्डजं तेजः; दैर्घ्यं; सङ्गः; प्रापणं; 'प्रतापमायतिं शोभां हेमन्ताहस्य वारिदः। स्मृतिशेषां करोत्येव लोभश्च पृथिवीभुजाम्'—इति राजतरङ्गिणी। ११८

आयल्लकम् क्ली.–उत्कण्ठा; उत्कलिका; अरतिः। ७४२

आयामः पुं. [आङ+यम्+घञ्] दैर्घ्यम्, आनाहः; 'योजनायामविस्तारमेकैको धरणीतलम्'—इति रामा-यणे। 'तेनोदीचीं दिशमनुसरेस्तिर्यगायामशोभी'—इति मेघदूते। ७८६

आयुधः पुं. [आयुध्यते अनेनेति। आङ+युध्+क] अस्त्रम्। आयुधानां त्रयो भेदाः प्रहरणानि, पाणि-मुक्तानि, यन्त्रमुक्तानि चेति। तत्र प्रहरणानि खड्गा-दीनि, पाणिमुक्तानि चक्रादीनि, यन्त्रमुक्तानि शरादीनि। 'धृतायुधो यावदहं तावदन्यैः किमायुधैः', 'किं वक्ष्यत्ययमेवमद्य विमुखं मामुद्यतेऽप्यायुधे'—इति उत्तरचरिते। ४६२

आयुर्वेदी [न्] त्रि. [आयुरनेन विन्दति वेत्ति वेत्यायुर्वेदः। आयुस्+विद्+करणे घञ्। आयुर्वेदो ज्ञातव्यत्वेन विद्यते यस्य, आयुर्वेद+इनि] आयुर्वेदज्ञः; चिकित्सकः; वैद्यः। ६१२

आयुष्मान् [त्] त्रि. [आयुस्+मतुप्] चिरजीवी; दीर्घायुः; जैवातृकः; चिरञ्जीवी; 'आयुष्मान् भव सौम्येति वाच्यो विप्रोऽभिवादने'—इति मनुः (२–१२५)। 'आयुष्मन्तं सुतं सूते यशोमेधासमन्वितम्'—इति मनुः (३–२६३)। ३८१

आयोधनम् क्ली. [आङ+युध्+ल्युट्] युद्धम्; 'आयोधने कृष्णगतिं सहायमवाप्य यः क्षत्रियकाल-रात्रिम्'—रघुवंशे (६–४२)। 'आयोधने स्थायुकमस्त्र-जातम्'—इति भट्टिः। वधः। ४५३

आरकूटः पुं.– क्ली. [आरं कूटयति स्तूपीकरोति। पचा-द्यच्] पित्तलम्; 'उत्तप्तस्फुरदारकूटकपिलज्योतिर्ज्वलद्-दीप्तिभिः'—उत्तररामचरिते (५–१४)। 'अकाञ्चने काञ्चननायिकाङ्के किमारकूटाभरणेन न श्रियः'—इति नैषधे। १७०

आरक्षः पुं. [आङ+रक्ष्+अच्] गजकुम्भसन्धिः; त्रि. [आरक्षतीति, आङ+रक्ष्+अच्] रक्षायुक्तं; रक्ष-णीयम्। २१८

आरग्वधः पुं. [आ+रगे शङ्कायाम्, क्विप्, आरगं

रोगशङ्कामपि हन्ति, अच् वधादेशश्च] वृक्षविशेषः; राजवृक्षः; सम्पाकः; चतुरङ्गुलः; आरेवतः; व्याधिघातः; कृतमालः; सुवर्णकः; मन्थानः; रोचनः; दीर्घफलः; नृपद्रुमः; हिमपुष्पः; राजतरुः; कण्डुघ्नः; ज्वरान्तकः; अरुजः; स्वर्णपुष्पः; स्वर्णद्रुः; कुष्ठसूदनः; कर्णाभरणकः; महाराजद्रुमः; कर्णिकारः; स्वर्णाङ्गः; प्रग्रहः; 'अमलतास' इति ख्यातः। 'आरग्वधो राजवृक्षः सम्पाकश्चतुरङ्गुलः। आरेवतव्याधिघातकृतमालसुवर्णकाः॥ कर्णिकारो दीर्घफलः स्वर्णाङ्गः स्वर्णभूषणः। आरग्वधो गुरुः स्वादुः शीतलः स्रंसनोत्तमः॥ ज्वरहृद्रोगपित्तास्रवातोदावर्तशूलनुत्। तत्फलं स्रंसनं रुच्यं कुष्ठपित्तकफापहम्। ज्वरे तु सततं पथ्यं कोष्ठशुद्धिकरं परम्॥'—इति भावप्रकाशे। १९८

आरनालम् क्ली. [आच्छंति, आङ+ऋ+अच्, आरः। नल् गन्धे, नलतीति, ण, नालः। आरः नालो गन्धो यस्य] काञ्जिकम्; आरनालकं; 'काँजी' इति भाषा। 'आरनालं तु गोधूमैरामैः स्यान्निस्तुषीकृतैः। पक्वैर्वा सन्धितैस्तत्तु सौवीरसदृशं गुणैः'—इति राजनिघंण्टः। 'लाक्षाहरिद्रामञ्जिष्ठाकल्कैस्तैलं विपाचयेत्। षड्गुणेनारनालेन दाहशीतज्वरापहम्'—इति वैद्यके। ३१८

आरम्भः पुं. [आङ+रभि+घञ्] प्रथमकृतिः; प्रक्रमः; उपक्रमः; अभ्यादानम्; उद्घातः; प्रारम्भः; त्वरा; उद्यमः; वधः; दर्पः; प्रस्तावना; 'आगमैः सदृशारम्भ आरम्भसदृशोदयः'—इति रघुवंशे (१-१५)। ७०७

आराग्रम् क्ली. [आरायाः अग्रं, षष्ठीतत्पुरुषः] अर्द्धचन्द्राद्यस्त्रमुखम्। ४६९

आरात् अव्य. [आ राति, रा दाने, बाहुलकादातिप्रत्ययः] समीपं; निकटम्; दूरं (६९३); 'मेघमालेव यश्चायमारादपि विभाव्यते'—इति उत्तरचरिते। 'तमर्च्यमारादभिवर्तमानम्'—इति रघुवंशे (२-१०)। ६९२

आराधना स्त्री. [आङ+राध्+णिच्+युच्+स्त्रीत्वाट् टाप्] साधना; सेवा; भक्तिः; परिचर्या; प्रसादना; शुश्रूषा; उपास्तिः; वरिवस्या; परीष्टिः; उपचारः। १२९

आरामः पुं. [आरम्यतेऽत्र, आङ+रम्+आधारे घञ्] उपवनम्; 'क्षेत्रकूपतडागानामारामस्य गृहस्य च'—इति मनुः (८-२६२)। 'गृहं तडागमारामं क्षेत्रं वा भीषया हरन्'—इति मनुः (८-२६४)। २१२

आरालिकः त्रि. [अरालं कुटिलं चरति इति, ठक्] सूपकारः; पाचकः; सूदः; वल्लवः। 'रसोइया' इतिभाषा। ४३१

आरेकः पुं. [आ+रिच्+घञ्] शङ्का। ६९१

आरोपितम् त्रि. [आङ+रुह्+णिच्+क्त] न्यस्त; निहितं; कृतारोपणं; कल्पितं; 'तं देशमारोपितपुष्पचापे'—इति कुमारसम्भवे (३-३५)। 'समस्तवस्तुविषयं श्रौता आरोपिता यदा'—इति काव्यप्रकाशे। ७४७

आरोहः पुं. [आङ+रुह्+घञ्] समुच्छ्रयः; 'आरोहमिवरत्नानां प्रतिष्ठानमिव श्रियः'—इति रामायण। वरस्त्रियाः श्रोणिः (५१२); 'आरोहैर्निविडवृहन्नितम्बबिम्बैः'—इति माघे। नितम्बः; कटी; दैर्घ्यम्; अवरोहः; आरोहणं; गजारोहः; परिमाणविशेषः; आरोहति यः; निषादी; 'अश्वाश्च पर्यधावन्त हतारोहा दिशो दश'—इति हरिवंशे। १८१

आरोहणम् क्ली. [आरुह्यतेऽनेन। आङ+रुह्+ल्युट्] सोपानम्; 'सीढ़ी' इति भाषा। [भावे ल्युट्] समारोहः; नीचादूर्द्ध्वगमनम्; 'आरोहणार्थं नवयौवनेन कामस्य सोपानमिव प्रयुक्तम्'—इति कुमारे (१-३९)। प्ररोहणम्; अङ्कुरादिजननम्। ३०१

आर्तिः स्त्री. [आङ+ऋ+क्तिन्] पीडा; वेदना; व्यथा; धनुष्कोटिः; रोगः; 'आपन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम्'—इति मेघदूते। 'दाहातिसारपित्तासृङ्मूर्च्छामद्यविषार्तिषु'—इति सुश्रुते। ६२६

आर्द्रकम् क्ली. [अर्दयति कफम् आर्द्रम्। ततः कन्। यद्वा आर्द्रयति जिह्वायां, क्वुन्] कटुमूलविशेषः; शृङ्गवेरं; कटुभद्रं; कटूत्कटं; गुल्ममूलं; मूलजं; कन्दरं; वरं; महीजं; सैकतेष्टम्; अनूपजम्; अपाकशाकं; चान्द्राख्यं; राहुच्छत्रं; सुशाककं; शार्ङ्गम्; आर्द्रशाकं; सच्छाकम्; 'अदरक' इति भाषा। 'वातपित्तकफेभानां शरीरवनचारिणाम्। एक एव निहन्तास्ति लवणार्द्रककेशरी॥' 'आर्द्रकं शृङ्गवेरं स्यात्कटुभद्रं तथार्दिका। आर्द्रिका भेदिनी गुर्वी तीक्ष्णोष्णा दीपनी तथा। कटुका मधुरा पाके रूक्षवातकफापहा। ये गुणाः कथिताः शुण्ठ्यास्तेऽपि सन्त्यार्द्रके खिलाः॥ भोजनाग्रे सदा पथ्यं लवणार्द्रकभक्षणम्। अग्निसन्दीपनं रुच्यं जिह्वा-

कण्ठविशोधनम् ॥ कुष्ठे पाण्ड्वामये कृच्छ्रे रक्तपित्ते व्रणे ज्वरे। दाहे निदाघशरदोर्नैव पूजितमार्द्रकम्'–इति भावप्रकाशः। 'रोचनं दीपनं वृष्यमार्द्रकं विश्वभेषजम्। वातश्लेष्मविबन्धेषु रसस्तस्योपदिश्यते'—इति चरकः। 'कफानिलहरं स्वर्यं विबन्धानाहशूलनुत्। कटूष्णं रोचनं हृद्यं वृष्यं चैवार्द्रकं स्मृतम्'—इति सुश्रुतः ॥ ६१६

आर्द्रालुब्धकः पुं. [आर्द्रायां तन्नाम्ना प्रसिद्धनक्षत्रे लुब्धक इव] केतुग्रहः। ४९

आर्यः त्रि. [अर्तुं प्रकृतमाचरितुं योग्यः। अर्यते वा। ऋ+ण्यत्] पूज्यः; साधुः (३७२); सज्जनः; वैश्यः (५७०); सौविदः; सौविदल्लः (८१४); सत्कुलोद्भवः; श्रेष्ठ; संगतः; मान्यः; उदारचरितः; शान्तचित्तः; 'योऽहमार्येण परवान् भ्रात्रा ज्येष्ठेन भाविनि'—इति रामायणे। न्यायपथावलम्बी; प्रकृताचारशीलः; सततकर्तव्यकर्मानुष्ठाता; 'कर्तव्यमाचरन् काममकर्तव्यमनाचरन्। तिष्ठति प्रकृताचारे स तु आर्य इति स्मृतः ॥' धार्मिकः; धर्मशीलः; आर्यरूपमिवानार्यं कर्मभिः स्वैर्विभावयेत्'—मनुः (१०–५७)। उचितः; 'मार्गमार्यं प्रपन्नस्य नानुमन्येत कः पुमान्।' नाटयोक्तौ सम्मानसूचकमिदं नाम प्रायेण मान्यजनाह्वाने व्यवह्रियते; 'स्वेच्छया नामभिर्विप्रैर्विप्र आर्येति चेतरैः। 'वाच्यौ नटीसूत्रधारावार्यनाम्ना परस्परम्'—इति साहित्यदर्पणे। पुं. स्वामी; बुद्धः; सुहृत्; श्रेष्ठवर्णः; म्लेच्छेतरजातिः; 'म्लेच्छाश्चान्त्ये बहुविधाः पूर्वं ये निकृता रणे। आर्याश्च पृथिवीपालाः'—इति महाभारते। सावर्णमनोः पुत्रः; 'वरीयांश्चावरीयांश्च संयतो धृतमान् वसुः। चरिष्णुरार्यो धृष्णुश्च राजः सुमतिरेव च॥ सावर्णस्य मनोः पुत्रा भविष्या दश भारत'—इति हरिवंशे। ९९

आर्या स्त्री. [ऋ+ण्यत्+स्त्रियां टाप्] पार्वती; छन्दोविशेषः; 'यस्याः पादे प्रथमे द्वादश मात्रास्तथा तृतीयेऽपि। अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्य्या'—इति श्रुतबोधः। 'लक्ष्मैतत्सप्तगणा गोपेता भवति नेह विषमे जः। षष्ठो जश्च न लघुर्वा प्रथमेऽर्द्धे नियतमार्यायाः॥ षष्ठे द्वितीयलात्परके न्ले मुखलाच्च स यतिपदनियमः। चरमेऽर्द्धे पञ्चमके तस्मादिह भवति षष्ठो लः॥ पथ्या विपुला चपला मुखचपला जघनचपला च। गीत्युपगीत्युद्गीतय आर्यागीतिश्च नवधार्या'—इति छन्दोमञ्जरी। श्रेष्ठा स्त्री। १५

आर्षभ्यः पुं. [ऋषभस्य प्रकृतिः। ऋषभ+ञ्य] षण्ढोपयुक्तवृषः; षण्ढतायोग्यः (बछड़ा जो इतना बड़ा हो कि काम में लाया जा सके या साँड़ बनाकर छोड़ा जा सके)। २६४

आलम्भः पुं. [आङ+लभि+घञ्] मारणं; वधः; 'अश्वालम्भं गजालम्भम्'—इति स्मृतिः। 'व्यालम्बेथाः सुरभितनयालम्भजां मानयिष्यन्'—इति मेघदूते। छेदनं; कर्तनम्; 'कृष्टजानामोषधीनां जातानां च स्वयं वने। वृथालम्भेऽनुगच्छेद् गां दिनमेकं पयोव्रतः'—मनुः (११–१४४)। स्पर्शः; आलिङ्गनम्; 'द्यूतं च जनवादं च परिवादं तथा। नृतम्। स्त्रीणां च प्रेक्षणालम्भमुपघातं परस्य च'—इति मनुः (२–१७९)। ४७८

आलयः पुं. [आलीयतेऽस्मिन्। आ+ली+अधिकरणे अच्] गृहं; 'हिमालयो नाम नगाधिराजः'—इति कुमारे (१–१)। 'तत्रामरालयमरालमरालकेशी'—इति नैषधे। 'नहि दुष्टात्मनामार्य्या निवसन्त्यालये चिरम्' —इति रामायणे। २९२

आलवालम् क्ली. [आ समन्तात् जलस्य लवमालाति। आ+लव+ला+क] तरुमूलसेचनार्थस्वल्पजलाधारः; आवालम्; आवापः; 'थामला' 'थाला' इति भाषा। 'विश्वासाय विहङ्गानाम् आलवालाम्बुपायिनाम्'—इति रघुवंशे (१–५१)। 'विपुलालवालभृतवारिदर्पणः' —इति माघे। १८४

आलस्यम् क्ली. [अलस+ष्यञ्] अलसस्य भावः; अलसता; तन्द्रा; कौसीद्यं; मन्दता; मान्द्यं; कार्यप्रद्वेषः; 'आलस्यं श्रमगर्भाद्यैर्जाड्यं जृम्भासितादिकृत्। सुखस्पर्शप्रसङ्गित्वं दुःखद्वेषणलोलता। शक्तस्य चाप्यनुत्साहः कर्मण्यालस्यमुच्यते'—इति सुश्रुते। त्रि. [अलस एव। अलस+स्वार्थे ष्यञ्] मन्दः; तुन्दपरिमृजः; शीतकः; अलसः; अनुष्णः। ७५७

आलानम् क्ली. [आलीयतेऽत्र। आङ+ली+ल्युट्। विभाषा लीयतेरित्यात्वम्] बन्धनम्; रज्जुः; गजबन्धनस्तम्भः; गजबन्धनरज्जुः; 'अरुन्तुदमिवालानमनिर्वाणस्य दन्तिनः।'—इति रघुवंशे (१–७१)। 'इभ-

मदमलिनमालानस्तम्भयुगलमुपहसन्तमिवोरुदण्डद्वयेन'—इति कादम्बरी। २२१

आलिः पुं. [आलति, दशने समर्थो भवति। आ+अल्, बाहुलकाद् इण्] वृश्चिकः; भ्रमरः; त्रि. विशदाशयः; निर्मलान्तःकरणः; अनर्थः। स्त्री. [आलयति भूषयति, आ+अल् भूषणे, अच्, इ] वयस्या; 'निवार्यतामालि किमप्ययं वटुः पुनर्विवक्षुः स्फुरितोत्तराधरः'—इति कुमारसम्भवे (५-८३)। [आलति निर्वापयति जलम्। अल् वारणे, सर्वधातुभ्य इन्] सेतुः; [अल्यते अनया। अल्+इञ्] पङ्क्तिः; सन्ततिः। ६४५

आलिङ्गनम् क्ली. [आङ+लिगि+ल्युट्] प्रीतिपूर्वकपरस्पराश्लेषः; अङ्कपालिः; श्लिषा; परिरम्भः; परीरम्भः; परिष्वङ्गः; संश्लेषः; उपगूहनम्; 'आलिङ्गनान्यधिकृताः स्फुटमापुरेव'—इति माघः। 'यत्र स्त्रीणां प्रियतमभुजालिङ्गनोच्छ्वासितानाम्'—इति मेघदूते। ५६८

आली स्त्री. [आलि+ङीष्] सखी; वयस्या; सेतुः; पाली (६७६); पङ्क्तिः; श्रेणी (७-२१); 'तोयान्तभास्करालीव रेजे मुनिपरम्परा'—इति कुमारे (६-४९)। पुं. वृश्चिकः। ४८७

आलेख्यम् क्ली. [आङ+लिख्+ण्यत्] चित्रम्; 'इति संरम्भिणो वाणीर्बलस्यालेख्यदेवताः'—इति माघे (२-६७)। ७२८

आलेख्यलेखा स्त्री. [आलेख्यस्य लेखा] लिपिः; चित्रकर्म; प्रतिलिपिकरणम्। ७२८

आलोकः पुं. [आङ+लुक्+घञ्] द्योतः; दर्शनं; 'आलोकाय निशासु चन्द्रकिरणाः सख्यः कुरङ्गैः सह।'—इति शान्तिशतके। 'रुद्धालोके नरपतिपथे सूचिभेद्यैस्तमोभिः'—पूर्वमेघे (३७)। 'यदालोके सूक्ष्मं व्रजति सहसा तद्विपुलताम्'—इति शाकुन्तले। 'आलोकं ददृशुर्धीरा नीराशा जीविते यदा'—इति रामायणे। वन्दिभाषणं; स्तुतिः; 'उदीरयामासुरिवोन्मदानाम् आलोकशब्दं वयसां विरावैः'—इति रघुवंशे (२-९)। ६६

आवरणम् क्ली. [आङ+वृ+ल्युट्] फलकम्; 'ढाल' इति भाषा। आच्छादनम्; 'विचित्राणि च वासांसि प्रावारावरणानि च'—इति महाभारते। 'सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टेः कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा'—इति रघुवंशे (५-१३)। 'स्रोतसां भेदको यश्च तेषाञ्चावरणे रतः—मनुः (३-१६३)। ४६०

आवर्तः पुं. [आङ+वृत्+घञ्] जलभ्रमः; 'नृपं तमावर्तमनोज्ञनाभिः' इति रघुवंशे (६-५२)। 'भँवर' इति भाषा। चिन्ता; आवर्तनं; मेघनायकचतुष्टयान्तर्गतमेघाधिपविशेषः; 'जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानाम्'—इति पूर्वमेघे (६)। राजावर्तनामोपरत्नम्। ६६८

आवर्हितः त्रि. [आङ+वृह्+क्तः] उन्मूलितः; उत्पाटितः। ७१२

आवलिः स्त्री. [आङ+वल्+इन्] श्रेणी; पङ्क्तिः; श्रेणिः। ७२१

आवली स्त्री. [आङ+वल्+इन्+ङीप्] आवलिः; पङ्क्तिः; श्रेणी; 'आलोलामलकावलीं विलुलितां विभ्रच्चलत्कुण्डलम्'—इति अमरुशतके (३)। 'द्विजावलीव्याजनिशाकरांशुभिः'—इति माघे (१-२५)। ७२१

आवसथः पुं. [आवसन्त्यत्र। आ+वस्+अधिकरणे अथच्] गृहम्; 'अस्ति चम्पकाभिधानायां नगर्यां परिव्राजकावसथः'—इति हितोपदेशे। आर्याकोषः; आर्य्याच्छन्दसो ग्रन्थभेदः; व्रतविशेषः; क्ली. [आवसन्ति आगत्य वसन्ति अस्मिन्, आङ+वस्+अथच्] गृहं; वसतिस्थानं; विश्रामस्थानम्; अग्निगृहम्; अग्निहोत्रस्थानं; 'निवसन्नावसथे पुराद् बहिः'—इति रघुवंशे (८-१४)। 'आसनावसथौ शय्यामनुव्रज्यामुपासनाम्'—इति मनुः (३-१०७)। २९१

आवापः पुं. [आ वपन्ति सलिलमत्र। आङ+वप्+घञ्] आलवालं; वलयः (५५७); 'मोहात् पपात गाण्डीवमावापं च करादपि'—इति महाभारते। शत्रुचिन्तनं; परराष्ट्रचिन्तनं; 'तन्त्रावापविदा योगैर्मण्डलान्यधितिष्ठता'—इति माघे (२-८८)। पानभेदः; भाण्डवपनं; परिक्षेपः; निम्नोन्नतभूमिः; प्रधानहोमः। १८४

आवालम् क्ली. [आङ+वल्+घञ्] आलवालं; बालकमभिव्याप्य; बालकपर्यन्तम्। १८४

आवासः पुं [आवसन्ति अत्र इति। आङ+वस्+अधिकरणे घञ्] गृहम्; 'आवासो विपिनायते प्रियसखीमालापि जालायते'—इति गीतगोविन्दे (४-१०)। २९१

आविकः पुं. [अविना मेषलोम्ना कृतः। अवि+ठक्] कम्बलम्; त्रि. मेषलोम्ना निर्मितं; 'वसीरन्नानुपूर्व्येण शाणक्षौमाविकानि च'—मनुः (२।४१)। अविदुग्धम्; 'आविकं लवणं स्वादु स्निग्धोष्णं चाश्मरीप्रणुत्। गुरु कासेऽनिलोद्भूते केवले चानिले वरम्'—इति वैद्यके। ५५१

आविद्धः त्रि. [आङ+व्यध्+क्तः] वक्रः; क्षिप्तः; पराहतः; मूर्खः। ६९६

आवुकः पुं. [अवति रक्षतीति, अव्+बाहुलकादुण्+कन्] नाट्योक्तौ पिता। ९९

आवेशः पुं. [आङ+विश्+घञ्] अहङ्कारविशेषः; संरम्भः; आटोपः; अपस्माररोगः; भूतादिना रोगः; भूतसंचारः; भूतक्रान्तिः; ग्रहामयः; आसक्तिः; अभिनिवेशः; 'तस्मै स्मयावेशविवर्जिताय'—इति रघुवंशे (५–१०)। ७२२

आवेशनम् क्ली. [आविश्यतेऽस्मिन्। आङ+विश्+ल्युट्] शिल्पिशाला; 'जीर्णोद्यानान्यरण्यानि कारुकावेशनानि च'—मनुः (९–२६५)। [भावे ल्युट्] भूतावेशः; 'मनःक्षेपस्त्वपस्मारो ग्रहाद्यावेशनादिजः'—इति साहित्यदर्पणे। प्रवेशः; कोपः; परिवेशः। २९६

आवेशिकः त्रि. [आवेशं संरम्भं प्राप्तः। आवेश+ठञ्] आगन्तुः; अतिथिः; स्वीयम्; असाधारणम्; अन्यासाधारणं; प्रातिष्ठितम्। ३५८

आवेष्टकः पुं. [आङ+वेष्ट्+ण्वुल्] प्राचीरादिः। 'घेरा' इति भाषा। २९०

आशंसा स्त्री. [आङ+शंस्+अङ+टाप्] इच्छा; आकाङ्क्षा; 'निदधे विजयाशंसां चापे सीतां च लक्ष्मणे'—इति रघुवंशे (१२–४४)। ७१०

आशङ्का स्त्री. [आङ+शकि+अ+टाप्] भयं; त्रासः; संशयः; वितर्कः; 'नष्टाशङ्का हरिणशिशवो मन्दमन्दं चरन्ति'—इति शाकुन्तले। 'तच्छ्रुत्वा विगताशङ्कस्तामकारणदूषिताम्'—इति कथासरित्सागरे १४ तरङ्गे। ७२५

आशयः पुं [आङ+शीङ+अच्] आधारः; अभिप्रायः; 'तत्त्वालोक्याशयं बुद्ध्वा तस्य सोऽपि वसन्तकः'—इति कथासरित्सागरे १२ तरङ्गे। चेतः; 'अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः'—इति भगवद्गीतायाम् (१०–२०)। पनसवृक्षः; विभवः; किम्पचानः; अजीर्णः; कोष्ठागारं; धर्माधर्मौ; अदृष्टम्; 'आशयाः सप्त—वाताशयः, पित्ताशयः, श्लेष्माशयः, रक्ताशयः, आमाशयः, पक्वाशयः, मूत्राशयश्च। स्त्रीणां गर्भाशयोऽष्टमः'—इति सुश्रुतः। ७९८

आशा स्त्री. [आ समन्ताद् अश्नुते व्याप्नोतीति। आङ+अश+पचाद्यच्+टाप्] दिक्; 'वासवाशामुखे भाति इन्दुश्चन्दनबिन्दुवत्'—इति साहित्यदर्पणे। दीर्घाकाङ्क्षा (३६४); 'आशा नाम नदी मनोरथजला तृष्णातरङ्गाकुला'—इति शान्तिशतके (४–२६)। १००

आशी स्त्री. [आङ+अश्+अच्+ङीप्] अहिदन्तः; हिताशंसनं; सर्पविषम्; 'आशीतालुगता दंष्ट्रा तया दष्टो न जीवति'—इति विषविद्या। ६४२

आशीः [स्] स्त्री. [आङ+शास्+क्विप्+उपधाया इत्वम्] सर्पदन्तः; आशीर्वादः; वृद्धिनामौषधिः; हितप्रार्थनम्; अभीष्टवृद्धिप्रार्थनं; 'वात्सल्याद् यत्र मान्येन कनिष्ठस्याभिधीयते। इष्टावधारकं वाक्यमाशीः सा परिकीर्तिता॥' 'तस्मै जयाशीः ससृजे पुरस्तात्'—इति कुमारसम्भवे (७–४७)। ६४२

आशीविषः पुं. [आशिषि दंष्ट्रायां विषमस्य सः, पृषोदरादित्वात् साधुः] सर्पः; 'गरुत्मदाशीविषभीमदर्शनैः'—इति रघुवंशे (३–५७)। ६४१

आशु क्ली. [अश्नते इति, अशूङ व्याप्तौ, उण्] शीघ्रम्; द्रुतम्; 'तदाशु कृतसन्धानं प्रतिसंहर सायकम्'—इति शाकुन्तले। सत्त्वगामि चेत् त्रि.। अव्ययमपि शीघ्रे। ६९७

आशुशुक्षणिः पुं. [आ समन्तात् शोष्टुमिच्छति। आङ+शुष्+सन्+अनि] अग्निः; 'मन्त्रपूतानि हवींषि प्रतिगृह्णाति एतत्प्रीत्या आशुशुक्षणिः'—इति कादम्बर्याम्। वायुः; इति सिद्धान्तकौमुद्याम् उणादिवृत्तिः। ६३

आश्चर्यम् क्ली. [आङ+चर्+ण्यत्+सुट् निपातनात्] अपूर्वं; विस्मयः; अद्भुतं; चित्रं; 'गन्धोदग्रं तदनु ववृषुः पुष्पमाश्चर्यमेघाः'—इति रघुवंशे (१६–८७)। ७४५

आश्रमः पुं.–क्ली. [आङ+श्रम्+घञ्] मुनीनां वासस्थानं; वनं; मठः। (३९३) शास्त्रोक्तधर्मविशेषः—आश्राम्यन्ति स्वं स्वं तपश्चरन्त्यत्र, स तु चतुर्विधः—ब्रह्मचर्यं १, गार्हस्थ्यं २, वानप्रस्थ्यं ३, संन्यासः ४।

ब्रह्मचारी १, गृही २, वानप्रस्थः ३, भिक्षुः संन्यासी ४। कलियुगे तु ब्रह्मचर्यवानप्रस्थ्ये न स्तः केवलं गृहस्थ-भिक्षुकाश्रमावेव—'गार्हस्थो भैक्षुकश्चैव आश्रमौ द्वौ कलौ युगे'—इति महानिर्वाणतन्त्रे। 'स दुष्प्रापयशाः प्रापदाश्रमं श्रान्तवाहनः'–इति रघुवंशे (१–४८)। २९८

आश्रयः पुं. [आङ+श्रि+अच्] गृहं; राज्ञां सन्ध्यादि-षड्गुणान्तर्गतगुणविशेषः; व्यपदेशः; 'योऽवमन्येत ते मूले हेतुशास्त्राश्रयाद् द्विजः'—इति मनुः (२–११)। सामीप्यम्; आधारः; 'वासो वल्कलमाश्रयो गिरिगुहा शय्या लतावल्लरी'—इति शान्तिशतके (४–६)। संश्रयणम; अवलम्बनम्; 'त्रीण्याद्यान्याश्रितास्त्वेषां मृगगतश्रियाप्सराः'—इति मनुः (७–७२)। राज्ञां तन्निर्णयः; 'अस्थितौ यदि कल्याणं भवेत् संश्रयणं तथा। भवति श्रेयसे राज्ञां विपरीतं न कर्हिचित्॥ उच्छिद्य-मानो बलिना आश्रयेद् बलवत्तरम्। विनीतवत्तत्र कालं नयेदिति मतिर्ध्रुवा॥ ददद् बलं वा कोषं वा भूमिं वा भूतिसम्भवाम्। आश्रयेदभियोक्तारं समाश्रयगुणा-न्वितम्'—इति युक्तिकल्पतरौ १ अध्यायः। २९८

आश्रयाशः पुं. [आश्रयमाधारमपि अश्नाति यः। आश्रय+अश्+कर्मणि उपपदे अण्] अग्निः; 'दुर्वृत्तः क्रियते धूर्तैः श्रीमानात्मविवृद्धये। किं नाम खलसंसर्गः कुरुते नाश्रयाशवत्'—इति हितोपदेशे। चित्रकवृक्षः; त्रि. आश्रयनाशकः; आश्रयध्वंसी। ६३

आश्लेषः पुं. [आङ+श्लिष्+घञ्] आलिङ्गनं; 'कण्ठा-श्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे'—मेघदूते। एकदेश-सम्बन्धः; [अश्लेषा एव। अण+स्त्रियां टाप्] आश्लेषा; स्त्री. आश्लेषा नक्षत्रम्। ५६८

आषाढः पुं. [आषाढया नक्षत्रेण युक्ता पूर्णिमा यस्मिन्। आषाढा+'नक्षत्रेण युक्तः कालः' इति अण्, पलाश-दण्डपक्षे आषाढः प्रयोजनमस्य इति 'विशाखाषाढादण् मन्थदण्डयो'रित्यण्] व्रतिनां दण्डः; वैशाखादिद्वादश-मासान्तर्गततृतीयमासः; रवेर्मिथुनराशिस्थितिकालः; पूर्वोत्तराषाढान्यतरनक्षत्रयुक्ता पौर्णमासी यत्र मासे सः; शुचिः; आषाढकः; 'अनल्पजल्पी प्रमदाभिलाषी प्रमादशीलो गुरुवत्सलश्च। तडुव्ययो मन्दहुताशनः स्याद् आषाढमासप्रभवो मनुष्यः'—इति कोष्ठीप्रदीपः। मलयपर्वतः; व्रतिनां पलाशदण्डः; 'अथाजिनाषाढधरः प्रगल्भवाग् ज्वलन्निव ब्रह्ममयेन तेजसा'—इति कुमार-सम्भवे (५–३०)। ४११

आसनम् क्ली [आस्यते उपविश्यतेऽस्मिन्। आस्+अधिकरणे+ल्युट्] हस्तिस्कन्धदेशः; यत्र महामात्र उपविशति। पीठः (३१०); उपवेशनाधारः; 'आसनं प्रथमं दद्यात् पौष्पं दारुजमेव वा'—इति पुराणे। विजिगीषोर्दुर्गादीन् धर्षयतः स्थितिः; यात्रानिवर्तनम्; अष्टाङ्गयोगस्य तृतीययोगाङ्गं; तत्तु पञ्चप्रकारकर-चरणादिसंस्थानविशेषः —'पद्मासनं स्वस्तिकाख्यं भद्रं वज्रासनं तथा। वीरासनमिति प्रोक्तं क्रमादासन-पञ्चकम्॥' पुं. [असु क्षेपणे+ल्यु+प्रज्ञाद्यण्] जीव-कवृक्षः; जीवकवृक्षशब्देऽस्य विशेषो ज्ञेयः। २१७

आसन्दी स्त्री. [आस्यतेऽस्याम्। आस्+अब्दादयश्चेति साधुः] क्षुद्रखट्वा; 'तस्मादस्मा आसन्दीमाहरन्ति सैषा खादिरी वितृण्णा भवति'—शतपथब्रा-ह्मणे (५।४।४।१) ३११

आसन्नः त्रि. [आङ+सद्+क्त] निकटस्थः; समीपवर्ती; 'आसीनमासन्नशरीरपातः'—इति कुमारसम्भवे (३–४४)। अस्ताभिमुखः सूर्यः। ६९३

आसवः पुं. [आङ+सुञ्+अप्] मद्यविशेषः; मैरेयं; शीधुः; 'शीधुरिक्षुरसैः पक्वैरपक्वैरासवो भवेत्। मैरेयं धातकीपुष्पगुडधानाम्लसंहितम्॥' मद्यमात्रम्; 'यक्ष-रक्षःपिशाचान्नं मद्यं मांसं सुरासवम्। तद्ब्राह्मणेन नात्तव्यं देवानमश्नता हविः॥' 'यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः'—इति शार्ङ्गधरः। 'मृष्टो भिन्नशकृद्वातो गौडस्तर्पणदीपनः। छेदी मध्वासवस्तीक्ष्णो मैरेयो मधुरो गुरुः'—इति चरकः। 'तीक्ष्णः सुरासवो हृद्यो मूत्रलः कफवातनुत्। सुखप्रियः स्थिरमदो विज्ञेयोऽ-निलनाशनः'—इति सुश्रुते। ३२९

आसारः पुं. [आङ+सृ+घञ्] धारासम्पातः; वेग-वृष्टिः; 'त्वामासारप्रशमितवनोपप्लवं साधु मूर्ध्ना'—इति मेघदूते। प्रसरणम्; सैन्यानां सर्वतो व्याप्तिः; 'तस्माद् दुर्गं दृढं कृत्वा सुभटासारसंयुतम्'—इतिपञ्च-तन्त्रे (३–४९)। सुहृद्बलम्; 'अज्ञातवीवधासारतोय-सस्यो व्रजेत्तु यः'—पञ्चतन्त्रे (३।२९)। ५९

आसीनम् त्रि. [आस्+शानच्] उपविष्टम्। 'बैठा हुआ' इति भाषा। ३८६

आसुतीबलः पुं. [आसुतिरस्यास्ति, 'रजःकृष्यासुतिपरिषदो वलच्' दीर्घः] यज्वा; शौण्डिकः; कन्यापालः; कन्यापालकः; शूद्रजातिविशेषः। ४२०

आसुरी स्त्री. [असुरस्य इयम्, असुर+तस्येदमित्यण्, ततो ङीप्] राजिका; राजसर्षपः; 'राई' इति भाषा। त्रिविधचिकित्सान्तर्गतचिकित्साविशेषः; सा च छेदभेदाद्यात्मिका। ५८१

आस्तरणम् क्ली. [आस्तीर्यते यत् येन वा। आस्+स्तृ+कर्मणि करणे वा ल्युट्] हस्तिपृष्ठस्थितचित्रकम्बलं; प्रवेणी; वर्णः; परिस्तोमः; कुथाः; कुथः; प्रवेणिः; परिस्टोमः; 'झूल' इति भाषा। शय्या; कुशासनम्; 'राङ्कवास्तरणे पूर्वमयोध्यायामिवासने'—इति रामायणे, ३ काण्डे। 'दर्भास्तरणमास्तीर्य निश्चयाद् धृतराष्ट्रजः'—इति महाभारते। ३०८

आस्थानम् क्ली. [आस्थीयतेऽस्मिन् इति। आङ+स्था+ल्युट्] सभा; 'अनेकराजन्यरथाश्वसंकुलं तदीयमास्थाननिकेतनाजिरम्'—इति किरातार्जुनीये (१-१६)। यत्नः; आश्रयः; स्थानम्। ७७८

आस्थानी स्त्री. [आस्थान ङीप्] सभा; 'आस्थानीं समये समं नृपजनः सायन्तने सम्पतन्'—इति रत्नावली। ७४५

आस्थितः त्रि. [आस्थीयते यः, आ+स्था+कर्मणि क्त] आक्रान्तः; धृतः; स्पृष्टः; रुद्धः। ७८१

आस्यम् क्ली. [अस्यते ग्रासोऽस्मिन् इति। असु क्षेपणे, 'कृत्यल्युट्' इति ण्यत्, यदा आस्यन्दते अम्लादिना प्रस्रवति इति, स्यन्द् प्रसवणे+ड] मुखं; मुखमध्यम्; 'यस्यास्येन सदाश्नन्ति हव्यानि त्रिदिवौकसः।' आस्ये भवमास्यं; मुखभवे त्रि.। ५१८

आहवः पुं. [आहूयते अरिर्यस्मिन्। आङ+ ह्वे+अप्] युद्धम्; 'यदाश्रौषं भीष्ममत्यन्तशूरम्, हतं पार्थेनाहवेष्वप्रधृष्यम्'—इति महाभारते, आदिपर्वणि (१-१८२) [आहूयते आज्यादिकं यत्र, आङ+हु+अप्] यज्ञः। ४५३

आहवनीयः पुं. [आहूयते आज्यादिरस्मिन्। आङ+हु+अनीयर] यज्ञाग्निविशेषः; गार्हपत्यादुद्धृत्य होमार्थं यः संस्क्रियते सः; 'गुरुराहवनीयस्तु साग्नित्रेता गरीयसी'—इति मनुः (२-२३१)। ७८९

आहारः पुं. [आङ+हृ+घञ्] द्रव्यगलाधःकरणं; जग्धिः; भोजनं; जेमनं; लेपः; निघषः; न्यादः; जमनं; विघसः; प्रत्यवसानं; भक्षणम्; अशनम्; अभ्यवहारः; स्वदनं; निगरः; 'यदाहारगुणैः पानं विपरीतं तदिष्यते। अत्रानुपानं धातूनां दृष्टं यन्न विरोधि च'—इति चरकः 'आहारः प्रीणनः सद्यो बलकृद्देहधारकः। आयुस्तेजःसमुत्साहस्मृत्योजोऽग्निविवर्धनः'—इति सुश्रुतः। आहरणम्; 'स पुनर्देवयान्योक्तः पुष्पाहारो यदृच्छया'—इति महाभारते। ३१९, ३२५

आहावः पुं. [आङ+ ह्वे+अप्, निपातनाद् वृद्धिः] कूपसमीपे पश्वादिजलपानार्थं कृतस्वल्पजलाशयः। पशु आदि को जल पिलाने के लिए कूप के पास का हौद। [आह्वयतेऽरिरत्र इति व्युत्पत्त्या] युद्धम्; आह्वानम्; [आहूयतेऽत्र इति, आ+हु+अधिकरणे घञ्] अग्निः। ६८४

आहितः त्रि. [आङ+धा+क्त] न्यस्तः; अर्पितः; स्थापितः; 'व्यावर्तनैरहिपतेरयमाहिताङ्कः'—इति किरातार्जुनीये। ७४७

आहितुण्डिकः पुं. [अहितुण्डेन दीव्यति, अहितुण्ड+ठक्] व्यालग्राही; 'सपेरा' इति ख्यातः। 'वैद्यसांवत्सराचार्याः स्वपक्षेऽधिकृताश्चराः। यथाहितुण्डिकोन्मत्ताः सर्वं जानन्ति शत्रुषु॥' ६१३

आहो अव्य. [आ हन्तीति। आङ+हन्+डो] विकल्पः; प्रश्नः; 'द्वारत्यागी भवाम्याहो परस्त्रीस्पर्शपांशुलः'—इति शाकुन्तले। विचारः; 'आहो निवत्स्यति समं हरिणाङ्गनाभिः'—इति शाकुन्तले। ८८०

आहोपुरुषिका स्त्री. [अहो अहमेव पुरुषः। मयूरव्यंसकादित्वात् समासः। अहोपुरुषस्य भावः। अहोपुरुष+वुञ्+स्त्रीत्वात् टाप्] दर्पाद् या आत्मनि सम्भावना सा। अधिकार्थवचनेन शक्तेरप्रतिघाताविष्करणम्; आत्मविषयकार्यसिद्धिजननशक्त्याविष्करणम्; 'आहोपुरुषिकां पश्य मम सद्रत्नकान्तिभिः'—इति भट्टौ (५-२७)। 'निजभुजबलाहोपुरुषिकाम्'—भामिनीविलासे (१-८४)। ७८४

आह्वानम् क्ली. [आहूयतेऽनेन करणे ल्युट्] नाम; संज्ञा; आख्या; [१५४, भावे ल्युट्] आवाहनं, हूतिः; आकारणम्; 'जन्म ज्येष्ठेन चाह्वानं स्वब्राह्मण्यास्वपि स्मृतम्'—इति मनुः (९-१२६)। १५२

इ

इः पुं. [अस्य विष्णोः श्रीकृष्णस्यापत्यम् पुमान्। अ+इञ्] कामदेवः; 'इः कामे रतिलक्ष्म्योरी उः शिवे ब्रह्मकाद्य ऊः।'—आग्नेये एकाक्षराभिधानम्। ३४

इचिकिलः पुं.— कर्दमः; जम्बालः। ६७८

इच्छा स्त्री. [एषणम् इच्छा। इष्+श+टाप्] मनोधर्मविशेषः; आकाङ्क्षा; वाञ्छा; दोहदः; स्पृहा; ईहा; तृट्; लिप्सा; मनोरथः; कामः; अभिलाषः; तर्षः; रुक्; इषा; श्रद्धा; तृष्णा; रुचिः; मतिः; दोहलं; छन्दः; इट्; 'योऽहिंसकानि भूतानि हिनस्त्यात्मसुखेच्छया'। 'निर्दुःखत्वे सुखे चेच्छा तज्ज्ञानादेव जायते। इच्छा तु तदुपाये स्यादिष्टोपायत्वधीर्यदि॥ चिकीर्षाकृतिसाध्यत्वप्रकारेच्छा तु या भवेत्। तद्धेतुः कृतिसाध्येष्टसाधनत्वमतिर्भवेत्॥' अस्याः प्रतिबन्धः—'बलवद्द्विष्टहेतुत्वमतिः स्यात् प्रतिबन्धिका'—इति भाषापरिच्छेदे (१४८)। ७१०

इज्जलः पुं. [एतीति, इ+क्विप्+तुक्; इत् जलमस्य] हिज्जलवृक्षः; निचुलः; अम्बुजः; 'इज्जलो हिज्जलश्चापि निचुलश्चाम्बुजस्तथा। जलवेतसवद्वेद्यो हिज्जलोऽयं विषापहः'—इति भावप्रकाशे। १९५

इज्याशीलः पुं [इज्यां यज्ञं शीलयति पुनः पुनराचरतीति। इज्या+शील्+ण] पुनः पुनर्यज्ञकर्ता; यायजूकः।४२०

इडा स्त्री. [इल्+क+टाप्] शरीरस्य वामभागस्था नाडी; 'इडा नाम सैव गङ्गा यमुना पिङ्गला स्मृता। गङ्गायमुनयोर्मध्ये सुषुम्णा च सरस्वती॥ एतासां सङ्गमो यत्र त्रिवेणी सा प्रकीर्तिता। तत्र स्नातः सदा योगी सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ इडा च वामनिःश्वासः सोममण्डलगोचरा। पितृयानमिति ज्ञेया वाममाश्रित्य तिष्ठति'—इति उत्तरगीतायाम्। स्वर्गः; पृथ्वी; 'पतत्रिसङ्घैः स जघन्यरात्रे प्रबोध्यते नूनमिडातलस्थः'—इति महाभारते। बुधग्रहभार्या; इक्ष्वाकुराजकन्या; 'तत्र दिव्याम्बरधरा दिव्याभरणभूषिता। दिव्यसंहनना चैव इडा जज्ञे इति श्रुतिः'—इति हरिवंशे। गौः; 'इडाज्यहोमाहुतिभिर्मन्त्रशिक्षाविशारदैः'—इति भारते। वचनं; देवीभेदः; 'श्रुतिः प्रीतिरिडा कान्तिः शान्तिः पुष्टिः क्रिया तथा'—इति हरिवंशे। दुर्गा। ८४६

इतरः त्रि. [इना कामेन तरतीति। इ+तॄ+अप्, यद्वा इतेन ज्ञानेन क्षीयते इति। बाहुलकाद् अरः] नीचः; अन्यः (४८०); 'वामेतरस्तस्य करः प्रहर्तुः'—इति रघुवंशे (२-३१)। 'इतरो दहने स्वकर्मणाम्'—इति रघुवंशे (८-२०)। ३४८

इतरेतरम् त्रि. [वीप्सायां कर्मव्यतिहारे द्वित्वं, समासवत्त्वं च] अन्योऽन्यं; परस्परं; मिथः; 'व्यूहावुभौ तावितरेतरस्माद् भङ्गं जयञ्चापतुरव्यवस्थम्'—इति रघुवंशे (७-५४)। ७२०

इति अव्य. [इण्+क्तिच्] हेतुः; 'वत्सोत्सुकापि स्तिमिता सपर्यां प्रत्यग्रहीत्सेति ननन्दतुस्तौ'—इति रघुवंशे (२-२२)। प्रकारः; समाप्तिः; प्रकरणम्; 'उदितेऽनुदिते चैव समयाध्युसिते तथा। सर्वथा वर्तते यज्ञ इतीयं वैदिकी श्रुतिः'—मनुः (२-१५)। प्रकाशः; 'दिलीप इति राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव'—इति रघुवंशे (१-१२)। आदिः; निदर्शनम्; 'आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः'—इति मनुः (१-१०)। अनुकर्षः; परकृतिः; विवक्षानियमः; प्रत्यक्षम्; अवधारणं; परामर्शः; मानम्; इत्थमर्थः; एवार्थः; 'गुणानित्येव तान् विद्धि'—इति रामायणे, प्रथमकाण्डे। ८८७

इतिह अव्य. [इति एवं च, ह किल च] पारम्पर्योपदेशः; ऐतिह्यम्। ८७७

इत्वरी स्त्री. [एति परपुरुषं प्राप्नोतीति। इ+क्वरप्+ङीप्] असती; अभिसारिका। ४९६

इध्मम् क्ली. [इन्ध+मक्] अग्निसन्दीपनकाष्ठम्; इन्धनम्; 'तत्रेध्मानयने शक्रो नियुक्तः कश्यपेन ह'—इति भारते। ४६९

इनः पुं. [एतीति। इ+नक्] सूर्यः; (३५६) आढ्यः; समृद्धः; (८२५) प्रभुः; स्वामी; 'वसु न इनस्पतिः' ऋग्वेदे (४३।२)। नृपभेदः। ३५

इन्दिन्दिरः पुं. [इन्दिं कमलशोभां दृणाति। इदि परमैश्वर्ये, इन्, दृ, बाहुलकात् खश्] भ्रमरः—'लोभादिन्दिन्दिरेषु नियत्सु'—इति भामिनीविलासे (२-१८३)। ३५५

इन्दिरा स्त्री. [इन्द्+किरच्+टाप्] लक्ष्मीः; 'मन्दं मन्दं मन्दिरादिन्दिरेव'—इति भामिनीविलासे। शोभा;

कान्तिः; 'निशि निःसरदिन्दिरं कथं तुलयामः कलयापि पङ्कजम्'—इति भामिनीविलासे। ३१

इन्दीवरम् क्ली. [इन्दतीति। इदि परमैश्वर्ये, इगुपधात् किदिति इन्, ततो ङीष्, इन्दींलक्ष्मीस्तस्या वरं प्रियम्] नीलोत्पलम्। ६८१

इन्दुः पुं. [उनत्ति अमृतधारया भुवं क्लिन्नां करोति इति। उन्द्+उ+आदेरिच्च] चन्द्रः; चन्द्रमाः; 'दिलीप इति राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव'—इति रघुवंशे (१–१२)। कर्पूरः; चन्द्रसमसंख्यः; एकसंख्यायुक्तः; मृगशिरानक्षत्रम्; 'दिवार्ककिरणैर्जुष्टं स्पृष्टमिन्दुकरैर्निशि'—इति वैद्यकद्रव्यगुणः। ४२

इन्द्रः पुं. [इन्दतीति। इदि परमैश्वर्ये, तस्माद् रन् प्रत्ययः] देवराजः; अदितिपुत्रः; पूर्वदिक्पतिः; शचीपतिः। (तस्य पुत्राः–जयन्तः १, ऋषभः २, मीढ्वांश्च। अस्त्रं वज्रम्। वाहनम् ऐरावतः। पुरी अमरावती। वनं नन्दनम्। माता अदितिः। भार्या शची) मरुत्वान्; मघवा; विडौजाः; पाकशासनः; वृद्धश्रवाः; सुनासीरः; पुरुहूतः; पुरन्दरः; जिष्णुः; लेखर्षभः; शक्रः; शतमन्युः; दिवस्पतिः; सुत्रामा; गोत्रभित्; वज्री; वासवः; वृत्रहा; वृषा; वास्तोस्पतिः; सुरपतिः; बलारातिः; जम्भभेदी; हरिहयः; स्वाराट्; नमुचिसूदनः; संक्रन्दनः; दुश्च्यवनः; तुराषाट्; मेघवाहनः; आखण्डलः; सहस्राक्षः; ऋभुक्षा; महेन्द्रः; कौशिकः; पूतक्रतुः; विश्वम्भरः; हरिः; पुरुदंशा; शतधृतिः; पृतनाषाट्; अहिद्विषः; वज्रपाणिः; पर्वतारिः; पर्यन्यः; देवताधिपः; नाकनाथः; पुलोमारिः; अर्हः; प्राचीनर्बाहिः; तपस्तक्षः; 'इन्द्रश्च विश्वभुग्ज्ञेयो विपश्चित्तदनन्तरम्। विभुः प्रभुः शिखिश्चैव तथैव च मनोजवः।' पूर्वदिक्पतिः; दिक्पालविशेषः; दिक्पालभेदः; विष्कुम्भादिसप्तविंशतियोगान्तर्गतषड्विंशयोगः; 'प्रतापशीलो बलवान् गुणज्ञः श्लेष्माधिकः श्रीकमलाम्युपेतः। किलेन्द्रयोगो यदि जन्मकाले महेन्द्रतुल्यः पुरुषः प्रसन्नः'–इति कोष्ठीप्रदीपः। अन्तरात्मा; आदित्यविशेषः; 'तत्र शक्रश्च विष्णुश्च जज्ञाते पुनरेव ह'—इति हरिवंशे। कुटजवृक्षः; रात्रिः; उपद्वीपविशेषः; परमेश्वरः; 'इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते'–इति श्रुतिः। इन्द्रियं; श्रेष्ठः; प्रथमः; यथा—नरेन्द्रो राजा, पक्षीन्द्रो गरुडः इत्यादिः। सूर्यः; वायुः।५२

इन्द्रकोषः पुं. [इन्द्रस्य ऐश्वर्यशालिनः कोषः] मञ्चः; खट्वा; तमङ्गकः। २९४

इन्द्रप्रहरणम् क्ली. [इन्द्रस्य प्रहरणम्] इन्द्रस्यास्त्रं; वज्रम्। ५६

इन्द्रलुप्तम् क्ली. [इन्द्राणाम् इन्द्रनीलवर्णकेशानां लुप्तं लोपो यस्मात्] इन्द्रलुप्तकः; केशनाशकरोगः; इन्द्रलुप्तकः; केशघ्नः; केशरोगविशेषः; 'रोमकूपानुगं पित्तं वातेन सह मूर्च्छितम्। प्रच्यावयति रोमाणि ततः श्लेष्मा सशोणितः॥ रुणद्धि रोमकूपांस्तु ततोऽन्येषामसम्भवः। तदिन्द्रलुप्तं खालित्यं रुज्येति च विभाव्यते'—इति वैद्यके। ६०५

इन्द्राणी स्त्री. [इन्द्रस्य ऐश्वर्यशालिनः सुरराजस्य वा पत्नी। इन्द्र+'इन्द्रवरुणेति' ङीष्, आनुक् च] इन्द्रभार्या; पुलोमजा; शची; पौलोमी; पूतक्रतायी; माहेन्द्री; जयवाहिनी; ऐन्द्री; शतावरी; 'यथेन्द्राणी महेन्द्रस्य लक्ष्मीर्लक्ष्मीपतेर्यथा'—इति भविष्यपुराणे। इन्द्रशक्तिः; 'इहेन्द्राणीमुप ह्वये वरुणानीम्'—ऋग्वेदे (१-२२-१२)। 'इन्द्राणीम् इन्द्रस्य सूर्यस्य वायोर्वा शक्तिम्'—इति दयानन्दसरस्वतीकृतभाष्यम्। इन्द्रसुरिसवृक्षः; स्त्रीणां करणं; नीलसिन्दुवारवृक्षः; स्थूलैला; सूक्ष्मैला; दुर्गा; 'ऐश्वर्यं परमं यस्या वशे चैव सुरासुराः। इदि परमैश्वर्ये च इन्द्राणी तेन सा शिवा'—इति देवीपुराणे, ४५ अध्यायः। अष्टमातृकान्तर्गतमातृकाविशेषः। ५५

इन्द्रायुधः पुं. [इन्द्रस्यायुधमिव, चापाकृतित्वात्] कृष्णाक्षाश्वः; 'मल्लिकाक्षः सितैर्नेत्रैः स्याद्वाजीन्द्रायुधोऽसितैः।' क्ली. इन्द्रधनुः; 'स नादं मेघनादस्य धनुश्चेन्द्रायुधप्रभम्'—इति रघुवंशे (१२।७९)। न दिवीन्द्रायुधं दृष्ट्वा कस्यचिद्दर्शयेद्बुधः'—इति (४।५९)। 'इन्द्रधनुष' इति भाषा। ४३८

इन्द्रावरजः पुं. [इन्द्रस्य अवरजः, वामनरूपेण अनुजः] विष्णुः; उपेन्द्रः; चक्रपाणिः; चतुर्भुजः। २३

इन्द्रियम् क्ली. [इन्द्रस्यात्मनो लिङ्गमनुमापकम्, इन्द्रेण ईश्वरेण सृष्टम्, इन्द्रेणात्मना मम चक्षुर्मम श्रोत्रमित्यादिक्रमेण ज्ञातम्, इन्द्रेण जुष्टं वा, इत्याद्यर्थेषु इन्द्रशब्दात् निपातनात् घच्] ज्ञानकर्मसाधनं; हृषीकं; विषयिं; अक्षं; करणं; ग्रहणम्; 'इन्द्रियाणां विचरतां विषये-

ष्वपहारिषु'—इति मनुः (२-८८)। (६३८) शुक्रं; वीर्यम्। विज्ञानं; 'यथा क्षयाम सर्ववीरया विशातन्त्रः शर्द्धाय धासयास्विन्द्रियम्'–इति ऋग्वेदे (१।१११।२)। 'इन्द्रियं विज्ञानम्'—इति दयानन्दभाष्यम्। ५३५

इन्द्रियग्रामः पुं. [इन्द्रियाणां ग्रामः] इन्द्रियसमूहः; इन्द्रियवर्गः। ८११

इन्धनम् क्ली. [इन्धे दीप्यतेऽग्निरनेन। इन्ध्+करणे +ल्युट्] अग्निसन्दीपनतृणकाष्ठादि; इध्मम्; एधः; समित्; एधं; समिन्धनम्; 'अन्नपानेन्धनादीनि ग्रामिकस्तान्यवाप्नुयात्'—इति मनुः (७-११८)। ६९

इभः पुं.– स्त्री. [एति गच्छतीति। इण्+भन्। औणादिकोऽयं प्रत्ययः] हस्ती; 'खराश्वोष्ट्रमृगेभानामजाविकवधन्तथा'—इति मनुः (११-६८)। 'इभदलितविकीर्णग्रन्थिनिष्यन्दगन्धः'—इति उत्तरचरिते। उत्तरपदे श्रेष्ठवाचकः। २१४

इरजः पुं. [इरायाः सुराया जातः। इरा+उ, बाहुलकाद् ह्रस्वः] इराजः; कामः। ३४

इरम्मदः पुं. [इरया उदकेन माद्यति दीप्यते,अबिन्धनत्वात्। 'उग्रम्पश्येरम्मदेत्यादिना' खश् प्रत्ययो मुपागमश्च निपातितः] वज्राग्निः; मेघज्योतिः; मेघाग्निः; अन्योन्यसङ्घट्टनेन मेघाग्निःसृत्य यज्ज्योतिर्वृक्षादौ पतति सः; मेघ इत्युपलक्षणं वातजाग्निरपि। ६९

इरा स्त्री. [इं कामं राति ददाति इति। इ+रा+क, यद्वा इ+रन्+टाप, निपातनाद् गुणाभावः] भूमिः; वाक्यम्; अन्नं; जलम्; 'इरां वहन्तो घृतमुक्षमाणा मित्रेण साकं सह संविशन्तु'—आश्वलायनगृह्यसूत्रे (२-९)। सरस्वती; कश्यपपत्नीविशेषः; 'धर्मपत्न्यः समाख्याताः कश्यपस्य वदाम्यहम्। अदितिर्दितिर्दनुः काला अमायुः सिंहिका मुनिः॥ कद्रूः प्राधा इरा क्रोधा विनता सुरभिः खशा'—इति गारुडे, ६ अध्यायः। तस्याः सृष्टिर्यथा—'इरा वृक्षलता वल्ली तृणजातिश्च सर्वशः। खशा च यक्षरक्षांसि मुनिरप्सरसस्तथा।' दैत्यविशेषः; 'मरीचिर्मघवांश्चैव इराशङ्कुशिरा वृकः।' इति हरिवंशे (३-८२)। मद्यम्। ८६९

इराजः पुं. [इरया मद्येन जातः इति। इरा+जन्+ड] कन्दर्पः; कामदेवः; मदनः; मन्मथः। ३४

इरिणम् क्लीः [ऋच्छतीति। ऋ गतिप्रापणयोः, किदिच्चेति इनन्] ऊषरभूमिः; 'यथेरिणे बीजमुप्त्वा न वप्ता लभते फलम्'—इति मनुः (३-१४२)। शून्यम्। १५८

इला स्त्री. [इलति विष्णुवरात् पुंस्त्वं प्राप्नोति इति। इल्+क+टाप्] पृथिवी; (८३४) वाक्यं; गौः। वैवस्वतमुनिकन्या; सा च विष्णुवरात् पुंस्त्वं प्राप्य सुद्युम्ननाम्ना ख्याता, पश्चात् शङ्करशप्तकुमारवनं प्रविश्य पुनः स्त्रीत्वं गता। बुधस्तां भार्यात्वेन स्वीकृत्य पुरूरवसं जनयामास। ततस्तस्याः पुरोहितो वशिष्ठः शङ्करमाराध्य तस्यै मासं स्त्रीत्वं, मासं पुंस्त्वं दत्तवान्—इति भागवतम्। कर्दमप्रजापतिपुत्र इलः कार्तिकेयजन्मदेशं प्रविश्य स्त्री भूत्वा इला नाम्ना ख्यातः। ततः पार्वतीमाराध्य मासं स्त्रीत्वं, मासं पुंस्त्वं च प्राप्तवान्—इति रामायणम्। १५६

इषः पुं. [इष्यते गम्यतेऽस्मिन् जिगीषुभिरिति। इष्+क] आश्विनमासः; 'इषजौं शरत्'—इति सुश्रुतः। 'यच्छरद्दूर्गस ओषधयः पच्यन्ते तेनेहैताविषश्चोर्गश्च'—इति शतपथब्राह्मणे (४-३)। ११४

इषीका स्त्री. [ईष्यते इति, ईषेः किद् ह्रस्वश्चेतीकन् ह्रस्वः टाप्] तूलिका; इषिका; काशतृणम्; 'पतङ्गानां पुच्छेषु त्वयेषीका प्रवेशिता।' 'इषीकां च यथा मुञ्जात् कश्चिन् निष्कृष्य दर्शयेत्। योगी निष्कृष्य चात्मानं तथा पश्यति देहतः'—इति महाभारते। 'तस्मिन्नास्थदिषीकास्त्रं रामो रामावबोधितः'—इति रघुः (१२-२३)। इषीकास्त्रं, काशास्त्रम्; गजचक्षुर्गोलकः; गजाक्षिकूटकः; हस्तिचक्षुर्गोलकः। १९१

इषुः पुं.– स्त्री. [इष्यति गच्छतीति। इष्+उ] बाणः; 'उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले'—इति शाकुन्तले। ४६६

इषुधिः स्त्री. [इषवो धीयन्तेऽस्मिन्। इषु+धा+कि] तूणः; 'धनुर्गाण्डीवमादाय तथाक्षय्ये महेषुधी'—इति महाभारते। ४६५

इष्टका, इष्टिका स्त्री. [इष्+तकन्+टाप्] गृहादिनिर्माणार्थदग्धमृत्तिकाखण्डः; 'ईंट' इति भाषा। 'कूपोदकं वटच्छाया श्यामा स्त्री इष्टकागृहम्। शीतकाले भवेदुष्णमुष्णकाले च शीतलम्'—इति चाणक्यः। 'मृण्मयात् कोटिगुणितं फलं स्याद् दारुभिः कृते। कोटिकोटिगुणं पुण्यफलं स्यादिष्टिकामये॥ द्विपरार्द्धगुणं पुण्यं

शैलजे तु विदुर्बुधाः। मृच्छिलयोः समं ज्ञेयं फलमाढ्य-दरिद्रयोः'—इति मठादिप्रतिष्ठातत्त्वे। २९३

इष्वासः पुं. [इषवो बाणा अस्यन्ते क्षिप्यन्तेऽनेन। इषु+अस्+करणे घञ्] धनुः; 'महोरस्को महेष्वासो गूढजत्रुररिन्दमः'—इति रामायणे। 'अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि'—इति भगवद्गीता (१-४)। त्रि. [इषून् बाणान् अस्यतीति, इषु+अस्+घञ्] इषुक्षेपकम्। ४६४

ई

ई अव्य.— दुःखभावनं; क्रोधः; प्रत्यक्षं; सन्निधिः; सम्बोधनम्; ईः पुं., कन्दर्पः; ई स्त्री. [अस्य विष्णोः पत्नी, ङीप्] लक्ष्मीः; दीर्घेकारः, चतुर्थस्वर-वर्णः; 'ई स्त्रीमूर्तिर्महामाया लोलाक्षी वामलोचनम्। गोविन्दः शेखरः पुष्टिः सुभद्रा रत्नसंज्ञकः॥ विष्णुर्लक्ष्मीः प्रहासश्च वाग्विशुद्धः परापरः। कालोत्तरीयो भेकण्डा रतिश्च पौण्ड्रवर्धनः॥ शिवोत्तमः शिवा तुष्टिश्चतुर्थी बिन्दुमालिनी। वैष्णवी वैन्दवी जिह्वा कामकला सनादका॥ पावकः कोटरः कीर्तिर्मोहनी कालकारिका। कुचद्वन्द्वं तर्जनी च शान्तिस्त्रिपुरसुन्दरी'—इति तन्त्रोक्त-वर्णाभिधानम्। ८७५

ईक्षणम् क्ली. [ईक्ष्+भावे ल्युट्] दर्शनं; 'कृतान्धा धन-लोभान्धा नोपकारेक्षणक्षमाः'—इति कथासरित्सागरे। [ईक्षतेऽनेनेति करणे ल्युट्] चक्षुः (५१९); 'इत्यद्रि-शोभाप्रहितेक्षणेन' इति रघुवंशे (२-२७)। 'अभिमुखे मयि संवृतमीक्षणम्'—इति शाकुन्तले। 'स्वासक्षा-मेक्षणा दीना सुनीतिर्वाक्यमब्रवीत्'—इति विष्णुपुराणे (१-११-१५)। निरूपणं; पर्यवेक्षणम्; 'स्थापये-दासने तस्मिन् खिन्नः कार्येक्षणे नृणाम्'—इति मनुः (७-१४१)। ५५६

ईडा स्त्री. [ईड्+क+टाप्] स्तुतिः; प्रशंसा। १४५

ईतिः स्त्री. [ईयतेऽनया। ई+क्तिन्] कृषेः षट्प्रकारो-पद्रवविशेषः; 'अतिवृष्टिरनावृष्टिः शलभा मूषिकाः खगाः। प्रत्यासन्नाश्च राजानः षडेता ईतयः स्मृताः॥' डिम्बः; विप्लवः; प्रवासः; नृपतिरहितयुद्धं; कलहभेदः; 'ईतयो व्याधयस्तन्द्रा दोषाः क्रोधादयस्तथा। उपद्रवाश्च वर्तन्ते आधयः क्षुद्भयं तथा'—इति महाभारते। १२७

ईप्सा स्त्री. [आप्तुम् इच्छा।-'अ प्रत्ययात्' इति अ, टाप्] कामना; इच्छा; मनोरथः; अभिलाषः। ७१०

ईर्मम् क्ली. [ईर्+बाहुलकान्मक्] व्रणः; 'मृगयुमिव मृगोऽय दक्षिणेर्मा'—इति भट्टिकाव्ये (४-४४)। ६३०

ईर्वारुः पुं.-स्त्री. [ईरं वृणोतीति। ईर्+वृ+बाहुलकाद् उण्] स्फुटिः। 'फूट' इति भाषा। २०९

ईर्षा स्त्री. [ईर्षणम्, ईर्ष्य्+अ, 'हसाल्लोपोऽशिति'—(मु बो.७७६) इति यलोपः] अक्षमा; 'कथमीर्षां न कुरुषे सुग्रीवस्य समीपतः'—रामायणे (४।२४।३७)। ७४०

ईर्षालुः त्रि. [ईर्षा+आलुच् बाहुलकात्] ईर्षा-विशिष्टः। ३८४

ईर्ष्या स्त्री. [ईर्ष्यणम्। ईर्ष्य्+अ+टाप्] परोत्कर्षा-सहिष्णुता; अक्षान्तिः; 'पैशुन्यं साहसं द्रोह ईर्ष्या-सूयार्थदूषणम्। वाग्दण्डजं च पारुष्यं क्रोधजोऽपि गणोष्टकः'—इति मनुः (७-४८)। स्त्रियः पत्युरन्य-प्रियासङ्गदर्शनादिजनितो मानभेदः; 'वचोभिरीर्ष्याकल-हेन लीलया समस्तभावैः खलु बन्धनं स्त्रियः।' ७४०

ईर्ष्यालुः त्रि. [ईर्ष्यां लाति। ईर्ष्या+ला+डु] ईर्षा-विशिष्टः; अक्षान्तियुक्तः; कुहनः; 'दिवसे सन्निधानेन पेशुनप्रेरणा यदि। ईर्ष्यालुना स्वैरिणीव रक्षितुं यदि पार्यते'—इति राजतरङ्गिणी। ३८४

ईलिः स्त्री. [ईर्यते इति, ईर्+इन्, रस्य लः] करपाली; गुप्तिका; ह्रस्वगदाकारहस्तदण्डः; 'सोटा' इति ख्यातः। करच्छुरी; एकधारा; यवनास्त्रम्। ५९५

ईली स्त्री. [ईर्+इन्, कृदिकारादिति ङीष्] ह्रस्व-गदाकारहस्तदण्डः; करपालिका; ईलिका; ईलिः; कारपाली; गुप्तिका; एकधारा इति ख्याते, यवनास्त्रे वा। ५९५

ईशः त्रि. [ईष्टे इति, ईश्+क] ईश्वरः; 'जगदीशो निरीश्वरः'—इति कुमारसम्भवे (२-९)। प्रभुः; 'कथंचिदीशा मनसां बभूवुः'—इति कुमारसम्भवे (३-३४)। पुं. महादेवः; 'शनैः कृतप्राणविमुक्ति-रीशः पर्यङ्कबन्धं निविडं बिभेद'—इति कुमारे (३-५९)। ईशानकोणाधिपतिः। ३५६

ईशानः पुं. [ईष्टे, ईश्+'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्'] महादेवः; 'तस्मिन् मुहूर्ते पुरसुन्दरीणामी-शानसंदर्शनलालसानाम्'—इति कुमारसम्भवे (७-५६)।

'तत्रेशानं समभ्यर्च्य त्रिरात्रोपोषितो नरः'—इति भारते। एकादशरुद्रान्तर्गतरुद्रविशेषः; '१ हराय; २ मृडाय; ३ शर्वाय; ४ शिवाय; ५ भवाय; ६ शङ्कराय; ७ ईशानाय; ८ उग्राय; ९ भीमाय; १० पशुपतये; ११ रुद्राय महादेवाय स्वाहा'—इति आश्वलायनगृह्यसूत्रे (४-९)। दूतमूर्तिवरः शिवः; धूम्रजटिलः; 'सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता। दूत त्वं गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः'—इति मार्कण्डेये (८८-२३)। शिवाष्टमूर्त्यन्तर्गतसूर्यमूर्तिः; परमेश्वरः; 'सर्वेन्द्रियगुणावासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम्। सर्वस्य प्रभुमीशानं सर्वस्य शरणं बृहत्'—कृष्णयजुर्वेदे। 'आद्यं पुरुषमीशानं पुरुहूतं पुरुष्टुतम्। ऋतमेकाक्षरं ब्रह्म व्यक्ताव्यक्तं सनातनम्।' साध्यापुत्रो देवताभेदः; 'धर्माल्लक्ष्म्युद्भवः कामः साध्या साध्यान् व्यजायत। प्रसवं च्यवनं चैव ईशानं सुरभिं तथा'—इति भारते। शमीवृक्षः; क्ली. ज्योतिः; पुं. तद्विशिष्टे; 'मुषाय सूर्यं कवे चक्रमीशान ओजसा'–इति ऋग्वेदे(१।१७५।४)।११

ईश्वरः पुं. [ईष्टे इति, ईश्+वरच्। यद्वा अश्नुते व्याप्नोतीति। अश्वातोर्वरट् उपधाया ईत्वं च] ऐश्वर्यशाली; राष्ट्री; अर्यः; नियुत्वान्; इनः; हरिः; 'रुद्र उवाच—हरे कथय देवेश देवदेव क ईश्वरः। को ध्येयः कश्च वै पूज्यः कैर्व्रतैस्तुष्यते परः॥ हरिरुवाच—'शृणु रुद्र प्रवक्ष्यामि ब्रह्मणा च सुरैः सह। अहं हि देवो देवानां सर्वलोकेश्वरेश्वरः'—इति गारुडे (२ अध्यायः)। नृपतिविशेषः; 'मतिमांश्च मनुष्येन्द्र ईश्वरश्चेति विश्रुतः' —इति महाभारते। कन्दर्पः; विशुद्धसत्त्वप्रधानाज्ञानोपहितचैतन्यम्; शिवः; 'तद्गौरवान्मङ्गलमण्डनश्रीः सा पस्पृशे केवलमीश्वरेण'—इति कुमारे (७-३१)। त्रि. आढ्यः; 'दरिद्रान् भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरे धनम्' —इति हितोपदेशे (१-७६)। स्वामी; 'अहं चैव हि यच्चान्यन्ममास्ति वसु किञ्चन। तत्सर्वं तव विस्रब्धं कुरु प्रणयमीश्वर'—इति महाभारते। नियन्ता; प्रभुः; 'ईश्वरः सर्वभूतानां धर्मकोषस्य गुप्तये'—इति मनुः (१-९९)। ३५६

ईषत् अव्य. [ईषणमिति। ईष्+अत्] अल्पं; किञ्चित्; मनाक्; 'न दृष्ट्वा कुपितं पुत्रं ईषत्प्रस्फुरिताधरम्'—इति विष्णुपुराणे (१-११-१२)। 'ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्रबिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्ति कान्तम्'—इति मार्कण्डेयपुराणे। 'हृदि तिष्ठति यच्छुद्धं रक्तमीषत् सपीतकम्'—इति चरकः। ८८२

ईहामृगः पुं. [ईहाप्रधानो मृगो वृकः] कुक्कुरभेदः; वनकुक्कुरः; कुक्कुरप्रमाणहरिणघ्नकपिलवर्णजन्तुविशेषः; कोकः; वृकः; 'भेड़िया' इति भाषा। 'पुलहस्य सुता राजन् शलभाश्च प्रकीर्तिताः। सिंहाः किंपुरुषा व्याघ्रा यक्षा ईहामृगास्तथा'—इति महाभारते। नाटकरूपकभेदः (नायको मृगवदलभ्यामपि नायिकामीहते वाञ्छत्यत्र इति); 'ईहामृगो मिश्रवृत्तश्चतुरङ्कः प्रकीर्तितः'—इति साहित्यदर्पणे। २२८

ईहावृकः पुं. [ईहाप्रधानो वृकः] ईहामृगः। २२८

उ

उक्षतरः पुं. [उक्षन्+तरप्] महावृषः। २६५

उक्षा [न्] पुं. [उक्ष्+कनिन्] वृषः। 'उक्षा मिमाति प्रतियन्ति धेनवः'—इति ऋग्वेदे (८-७१-९)। 'तत्रावतीर्याच्युतदत्तहस्तः शरद्घनाद्दीधितिमानिवोक्ष्णः'—इति कुमारसम्भवे (७-७०)। ऋषभौषधिः। २६३

उखा स्त्री. [उख्+क+टाप्] स्थाली; 'इद्धः स्वतेजसा वह्निरुखागतमिवोदकम्'—इति सुश्रुते। 'बटुली' इति भाषा। ३१४

उख्यम् त्रि. [उखायां संस्कृतम्। उखा+यत्] स्थालीपक्वमांसादि; पैठरम्; 'शूल्यमुख्यं च होमवान्'—इति भट्टिः (४-९)। [उखायां भवः] अग्निः; 'उख्यान् (अग्नीन्) हस्तेषु बिभ्रतः'—इति अथर्ववेदे (४।१४।२)। ३२३

उग्रः पुं. [उच्+रक् गश्चान्तादेशः] महादेवः; 'उग्रो वंशकरो वंशो वंशनादो ह्यनिन्दितः' —महाभारते। नृपविशेषः; क्षत्रियात् शूद्रायां जातः जातिविशेषः; 'क्षत्रियात् शूद्रकन्यायां क्रूराचारविहारवान्। क्षत्रशूद्रवपुर्जन्तुरुग्रो नाम प्रजायते।' 'क्षत्त्रुग्रपुक्कसानान्तु बिलौकोवधबन्धनम्'—इति मनुः (१०।९।४९)। नक्षत्रगणविशेषः—स च पूर्वाफाल्गुनीपूर्वाषाढापूर्वाभाद्रपदामघाभरण्यात्मकः; शोभाञ्जनवृक्षः; केरलदेशः; रुद्रः; उग्रो देवः; दानवविशेषः; 'वेगवान् केतुमानुग्रः सोग्रव्यग्रो महासुरः'—इति हरिवंशे। धृतराष्ट्रस्य शतपुत्रेषु एकः;

'उग्रभीमरथौ वीरौ वीरबाहुरलोलुपः'-इति महाभारते। नरेन्द्रादित्याख्यस्य कश्मीरराजस्य गुरुः; 'दिव्यानुग्रह-भागुग्राभिधो यस्य गुरुर्व्यधात्'—इति राजतरङ्गिणी। विष्णुः; स्त्री. योगिनीभेदः; 'महाकालस्य रुद्राणी उग्रा भीमा तथैव च' इति कालिका.पु. ६० अध्यायः। क्ली. वत्सनाभनामविषम्। त्रि. रौद्रम्; उत्कटम्। ११

उग्रधन्वा [न्] पुं. [उग्रं धनुर्यस्य। धनुषश्चेत्यनङ्] इन्द्रः; 'स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी संस्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन। संसृष्टजित् सोमपा बाहुः शर्ध्युग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता'—इति ऋग्वेदे (१०-१०३-३)। शिवः; त्रि. उग्रधनुर्विशिष्टे। ५४

उचितम् त्रि. [वच्+'रुचिवचिकुचिकुटिभ्यः कितच्' इति कितच्प्रत्ययः] विदितं; न्याय्यं; परिमितं; युक्तं; ग्राह्यम्। ७४६

उच्चम् त्रि. [उच्चिनोतीति। उत्+चिञ्+'अन्येभ्योऽपि' इति ड। उच्चैस्त्वमस्ति अत्र वा, अर्श आद्यच्, अव्ययानामिति टिलोपः] उपरि; प्रांशु; उन्नतम्; उदग्रम्; उच्छ्रितं; तुङ्गम्; उत्तुङ्गम्; 'ग्रहैस्ततः पञ्चभिरुच्चसंश्रयैरसूर्यगैः सूचितभाग्यसम्पदम्'-इति रघुवंशे (३-१३)। 'अजवृषभमृगाङ्गनाकुलीरा झषवणिजौ च दिवाकरादितुङ्गाः। दशशिखिमनुयुक्तिथीन्द्रियांशैस् त्रिनवकविंशतिभिश्च तेऽस्तनीचाः'—बृहज्जातके। ७५१

उच्चण्डः त्रि. [उत्+चण्डतीति, चडि कोपे+अच्] त्वरान्वितः; अविलम्बितः। ७८३

उच्चयः पुं. [उत्+चि+अच्] परिधानवस्त्रग्रन्थिः; नीवी; किरातार्जुनीये (८-१५, ५१)। पुष्पादीनामुत्तोलनं; 'करिष्यामि शरैस्तीक्ष्णैस्तच्छिरः कमलोच्चयम्'—इति रघुवंशे (१०-४४)। 'पुष्पोच्चयं नाटयति'—इति शाकुन्तले। राशिः; समष्टिः; 'शिलोच्चयोऽपि क्षितिपालमुच्चैः'—इति रघुवंशे (२-५१)। 'वाक्यं स्याद्योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः—इति साहित्यदर्पणे (२-१७)। ५४७

उच्चारः पुं. [उच्चार्यते परित्यज्यते इति। उत्+चर्+णिच्+घञ्] विष्ठा; 'मूत्रोच्चारसमुत्सर्ग दिवा कुर्यादुदङ्मुखः' इति मनुः (४-५०)। 'यस्योच्चारं विना मूत्रं सम्यग्वायुश्च गच्छति। दीप्ताग्नेर्लघुकोष्ठस्य स्थितस्तस्योदरामयः'—इति सुश्रुते। उत्पारनं; कथनम्। ६३७

उच्चावचः त्रि. [उदक् च अवाक् च। मयूरव्यंसकादित्वात् साधुः] अनेकप्रकारः; नैकभेदः; माघे (४-४६)। 'उल्कानिर्घातकेतूंश्च ज्योतींष्युच्चावचानि च।' 'उच्चावचेषु भूतेषु स्थितं तं व्याप्य तिष्ठतः'—इति च मनुः (१-३८), (६-७३)। १३९

उच्चूलः पुं. [उद्गता चूडा यस्य, डस्य लत्वम्] ध्वजोर्द्ध-मुखकूर्चः; 'ध्वजा का फहरेरा' इति भाषा। अस्य पट्का अवचूलः। ४५८

उच्चैःश्रवाः [स्] पुं. [उच्चैः श्रवो यशो यस्य, यद्वा उच्चैः श्रवसी कर्णौ यस्य, यद्वा उच्चैः शृणोतीति। उच्चैः+श्रु+असुन्] इन्द्रघोटकः; स तु श्वेतवर्णः समुद्रमन्थनोत्थितः; 'उच्चैरुच्चैःश्रवास्तेन हयरत्नमहारि च'—इति कुमारे (२-४७)। ६१

उच्चैस्तरः पुं. [अतिशयार्थे तरप्] अत्युच्चः; उन्नततरः। १४०

उच्छिष्टम् त्रि. [उत् शिष्यते यत्। उत्+शिष्+क्त] भुक्तावशिष्टम्; 'जूठा' इति भाषा। 'चाण्डालपतिताभुक्तावशिष्टम्; 'जूठा' इति भाषा। 'चाण्डालपतितादीनामुच्छिष्टान्नस्य भक्षणे। द्विजः शुध्येत् पराकेण शूद्रः कृच्छ्रेण शुध्यति॥' ३२६

उच्छीर्षकम् क्ली. [उत् ऊर्ध्वंस्थापितं शीर्षं मस्तकं येन। बहुव्रीह्यर्थे कन्] उपधानम्; उपबर्हः; 'तकिया' इति भाषा। ३०९

उच्छृङ्खलम् त्रि. [उद्गतं शृङ्खलं निगडं यस्य] शृङ्खला-रहितम्; अबाधम्; उद्दाम; अनियन्त्रितम्; अनर्गलं; निरङ्कुशम्; 'अन्यदुच्छृङ्खलं सत्त्वमन्यत् शास्त्रनियन्त्रितम्'—इति हितोपदेशे (३-९७)। 'सम्मूर्च्छदुच्छृङ्खलशङ्खनिस्वनः'—इति माघे (१२-१३)। ७५१

उज्जयिनी (उज्जयनी) स्त्री. [उत् ऊर्ध्वः जयः अस्ति अस्याः। इनि, ङीप्। अथवा उच्चैर्जयति, ल्युट्, ङीप्] विशाला नगरी; अवन्ती; पुष्पकरण्डिनी; मालवदेशस्य नगरी; मोक्षदसप्तपुर्यन्तर्गतपुरी; अवन्तिका; विक्रमादित्यराजधानी; 'उज्जैन' इति ख्याता; 'सौधोत्सङ्गप्रणयविमुखो मा स्म भूरुज्जयिन्याः'—पूर्वमेघे (२९)। २८७

उज्ज्वलम् त्रि. [उच्चैर्ज्वलति प्रकाशते इति। उत्+ज्वल्+अच्] दीप्तं; विशदं; विकाशितम्; 'अस्माकं सखि वाससी न रुचिरे ग्रैवेयकं नोज्ज्वलम्'—इति साहित्य-

दर्पणे। 'विचित्रोज्ज्वलवेशा तु वलन्नूपुरनिःस्वना।' क्ली. स्वर्णम्। पुं. शृङ्गाररसः; 'स राशिरासीन्महसां महोज्ज्वलः'—इति नैषधे (१-१)। १३२

उज्झितम् त्रि. [उज्झ् + क्त] उत्सृष्टं, त्यक्तं; वर्जितम्; 'अविरतोज्झितवारिविपाण्डुभिः'—इति किराते (५-६)। 'उज्झितायास्त्वया नाथ! तदैव मरणं वरम्' इति रामायणे। ७१४

उटजः पुं.– क्ली. [उटास्तृणपर्णादयस्तेभ्यो जात इति। उट+जन्+ड] गृहमात्रम्; मुनीनां पत्ररचितगृहं; पर्णशाला; पर्णोटजः; 'आकीर्णमृषिपत्नीनामुटजद्वार-रोधिभिः।' 'मृगैर्वर्तितरोमन्थमुटजाङ्गणभूमिषु'—इति रघुवंशे (१-५०, ५२)। २९१

उडु क्ली.-स्त्री. [उ रोषोक्तिपूर्वकं डयते इति। उ+डी+मितद्र्वादित्वाड् डु] नक्षत्रम्; 'तदोडुराजः ककुभः करैर्मुखम्'—इति भागवतम् (१०-२९)। 'इन्दु-प्रकाशान्तरितोडुतुल्याः'—इति रघुवंशे (१६।६५)। जले क्ली.। ५१

उडुपः पुं.– क्ली. [उडुनो जलात् पाति रक्षतीति। उडु+पा+क] भेलकं; प्लवः; कोलः; भेलकः; उडूपः; तरणः; तारणः; तारकः; 'तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्'—इति रघुवंशे (१-२)। पुं. चन्द्रः; 'अपश्यद् वदनं तस्य रश्मिवन्तमिवोडुपम्'—इति महाभारते। चर्मावनद्धपानपात्रम्; 'चर्मावनद्धमुडुपं प्लवः काष्ठं करण्डवत्'—इति सज्जनः। ६७१

उडुम्बरम् क्ली. [उडुं वृणातीति। उडु+वृ+अच्] ताम्रम्; कर्षः। १७०

उत अव्य. [उ शब्दे, क्त] वितर्कः, अत्यर्थं; विकल्पः; समुच्चयः; प्रश्नः; पादपूरणम्; अप्यर्थे; एवार्थे; 'किमेतदारण्यम् उत ग्राम्यम्'—इति पञ्चतन्त्रे। 'तत्किमयमातपदोषः स्याद् उत यथा मे मनसि वर्तते'—इति शाकुन्तले। 'वीरो रसः किमयमित्युत दर्प एषः'—इति उत्तरचरिते। त्रि. उतम् [व्ये+क्त, यजादित्वात् सम्प्रसारणम्] तन्तुसन्तानः; ऊतं; स्यूतम्। 'बुना' इति भाषा। ८८०

उताहो अव्य. [उत च आहो च अनयोः समाहारः] विकल्पः; सन्देहः; उताहोस्वित्; 'क्षमा स्वित् श्रेयसी तात उताहो तेज इत्युत', 'यक्षी वा राक्षसी वा त्वम् उताहोऽसि सुराङ्गना'—इति महाभारते। परिप्रश्नः; विचारः। ८८०

उत्कः त्रि. [उद्गतं मनो यस्य। उत्+कन्] उन्मनाः; अन्यमनस्कः; 'तच्छ्रुत्वा ते श्रवणसुभगं गर्जितं मानसोत्काः'—इति मेघदूते (११)। 'अगमयदद्रिसुतासमागमोत्कः'—इति कुमारसम्भवे (६-९५)। ३८६

उत्कटम् त्रि. [उद्गतः कटः आवरणं यस्य] तीव्रं; मत्तं; विषमम्; 'चन्द्रांशुनिकराभासा हाराः कासाञ्चिदुत्कटाः। स्तनमध्ये सुविन्यस्ता विरेजुर्हंसपाण्डराः'—इति रामायणे। क्ली. गुडत्वक्; 'दालचीनी' इति भाषा। 'त्वक्पत्रं च वराङ्गं स्याद् भृङ्गं चोदन्तमुत्कटम्'—इति भावप्रकाशः। पुं. [उद्गतमदवृत्तेः उच्छब्दात् स्वार्थे सम्मोदश्चेति कटच्] मदः; सञ्जातमदहस्ती; शरः; रक्तेक्षुः। ७४४

उत्कण्ठा स्त्री. [उत्+कठि+अ+टाप्] उत्कलिका; इष्टलाभे कालक्षेपासहिष्णुता; कामादिजातस्मृतिः; उद्वाहुलकेन स्मरणम्; उत्केन दयितस्मरणं; प्रियाभिलाषादुन्मनस्कत्वम्; 'गाढोत्कण्ठां गुरुषु दिवसेष्वेषु गच्छत्सु बालाम्'—इति मेघदूते (८३)। 'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया'—इति शाकुन्तले। ७४२

उत्कण्ठितम् त्रि. [उत्कण्ठा जातास्य। उत्कण्ठा+इतच्] उत्कण्ठायुक्तम्; उत्कम्; उत्सुकम्; उन्मनः; 'साश्रेणास्रद्रुतमविरतोत्कण्ठमुत्कण्ठितेन'--इति मेघदूते (१०३)। ३८६

उत्करः पुं. [उत्कीर्यते इति। उत्+कॄ+अप्] धान्यादिराशिः; स्तूपः; 'सिक्तराजपथान् रम्यान् प्रकीर्णकुसुमोत्करान्'—इति रामायणे। ६८६

उत्कर्षः पुं. [उत्+कृष्+घञ्] सुखम्; (८३६, ८५३) प्राधान्यं; श्रेष्ठता; 'उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले'—इति शाकुन्तले। 'निनीषुः कुलमुत्कर्षमधमानधमांस्त्यजेत्'–इति मनुः (४-२४४)। वृद्धिः; 'पञ्चानामपि भूतानामुत्कर्षं पुपुषुर्गुणाः'—इति रघुवंशे (४-११)। त्रि. अतिशययुक्तः; स्वकालात् परकालकर्तव्यः। १२३

उत्कलिका स्त्री. [उत्+कल्+वुन्+टाप्] तरङ्गः; 'वनावलीरुत्कलिकासहस्रप्रतिक्षणोत्कूलितशैवलाभाः'—

इति माघे (३–७०)। (७४२) उत्कण्ठा; उत्सुकता; औत्सुक्यम्; 'ततोऽन्येद्युः प्रतिपदं तत्तदुत्कलिकाभृता'—इति कथासरित्सागरे (२२–१०५)। कलिका; 'उद्दामोत्कलिकां विपाण्डुररुचं प्रारब्धजृम्भां क्षणात्'—इति रत्नावली। ६५३

उत्कोचः पुं.– स्त्री. [उत्कोचति अशुभं नाशयतीति। उत्+कुच्+क] प्राभृतं; ढौकनं; लम्बा; कोशलिकम्; आमिषम्; उपाच्चारः; प्रदा; आनन्दा; हारः; ग्राह्यम्; अयनम्; उपदानकम्; अपप्रदानम्; 'उत्कोचजीविनो द्रव्यहीनान् कृत्वा प्रवासयेत्'—इति याज्ञवल्क्ये (१–३–३८)। ४३४

उत्क्रोशः पुं.– स्त्री. [उत्क्रोशति प्रहरे प्रहरे शब्दं करोतीति। उत्+क्रुश्+अच्] कुररपक्षी; कुररी। २४९

उत्तंसः पुं. [उत्तंसयति उत्तंस्यतेऽनेन वा। तसिः सौत्रो भूषार्थः, पचाद्यच् हलश्चेति घञ् वा] शेखरः; शिरोभूषणं; मतान्तरे क्लीबलिङ्गोऽपि। 'नोत्तंसं क्षिपति क्षितौ श्रवणतः सा मे स्फुटेऽप्यागसि'—इति साहित्यदर्पणे। कर्णपूरः; कर्णाभरणम्। ५५४

उत्तमः त्रि. [अतिशयेन उत्कृष्टः। उत्+तमप्, द्रव्यप्रकर्षार्थत्वान्नाम्, यद्वा उत्ताम्यति, तमु+अच्, उत्तम्यते वा, घञ्। नोदात्तेति न वृद्धिः] भद्रः; उत्कृष्टः; प्रधानं; प्रमुखः; प्रवेकः; अनुत्तमः; मुख्यः; वर्यः; प्रवर्हः; अनवरार्ध्यः; परार्ध्यः; अग्रः; वरेण्यः; प्राग्रहरः; प्राग्र्यः; अग्र्य; अग्रीयः; अग्रियः; मुखः; अग्रणीः; 'उत्तमस्यापि वर्णस्य नीचोऽपि गृहमागतः'—इति हितोपदेशे। 'उत्तमाद्देवरात् पुंसः काङ्क्षन्ते पुत्रमापदि'—इति महाभारते। पुं. वैशिकनामनायकभेदः; प्रियव्रतराजपुत्रः; उत्तानपादस्य राज्ञः स्वनामख्यातपुत्रभेदः; 'तयोरुत्तानपादस्य सुरुच्यामुत्तमः सुतः'—इति विष्णुपुराणे। ६९०

उत्तमाङ्गम् क्ली. [उत्तमं प्रशस्तमङ्गम्] मस्तकम्; 'कश्चिद् द्विषत्खड्गहृतोत्तमाङ्गः'—इति रघुवंशे (७–५१)। 'बभौ पतद्गङ्ग इवोत्तमाङ्गे'—इति कुमारसम्भवे (७–४१)। मुखम्; 'उत्तमाङ्गोद्भवाज्ज्यैष्ठयाद् ब्रह्मणश्चैव धारणात्। सर्वस्यैवास्य सर्गस्य धर्मतो ब्राह्मणः प्रभुः'—इति मानवे (१–९३)। ५१८

उत्तरः त्रि. [अतिशयेन उद्गतः। उत्+तरप्] उदीची; 'उत्तरे जाह्नवीतीरे हिमवन्तं शिलोच्चयम्'—इति रामायणे। उत्तमः; प्रधानं; श्रेष्ठः; 'नृपा इवोपप्लविनः परेभ्यो धर्मोत्तरं मध्यममाश्रयन्ते'—इति रघुवंशे (१३–७)। 'ब्रह्मधर्मोत्तरे राज्ये शान्तनुर्विनयात्मवान्'—इति महाभारते। अनन्तरम्; 'वित्तं बन्धुर्वयः कर्म विद्या भवति पञ्चमी। एतानि मान्यस्थानानि गरीयो यद्यदुत्तरम्'—इति मनुः (२–१३६)। ऊर्ध्वः। पुं. विराटराजपुत्रः; 'तमुत्तरं वीक्ष्य रथोत्तमे स्थितम्।' 'सहोत्तरेणास्तु तदद्य मङ्गलम्'—इति महाभारते। पर्वतप्रभेदः; 'दक्षिणस्योत्तरो गिरिः'—इति रामायणे। [उत्तारयति संसारसागराद् इति व्युत्पत्तेः] शिवः; हरिः;—भारते (१३।१४९।६६)। क्ली. प्रतिवाक्यम्। १०१

उत्तरकालः पुं. [उत्तरः कालः] भविष्यत्कालः; गौणकालः; 'एवमागामियागीयमुख्यकालादधस्तनः। स्वकालादुत्तरो गौणः कालः पूर्वस्य कर्मणः'—इति हरिहरपद्धतिः। ११८

उत्तरङ्गम् क्ली. [उत्तर+गम्+खश्] द्वारोर्ध्ववक्रदारु; द्वारस्योपरि तिर्यग्दारु; त्रि. उद्गततरङ्गे; 'प्रत्यग्रहीत्पार्थिववाहिनीं तां भागीरथीं शोण इवोत्तरङ्गः'—इति रघुवंशे (७–३६)। ३००

उत्तरच्छदः पुं. [उत्तरम् ऊर्ध्वभागः छाद्यतेऽनेन। छद् संवरणे, घ, छादेर्घे इति ह्रस्वः] प्रच्छदपटः, दीर्घमाच्छादनवस्त्रम्। डोलिका–सिंहासनाद्याच्छादकम्। ३०८

उत्तरा स्त्री. [उत्तर+टाप्] उत्तरा दिक्; कौवेरी; देवी; उदीची; 'एवं स पुरुषव्याघ्रो विजिग्ये दिशमुत्तराम्'—इति महाभारते। कर्कटवृश्चिकमीनराशयः; 'मेषसिंहधनुः प्राच्यां दक्षिणस्यां तु तत्परे। प्रतीच्यां तत्परे ज्ञेया उदीच्यां च ततः परे'—इति समयप्रदीपः। विराटराजकन्या; अभिमन्युपत्नी; 'स तत्र नर्मसंयुक्तमकरोत् पाण्डवो बहु। उत्तरायाः प्रमुखतः सर्वं जानन्नरिन्दमः'—इति महाभारते। १०१

उत्तराशापतिः पुं. [उत्तराशायाः उत्तरदिशः अधिपतिः अधिष्ठाता] कुवेरः। ७९

उत्तरासङ्गः पुं. [उत्तरे ऊर्ध्वभागे आसज्यते। उत्तर+आ+सञ्ज्+घञ्] उत्तरीयवस्त्रम; उत्तरीयम्। 'दुपट्टा' इति भाषा। ४१०

उत्तरीयम् क्ली. [उत्तरस्मिन् ऊर्ध्वदेहभागे भवम्।

उत्तर+छ] उत्तरीयवस्त्रं; प्रावारः; उत्तरासङ्गः; बृहतिका; संव्यानं; कक्षा; 'अथास्य रत्नग्रथितोत्तरीयमेकान्तपाण्डुस्तनलम्बि हारम्'—इति रघुवंशे (१६-४३) । 'उत्तरीयमिवासक्तं सुव्यक्तं सीतया तदा'—इति रामायणे। ५४६

उत्तालः त्रि. [उत्+तल्+घञ्] त्वरितः; उन्नतः (८००); उत्कटः; श्रेष्ठः; विकरालः; प्लवङ्गमः; 'लसदुत्तालवेतालतालवाद्यं विवेश तत्। श्मशानं कृष्णरजनीनिवासभवनोपमम्'—इति कथासरित्सागरे (२५-१३६)। 'अन्योऽन्यप्रतिघातसङ्कुलचलत्कल्लोलकोलाहलैः। उत्तालास्त इमे गभीरपयसः पुण्याः सरित्सङ्गमाः'—इति उत्तररामचरिते। ३७०

उत्पलम् क्ली. [उत्पलतीति। पल् गतौ, पचाद्यच्] नीलकमलम्; कुष्ठौषधिः; पुष्पं; जलजपुष्पमात्रं; पद्मकुसुमादि; कुवलयं; कुवलं; कुवेलम्; 'नवावतारं कमलादिवोत्पलम्'—इति रघुवंशे (३-३६)। जलपुष्पविशेषः; अनुष्णं; रात्रिपुष्पं; जलाह्वयं; हिमाब्जं; निशापुष्पम्; 'उत्पलानि कषायाणि पित्तरक्तहराणि च'—इति चरकः। 'तस्मादल्पान्तरगुणे विद्यात्कुवलयोत्पले'—इति सुश्रुते। पुं. [उद्गतं पलं मांसं यस्मात् सः] मांसशून्यः। ६८१

उत्पश्यम् त्रि. [उदूर्ध्वं पश्यतीति। उत्+दृश्+श] उन्मुखम्; ऊर्ध्वदृष्टिविशिष्टम्। ३८५

उत्पाटितम् त्रि. [उत्+पट्+णिच्+क्त] कृतोत्पाटनम्; उन्मूलितम्; उत्खातम्; आवर्हितम्; उद्धृतम्। ७१२

उत्पातः पुं. [उत्+पत्+घञ्] उत्पतति अकस्मादायाति यः; प्राणिनां शुभाशुभसूचकमहाभूतविकारभूकम्पादिः; अजन्यम्; उपसर्गः; उल्कापातः (८४०); 'नरपतिदेशविनाशे केतोरुदयेऽथवा ग्रहेऽर्केन्द्वोः। उत्पातानां प्रभवः स्वर्तुभवश्चाप्यदोषाय'—इति बृहत्संहितायाम्। उत्पतनम्; उल्लम्फः; 'एकोत्पातेन ते लङ्कामेष्यन्ति हरिपुङ्गवाः'—इति रामायणे। उन्नतिः; वृद्धिः; 'करनिहितकन्दुकसमाः पातोत्पाता मनुष्याणाम्'—इति हितोपदेशे। उत्पत्तिः; 'बुद्धिरात्मानुगातीव उत्पातेन विधीयते। तदाश्रिता हि सा ज्ञेया बुद्धिस्तस्यैषिणी भवेत्'—इति महाभारते। १२७

उत्पिञ्जलः त्रि. [उद्गतिशयः पिञ्जलो व्यग्रः] भृशमाकुलः; अतिशयव्याकुलः; समुत्पिञ्जः; पिञ्जलः। ७३१

उत्प्रासः पुं. [उत्+प्र+असु क्षेपणे, भावे घञ्] उच्चैर्हासः; सव्याजमुपहासः; उत्क्षेपणम्। ७३१

उत्सः पुं. [उनत्ति जलेन। उन्द्+'उन्दिगुधिकुषिभ्यश्चेति' स, किदित्यनुवृत्तेर्नलोपः] प्रस्रवणं; गिरेरुपरि निर्झरादिप्रभवजलसङ्घातः; अजस्रं मन्दवेगेन स्रवज्जलम्। ६७७

उत्सङ्गः पुं. [उत्स्वजते मिलति यत्र। उत्+सञ्ज्+घञ्] क्रोडम्; 'उत्सङ्गे वा मलिनवसने सौम्य! निक्षिप्य वीणाम्'—इति मेघदूते। 'प्रणयेनागतं पुत्रमुत्सङ्गारोहणोत्सुकम्'—इति विष्णुपुराणम्। पर्वतादीनां शिखरदेशः; सानुः; 'शिलाविभङ्गैर्मृगराजशावस्तुङ्गं नगोत्सङ्गमिवारुरोह।' 'गोद' इति भाषा। सौधादीनामुपरिभागः; 'सौधोत्सङ्गप्रणयविमुखो मास्मै भूरुज्जयिन्याः'—इति मेघदूते। अभ्यन्तरभागः; 'वनेचराणां वनितासखानां दरीगृहोत्सङ्गनिषक्तभासः'—इति कुमारे (१-१०)। ऊर्ध्वतलः; बहिर्भागः; 'दृषदो वासितोत्सङ्गा निषण्णमृगनाभिभिः'—इति रघुवंशे (४-७४)। सङ्गमः; आलिङ्गनं; विवाहः; व्रणाधोभाग; 'अभ्यन्तरमुत्सङ्गं कृत्वा भूयोऽपि विकरोति'—इति सुश्रुते। गर्भः; 'आसीन्मम मतिः कृष्ण! पूर्णोत्सङ्गा जनार्दन'—इति महाभारते। ५२८

उत्सर्गः पुं. [उत्+सृज्+घञ्] दानम्; उत्सर्जनं; त्यागः; विहापितं; विसर्जनं; विश्राणनं; वितरणं; स्पर्शनं; प्रतिपादनं; प्रादेशनं; निर्वपणम्; वर्जनम्; अपवर्जनम्; अंहतिः; 'श्रीलक्षणोत्सर्गविनीतवेशाः'—इति कुमारसम्भवे (७-३५)। 'तोयोत्सर्गद्रुततरगतिस्तत्परं वर्त्म तीर्णः'—इति मेघदूते। 'तस्योत्सर्गेण शुध्यन्ति जाप्येन तपसैव च।' सामान्यविधिः; 'अपवादैरिवोत्सर्गाः कृतव्यावृत्तयः परैः'—इति कुमारे (२-२७)। साग्निकर्तव्यक्रियाविशेषः; अपानवायोर्व्यापारः; मलमूत्रादिवर्जनम्; उत्सृज्यते विण्मूत्रमनेनेति व्युत्पत्त्या पाय्विन्द्रियम्; 'मनसीन्दुं दिशः श्रोत्रे क्रान्ते विष्णुं बले हरम्। वाच्यग्निं मित्रमुत्सर्गे प्रजने च प्रजापतिम्'—इति मनुः (१२-१२१)। ४१९

उत्सवः पुं. [उत्+सू+अप्] नियताह्लादजनकव्यापारः; क्षणः; उद्धवः; उद्धर्षः; महः; 'तस्मादेताः

सदा पूज्या भूषणाच्छादनाशनैः । भूतिकामैर्नरैर्नित्यं सत्कारेषूत्सवेषु च'—इति मनुः (३–५९) । उत्सेकः; इच्छाप्रसवः; कोपः; उन्नतिः; अभ्युदयः; 'उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे'—इति हितोपदेशे । ७६३

उत्सादनम् क्ली. [उत्+सद्+णिच्+ल्युट्] उद्वर्तनम्; 'उत्सादनं च गात्राणां स्नापनोच्छिष्टभोजने'—इति मनुः (२–२०९) । समुल्लेखः; उद्वाहनं; विनाशः; उन्मूलनम्; 'पूर्वं क्षत्रवधं कृत्वा गतमन्युर्गतज्वरः । क्षत्रस्योत्सादनं भूयो न खल्वस्य चिकीर्षितम्'—इति रामायणे । औषधलेपनादिना व्रणस्य संशोधनम्; 'अपामार्गोऽश्वगन्धा च तालपत्री सुवर्चला । उत्सादने प्रशस्यन्ते काकोल्यादिश्च यो गणः ।' 'उत्सादनाद् भवेत् स्त्रीणां विशेषात्कान्तिमद्वपुः । प्रहर्षसौभाग्यमृजालाघवादिगुणान्वितम्'—इति च सुश्रुते । ७३१

उत्सारकः पुं. [उत्सार्यन्ते प्रभुद्वारतोऽनेन इति । उत्+सृ+णिच्+वुण्] द्वारपालः; उत्सारणकर्ता । ४२४

उत्साहः पुं. [उत्+सह्+घञ्] उद्यमः; अध्यवसायः; सूत्रम्; कल्याणम्; भावविशेषः; 'रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा । जुगुप्सा विस्मयश्चेत्थमष्टौ प्रोक्ताः शमोऽपि च'—इति साहित्यदर्पणे । ध्रुवकविशेषः; 'उत्साहः स्यात् रसे हास्ये ताले केन्दुकसंज्ञके । वंशवृद्धिकरः पादस्त्रयोदशमिताक्षरः'—इति सङ्गीतदामोदरः । ९१, ७७९

उत्साहनम् क्ली. [उत्+सह्+णिच्, भावे ल्युट्] अध्यवसायः; उद्योगः; उत्साहवृद्धिः । ८७०

उत्सुकः त्रि. [उत् उद्योगं सुवति सौति सुनोति वा । सु प्रसवैश्वर्ययोः । विचि संज्ञापूर्वकत्वाद् गुणाभावः । क्विपि आगमशास्त्रस्यानित्यत्वात् तुगभावो वा । ततः संज्ञायां कन् । यद्वा उत् सुवति, षू प्रेरणे, मितद्र्वादित्वाड् डु, सत्स्विति क्विप् वा, कनि केण इति ह्रस्वः । उत्+सू+क्विप्+कन्] वाञ्छितकर्मोद्यतः; इष्टार्थोद्युक्तः; उत्कण्ठितः; 'प्रेषयिष्यति राजा तु कुशलार्थं तवानघे । ब्राह्मणान् नित्यशः पुत्रि मोत्सुका भूः कदाचन ॥' 'वत्सोत्सुकापि स्तिमिता सपर्याम्'—इति रघुवंशे (२–२२) । ३५३

उत्सृष्टः त्रि. [उत्+सृज्+क्त] कृतोत्सर्गः; त्यक्तः; हीनः; विधुतः; समुज्झितः; धूतः; 'महोक्षोत्सृष्टपशवः सूतिकागन्तुकादयः'—इति याज्ञवल्क्यः । ७१४

उत्सेधः पुं [उत्+सिध्+घञ्] शरीरम्; पर्वतवृक्षादीनां दैर्घ्यम्; 'कूर्मस्त्रियोजनोत्सेधो दशयोजनमण्डलः'—इति महाभारते । उच्छ्रयः; 'पयोधरोत्सेधविशीर्णसंहतिः'—इति कुमारसम्भवे (५–८) । उपरिभागः; 'पयोधरोत्सेधनिपातचूर्णिताः'—इति कुमारसम्भवे (५–२४) । संहननम्; 'सोत्सेधमूष्मार्थशिरातनुत्वम्'—इति भावप्रकाशः । 'उत्सेधं संहतं शोफं तमाहुर्निचयादतः'—इति वाग्भटः । ८०३

उदक् [च्] अव्य – त्रि. [उद्+अञ्च्+अस्ताति तस्य लुक्] उत्तरदिग्देशकालाः; उत्तरा दिक्; उत्तरो देशः; उत्तरः कालः । १०३

उदकम् क्ली. [उनत्तीति, उन्दी क्लेदने+क्विन् । 'उदकमिति' सूत्रेण साधु] जलम्; 'अनीत्वा पङ्कतां धूलिमुदकं नावतिष्ठते'—इति माघे (२–३४) । 'यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके'—इति भगवद्गीता (२–४६) । [उदकस्योदः, 'एकहलादौ' इति विकल्पः] उदकुम्भः; उदककुम्भः; 'तपःकृशाः शान्त्युदकुम्भहस्ताः ।' उदशब्दोऽप्युदकपर्याय इति भाष्यटीका । 'उदकस्योदः संज्ञायामिति' रक्षितः । 'सहस्यरात्रीरुदवासतत्परा'—इति कुमारसम्भवे (५–२६) । ६४८

उदक्या स्त्री. [उदकं जलं शुद्धिस्नानार्थमर्हतीति । उदक्+संज्ञायामिति यत्] रजस्वला; ऋतुमती; 'नोदक्ययाभिभाषेत यज्ञं गच्छेन्नचावृत.'—इति मनुः (४–५७) । ४८८

उदग्भूमः पुं. [उदगुत्तरदिग्वत् प्रशस्ता भूमिर्यत्र । समासे अच्] सद्भूमिः; उत्कृष्टस्थानम् । १६०

उदग्रम् त्रि. [उद्गतमग्रं यस्य] उच्छ्रितम्; उच्चं; विशालं; महत्; दीर्घं; भीमम्; 'नयन् मधुलिहः श्वैत्यमुदग्रदशनांशुभिः'—इति माघे (२–२१) । 'क्षतात्किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः' 'अवन्तिनाथोऽयमुदग्रबाहुः'—इति रघुवंशे (२–५३) (६–३२) । ७५१

उदञ्चनम् क्ली. [उत्+अञ्च्+ल्युट्] पिधानपात्रम्; 'ढकना' इति भाषा । 'प्रतिप्रस्थाता संस्रावानयत्युन्नेता चमसेन वोदञ्चनेन वा'—शतपथब्राह्मणे (४–३–५) । ऊर्द्ध्वक्षेपणम् । ३१६

उदञ्चितम् त्रि. [उत्+अञ्च्+क्त] ऊर्द्ध्वंक्षिप्तम्; 'उदञ्चिताक्षोऽञ्चितदक्षिणोरुः'—इति भट्टिः। पूजितम्। ७६८

उदधिः पुं. [उदानि उदकानि वा धीयन्तेऽस्मिन्। उद वा उदक+धा+कि] समुद्रः; 'उदधेरिव निम्नगाशतेष्वभवन्नास्य विमानना क्वचित्'—इति रघुवंशे (८-८)। मेघः; घटः। ६५२

उदन्तः पुं. [उद्गतो निर्णीतः अन्तो यस्य] वार्ता; वृत्तान्तः; उदन्तकः; 'कान्तोदन्तः सुहृदुपनतः सङ्गमात्किञ्चिदूनः'—इति मेघदूते। 'श्रुत्वा रामः प्रियोदन्तं मेने तत्सङ्गमोत्सुकः'—रघुवंशे (१२-६६)। साधुः; वृत्तियाजनम्; त्रि. पाकवशात् प्राप्तान्ते; 'शृतमसदिति तदाहुर्यहर्युदन्तं तर्हि जुहुयात् तद्वैनोदन्तं कुर्यादुप ह दहेत् यद्युदन्तं कुर्यादप्रजज्ञि वैरेत उपदग्धं तस्मान्नोदन्तं कुर्यात्'—इति शतपथब्राह्मणे। १४६

उदन्या स्त्री. [उदन्यति उदकमिच्छति वा। 'सुप आत्मनः क्यच्', 'अशनायोदन्येति' ईत्वाभावः; क्यचि उदकस्योदन्भावोऽपि निपात्यते। 'अप्रत्ययादि'त्य] पिपासा; 'व्यसन्नुदन्यां शिशिरैः पयोभिः'—इति भट्टिकाव्ये (३-४०)। 'अथ यत्रैतत्पुरुषः पिपासति नाम तेज एव तत्पीतं नयते तद्यथा गोनायोऽश्वनायः पुरुषनाय इत्येवं तत्तेज आचष्ट उदन्येति'—इति छान्दोग्योपनिषदि (६-८-५)। ३६३

उदन्वान् [त्] पुं. [उदकानि सन्त्यत्र। उदक+मतुप्, 'उदन्वानुदधौ चेत्युदकस्य उदन्भावो निपातितः मतुपि] समुद्रः; 'असह्यविक्रमः सह्यं दूरान्मुक्तमुदन्वता'—इति रघुवंशे (४-५२)। ऋषिविशेषः—इति पाणिनिः (८।२।१३)। ६५२

उदपानम् क्ली.-पुं. [उदकं पीयतेऽस्मिन्। उदक+पा+अधिकरणे ल्युट्, उदकस्य उदः] कूपः; 'तडागान्युदपानानि वाप्यः प्रस्रवणानि च'—इति मनुः (२-४०)। 'निर्जलेषु च देशेषु खनयामासुरुत्तमान्। उदपानान् बहुविधान् वेदिकापरिमण्डितान्'—इति रामायणे। [भावे ल्युट्] जलपानम्। 'यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके'—इति भगवद्गीता (२-४६)। ६८५

उदरम् क्ली. [उद् दृणातीति, 'उदि दृणातेरजलौ पूर्वपदान्त्यलोपश्च,' उत्+दृ+अच अन्त्यलोपश्च] नाभिस्तनयोर्मध्यभागः; पिचण्डः; कुक्षिः; जठरम्; तुन्दम्; 'पेट' इति भाषा। युद्धम्; 'उपस्थमुदरं जिह्वा हस्तौ पादौ च पञ्चमम्'—इति मनुः (८-१२५)। पुं. रोगविशेषः। ५१५

उदरिलः त्रि. [अतिशयितमुदरमस्य। उदर+'तुन्दादिभ्य इलच्चेति' इलच्] बृहदुदरयुक्तः; पिचिण्डिलः; बृहत्कुक्षिः; तुन्दिः; तुन्दिकः; तुन्दिलः; उदरी। ६०८

उदर्कः पुं. [उत्+ऋच्+घञ्] उत्तरकालोद्भवफलम्; भविष्यत्कालः; 'परित्यजेदर्थकामौ यौ स्यातां धर्मवर्जितौ। धर्मं चाप्यसुखोदर्कं शोकविक्रुष्टमेव च'—इति मनुः (४-१७६)। 'उदर्कस्तव कल्याणि ! तुष्टो देवगणेश्वरः'—इति महाभारते। मदनकण्टकम्। ११८

उदलावणिकः त्रि. [उदलवणेन लवणाम्भसा सिद्धः। उदलवण+ठक्] लवणोदकसंसिद्धव्यञ्जनादिः। ३२२

उदवसितम् क्ली. [उदूर्द्ध्वमवसीयतेऽस्मिन्। षो अन्तकर्मणि, षिञ् बन्धने वा। क्त, 'द्यतिस्यती'तीत्वम्] गृहम्। २९१

उदश्वित् क्ली. [उदकेन श्वयति वर्द्धते इति। उद+श्वि+क्विप्+तुक्] अर्द्धजलयुक्तदधिद्रवः; 'अर्द्धोदकमुदश्वित्स्यात्', 'उदश्विच्छ्लेष्मलं बल्यं श्रमघ्नं परमं मतम्'—इति हारीते। २७५

उदात्तम् त्रि. [उत्+आ+दा+क्त] दातृ; महत्; हृदयं; दयात्यागादिसम्पन्नम्; 'उदात्तदन्तानां कुञ्जराणाम्'—इति रामायणे। 'अत्युदात्तसुजनश्चन्द्रकेतुः'—इति उत्तररामचरिते। ३५६

उदात्तः पुं. [उच्चैरादीयतेऽस्मिन्। उत्+आ+दा+क्त] स्वरभेदः; स तु वेदगाने उच्चैः स्वरः; दानं; वाद्यविशेषः; काव्यालङ्कारभेदः; 'लोकातिशयसम्पत्तिवर्णनोदात्तमुच्यते। यद्वापि प्रस्तुतस्याङ्गं महतां चरितं भवेत्'—इति साहित्यदर्पणे। ८६३

उदारः त्रि. [उत्कृष्टमासमन्ताद् राति। रा+आतश्चेति क। उदर्यते, ऋ गतिप्रापणयोः, कर्मणि घञ् वा] दाता; महान्; 'उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम्'—इति भगवद्गीतायाम् (७-१८)। 'उदारा महान्तो मोक्षभाज एव इत्यर्थः'—इति श्रीधरस्वामी। ऋज्वाशयः; दक्षिणः; सरलः; 'क उदारः समर्थश्च त्रैलोक्यस्यापि रक्षणे'—इति रामायणे। गभीरः;

सारवान्; रम्यः; न्याय्यः; 'इत्यर्घ्यपात्रानुमितव्ययस्य रघोरुदारामपि गां निशम्य'—इति रघुवंशे (५-१२)। असाधारणः; सरलाशयः; शिष्टः; 'स तथेति विनेतुरुदारमतेः प्रतिगृह्य वचो विससर्ज मुनिम्'—इति रघवंशे (८-९१)। ३५६

उदीची स्त्री. [उत् उत्तरम् अञ्चत्यर्कम्, उत्क्रान्तं दृष्टिपथम् अञ्चति सूर्यं वा। 'उद ईदि'त्यञ्चेरत ईकारः। ऋत्विगादिना क्विन्। उगितश्चेति ङीप्] उत्तरा दिक्; 'यदोदीच्यां गतिर्भानोस्तदा सूर्यबलाधिकम्'—इति हारीते। १०१

उदीचीनम् त्रि. [**उदीची**+ख] उदीच्यां भवम्; उत्तरदिग्जातवस्तु; 'उदीचीनप्रवणे करोत्युदीची वै मनुष्याणां दिक्'—इति शतपथब्राह्मणे (१३।८।१।६)। १०३

उदीरणम् क्ली. [उत्+ईर्+ल्युट्] कथनम्; 'उद्घातः प्रणवो यासां न्यायैस्त्रिभिरुदीरणम्'—इति कुमारसम्भवे (२-१२)। प्रेरणम्; क्षेपणम्; 'ब्रह्मास्त्रोदीरणात् शत्रोर्देवदानवकिन्नराः—इति महाभारते। ३३८

उदीर्णः त्रि. [उत्+ऋ+क्त] उदारः; महान्; 'न हि राज्ञामुदीर्णानामेवम्भूतैर्नरैः क्वचित्। सख्यं भवति मन्दात्मन्! श्रिया हीनैर्धनच्युतैः'—इति महाभारते। उत्तेजितः; उद्दीपितः; उद्धतः; 'भवल्लब्धवरोदीर्णस्तारकाख्यो महासुरः'—इति कुमारसम्भवे (२-३२)। 'ब्रह्म क्षत्रेण संसृष्टं क्षत्रं च ब्रह्मणा सह। उदीर्णो दहतः शत्रून् वनानीवाग्निमारुतौ'—इति महाभारते। पुं. विष्णुः; 'उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतः स्थिरः'—इति विष्णुसहस्रनामकथने। ३५६

उदुम्बरम् क्ली. [उं शम्भुं वृणोतीति उम्बरम्। उ+वृ+संज्ञायां खच्, 'अरुर्द्विषदिति' मुम्। उत्कृष्टमुम्बरम्] ताम्रम्; पुं. उदुम्बरवृक्षः; क्षीरवृक्षः; हेमदुग्धः; सदाफलः; कालस्कन्धः; यज्ञयोग्यः; यज्ञीयः; सुप्रतिष्ठितः; शीतवल्कः; जन्तुफलः; पुष्पशून्यः; पवित्रकः; सौम्यः; शीतफलः; 'उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः। उदुम्बरो हिमो रूक्षो गुरुः पित्तकफास्रजित्। मधुरस्तुवरो वर्ण्यो व्रणशोधनरोपणः'—इति भावप्रकाशः। कुष्ठविशेषः; देहली; पण्डकः; नपुंसकः। 'गूलर का पेड़' इति भाषा। १७०

उद्गमनीयम् क्ली. [उत्+गम्+अनीयर्] धौतवस्त्रद्वयं; 'सा मङ्गलस्नानविशुद्धगात्री गृहीतपत्युद्गमनीयवस्त्रा'—इति कुमारसम्भवे (७-११)। 'धोती जोड़ा' इति भाषा। ५५१

उद्घः पुं. [उद्धन्यते इति, उत्+हन्+कर्मणि **अप्**, टिलोपो घत्वं च निपातनात्। यद्वा उद्धन्ति नीचताम्। उत्+हन् ड] प्रशस्तः; प्रकाण्डः; हस्तपुटम्; अग्निः; शरीरस्थो वायुः। ३७८

उद्घाटकम् क्ली. [उत्+घट्+णिच् ण्वुल्] घटीयन्त्रं; कूपाज्जलोत्तोलनार्थं यन्त्रविशेषः। ६८५

उद्घातः पुं. [उत्+हन्+घञ्] आरम्भः; 'उद्घातः प्रणवो यासां न्यायैस्त्रिभिरुदीरणम्'—इति कुमारसम्भवे (२-१२)। 'आकुमारकथोद्घातं शालिगोप्यो जगुर्यशः'—इति रघुवंशे (४-२०)। शस्त्रं; ग्रन्थपरिच्छेदः; पादस्खलनम्; 'ययावनुद्घातसुखेन मार्गम्'—इति रघुवंशे (२-७२)। 'रथेनानुद्घातस्तिमितगतिना'—इति शाकुन्तले। समुपक्रमः; योगाभ्यासे कुम्भकादित्रयम्; उत्तुङ्गः; 'पृथुशृङ्गशिलोद्घातः—इति रामायणे। मुद्गरम्। ७५०

उद्दामः त्रि. [दाम्नः उद्गतः] बन्धनरहितः; स्वतन्त्रः; 'नदत्याकाशगङ्गायाः स्रोतस्युद्दामदिग्गजे'—इति रघुवंशे (१-७८)। 'अत्यङ्कुशमिवोद्दामं गजं मदजलोद्धतम्'—इति रामायणे। महान्; 'उद्दामदन्तुरविधुन्तुददन्तवातैः'—इति प्रव्रज्या। 'उद्दामानि प्रथयति शिलावेश्मभिर्यौवनानि'—इति मेघदूते (३७)। गम्भीरः; 'उद्दामभावपिशुनामलवल्गुहास'—इति भागवते (१ स्कन्धे)। पुं. [उद्दीप्तं दाम पाशो यस्य। समासे अच्] वरुणः; दण्डकभेदच्छन्दोविशेषः; 'यदि नयुगलं ततः सप्तरेफास्तदा दण्डवृद्धिप्रयातो भवेद्दण्डकः। प्रतिचरणविवृद्धरेफाः स्युरर्णार्णवव्यालजीमूतलीलाकरोद्दामशङ्खादयः'—इति वृत्तरत्नाकरे। ७५१

उद्दालः पुं. [उत्+दल्+घञ्] बहुवारवृक्षः; बहुवारकः; वनकोद्रवः। ५८०

उद्धतम् त्रि. [उत्+हन्+क्त] घोरः; निविडः; 'तुषारवर्षोद्धतप्रवर्षघनधारानिपातसमाहतम्'—इति पञ्चतन्त्रम्। अविनीतम्; 'धीरोद्धता नमयतीव गतिर्धरित्रीम्'—इति उत्तरचरिते। 'मदमानसमुद्धतं नृपं न वियुङ्क्ते नियमेन मूढता'—इति किराते (२-

४९)। उत्थितः; उत्क्षिप्तः; आहृतः; चालितः; 'आत्मोद्धतैरपि रजोभिरलङ्घनीयाः'—इति शाकुन्तले। पुं. राजमल्लः। ७४४

उद्धवः पुं. [उद्धुनोति दुःखमिति। उत्+धूञ्+अच्] उत्सवः; यज्ञाग्निः; यादवविशेषः; 'वृष्णीनां सम्मतो मन्त्री कृष्णस्य दयितः सखा। शिष्यो बृहस्पतेः साक्षादुद्धवो बुद्धिसत्तमः'—इति भागवतम्। १२३

उद्धानम् क्ली. [उद्धीयतेऽस्मिन्। उत्+धा+ल्युट्] चुल्ली; त्रि. उद्गतः; वमितः। ३१३

उद्धारः पुं. [उत्+हृ+घञ्] ऋणम्; उद्धृतिः; 'निमग्नस्य पुनरुद्धार एव दुर्लभः'—इति बृहदारण्यकोपनिषत्। मोचनम्, 'अश्वस्य वयमुद्धारमुद्धरामहै'—इति शतपथब्राह्मणे (१३।३।४।२)। मोक्षः; निर्वाणम्; [उद्ध्रियते साधारणधनाद् इत्युद्धारः,यद्वा साधारणद्रव्यात् यद्गरिष्ठं तदुद्धारः। उद्ध्रियते साधारणधनाद् निष्कृष्य विशेषनिष्ठतया एव बोध्यते इत्युद्धारः। साधारणत्वेन उद्ध्रियते इति उद्धारः। उद्ध्रियते साधारणधनात् बहिर्भाव्यते इत्युद्धारः।] 'ज्येष्ठस्य विंश उद्धारः सर्वद्रव्याच्च यद्वरम्। ततोऽर्द्धं मध्यमस्य स्यात् तुरीयस्तु यवीयसः'—इति मनुः (९–११२)। 'राज्ञश्च दद्युरुद्धारमित्येषा वैदिकी श्रुतिः। राज्ञा च सर्वयोधेभ्यो दातव्यमपृथग्जितम्'—इति मनुः (७–९७)। 'उद्धारं योद्धारः राज्ञे दद्युः। उद्ध्रियते इत्युद्धारः जितधनाद्युत्कृष्टधनं सुवर्णरजतभूम्यादि राज्ञे समर्पणीयम्'—इति तट्टीका। ५७२

उद्धूपणम् क्ली. [उत्+धूप्+ल्युट्] रोमाञ्चः; रोमोद्गमः। ६५१

उद्धृतः त्रि. [उत्+हृ+क्त] कृतोद्धरणः; समुदक्तः; 'तोला गया' इति भाषा। उत्क्षिप्तः; परिभुक्तोज्झितः; 'उद्धर्तुमैच्छत् प्रसभोद्धृतारिः'—इति रघुवंशे (२–३०)। 'इतीव वाहैर्निजवेगदर्पितैः पयोधिरोधक्षममुद्धृतं रजः—' इति नैषधे (१–६९)। ७१२

उद्ध्मानम् क्ली. [उत् ध्मायते अग्निरत्र। ध्मा शब्दाग्निसंयोगयोः, उत्पूर्वात् तस्माल्ल्युट्] चुल्ली। ३१३

उद्ध्यः पु. [उज्झति कूलमिति। उज्झ्+क्यप्, निपातनात् सिद्धम्] नदः; 'तोयदागम इवोद्ध्यभिद्ययोः'—इति रघुवंशे (११–८)। 'कूलं भिद्योद्ध्यसन्निभौ'—इति भट्टिः (५–२२)। ६६६

उद्बुद्धः त्रि. [उत्+बुध्+क्त] विकसितः; प्रबुद्धः; 'उद्बुद्धां च जगद्धात्रीं पूजयेद् दीपमालया'—इति तिथितत्त्वे। 'उद्बुद्धं कारणैः स्वैः स्वैर्बहिर्भावं प्रकाशयन्। लोके यः कार्यरूपः सोऽनुभावः काव्यनाटचयोः'—इति साहित्यदर्पणे (३–१६२)। १८७

उद्भटः त्रि. [उत्+भट्+अप्] प्रवरः; 'पदे पदे सन्ति भटा रणोद्भटाः'—इति नैषधे। श्रेष्ठाशयः; महेच्छः; उदारः; उदात्तः; उदीर्णः; महाशयः; महामनाः; महात्मा; पुं. कच्छपः; सूर्यः; सूर्पः। ७४४

उद्यानम् क्ली. [उद्याति क्रीडार्थमस्मिन्। उत्+या+ल्युट्] राज्ञः साधारणं वनम्; आक्रीडः; 'बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या'—इति मेघदूते (७)। निःसरणं; प्रयोजनम्। २१३

उद्योगः पुं. [उत्+युज्+घञ्] यत्नः; चेष्टा; उत्साहः; अध्यवसायः, उद्यमः; 'उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह'—इति मार्कण्डेये (८८–२)। 'उद्योगादनिवृत्तस्य सुसहायस्य धीमतः। छायेवानुगता तस्य नित्यं श्रीः सहचारिणी'—इति नीतिवाक्यम्। 'उद्योगः सैन्यनिर्याणं श्वेतोपाख्यानमेवच'—इति महाभारते। ३५६

उद्योतः पु. [उत्+द्युत्+घञ्] आलोकः; ज्योतिः। ६६

उद्वर्तनम् क्ली. [उत्+वृत्+णिच्+भावे करणे वा ल्युट्] घर्षणं; विलेपनम्; 'उद्वर्तनमपस्नानं विण्मूत्रे रक्तमेव च। श्लेष्मनिष्ठ्यूतवान्तानि नाधितिष्ठेत्तु कामतः॥' उत्पतनम्; 'मोघीकर्तुं चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि'—इति मेघदूते (४२)। शरीरनिर्मलीकरणगन्धद्रव्यादि; उत्सादनम्; 'उबटन' इति भाषा। 'उद्वर्तनं वातहरं कफमेदोविलापनम्। स्थिरीकरणमङ्गानां त्वक्प्रसादकरं परम्। शिरामुखविविक्तत्वं त्वक्स्थस्याग्नेश्च तेजनम्'—इति सुश्रुते। ७३१

उद्वाहः पुं. [उत्+वह्+घञ्] विवाहः; भार्याग्रहणम्, उद्वाहनं; रणरणम्। ४९५

उन्दुरः पुं. [उन्द्+उर] उन्दूरः; उन्दूरुः; उन्दरुः [बाहुलकाद् ऊर,ऊरु,अरु वा प्रत्ययो बोध्यः] मूषिकः; आखुः; मूषकः; मूषः; मूषिकः; खनकः; बभ्रुः; वृषः; आखनिकः; वृशः; क्षुद्रश्चेद् गिरिका, बालमूषिका, दीना; चिक्का; हालाहला, अञ्जनिका,

मुषिका; मूषा; मूषीका; मूषिका; बिलेशयः; शुषिरः; इन्दूरः। क्षुद्रस्य तस्य पर्यायः—चिक्कः; वेश्मनकुलः; 'उन्दूरुञ्चान्त्ररहितं तेन वातघ्नकल्कवत्'—इति वाग्भटे। २३५

उन्नः त्रि. [उन्द् + क्त, 'नुदविदेति' पक्षे नत्वम्] क्लिन्नः; दयापरः। ७६७

उन्नतः त्रि. [उत् + नम् + क्त] वर्द्धितः; उच्चः; प्रांशुः; उदग्रः; उच्छ्रितः; उत्तुङ्गः; उच्चैः; तुङ्गः; 'स्थितः सर्वोन्नतेनोर्वीं क्रान्त्वा मेरुरिवात्मना'—इति रघुवंशे (१–१५)। क्ली. दिनपरिमाणज्ञानसाधनोपायः; 'दिवसस्य यद्गतं यच्च शेषं तयोर्यदल्पं तदुन्नतसंज्ञं ज्ञेयम्' इति सिद्धान्तशिरोमणौ। पुं. चाक्षुषमन्वन्तरे ऋषिभेदः; 'सुमेधा विरजाश्चैव हविष्मानुन्नतो मधुः। अतिनामा सहिष्णुश्च सप्तासन्निति चर्षयः।' ७५१

उन्नतनाभिः त्रि. [उन्नता नाभिः यस्य] उच्चनाभियुक्तः; तुण्डिलः। ६१०

उन्निद्रः त्रि. [उद्गता निद्रा स्वप्नो दुःखादिकं वा यस्मात्] प्रफुल्लः; विकसितः; 'उन्निद्रपुष्पचनचम्पकपुष्पभासा'—इति माघे। प्रबुद्धः; शयनादुत्थितः; 'तामुन्निद्रामवनिशयनां सौधवातायनस्थः'—इति मेघदूते (८८)। 'शय्याप्रान्तविवर्त्तनैर्विगमयत्युन्निद्र एव क्षपाः' —इति शाकुन्तले। १८७

उन्माथः पुं. [उन्मथ्यतेऽनेनेति। उत् + मथ् + घञ्] कूटयन्त्रं; मृगवधोपयुक्तयन्त्रम्; मृगपक्षिबन्धनार्थं यत् सन्धानयन्त्रं निवेश्यते सः; [भावे घञ्] मारणं; घातः; 'प्रभो मद्बाणानां क इव भुवनोन्माथविधिषु'—इति प्रबोधचन्द्रोदये। ७८२

उन्मिश्रः त्रि. [उत् ऊर्द्ध्वं मिश्रयते वर्णान्तरैः। घञ्] मिश्रितवर्णः; शबलः। ७४१

उन्मिषितः त्रि. [उत् + मिष् + क्त] प्रफुल्लः; विकसितः; 'व्यलोकयन्नुन्मिषितैस्तडिन्मयैर्महातपःसाक्ष्य इव स्थिताः क्षपाः'—इति कुमारसम्भवे (५–२५)। १८७

उन्मीलितः त्रि. [उत् + मील् + क्त] विकसितः; प्रस्फुटितः; 'उन्मीलितं तूलिकयेव चित्रम्'—इति कुमारसम्भवे (१–३२)। 'ते चोन्मीलितमालतीसुरभयः प्रौढाः कदम्बानिलाः'—इति साहित्यदर्पणे। १८७

उन्मुखः त्रि. [उद्‌र्द्ध्वं मुखं यस्य] ऊर्द्ध्वमुखः; उत्सुकः; 'मनोभिरामाः शृण्वन्तो रथनेमिस्वनोन्मुखैः'—इति रघुवंशे (१–३९)। उत्सुकः; 'तस्मिन् संयमिनामाद्ये जाते परिणयोन्मुखे'—इति कुमारसंभवे (६–३४)। 'पतिः प्रतीतः प्रसवोन्मुखीं प्रियाम्'—इति रघुवंशे (३–१२)। 'अद्रेः शृङ्गं हरति पवनः किं स्विदित्युन्मुखीभिः'—इति पूर्वमेघे (१४)। 'इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा'—इति पूर्वमेघे (३९)। ३८५

उन्मूलितम् त्रि. [उत् + मूल् + क्त] उत्पाटितम्; 'लङ्कामुन्मूलितां कृत्वा कदा द्रक्ष्यति मां पतिः'—इति रामायणे। 'उन्मूलिता हलधरेण पदावघातैः'—इति उद्भटः। ७१२

उपकण्ठः त्रि. [उपगतः कण्ठः सामीप्यमस्य] निकटः; 'तस्योपकण्ठे घननीलकण्ठः कुतूहलादुन्मुखपौरदृष्टः'—इति कुमारसम्भवे (७–५१)। क्ली. [उपगतः० कण्ठम्, अत्यादय इति समासः] ग्रामान्तम्; उपशल्यम्; आस्कन्दितम्; अश्वपञ्चमगतिः; कण्ठसमीपम्; 'प्रेमोपकण्ठं मुहुरङ्कभाजो रत्नावलीरम्बुधिराबबन्ध–' इति माघे। ६९२

उपकरणम् क्ली. [उप + कृ + ल्युट्] नृपादीनां छत्रचामरादि; परिच्छदः; परिवर्हः; तन्त्रं; प्रधानाङ्गीभूतोपकारकद्रव्यं; भोजनादौ व्यञ्जनादि; 'तस्मादन्नं प्रधानं पूपादिकं तु उपकरणत्वेन शक्तानामावश्यकम्'—इति श्राद्धतत्त्वम्। पूजादौ नैवेद्यादि; मृगबन्धनादौ जालादि; साधनम्। ३८६, ८६६

उपकारिका स्त्री. [उपकरोतीति। उप + कृ + ण्वुल + टाप्, इत्वम्] राजगृहम्; उपकार्या; पटभवनम्; उपकारकर्त्री; पिष्टभेदः; कुशूलः, 'सराय' इति भाषा। २९०

उपकार्या स्त्री. [उपकरोतीति। उप + कृ + ण्यत् + टाप्] राजगृहं; पटभवनम्; 'तस्योपकार्यारचितोपचारा वन्येतरा जानपदोपदाभिः'—इति रघुवंशे (५–४१)। 'शत्रुघ्नप्रतिविहितोपकार्यमार्यः, साकेतोपवनमुदारमध्युवास'—इति रघुवंशे (१३–७९)। २९०

उपकुल्या स्त्री. [उपकोलति, कुल संस्त्याने बन्धुषु च, अच्यादिः] पिप्पली; 'पीपल' (छोटी-बड़ी) इत्यादि भाषा। 'कृष्णोपकुल्या मागधी'—इति वैद्यकरत्नमाला।

'उपकुल्योषणा शौण्डी'—इति भावप्रकाशः। त्रि. (उपगतः कुल्याम्) कृत्रिमसरित्समीपम्। ६१४

उपक्रमः पुं. [उप+क्रम्+घञ्, 'नोदात्तोपदेशस्य' इति न वृद्धिः] प्रथमारम्भः; आरम्भः; 'रामोपक्रममाचख्यौ रक्षःपरिभवं नवम्'—इति रघुवंशे (१२–४२)। (उपक्रम्यते इत्युपक्रमः, कर्मणि घञ्। रामस्य कर्तुरुपक्रमः रामोपक्रमम्, रामेणादौ उपक्रान्तमित्यर्थः। 'उपज्ञोपक्रमं तदाद्याचिख्यासायामिति' क्लीवत्वम् इति तट्टीका।) ज्ञात्वारम्भः; अयमस्योपायः अनेनैतत् सिध्यतीति ज्ञात्वा प्रथमारम्भः; उपधा; राज्ञां धर्मकामार्थभयैः अमात्यादेः परीक्षणं; भावतत्त्वनिरूपणम्; प्रक्रमः; विक्रमः; चिकित्सा; पलायनम्; उपाय; 'सामादिभिरुपक्रमैः' इति मनुः (७–१०७)। ७०७

उपक्रोशः पुं. [उप+क्रुश्+घञ्] निन्दा; 'राज्येन किं तद्विपरीतवृत्तेः प्राणैरुपक्रोशमलीमसैर्वा'—इति रघुवंशे (२–५३)। २४८

उपगूहनम् क्ली. [उप+गूह्+ल्युट्] आलिङ्गनम्; 'स्मरन्मुकुन्दाङ्घ्र्युपगूहनं पुनः'—इति भागवते (१।५।१९)। ५६८

उपग्रहणम् क्ली. [उप+ग्रह्+ल्युट्] उपाकरणं; संस्कारपूर्वकश्रुतिग्रहणं; स्वीकारः; 'वेदोपग्रहणार्थाय तावग्राहयत प्रभुः'—इति रामायणे (१–४–४)। ८४६

उपग्राह्यः पुं. [उपगृह्यते इति, उप+ग्रह्+ण्यत्] उपढौकनम्; 'घूस, भेट, नजराना' इत्यादि भाषा। ४३४

उपघ्नः पुं. [उप+हन्+क्त] निकटाश्रयः; 'छेदादिवोपघ्नतरोर्व्रतत्यौ'—इति रघुवंशे (१५–१)। २९८

उपचर्या स्त्री. [उप+चर्+क्यप्+टाप्] चिकित्सा। ६१२

उपचारः पुं. [उप+चर्+घञ्] सेवा; 'स मे चिरायास्खलितोपचाराम्'—इति रघुवंशे (५–२०)। उत्कोचः (४३४); रोगप्रतिकारः; उपचर्या; चिकित्सा; रुक्प्रतिक्रिया; निग्रहः; वेदनानिष्ठा; क्रिया; उपक्रमः; शमः; व्यवहारः; 'प्रयुक्तपाणिग्रहणोपचारौ'—इति कुमारसम्भवे (७–९६)। परस्य रञ्जनार्थम् असत्यभाषणम्; 'उपचारपदं न चेदिदं त्वमनङ्गः कथमक्षता रतिः'—इति कुमारसम्भवे (४–९)। 'उपचारज्ञता दाक्ष्यम्'—इति चरकः। १२९

उपजापः पुं. [उप+जप्+घञ्] भेदः; विच्छेदः; 'तेषु तेषु चाकृतेषु प्रासरन् परोपजापाः'—इति दशकुमारचरिते। 'उपजापः कृतस्तेन तानाकोपवतस्त्वयि'—इति माघे (२–९९)। ७८०

उपजिह्वा स्त्री. [उपगता जिह्वा यस्याः] कीटविशेषः; 'दीमक' इति ख्यातः। उपदेहिका; वम्री; उद्दीका; आलजिह्वा; 'उपजिह्वा स्फिचौ बाहू' इति याज्ञवल्क्यः। तालुस्थग्रन्थिविशेषः; 'तादृगेवोपजिह्वा तु जिह्वाया उपरि स्थिता', 'उपजिह्वां परिस्राव्य यवक्षारेण घर्षयेत्'—इति वाग्भटः। [उपजिह्वा+स्वार्थे कन्] उपजिह्विका; घण्टिका; प्रतिजिह्वा; 'यदत्युपजिह्विका यद्वम्रो अतिसर्पति' इति ऋग्वेदे (४-९१-२१)। कीटभेदः; उत्पादिका; वटिः; उद्देहिका; दिवी। 'यस्य श्लेष्मा प्रकुपितो जिह्वामूलेऽवतिष्ठते। आशु संजनयेत् शोथं जायतेऽस्योपजिह्विका'—इति चरके। 'उपजिह्वां तु संलिख्य क्षारेण प्रतिसारयेत्'—इति सुश्रुते। ६४५

उपज्ञा स्त्री. [उपज्ञायते ज्ञा अवबोधने; 'आतश्चोपसर्गे' इति कर्मणि अङ] आद्यज्ञानम्; प्रथमज्ञानम्; 'अथ प्राचेतसोपज्ञं रामायणमितस्ततः'—इति रघुवंशे (१५–६३)। 'लोकेऽभूद्यदुपज्ञमेव विदुषां सौजन्यजन्यं यशः'—इति मल्लिनाथटीकामुखम्। ७०७

उपतापः पुं. [उप+तप्+घञ्] रोगः; त्वरा; उत्तापः; अशुभं; पीडा; 'विवक्षितं ह्यनुक्तम् उपतापं जनयति'—इति शाकुन्तले। त्रि. पीडादायकः; 'यो वनस्पतीनामुपतापो बभूव'—इति कौशिकसूत्रे। ६००

उपत्यका स्त्री [उप समीपे आसन्ना भूमिः। उप+'उपाधिभ्यां त्यकन्नासन्नारूढयोः' इति त्यकन्। 'त्यकनश्च निषेधः' इति इत्वाभावः] पर्वतनिकटभूमिः; 'मारीचोद्भ्रान्तहारीता मलयाद्रेरुपत्यकाः'—इति रघुवंशे (४–४६)। २११

उपदंशः पुं. [उपदश्यते इति। उप+दंश्+कर्मणि घञ्] मद्यपानरोचकभक्ष्यद्रव्यम्; अवदंशः; चक्षणं; मद्यपासनम्; 'द्वित्रान् उपदंशान् उपपाद्य,' 'ततस्तस्य शाल्योदनस्य दर्वीद्वयं दत्त्वा सर्पिर्मात्रां सूपम् उपदंशं च उपजहार'—इति च दशकुमारचरिते। मेढ्ररोगविशेषः; 'हस्ताभिघातान्नखदन्तघाताद् अधावना-

दत्युपसेवनाद्वा । योनिप्रदोषाच्च भवन्ति शिश्ने पञ्चोपदंशा विविधापचारैः'—इति भावप्रकाशः । समिष्ठिलवृक्षः; शिग्रुवृक्षः । ३२८

उपदा स्त्री. [उपदीयते इति । उप+दा+'आतश्चोपसर्गे' इत्यङ] उपढौकनम्; 'उपदा विविशुः शश्वत् नोत्सेकः कोशलेश्वरम्', 'प्रत्यर्घ्य पूजामुपदाच्छलेन'—इति च रघुवंशे (४–१०), (७-३०) । 'घूस' 'नजराना' 'भेट' इत्यादि भाषा । ४३४

उपदीका स्त्री. [उपदीयते क्षिणोति । उप+दीङ क्षये, ईक, टाप्] उपदेहिका । ६४५

उपदेहिका स्त्री. [उपदेहो विद्यते यस्याः । उपदेह+ठन्] कीटविशेषः; उपजिह्वा; वम्री; उपदीका । ६४५

उपद्रवः पुं. [उप्+द्रु+अप्] उत्पातः; रोगारम्भकदोषप्रकोपजन्योऽन्यो विकारः; 'यो व्याधिस्तस्य यो हेतुर्दोषस्तस्य प्रकोपतः । योऽन्यो विकारो भवति स उपद्रव उच्यते । व्याधेरुपरि यो व्याधिः उपद्रव उदाहृतः । सोपद्रवा न जीवन्ति जीवन्ति निरुपद्रवाः'-इति हारीते । 'तत्रौपसर्गिको यः पूर्वोत्पन्नं व्याधिं जघन्यकालजातो व्याधिरुपसृजति स तन्मूल एवोपद्रवसंज्ञः'-इति सुश्रुते । १२७

उपधा स्त्री. [उपधीयते शुद्धिज्ञानमत्र । उप+धा+'आतश्चोपसर्गे' इत्यङ+टाप्] राज्ञां धर्मकामार्थभयैरमात्यादेः परीक्षणं, धर्मार्थकाममोक्षद्वारा परीक्षा; 'धर्मार्थकाममोक्षैश्च प्रत्येकं परिशोधनैः। उपेत्य धीयते यस्मादुपधा परिकीर्तिता । अर्थकामोपधाभ्यां तु भार्याः पुत्रांस्तु शोधयेत् । धर्मोपधाभिर्विप्रांस्तु सर्वाभिः सचिवान् पुनः'—इति कालिकापुराणे । पदानाम् उपान्त्यवर्णः इति व्याकरणम् । ७५८

उपधानम् क्ली. [उपधीयते आरोप्यते मस्तकमत्र । उप+धा+अधिकरणे ल्युट्] शिरोधानम्; उपबर्हः; गण्डुः; 'तकिया' इति भाषा । 'सोपधानां धियं धीराः स्थेयसीं खट्वयन्ति ये'—इति माघे (२–७७) । 'पट्टोपधानाध्यासितशिरोभागेन'—इति कादम्बरी । विषं; प्रणयः; व्रतम् । ३०९

उपधिः पुं. [उपधीयते आरोप्यतेऽनेन । उप+धा+कि] कपटः; 'योगाधमनविक्रीतं योगदानप्रतिग्रहम् । यत्र वाप्युपधिं पश्येत् तत्सर्वं विनिवर्तयेत्'—इति मनुः (८–१६५) । 'अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशा विदधति सोपधि सन्धिदूषणानि'—इति किराते (१–४५) । रथचक्रम् । ७०९

उपधृतिः स्त्री. [उप+धृ+क्तिन्] किरणः; मयूखः; अंशुः । ३९

उपनगरम् क्ली. [नगरमुपगतम् । अत्यादय इति समासः] शाखानगरं; नगरबाह्यवसतिः । २८६

उपनतः त्रि. [उप+नम्+क्त] उपस्थितः; प्राप्तः; 'अचिरोपनतां स मेदिनीम्'—इति रघुवंशे (८–७) । नम्रः; 'शौरेः प्रतापोपनतैरितस्ततः समागतैः प्रश्रयनम्रमूर्तिभिः'—इति माघे (१२–३३) । ७५०

उपनिधिः पुं. [उपनिधीयते इति । उप+नि+धा+कि] उपन्यस्तवस्तु; स्थाप्यद्रव्यं; न्यासः; 'वासनस्थमनाख्याय हस्ते न्यस्य यदर्पितम् । द्रव्यमुपनिधिः प्रोक्तः स्मृतिषु स्मृतिवेदिभिः ॥' वासुदेवपुत्रः । ८२

उपनिषत् [द्] स्त्री. [उपनिषद्यते प्राप्यते ब्रह्मविद्या अनया इति । उप+नि+सद्+क्विप्] धर्मः; वेदान्तशास्त्रं; ज्ञानं; निर्जनस्थानं; वेदशिरोभागः; तत्र शाखाभेदवशात् चतुर्णां वेदानाम् अशीतिसहितशताधिकसहस्रसंख्यका उपनिषदः । तथाहि 'ऋच एकविंशतिः, यजुषो नवाधिकशतम्, साम्नः सहस्रं, पञ्चाशदुपनिषदोऽथर्वणस्येति ।' ब्रह्मविद्या; समीपसदनं; तत्त्वं; द्विजातिकर्तव्यो व्रतविशेषः; 'प्रथमं स्यात् महानाम्नी द्वितीयं च महाव्रतम् । तृतीयं स्यादुपनिषद् गोदानं च ततः परम्'—इति आश्वलायनगृह्यकारिका । मुक्तिकोपनिषदि अष्टाधिकशतोपनिषदः—'ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-तित्तिरिः । ऐतरेयञ्च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा ॥ ब्रह्म-कैवल्य-जाबाल-श्वेताश्वा हंस आरुणिः । ......॥' ७९

उपपतिः पुं. [उपमितः पत्या । 'अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया' इति समासः] जारः; 'पौनर्भवश्च काणश्च यस्य चोपपतिर्गृहे'—इति मनुः (३–१५५) । ३८४

उपप्लवः पुं. [उप+प्लु+अप्] ग्रहणम्; 'उपप्लवे चन्द्रमसो रवेश्च'—इति स्मृतिः । राहुग्रहः; विप्लवः; उत्पातः; 'उपप्लवाय लोकानां धूमकेतुरिवोत्थितः'—इति कुमारसम्भवे (२–३२) । उत्पातसूचकोऽनिलादिः; 'कच्चिन्न वाय्वादिरुपप्लवो वः'—इति रघुवंशे (५–६) ।

भीतिः; 'नृपा इवोपप्लविनः परेभ्यः'—इति रघुवंशे (१३-७)। 'उपप्लविनो भयवन्तः'—इति मल्लिनाथः। ४१

उपवर्हः पुं. [उप+वृह्+घञ्] उपधानम्। 'तकिया' इति भाषा। ३०९

उपभोगः पुं. [उप+भुज्+घञ्] भोजनातिरिक्तभोगः; निर्वेशः; 'प्रियोपभोगचिह्नेषु पौरोभाग्यमिवाचरन्'—इति रघुवंशे (१२-२२)। 'आगमेनोपभोगेन नष्टं भाव्यमतोऽन्यथा।' 'न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति'—इति मनुः (२-९४)। ७५५

उपमर्दः पुं. [उपसमीपे मर्दनम्। उप+मृद्+घञ्] विप्रकारः; तिरस्कारः। ७६९

उपमाता [ऋ] स्त्री. [उपमिता मात्रा] धात्री; मातुः सदृशी; सा षड्विधा, यथाह स्मृतिः—'मातुःष्वसा मातुलानी पितृव्यस्त्री पितृष्वसा। श्वश्रूः पूर्वजपत्नी च मातृतुल्याः प्रकीर्तिताः॥' त्रि. उपमानकर्तरि। ५०७

उपमानम् क्ली. [उपमीयते इति, उप+मा+ल्युट्] उपमा; 'उपमानमभूद्विलासिनां करणं यत्तव कान्तिमत्तया'—इति कुमारसम्भवे (४।५)। सादृश्यज्ञानम्; उपमितिकरणं, यथा—गौर्गवयस्तथेति वाक्ये। 'प्रसिद्धसाधर्म्यात् साध्यसाधनमुपमानम्'—इति न्यायसूत्रम्। ८७३

उपयमः पुं. [उप+यम्+अप्] विवाहः। ४९५

उपयामः पुं. [उप+यम्+घञ्] विवाहः। यज्ञाङ्गपात्रविशेषः; 'उपयामगृहीतोऽसि' [उपयाम्यतेऽनेन, उप+यम्+णिच्+अच्]। ४९५

उपरागः पुं. [उप+रञ्ज्+घञ्] ग्रहणं; राहुग्रस्तश्चन्द्रः सूर्यश्च; 'उपरागान्ते शशिनः समुपगता रोहिणी योगम्'—इति शांकुन्तले। निकटस्थितित्वाद् निजगुणादेरन्यत्रारोपणम्; यथा स्फटिकस्तम्भे रक्तपुष्पाणां रक्तिमारोपः। राहुः; विगानं; परीवादः; दुर्नयः; ग्रहकल्लोलः; व्यसनं, 'बिभर्षि चाकारमनिर्वृतानां मृणालिनी हैममिवोपरागम्'—इति रघुवंशे (१६-७)। ४१

उपरि अव्य. [ऊर्ध्वे ऊर्ध्वायाम् ऊर्ध्वात् ऊर्ध्वायाः ऊर्ध्वम् ऊर्ध्वां वा वसत्यागतो रमणीयं वा। 'उपर्युपरिष्टात्' इति ऊर्ध्वस्योपादेशो रिल् प्रत्ययश्च] ऊर्ध्वम्; उपरिष्टात्; 'त्वय्यासन्ने नयनमुपरिस्पन्दि शङ्के मृगाक्ष्या, मीनक्षोभाच्चलकुवलयश्रीतुलामेष्यतीति'—इति उत्तरमेघे (३४)। 'अवाङ्मुखस्योपरि पुष्पवृष्टिः पपात विद्याधरहस्तमुक्ता'—इति रघुवंशे (२-६०)। 'ऊपर' इति भाषा। १०२

उपरिष्टात् अव्य. [ऊर्ध्वे ऊर्ध्वायाम् ऊर्ध्वात् ऊर्ध्वायाः ऊर्ध्वम् ऊर्ध्वां वा वसति आगतो रमणीयं वा। 'उपर्युपरिष्टात्' इत्यूर्ध्वस्य उपादेशो रिष्टातिल् प्रत्ययश्च] उपरि; ऊर्ध्वम्; 'नाधस्तान्नोपरिष्टाच्च गतिर्नाप्सु न चाम्बरे'—इति रामायणे। १०२

उपलः पुं. [उपलाति, उप+ला+क। यद्वा उं शम्भुं पलति यः। उ+पल्+अच्] पाषाणः; 'रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णाम्'—इति पूर्वमेघे (१९)। रत्नम्; 'मणिमुक्ताप्रबालानां ताम्रस्य रजतस्य च। अयःकांस्योपलानां च द्वादशाहं कणान्नता'—इति मनुः (११-१६७)। बालुका; 'भिषगुपलाप्रक्षिणी नना' इति ऋग्वेदे (९।११२।३) 'उपलेषु बालुकासु'—इति भाष्यम्। १६८

उपलब्धिः स्त्री. [उप+लभ्+क्तिन्] मतिः; बुद्धिः; प्राप्तिः; 'वृथा हि मे स्यात् स्वपदोपलब्धिः'—इति रघुवंशे (५-५६)। ज्ञानम्; 'कामं तु नः स्वेषु गुणेषु सङ्गः कामं च नान्योन्यगुणोपलब्धिः। अस्मान् विना नास्ति तवोपलब्धिः तावदृते त्वां न भजेत् प्रहर्षः'—इति महाभारते। ३३४

उपलिङ्गम् क्ली. [उपमितं लिङ्गेन] उपद्रवः; अरिष्टम्; दुर्भाग्यम्; 'केनचिद् उपलिङ्गानि गायता'—इति हर्षचरिते। १२७

उपलेपनम् क्ली. [उप+लिप्+ल्युट्] गोमयादिलेपनम्; 'तत्रैव देवतायतने संमार्जनोपलेपनमण्डनादिकं कर्म समाज्ञापयति'—इति पञ्चतन्त्रे। ७०७

उपवनम् क्ली. [उपमितं वनेन] कृत्रिमवनम्; आरामः; 'पाण्डुच्छायोपवनवृतयः केतकैः सूचिभिन्नैः'—इति पूर्वमेघे (२४)। 'सा केतुमालोपवना बृहद्भिर्विहारशैलानुगतेव नागैः'—इति रघुवंशे (१६-२६)। २१२

उपवर्तनम् क्ली. [उपागत्य वर्तन्ते अत्र। उप+वृत्+ल्युट्] जनपदः; जनपदसमुदायः; जनपदैकदेशः; सजलनिर्जलस्थानमात्रं; देशः; विषयः; 'तस्योपवर्तनेऽप्येको न श्रुतो गोत्रभित् क्वचित्'—इति काशीखण्डे। २८४

उपविष्टः त्रि. [उप+विश्+क्त] आसीनः; 'उपविष्टौ कथाः काश्चित् चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ'—इति देवीमाहात्म्ये (८१–२८) । ३८६

उपवीतम् क्ली. [उप+वि+इ+क्त] वामस्कन्धार्पितं यज्ञसूत्रं; यज्ञसूत्रमात्रम्, 'जनेऊ' इति भाषा। 'कृतोपवीतं हिमशुभ्रमुच्चकैः'—इति माघे (१–७) । 'मुक्तायज्ञोपवीतानि बिभ्रतो हैमवल्कलाः'—इति कुमारसम्भवे (६–६) । 'ऊर्ध्वन्तु त्रिवृतं कार्यं तन्तुत्रयमधोवृतम् । त्रिवृतं चोपवीतं स्यात्तस्यैको ग्रन्थिरिष्यते'–इति स्मृतौ । 'यज्ञोपवीतकं कुर्यात् सूत्राणि न वतन्तवः'—इति देवलः । 'यज्ञोपवीते द्वे धार्ये श्रौते स्मार्ते च कर्मणि । तृतीयमुत्तरीयार्थं वस्त्रालाभेऽतिदिश्यते ॥' 'कार्पासमुपवीतं स्याद् विप्रस्योर्ध्ववृतं त्रिवृत् । शणसूत्रमयं राज्ञो वैश्यस्याविकसौत्रिकम्'—इति मनुः (२–४४) । ४०७

उपशल्यम् क्ली. [उपगतं शल्यम्] ग्रामप्रान्तभागः; ग्रामान्तम्; 'उपशल्यनिविष्टैस्तैश्चतुर्द्वारमुखी बभौ'—इति रघुवंशे (१५–६०) । 'भ्रमंश्च विशालोपशल्ये कमप्याक्रीडमासाद्य'—इति दशकुमारे । २५९

उपशायः पुं. [उप+शी+घञ्] पर्यायशयनार्थकः; प्रहरिकादीनां क्रमेण शयनं; विशायः । ७३९

उपसंव्यानम् क्ली. [उपसंवीयतेऽनेन । उप+सम्+व्ये+'कृत्यल्युट' इति ल्युट्] परिधानवस्त्रम्; 'बहिर्योगोपसंव्यानयोः' इति पाणिनिः (१-१-३६) । ५४६

उपसंग्रहणम् क्ली. [उपगत्य संमानार्थं ग्रहणम्] चरणस्पर्शः; उपसंग्रहः; पादग्रहणम्; अभिवादनम्; उपाकरणम् । ३९८

उपसंग्राह्यम् त्रि. [उपसंगृह्यते इति । उप+सम्+ग्रह+ण्यत्] उपसंग्रहणीयम्; अभिवाद्यं; पादे ग्रहीतव्यम्; 'भ्रातुर्भार्योपसंग्राह्या सवर्णाऽहन्यहन्यपि'—इत मनुः (२–१३२) । ३९८

उपसन्नः त्रि. [उप+सद्+क्त] उपनतः; उपस्थितः; 'ब्रवीतु भगवांस्तन्मे उपसन्नोऽस्म्यधीहि भोः'—इति महाभारते । ७५०

उपसम्पन्नः त्रि. [उप+सम्+पद्+क्त] पर्याप्तः; मृतः (६२९); 'श्रोत्रिये तूपसम्पन्ने त्रिरात्रमशुचिर्भवेत्'–इति मनुः (५–८१) । यज्ञार्थहतपशुः; प्रमीतः; प्रोक्षितः; पाकेन रूपरसादिसम्पन्नव्यञ्जनादिः; प्रणीतः; संस्कृतः; प्राप्तः । ३२६

उपसर्गः पुं. [उप+सृज्+घञ्] उपप्लवः; उपद्रवः; 'उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान्'—इति मार्कण्डेये (९२–७) । रोगभेदः;–'क्षीणं हन्युश्चोपसर्गाः प्रभूताः'—इति सुश्रुते । धातोः पूर्ववर्तिविंशतिसंख्यकः प्राद्यव्ययगणः–१ प्र, २ परा, ३ अप, ४ सम्, ५ नि, ६ अव, ७ अनु, ८ निर् (स्), ९ दुर् (स्), १० वि, ११ अधि, १२ सु, १३ उत्, १४ परि, १५ प्रति, १६ अभि, १७ अति, १८ अपि, १९ उप, २० आङ। 'निपाताश्चादयो ज्ञेया उपसर्गास्तु प्रादयः । द्योतकत्वात् क्रियायोगे लोकादवगता इमे ॥ ते त्रिधा–'धात्वर्थं बाधते कश्चित्'—यथा आदत्ते । 'कश्चित्तमनुवर्तते'—यथा प्रसूते । 'तमेव विशिनष्टयन्यः'–यथा प्रणमति, । 'उपसर्गगतिस्त्रिधा ॥' अपि च—'उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते । प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत्'—इति सिद्धान्तकौमुदी । १२७

उपसर्जनम् क्ली. [उप+सृज्+ल्युट्] प्रधानभिन्नम्; अप्रधानम्; अप्राग्र्यम्; 'उपसर्जनं प्रधानस्य धर्मतो नोपपद्यते'—इति मनुः (९–२११) । विशेषणं; त्यागः; उपद्रवः; 'निर्घाते भूमिचलने ज्योतिषामुपसर्जने'—इति मनुः । ७६३

उपसर्या स्त्री. [उप+सृ+'उपसर्या काल्या प्रजने' इति साधुः] प्राप्तगर्भग्रहणकाला गौः; ऋतुमती गौः; काल्या; कालप्राप्ता; वृषरता । २७२

उपसूर्यकम् क्ली. [सूर्यमुपगतम् उपसूर्यम् । स्वार्थे कन् । चन्द्रपक्षे उपसूर्यमिव । उपसूर्यकम्, इवार्थे कन्] चन्द्रसूर्यप्रान्तस्थितमण्डलम्; परिवेषः । ४१

उपस्करः पुं. [उप+कृ+अप्, 'समवाये चेति' सुट्] व्यञ्जनादिसंस्कारार्थं धान्याकसर्षपपिष्टादिः; वेसवारः; 'मङ्गलालम्भनीयानि प्राशनीयान्युपस्करान् । उपानिन्युस्तथापुण्याः कुमारीबहुलाः स्त्रियः ॥' गृहवासोपकरणं; दृषदुपलसूर्पादि; कनककुण्डलहारादि; 'गृहोपस्करबाह्यानां दोह्याभरणकर्मिणाम् । मूल्यं लब्धं तु यत्किञ्चित् शुल्कं तत्परिकीर्तितम्'—इति याज्ञवल्क्यः । 'पञ्च सूना गृहस्थस्य चूल्ली पेषण्युपस्करः'–इति मनुः (३–६८) । 'सज्जोपस्करभेषजः'—इति सुश्रुते । ३२१

उपस्थः पुं. [उप+स्था+क] भगम्; योनि; लिङ्गं; क्रोडः; 'रथोपस्थ उपाविशत्'—इति भगवद्गीता (१–४६)। गुह्यद्वारम्; 'उपस्थमुदरं जिह्वा हस्तौ पादौ च पञ्चकम्'—इति मनुः (८–१२५)। निकटे त्रि.। ५१४

उपस्थितः त्रि. [उप समीपे स्थितवान्। उप+स्था+क्त] समीपस्थितः; उपनतः; उपसन्नः; 'उपस्थितेयं कल्याणी नाम्नि कीर्तित एव यत्'—इति (१–८७), 'हैयङ्गवीनमादाय घोषवृद्धानुपस्थितान्'–इति च रघुवंशे (१–४५)। मृष्टः; शोधितः; पाणिनिव्याकरणे वेदाप्रचलितो लौकिकः शब्दः; यथा—'अप्लुतवदुपस्थिते', अत्र सिद्धान्तकौमुदी—'उपस्थितोऽनार्षः।' ७५०

उपस्पर्शनम् क्ली. [उप+स्पृश्+ल्युट्] उपस्पर्शः; आचमनम्; 'उपस्पर्शनकाले तु त्वा रक्षन्तु रघूत्तम!'–इति रामायणे (२।२५।२४)। ४०८

उपहसितम् क्ली [उप+हस्+क्त] हास्यभेदः; 'ज्येष्ठानां स्मितहसिते मध्यानां विहसितावहसिते च। नीचानामपहसितं तथातिहसितं च षड्भेदाः॥ मधुरस्वरं विहसितं सांसशिरःकम्पमवहसितम्। अपहसितं सास्राक्षं विक्षिप्ताङ्गं भवत्यतिहसितम्॥ अपहसितमत्र उपहसितम् इत्यपि पाठः'—इति साहित्यदर्पणे ७३१

उपहारः पुं. [उप+हृ+घञ्] उपढौकनद्रव्यम्; प्राभृत; प्रदेशनम्; उपायनम्; उपग्राह्यः; उपदा; 'रत्नपुष्पोपहारेण च्छायामानर्च्च पादयोः'–इति रघुवंशे (४–८४)। 'बन्धुप्रीत्या भवनशिखिभिर्दत्तनृत्योपहारः'–इति पूर्वमेघे (३३)। 'ज्योतिषां प्रतिबिम्बानि प्राप्नुवन्त्युपहारताम्'—इति कुमारसम्भवे (६–४२)। हारनिकटस्थद्रव्यम् (उपगतो हारम्); 'उरोभुवा कुम्भयुगेन जृम्भितं नवोपहारेण वयस्कृतेन किम्'—इति नैषधे (१–४८)। १२८

उपह्वरम् क्ली. [उपह्वरन्त्यत्र। उप+ह्वृ+घ] निर्जनस्थानम्; 'उपह्वरे गिरीणाम्'—ऋग्वेदे (८।६।२८)। निकटम् (७९१); 'ऊर्मिप्रवाहैर्जाह्नव्याः समानीतमुपह्वरम्'—इति महाभारते। 'सर्वानाहूय उपह्वरे वैधान्'—इति हर्षचरिते। पुं. [उप+ह्वृ+घ] रथः; प्रान्तभागः; 'उपह्वरेषु यदचिध्वं ययिं वय इव मरुतः केनचिद् पथा'—इति ऋग्वेदे (१।८७।२)। ७०८

उपांशु अव्य. [उपगताः अंशवः यत्र] विजनं; रहः; 'परिचेतुमुपांशुधारणं कुशपूतं प्रवयास्तु विष्टरम्'—इति रघुवंशे (८–१८)। पुं. जपभेदः; 'जिह्वौष्ठौ चालयेत् किञ्चिद्देवतागतमानसः। निजश्रवणयोग्यः स्यादुपांशुः स जपः स्मृतः'—इत्यागमः। त्रि. निगूढे। ७०८

उपाकृतः पुं. [उप+आ+कृ+क्त] यज्ञे अभिमन्त्र्य हतः पशुः; 'अनुपाकृतमांसानि देवान्नानि हवींषि च'—इति मनुः। उपद्रवः; त्रि. उपद्रुतम्। ४१७

उपाग्रम् क्ली. [अग्रं प्रधानम् उपगतम्] उपसर्जनम्, गौणम्; अप्रधानम्। ७६३

उपात्तः पुं. [उप समीपे आत्तः गृहीतः] निर्मदहस्ती; त्रि.[उप+आ+दा+क्त 'अच उपसर्गात्तः'] प्राप्तम्; 'क्षयं केचिदुपात्तस्य'—इति भविष्यपुराणम्। २२०

उपादानम् क्ली. [उप+आङ+दा+ल्युट्] उपदा; लब्धा; स्वस्वविषयेभ्य इन्द्रियाकर्षणं; प्रत्याहारः; ग्रहणम्; 'स्यादात्मनोऽप्युपादानाद् एषोपादानलक्षणा'–इति साहित्यदर्पणे। हेतुः; समवायिकारणं; प्रवृत्तिजनकज्ञानम्। ४३४

उपाधिः पुं. [उप+आ+धा+कि] धर्मचिन्ता; कुटुम्बव्यापृतः; छलम्; 'उपाधिर्न मया कार्यो वनवासे जुगुप्सितः'—इति रामायणे। विशेषणम्; 'पदार्थविभाजकोपाधिमत्त्वम्'—इति मुक्तावली। नामचिह्नं; हेतोरव्यापकः; यथा धूमवान् वह्निरित्यत्र आर्द्रकाष्ठम् उपाधिः, अस्य प्रयोजनं व्यभिचारस्यानुमानम्। आलङ्कारिकमते जातिगुणक्रियायदृच्छास्वरूपः। ७७०

उपाध्यायः पुं. [उपेत्य अधीयतेऽस्मात्। उप+अधि+इ+घञ्] अध्यापकः; वेदैकदेशाध्यापकः; 'एकदेशं तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुनः। योऽध्यापयति वृत्त्यर्थमुपाध्यायः स उच्यते'—इति मानवे (२–१४५)। ४००

उपानत् [ह्] स्त्री. [उपनह्यते पादावनया। उप+नह्+क्विप्, 'नहिवृतिवृषीति' पूर्वपदस्य दीर्घः] चर्मादिनिर्मितपादकोषः; 'नाक्षैः क्रीडेत् कदाचित्तु स्वयं नोपानहौ वहेत्। शयनस्थो न भुञ्जीत न पाणिस्थं न चासने'—इति मनुः (४–७४)। 'कृतावरोहस्य हयादुपानहौ'—इति नैषधे (१–१२३)। 'अनारोग्यमनायुष्यं चक्षुषोरुपघातकृत। पादाभ्यामनुपानद्भ्यां

सदा चङ्क्रमणं नृणाम्'—इति सुश्रुते। 'जूता' इति भाषा। ३११

उपान्तः त्रि. [उपगतोऽन्तम्] निकटम्; 'दिशामुपान्तेषु ससर्ज दृष्टिम्'—इति कुमारसम्भवे (३–६९)। 'उपान्तवानीरगृहाणि दृष्ट्वा'—इति रघुवंशे (१६–२१)। 'शय्योपान्तनिविष्टसस्मितमुखी'—इति साहित्यदर्पणे। ६९३

उपायनम् क्ली. [उपेयते उपाय्यते वा। उप+इण् वा अय्+ल्युट्] उपहारः; उपढौकनम्; 'तस्योपायनयोग्यानि रत्नानि सरितां पतिः'—इति कुमारसम्भवे (२–३७)। व्रतादिप्रतिष्ठा; समीपगमनम्; 'उपायन उषसां गोमतीनाम्'–इति ऋग्वेदे (२।२८।२)। ४३४

उपालम्भः पुं. [उप+आ+लभ्+घञ्, 'उपसर्गात् खल्घञोः' 'इति नुम्] दुर्वाक्यम्; स च गुणाविष्करणेन स्तुतिपूर्वकः, यथा—'महाकुलस्य भवतः किमिदमुचितमिति।' निन्दापूर्वकश्च, यथा—'बन्धकीसुतस्य भवतस्तदिदमुचितम्'—इति भागुरिः। 'उपालम्भो नाम हेतोर्दोषवचनं यथा पूर्वमहेतवो हेत्वाभासा व्याख्याताः'–इति चरकः। 'उचितस्तदुपालम्भः'—इति उत्तरचरिते। १५४

उपासङ्गः पुं. [उपासज्यन्ते शरा अत्र। उप+आङ+सञ्ज्+घञ्] तूणीरः; 'इमे च कस्य नाराचा सहस्रं लोमवाहिनः। समन्तात् कलधौताग्रा उपासङ्गे हिरण्मये'—इति महाभारते। 'तरकस' इति भाषा। ४६५

उपासना स्त्री. [उप समीपे आसनमिति। उप+आस्+युच्+टाप्] सेवा; वरिवस्या; शुश्रूषा; परिचर्या; उपासनम्; 'न विष्णूपासना नित्या वेदेनोक्ता तु कुत्रचित्। न विष्णुदीक्षा नित्यास्ति शिवस्यापि तथैव च॥ गायत्र्युपासना नित्या सर्ववेदैः समीरिता। यया विना त्वधः पातो ब्राह्मणस्यास्ति सर्वथा॥ तावता कृतकृत्यत्वं नान्यापेक्षा द्विजस्य हि। गायत्रीमात्रनिष्णातो द्विजो मोक्षमवाप्नुयात्'—इति देवीभागवतम्। १२९

उपास्तिः स्त्री. [उप+आस्+क्तिन्] सेवा; 'मुक्तिर्नेतेऽच्युतोपास्ति भूतं भूतमभि प्रभुः'—इति मुग्धबोधव्याकरणम्। १२९

उपेन्द्रः पुं. [इन्द्रमुपगतः; कश्यपादृषेः अदितौ वामनावतारे इन्द्रस्यानन्तरं जातत्वात् तथात्वम्] विष्णुः; 'ममोपरि यथेन्द्रस्त्वं स्थापितो गोभिरीश्वरः। उपेन्द्र इति कृष्ण त्वां गास्यन्ति दिवि देवताः'—इति हरिवंशे। २३

उभयव्यञ्जनम् क्ली. [उभयोः स्त्रीपुरुषयोः व्यञ्जनं चिह्नं यस्य] पोटा; श्मश्र्वादिचिह्नवती स्त्री। ४३०

उभयः त्रि. [उभौ अवयवौ अस्य। उभ+तयप्] युगलम्; 'पूजितं ह्यशनं नित्यं बलमूर्जं च यच्छति। अपूजितं तु तद्भुक्तमुभयं नाशयेदिदम्'—इति मनुः (२–५५)। ३२४

उमा स्त्री. [उ भो, मा तपस्यां कुर्विति, 'उमेति मात्रा तपसो निषिद्धा पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम'—इति कुमारोक्तेः। यद्वा ओर्हरस्य मा लक्ष्मीरिव। उं शिवं माति मिमीते वा। 'आतोऽनुपसर्गेति' क, अजादित्वात् टाप्। अवति ऊयते वा, उङ शब्दे, 'विभाषो तिलमाषोमेति' निपातनाद् मक्] दुर्गा; 'उमामुखे बिम्बफलाधरोष्ठे व्यापारयामास विलोचनानि'—इति कुमारसम्भवे (३–६७)। अतसी(५८२); कीर्तिः; हरिद्रा; कान्तिः; शान्तिः; 'यतो हि तपसे पुत्रि वनं गन्तुं च मेनका। उमेति तेन सोमेति नाम प्राप तदा सती'—इति कालिकापुराणे। १६

उमापतिः पुं. [उमायाः पतिः] शिवः; 'तप्यते तत्र भगवान् तपो नित्यमुमापतिः'—इति महाभारते। ११

उम्यम् क्ली. [उमाया अतस्या हरिद्राया वा क्षेत्रम्। उमा+'विभाषा तिलमाषोमाभङ्गाणुभ्यः' इति यत्] औमीनम्; अतसीक्षेत्रम्; हरिद्राक्षेत्रम्। १६३

उरगः पुं. [उरसा गच्छतीति। 'उरसो लोपश्चेति' ड-प्रत्ययः सकारलोपश्च] सर्पः; 'अङ्गुलीवोरगक्षता'—इति रघुवंशे (१–२८)। सीसकम्। ११९, ६४०

उरणः पुं.–स्त्री. [ऋ+'अर्तेः क्युजुच्च' इति क्युच् उत्वं रपरत्वं च] मेषः; 'य उरणं जघान नवचरंवासं नवतिञ्च बाहून्'—इति ऋग्वेदे (२।१४।४)। 'उत्सृष्टावुरणौ दृष्ट्वा राजा गृह्यगतो गृहम्'—इति हरिवंशे। मेघः। २७९

उरभ्रः पुं.–स्त्री. [उरु कठोरं भ्रमति। भ्रमु चलने, 'अन्येभ्योऽपीति' ड, पृषोदरादित्वात् साधुः] मेषः। २७९

उररी अव्य. [व्ये.+बाहुलकात् ररीक् सम्प्रसारणञ्च]

विस्तारः; स्वीकारः; अङ्गीकारः 'इति; काल्पनिक-भेदमुररीकृत्य'–इति साहित्यदर्पणे। ८८५

उरश्छदः पुं.– [उरो वक्षःस्थलं छाद्यतेऽनेनेति। उरस्+छद्+घ] कवचः; 'काञ्चनोरश्छदाश्चेमे पिशाच-वदनाः खराः—इति रामायणे। ४५९

उरः [स्] क्ली. [इयर्ति, ऋ गतौ, 'अर्तेरुच्च' इति असुन् उरादेशः किच्च] वक्षःस्थलं; वक्षः; वत्सं; क्रोडं; हृत्; भुजान्तरम्; 'कौस्तुभाख्यमपां सारं बिभ्राणं बृहतोरसा'—इति रघुवंशे (१०–१०)। 'उरसि सरसपादलेखाप्रतिमतयानुययावसंशयानः–' इति माघे (७–२२)। त्रि. उत्तमः; श्रेष्ठः। ५२७

उरसिजः पुं. [उरसि वक्षःस्थले जातः। उरस्+जन्+ड, सप्तम्या अलुक्] स्त्रीस्तनः; 'परिपस्पृशिरे चैनं पीनैरुरसिजैर्मुहुः'—इति रामायणे। ५२६

उरुः त्रि. [उर्णोति, ऊर्णु+'महति ह्रस्वश्च' इति कु, नुलोपो ह्रस्वश्च] महान्; वड्रं; विपुलं; विशङ्कटं; पृथु; बृहत्; विशालं; पृथुलं; महत्, विस्तीर्णं, विकटम्; 'विस्तीर्णं ददृशतुरम्बरप्रकाशं तेऽगाधं निधिमुरुमम्भसा-मनन्तम्'—इति महाभारते। बहुलम्; 'तुविजिता उरुक्षयाम्'—इति ऋग्वेदे 'उरुक्षयो बहुनिवासे' इति भाष्यम्। ६९९

उर्वरा स्त्री. [ऋच्छतीति, ऋ+अच्+टाप्, उरूणाम् अरा। यद्वा उर्व्यते, उर्व्+घ, उर्वं राति, उर्व+रा+क्विप्] सर्वसस्याढ्या भूमिः; 'यथा बीजमुर्वरायां कृष्टे कालेन रोहति'—इति अथर्ववेदे। भूमिमात्रम्; अप्सरो-भेदः; 'कलानिधिर्गुणनिधिः कर्पूरतिलकोर्वरा'––इति काशीखण्डे। १५८

उर्वशी स्त्री. [उरून् महतोऽपि अश्नुते व्याप्नोति वशी-करोति इति यावत्, यद्वा ऊरुं नारायणस्य महर्षेरूरु-प्रदेशम् अश्नुते योनित्वेन व्याप्नोतीति। उरु+अश्+क, गौरादित्वात् ङीष्] स्वर्गवेश्या; 'ओमित्यादेशमादाय नत्वा तं सुरवन्दिनः। उर्वशीमप्सरःश्रेष्ठां पुरस्कृत्य दिवं ययुः'—इति भागवते। नदीभेदः; उर्वशीतीर्थम्; 'उर्वशीं कृत्तिकायोगे गत्वा चैव समाहितः। लौहित्ये विधिवत् स्नात्वा पुण्डरीकफलं लभेत्'—इति महा-भारते। ८८

उर्वी स्त्री. [उर्णोति इति। ऊर्णु+'महति ह्रस्वश्च' इति कु, नुलोपो ह्रस्वश्च। 'वोतो गुणवचनादिति' ङीष्] पृथिवी; 'हिरण्मयोर्वीरुहवल्लितन्तुभिः'—इति माघे (१–७)। 'अनन्यशासनामुर्वीं शशासैक-पुरीमिव'—इति रघुवंशे (१–३०)। १५६

उलपः पुं.– क्ली. [वलतीति, वल्+'विटपपिष्टपविशि-पोलपाः' इति कप सम्प्रसारणं च] विस्तीर्णा लता; सा तु त्रपुषीद्राक्षाताम्बूल्यादिः; उलुपः; वीरुत्; गुल्मिनी; प्रताना; प्रतानिनी; वीरुधा; वरुत्; शाखा-पत्रप्रचययुक्तलता। १९०

उलपः पुं.—तृणविशेषः; उलूकं; सूच्यग्रः; स्थूलकः; दर्व्यः; जूर्णाख्यः; खरच्छदः; उलपः। १९१

उलूकः पुं. [उचतीति, उच् समवाये, 'उलूकादयः' इति साधुः। यद्वा वलते, उलूकादित्वाद् वलेः सम्प्रसारणम् ऊकश्च] पेचकपक्षी; तामसः; घूकः; दिवान्धः; कौशिकः; कुशिः; नक्तञ्चरः; निशाटः; काकारिः; घोरदर्शनः; 'त्यजति मुदमुलूकः प्रीतिमांश्चक्रवाकः'—इति माघे (११–६४)। 'श्वगोधोलूककाकांश्च शूद्र-हत्याव्रतञ्चरेत्'—इति मनुः (११–१३१)। इन्द्रः; 'उलूकाविन्द्रपेचकौ' इत्युणादिवृत्तिः। भारतयोधी; शकुनिपुत्रः; 'आहूयोपह्वरे राजन्नुलूकमिदमब्रवीत्। उलूक गच्छ कैतव्य ! पाण्डवान् सहसोमकान्'—इति महाभारते। विश्वामित्रपुत्रः; 'उलूकोऽय मुद्गलश्च तथर्षिः सैन्धवायनः–' इति भारते। त्रि. उलूकदेश-वासिनि; 'उलूकानुत्तरांश्चैव तांश्च राज्ञः समानयत्' —इति महाभारते। २४६

उल्का स्त्री. [ओषतीति, उष् दाहे 'शुकवल्कोल्काः' इति उणादिसूत्रेण कप्रत्ययात् साधुः] तेजःपुञ्जः; अग्नि-शिखा; अग्निः; 'लक्ष्मीः सम्पूज्यतां लोका उल्काभि-श्चापि वेष्टयताम्'–इति तिथितत्त्वे। आकाशात् पति-तोऽग्निः; 'तञ्चेद्वायौ सरति सरलस्कन्धसङ्घट्टजन्मा, बाधेतोल्काक्षपितचमरीबालभारो दवाग्निः'—इति पूर्वमेघे (५४)। 'उल्कानिर्घातकेतूंश्च ज्योतींष्युच्चा-वचानि च'—इति मनुः (१–३८)। ६७

उल्मुकम् क्ली.– पुं. [ओषतीति, उष् दाहे, 'उल्मुक-दर्वीति' निपातनाद् धातोः षस्य लः मुकप्रत्ययश्च] अङ्गारः; 'अन्वाहार्यपचनादुल्मुकमादाय'—इति शत-पथब्राह्मणे (६।२।७)। वृष्णिवंशीयराजा; 'उल्मुको

निशठश्चैव वीरश्चाङ्गावहस्तथा। वृष्णयो निखिलाश्चान्ये समाजग्मुर्महारथाः'—इति महाभारते। ६७

उल्लकसनम् क्ली. [उल्लः ऊर्णा तद्वत् कसनं विकसनम्] रोमाञ्चः। ६५१

उल्लसनकम् क्ली. [उल्लसा+स्वार्थे कन्] रोमाञ्चः। ६५१

उल्लाघः त्रि. [उत्+लाघ्, 'गत्यर्थेति'क्त, निपातनात् सिद्धम्] गदान्निर्गतः; नीरोगः; शुचिः; दक्षः; कृष्णं; मरीचं; हृष्टम्।] ३८०

उल्लापः पुं. [उत्+लप्+घञ्] शोकरोगादिना ध्वनिविकारः; काकुवाक्; 'खलोल्लापाः सोढाः कथमपि तदाराधनपरैः'—इति भर्तृहरिः। १५०

उल्लोचः पुं. [ऊर्ध्वं लोचति। उत्+लोच्+अञ्। यद्वा ऊर्द्ध्वं लोच्यते, लोच्+घञ्, कुत्वं तु 'निष्ठायामनिटः' इत्यत्र अनिटः इति निषेधान्न।] चन्द्रातपः; वितानम्। 'तम्बू' इति भाषा। ३१०

उल्लोलः पुं. [उल्लोडयतीति, लोड् उन्मादे, णिच्+पचाद्यच्, डलयोरैक्याद् डस्य लः] महातरङ्गः; कल्लोलः। 'लहर' इति भाषा। ६५३

उल्वम् क्ली. [उल्लीयते इति। उत्+लीङ श्लेषणे, 'उल्बादयश्च' इति साधु, पृषो० वत्वम्] जरायुः; कललः; गर्भवेष्टनचर्म; 'यथोल्वेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्' इति गीतायाम् (३–३८)। 'जातमात्रं विशोध्योल्वाद् बालं सैन्धवसर्पिषा। प्रसूतिक्लेशितं चानु बलातैलेन सेचयेत्'—इति वाग्भटः। ५००

उल्वणम् त्रि. [उत्+वण्+अच्, पृषोदरादित्वात् साधु] व्यक्तं; स्पष्टम्; 'श्लेष्मोल्वणा महामूला घना मन्दरुजः सिताः' इति 'हेतुलक्षणसंसर्गाद् विद्याद् द्वन्द्वोल्वणानि च'—इति च वाग्भटः। प्रकाशः; निर्बाधः; 'तस्यासीदुल्वणो मार्गः पादपैरिव दन्तिनः'—इति रघुवंशे (४–३३)। ७४४

उशना [स्] पुं. [वश् कान्तौ+वशेः कनसिः' इति कनसि, ग्रह्यादित्वात् सम्प्रसारणम्] शुक्राचार्यः; दैत्यगुरुः; 'अध्यापितस्योशनसापि नीतिं प्रयुक्तरागप्रणिधिद्विषस्ते'—इति कुमारसम्भवे (३–६)। 'पौरोहित्येन याज्यत्वे काव्यन्तूशनसं परे'—इति महाभारते। ४८

उशीरः पुं.– क्ली. [वश् कान्तौ+'वशः कित्' इति ईरन्, सम्प्रसारणम्] वीरणमूलम्; अभयं; नलदं; सेव्यम्; अमृणालं; जलाशयं; लामज्जकं; लघुलयम्; अवदाहम्; इष्टकापथम्; उषीरं; मृणालं; लघु; लयम्; अवदानम्; इष्टं; कापथम्; अवदाहेष्टकापथम्; इन्द्रगुप्तं; जलवासं; हरिप्रियं; वीरं; वीरणं; समगन्धिकं; रणप्रियं; वीरुतरुः; शिशिरं; शीतमूलकं; वितानमूलकं; जलमेदं; सुगन्धिकं; सुगन्धिमूलकं; कम्भु; उशीरकम्; 'वीरणस्य तु मूलं स्यादुशीरं नलदं च तत्। अमृणालं च सेव्यं च समगन्धिकमित्यपि॥ उशीरं पाचनं शीतं स्तम्भनं लघु तिक्तकम्। मधुरं ज्वरहृद्वान्तिमदनुत्कफपित्तहृत्॥ तृष्णास्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रव्रणापहम्'—इति भावप्रकाशे। ६२२

उषर्बुधः पुं. [उषसि प्रातर्बुध्यते प्रकाशते। उषस्+बुध्+क] अग्निः; रक्तचित्रकः; वृक्षविशेषः। ६२

उषाः [स्] स्त्री.–क्ली. [ओषति नाशयत्यन्धकारम्। उष्+'उषः किदिति' असि] प्रत्यूषः; 'आसीदासन्ननिर्वाणः प्रदीपार्चिरिवोषसि'—इति रघुवंशे (१२–१)। 'पुनरुषसि विविक्तैर्मातरिश्वावचूर्ण्य'—इति माघे (११।१७)। १११

उषारमणः पुं. [उषाया रमणः] उषापतिः: अनिरुद्धः; कामदेवपुत्रः। ३४

उषीरः पुं.– क्ली. [उष्+कीरच्] उशीरः; वीरणमूलम्। ६२२

उष्ट्रः पुं. [उष्+'उषिखनिभ्यां कित्' इति ष्ट्रन् किच्च] पशुविशेषः; क्रमेलकः; मयः; महाङ्गः; दीर्घगतिः; बली; करभः; दासेरकः; धूसरः; लम्बोष्ठः; खणः; महाजङ्घः; जवी; जाङ्घिकः; दीर्घः; शृङ्खलकः; महान्; महाग्रीवः; महानादः; महाध्वगः; महापृष्ठः; बलिष्ठः; दीर्घजङ्घः; ग्रीवी; धूम्रकः; शरभः; क्रमेलः, कण्टकाशनः, भोलिः, बहुकरः, अध्वगः: मरुद्विपः; वक्रग्रीवः; वासन्तः; कुलनाशः; कुशनामा; मरुप्रियः; द्विककुत्; दुर्गलङ्घनः; भूतघ्नः; दासेरः; दीर्घग्रीवः; केलिकीर्णः; 'नाधीयीताश्वमारूढो न रथं न च हस्तिनम्। न नावं न खरं नोष्ट्रं नेरिणस्थो न यानगः'—इति मनुः (४–१२०)। 'उष्ट्रयानं समारुह्य खरयानं तु कामतः'—इति मनुः (११–२९)। वाह्यरथः। २८०

उष्ट्रिका स्त्री. [उष्ट्रस्याकृतिरिवावयवो यस्याः; उष्ट्रस्य स्त्री वा] मृत्तिकाभाण्डभेदः; 'धूर्भङ्गविक्षेपविदारितोष्ट्रिका'—इति माघे (१२–१६)। उष्ट्रभार्या; उष्ट्री; वृश्चिकालीवृक्षः। ७९०

उष्णः त्रि. [उष् दाहे + 'इणषिञ्जिदीङुष्यविभ्यो नक्' इति नक्] अशीतः; 'यावदुष्णं भवत्यन्नं यावदश्नाति वाग्यतः'—इति मनुः (३–२३७)। निरलसः; उत्साही; दक्षः; चतुरः; पेशलः; पटुः; सूत्थानः; क्ली.-पुं. ग्रीष्म-ऋतुः; ग्रीष्मः; उष्मकः; निदाघः; उष्णोपगमः; तपः; आतपः; 'उष्णे हैमे वसन्ते कामं ग्रीष्मे तु शीतलम्'—इति सुश्रुते। 'नोष्णं न शिशिरस्तत्र न वायुर्न च भास्करः'—इति महाभारते। अग्निः; सूर्यः; 'उष्णे वर्षति शीते वा मारुते वाति वा भृशम्'—इति मनुः (११।११३)। पलाण्डुः। ४०

उष्णिका स्त्री. [अल्पमन्नमस्याम्। 'ब्राह्मणकोष्णिके संज्ञायामिति' कन्। निपातनादन्नशब्दस्योष्णादेशः] यवागुः; 'लप्सी', 'हलुवा' इत्यादि भाषा। ३२०

उष्णीषः पुं.- क्ली. [उष्णमीषते हिनस्ति। उष्ण + ईष् गतिहिंसादर्शनेषु। 'इगुपधेति' क। शकन्ध्वादिः] किरीटः; 'विशीर्णमलिनोष्णीषः प्रकीर्णाम्बरमूर्द्धजः'—इति महाभारते। शिरोवेष्टः (७९६); 'पाग' इति भाषा। 'उष्णीषं कान्तिकृत् केश्यं रजोवातकफापहम्। लघु चेच्छस्यते यस्माद् गुरुपित्ताक्षिरोगकृत्'—इति भावप्रकाशः। चिह्नान्तरम्। ५६५

उस्रः पुं. [वस् + 'स्फायितञ्चिवञ्चिशकिक्षिपीति' रक्] रश्मिः; 'शरैरुस्रैरिवोदीच्यानुद्धरिष्यन् रसानिव'—इति रघुवंशे (४–६६)। वृषः; वृषभः; 'वन्वन्नत्वानार्वोस्रः पितेव'—इति ऋग्वेदे 'उस्रः वृषभः'—इति भाष्यम्। लताभेदः; सूर्यः; 'प्रमित्रासो न ददुरुस्रो अग्रे'—इति ऋग्वेदे (३।५८।४) 'वसति नभसीत्युस्रः सूर्यः'—इति भाष्यम्। अश्विनीपुत्रौ; 'अग्नय उस्रा जरन्ते प्रतिवस्तोरश्विनौ'—इति ऋग्वेदे (४।४५।५)। ३९

उस्रा स्त्री. [उस्र + टाप्] अर्जुनी; सुरभिः; गौः; उपचित्रा; 'गाय' इति भाषा। २६८

ऊ

ऊधः [स्] क्ली. [उन्द + असुन् + 'ऊधसोऽनङिति' निर्देशाद् ऊधादेशः] आपीनम्; 'थन' इति भाषा। 'मण्डूकनेत्रां स्वाकारां पीनोधसमनिन्दिताम्'—इति महाभारते। 'यदेव स्त्रियै स्तनावाप्यायेते ऊधः पशूनाम्'—इति शतपथब्राह्मणे (२।५।१।५)। २७१

ऊधस्यम् क्ली. [ऊधसि भवम्। ऊधस् + यत्] दुग्धम्; 'ऊधस्यमिच्छामि तवोपभोक्तुम्'—इति रघुवंशे (२–६६)। २७४

ऊरव्यः पुं. [ऊरोर्जातः। ऊरु + 'शरीरावयवाद् यदिति' यत्। वैश्यस्य ब्रह्मणः ऊरोर्जातत्वात् तथात्वम्] वैश्यः; 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत'—इति यजुषि (३१।११)। ५७०

ऊरुः पुं. [ऊर्णूयते आच्छाद्यते इति। ऊर्णु + 'ऊर्णोतेर्नुलोपः' इति कर्मणि कु नुलोपश्च] जानूपरिभागः; सक्थिः; 'भुवनत्रितये न बिभर्ति तुलामिदमूरुयुगं न चमूरुदृशः'—इति साहित्यदर्पणे। 'भुजमूर्द्धोरुबाहुल्यादेकोऽपि धनदानुजः'—इति रघुवंशे (१२–८८)। 'लोकानां तु विवृद्ध्यर्थं मुखबाहूरुपादतः'—इति मनुः (१–३१)। 'जाँघ' इति भाषा। ५१५

ऊरुसन्धिः पुं. [उर्व्वोः संधिः] वङ्क्षणः; कटयङ्घ्रयोः संधिः। ५२३

ऊर्जः पुं. [ऊर्जयति उत्साहयति जिगीषून् इति। ऊर्ज् + णिच् + अच्] कार्तिकमासः; उत्साहः (७७९); बलम्; 'वसिष्ठा हि मिहेध्य वस्त्राण्यूर्जां पते'—इति ऋग्वेदे (१।२६।१) 'ऊर्जां बलपराक्रमादीनाम्' इति भाष्यम्। प्राणनं; वीर्यम्; 'पूजनं ह्यशनं नित्यं बलमूर्जं च यच्छति'—इति मनुः (२।५५)। यस्मात् पूजितमन्नं सामर्थ्यं वीर्यं च ददाति'—इति कुल्लूकभट्टः। कान्तिकनामसंवत्सरः; स्वारोचिषस्य मनोः पुत्रभेदः; 'प्रथितश्च नभस्यश्च नभ ऊर्ज्जस्तथैव च। स्वारोचिषस्य पुत्रास्ते मनोस्तात महात्मनः'—इति हरिवंशे (७।१४)। क्ली. [ऊर्ज + घञ्] जलम्; "नभ ऊर्ज इषे एष्याः पतये यज्ञरेतसे। तृप्तिदाय च जीवानां नमः सर्वरसात्मने"—इति भागवते। स्त्री. हिरण्यगर्भकन्या; 'हिरण्यगर्भस्य सुता ऊर्जा नाम सुतेजसः'—इति हरिवंशे। ११४

ऊर्णनाभः पुं. [ऊर्णेव तन्तुर्नाभौ यस्य। यद्वा मृदुत्वादूर्णेव नाभिर्यस्य। 'नाभेरुपसङ्ख्यानमि'त्यच्। 'ङ्यापोरिति'

ह्रस्वः] कीटविशेषः; लूता; तन्तुवायः; मर्कटकः; ऊर्णनाभिः; 'मकड़ी' इति भाषा। 'नाचारेण विना सृष्टिरूर्णनाभेरपीष्यते। न च निःसाधनः कर्ता कश्चित् सृजति किञ्चन।' धृतराष्ट्रपुत्रभेदः; 'ऊर्णनाभः सुनाभश्च तथा नन्दोपनन्दकौ'—इति महाभारते। दैत्यविशेषः; 'सूक्ष्मश्चैव निचन्द्रश्चं ऊर्णनाभो महागिरिः'— इति हरिवंशे। २५६

उर्णनाभिः पुं. [ऊर्णावत् नाभिः यस्य] मर्कटकः; 'आत्मशक्तिमवष्टभ्य ऊर्णनाभिरिवाक्लमः'—इति भागवते (२।५।५)। २५६

ऊर्णायुः पुं. [ऊर्णा अस्यास्तीति। ऊर्णा+युस्] मेषलोमकम्बलः; मेषः; ऊर्णनाभः; क्षणभङ्गः; गन्धर्वविशेषः; 'ऊर्णायुश्चित्रसेनश्च हाहा हूहूश्च भारत !'—इति हरिवंशे। ५५१

ऊर्ध्वः त्रि. [उत्+हा+ड, आदिवर्णस्य ऊरादेशः, पृषोदरादित्वम्] उपरिष्टात्; उपरि; 'कुर्वतीरुपलैस्तुङ्गैर्भुवनं नीचमूर्द्ध्वं वजैः। तस्या वनालीरन्वेति चित्रानागचमूर्द्ध्वं वजैः'—इति कीचकवधयमकम्। 'पद्मानि यस्याग्रसरोरुहाणि प्रबोधयत्यूर्द्ध्वमुखैर्मयूखैः'— इति कुमारसम्भवे (१-१६)। दण्डवत्स्थितः (३८६); 'आसीन ऊर्द्ध्वः प्रह्वो वा नियमो यत्र नेदृशः। तदासीनेन कर्तव्यं न प्रह्वेन न तिष्ठता'—इति छन्दोगपरिशिष्टात्। आसीनः; उपविष्टः; 'ऊर्द्ध्वो दण्डवत् स्थितः प्रह्वोऽवनतपूर्वकायः'—इति श्राद्धतत्त्वम्। १०२

ऊर्ध्वन्दमः त्रि. [ऊर्द्ध्वम्+दम्+अच्] ऊर्द्ध्वस्थः; ऊर्ध्वङ्गमः। ३८६

ऊर्ध्वमुखः त्रि. [ऊर्ध्वं मुखं यस्य, ऊर्ध्वं मुखं वा] प्रकृते ध्वजस्य उपरितनभागः; उच्चूलः; ऊर्ध्वकोटिस्थगुच्छकः। ४५८

ऊर्ध्वलोकः पुं. [ऊर्द्ध्वः उपरिस्थो लोकः] स्वर्गः; 'रक्षांस्यखादयदनाययदूर्द्ध्वलोकमाक्रन्दयत्कपिभिरायदाशु रामः'- इति मुग्धबोधव्याकरणे। ३

ऊर्मिः स्त्री– पुं. [ऋच्छतीति। ऋ गतौ, 'अर्तेरूच्च' इति उणादिसूत्रेण मि, अर्तेरूरादेशश्च] तरङ्गः; 'तमाधूतध्वजपटं व्योमगङ्गोर्मिवायुभिः'—इति रघुवंशे (१२-८५)। प्रकाशः; वेगः; भङ्गः; वस्त्रसङ्कोचरेखा। वेदना, पीडा, उत्कण्ठा, बुभुक्षादयः षट्, यथा—'बुभुक्षा च पिपासा च प्राणस्य मनसः स्मृतौ। शोकमोहौ शरीरस्य जरामृत्यू षडूर्मयः॥' 'शोकमोहौ जरामृत्यू क्षुत्पिपासे षडूर्मयः'—इति श्रीधरी। अश्वगतिभेदः; 'पङ्क्तीकृतानामश्वानां नमनोन्नमनाकृतिः। अतिवेगसमायुक्ता गतिरूर्मिरुदाहृता'—इति यादवः। 'तूर्णं पयोधर इवोर्मिभिरापतन्तः'—इति माघे (५।४)। ६५३

ऊर्मिका स्त्री. [ऊर्मिरिव। 'इवे प्रतिकृताविति' कन्। ऊर्मिं प्रकाशं कायतीति वा। 'आतोनुपेति' क] अङ्गुलीयकम्; अङ्गुलिमुद्रा; उत्कण्ठा; भृङ्गनादः; वस्त्रभङ्गः; वीचिः। ५५९

ऊर्मिमान् [त्] त्रि. [ऊर्मिरस्यास्तीति। ऊर्मि+मतुप्] वक्रः; तरङ्गयुक्तः; 'दीर्घेषु नीलेष्वथ चोर्मिमत्सु जग्राह केशेषु नरेन्द्रपत्नीम्'—इति महाभारते। ६९६

ऊषणम् क्ली. [ऊष्+ल्युट्] मरिचम्; 'मरिचं वेल्लजं कृष्णमूषणं धर्मपत्तनम्'—इति भावप्रकाशः। शुण्ठी; 'शुण्ठी विश्वा च विश्वं च नागरं विश्वभेषजम्। ऊषणं कटुभद्रं च शृङ्गवेरं महौषधम्'—इति भावप्रकाशः। पिप्पलीमूलम्; 'ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलमूषणं चटकाशिरः'—इति भावप्रकाशः। ६१६

ऊषरः त्रि. [ऊष+र] क्षारभूमिः; ऊषवान्; 'तत्र विद्या न वप्तव्या शुभं बीजमिवोषरे'—इति मनुः (२।११२)। 'ऊषरा मृत् पित्तं कोपयेत्', 'पित्तमूषरा'—इति वैद्यके। १५८

ऊष्मा [न्] पुं. [ऊष्+मनिन्] उत्तापः; वाष्पः; उष्मा। ६७

ऊहः पुं.– स्त्री. [ऊह्+घञ्] पूर्वाप्राप्तस्य उत्क्षेपणम्; अध्याहारः; तर्कः; वितर्कः; वूहः; व्यूहः; वितर्कणम्; अध्याहरणम्; ऊहनं; प्रतर्कणम्; अपूर्वोत्प्रेक्षणम्; असमवेतार्थकपदत्यागपूर्वकसमवेतार्थकपदसमभिव्याहारकरणम्; साकाङ्क्षवाक्यस्य पदान्तरेण आकाङ्क्षापूरणम्; ऊहनम्; आरोपः; 'इमे मनुष्या दृश्यन्ते ऊहापोहविशारदाः। ज्ञानविज्ञानसम्पन्नाः प्रजावन्तोऽथ कोविदाः'—इति महाभारते (१३।१४५।४३)। परीक्षणं; सिद्धिभेदः। १०

ऋ

ऋक्थम् क्ली. [ऋच् स्तुतौ+पातॄतुदिवचिरिचिसिचिभ्यस्थक्' इति थक्] धनम्; 'हिरण्यं द्रविणं द्युम्नं विक्थमृक्थं धनं वसु'--इति शब्दार्णवः। स्वर्णम्; 'पुत्रहीनस्य ऋक्थिनः'--इति याज्ञवल्क्यः। दायभागः; 'ऋक्थमूलं हि कुटुम्बम्'—इति दायभागे पितृधनविभागकालेऽभिहितम्। ८०

ऋक्षम् क्ली.–पुं. [ऋष्+सच्, 'स्नुवश्चिकृत्यृषिभ्यः कित्' इति कित्] नक्षत्रम्; 'पूर्वां सन्ध्यां जपंस्तिष्ठेत् सावित्रीमार्कदर्शनात्। पश्चिमान्तु समासीनः सम्यगृक्षविभावनात्'--इति मनुः (२–१०१)। राशिः; 'प्रययावातिथेयेषु वसन्नृषिकुलेषु सः। दक्षिणां दिशमृक्षेषु वार्षिकेष्विव भास्करः'--इति रघुवंशे (१२–२५)। 'ऋक्षेषु नक्षत्रेषु राशिषु वा भास्कर इव'—इति तट्टीकायां मल्लिनाथः। ५१

ऋक्षः पुं. [ऋक्ष्+अच्] भल्लूकः; 'वृको मृगेभं व्याघ्रोऽश्वं फलमूलं तु मर्कटः। स्त्रीमृक्षः स्तोकको वारि यानान्युष्ट्रः पशूनजः'—इति मनुः (१२–६७)। पर्वतविशेषः; 'माहेन्द्रशुक्तिमलयर्क्षकपारियात्राः सह्यः सविन्ध्य इह सप्त कुलाचलाख्याः'—इति सिद्धान्तशिरोमणौ। शोणाकवृक्षः; श्योनाकप्रभेदः; अजमीढपुत्रः; 'धूमिन्या स तया देव्या त्वजमीढः समेयिवान्। ऋक्षं स जनयामास धूमवर्णं सुदर्शनम्'—इति हरिवंशे। विदूरथस्य पुत्रः; 'विदूरथस्य दायाद ऋक्ष एव महारथः'–इति हरिवंशे (३२-१०४)। अरिहस्य पुत्रः; 'अरिहः खल्वाङ्गेयीमुपयेमे सुदेवां नाम तस्यां पुत्रमजीजनदृक्षम्'–इति हरिवंशे (९५–२४)। एतेन पुरुवंशे त्रय एव ऋक्षनामानो राजानः सम्भूताः। २२८

ऋक्षेशः पुं. [ऋक्षाणां नक्षत्राणामीशः] चन्द्रः; जाम्बवान्। ४२

ऋजु त्रि. [अर्जयति गुणान्। अर्ज् अर्जने, 'अर्जिदृशीति' साधु] अवक्रम्; अजिह्मं; प्रगुणं; प्राञ्जलः; सरलः; 'उमां स पश्यन् ऋजुनैव चक्षुषा'—इति कुमारसम्भवे (५–३२)। 'ऋजवस्ते तु सर्वे स्युरव्रणाः सौम्यदर्शनाः' —इति मनुः (२–४७)। स्त्रियां ङीष्पक्षे–'ऋज्वीर्दधानैरवतत्य कन्धराश्चलावचूडाः कलघघरारवैः'—इति माघे (१२–१८)। अनुकूलम्; 'ऋजुहस्त ऋजुवनिः' 'ऋजुहस्तस्तदनुकूलहस्तः'—इति भाष्यम्। शोभनम्; 'धारवाकेष्वृजुगाथः', 'ऋजुगाथः शोभनस्तुतिकः' इति भाष्यम्। पुं. वसुदेवपुत्रभेदः; 'ऋजुं समर्दनं भद्रं सङ्कर्षणमहीश्वरम्'—इति भागवते (९।२४।५४)। ५७

ऋणम् क्ली. [ऋ+क्त, 'ऋणमाधमर्ण्ये' इति णत्वम्] धारः; उद्धारः; पर्युदञ्चनम्; 'देवानां च पितॄणां च ऋषीणां च तथा नरः। ऋणवान् जायते यस्मात् तन्मोक्षे प्रयतेत् सदा॥ देवानाम् अनृणो जन्तुर्यज्ञैर्भवति मानवः। अल्पवित्तश्च पूजाभिरुपवासव्रतैस्तथा॥ श्राद्धेन प्रजया चैव पितॄणामनृणो भवेत्। ऋषीणां ब्रह्मचर्येण श्रुतेन तपसा तथा'—इति विष्णुधर्मोत्तरे। जलदुर्गमभूमिः; 'दशार्णो देशः, दशार्णा नदी, उभयत्र ऋणशब्देन जलदुर्गमभूमिरुच्यते'—इति मुग्धबोधे टीकायां दुर्गादासः। 'ऋणशब्दो दुर्गभूमौ जले च'—इति सिद्धान्तकौमुदी। अङ्कशास्त्रोक्तः कुतश्चिदपि राश्यन्तराद् वियोज्यः संख्यावान् पदार्थः; 'योगे युतिः स्यात् क्षययोः स्वयोर्वा, धनर्णयोरन्तरमेव योगः'—इति भास्करीयबीजगणिते। [ऋणतीति, ऋण् गतौ, तस्मात् क] त्रि. गन्ता; गमनशीलः; शीघ्रगन्ता; 'सद्यो यः स्यन्द्रो विषितो यवीयानृणो न तायुरतिधन्वा राट्'—इति ऋग्वेदे (६।१२।५)। 'ऋणः शीघ्रगन्ता'—इति भाष्यम्। ५७२

ऋतम् क्ली. [ऋ+क्त] सत्यम्; 'साक्ष्येऽनृतं वदन् पाशैर्बध्यते वारुणैर्भृशम्। विवशः शतमाजातीस्तस्मात् साक्ष्यं वदेदृतम्'—इति मनुः (८–८२)। उञ्छशिलम्; 'ऋतामृताभ्यां जीवेत्तु मृतेन प्रमृतेन वा। सत्यानृताभ्यामपि वा न श्ववृत्त्या कदाचन॥ ऋतमुञ्छशिलं ज्ञेयम् अमृतं स्यादयाचितम्। मृतन्तु याचितं भैक्षं प्रमृतं कर्षणं स्मृतम्—इति मनुः (४–४, ५)। जलम्; 'तन्म ऋतं पातु शतशारदाय'–इति ऋग्वेदे (७।१०१।६) 'ऋतमुदकम्'—इति भाष्यम्। कर्मफलम्; 'ऋतं पिबन्तौ सुकृतस्य लोके'--इति श्रुतिः। विष्णुः; 'भगवान् वासुदेवश्च कीर्त्यतेऽत्र सनातनः। स हि सत्यमृतञ्चैव पवित्रं पुण्यमेव च। शाश्वतं ब्रह्म परमं ध्रुवं ज्योतिः सनातनम्'—इति महाभारते (१।१।२५३)। सूर्यः; 'ब्रह्म वा ऋतं ब्रह्म हि मित्रे

ब्रह्म ऋतं ब्रह्म एवायु:'—इति शतपथब्राह्मणे। परब्रह्म; 'ऋतमेकाक्षरं ब्रह्म'—इति श्रुतिः। सत्याचारः; 'सुतो मित्राय वरुणाय पीतये चारूर्ऋताय पीतये'—इति ऋग्वेदे (१।१३७।२) 'ऋताय सत्याचाराय'—इति दयानन्दभाष्यम्। रुद्रः; 'ऋतमित्यस्य कालाग्नी रुद्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दो रुद्रो देवता रुद्रोपस्थाने विनियोगः'—इति सामगाना सन्ध्यामन्त्रे। देवभेदः; 'ऋतस्य हि सुरुषः सन्ति पूर्वीर्ऋतस्य धीतिर्वृजिनानि हन्ति'—इति ऋग्वेदे (४-२३-८) 'ऋतस्य ऋतदेवस्य'—इति भाष्यम्। यज्ञः; 'ऋतचिद्भिः सत्यम्'—इति ऋग्वेदे (१।१४५।५) 'ऋतस्य यज्ञस्य जलस्य वा चिद् ज्ञाता'—इति सायणभाष्यम्। अग्नेर्ऋषिभेदः; 'ऋतं च सत्यं च'—इति यजुषि (१७।८२)। त्रि. पूजितः; दीप्तः। १४४

ऋतिः स्त्री. [ऋ+करणे क्तिन्] वर्त्म; कल्याणं; जुगुप्सा; स्पर्द्धा; [भावे क्तिन्] गमनम्; अशुभं; पुरुषमेधयज्ञीयदेवभेदः; 'ऋतये स्तेन हृदयम्'—इति यजुर्वेदे (३०।१३)। पुं. शत्रौ इति निरुक्तिः। ८१५

ऋतुः पुं. [ऋ+'अर्त्तेश्च तुः' इति तु चकारात् कित् च] कालविशेषः; मासद्वयं; स तु षड्विधः—मार्गशीर्षौ हिमः १, माघफाल्गुनौ शिशिरः २, चैत्रवैशाखौ वसन्तः ३, ज्येष्ठाषाढौ ग्रीष्मः ४, श्रावणभाद्रौ वर्षाः ५, आश्विनकार्तिकौ शरत् ६। 'शिशिरः पुष्पसमयो ग्रीष्मो वर्षाशरद्धिमाः। माघादिमासयुग्मैः स्युर्ऋतवः षट् क्रमादमी'—इति भावप्रकाशः। (७९४) स्त्रीकुसुमं; रजः; पुष्पम्; आर्तवम्; 'ऋतुकालाभिगामी स्यात् स्वदारनिरतः सदा। पर्ववर्जं व्रजेद्वैनां तद्व्रतो रतिकाम्यया॥ ऋतुः स्वाभाविकः स्त्रीणां रात्रयः षोडश स्मृताः। चतुर्भिरितरैः सार्द्धमहोभिः सद्विगर्हितैः'—इति मनुः (३।४५।४६)। शिवः; 'ऋतुः संवत्सरो मासः पक्षः संख्यासमापनः'—इति महादेवसहस्रनामकथने। विष्णुः; 'ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः'—इति विष्णुसहस्रनामकथने। दीप्तिः; मासः; सुवीरः। ११३

ऋते अव्य. [ऋत+के] विना; वर्जनम्; 'अवेहि मां प्रीतमृते तुरङ्गमात्'—इति रघुवंशे (३-६३)। 'अंशादृते निषिक्तस्य नीललोहितरेतसः'—इति कुमारसम्भवे (२।५७)। ८७६

ऋभुः पुं. [ऋ स्वर्गे देवमातुरदितेर्वा भवति यः। ऋ+भू+डु] देवता; 'ऋभुर्न रथ्यं नवं दधतो केतुमादिशे'—इति ऋग्वेदे (९।२१।६)। देवानामपि देवः; 'ऋभवो नाम तत्रान्ये देवानामपि देवताः। तेषां लोकाः परतरे यान्यजन्तीह देवताः'—इति महाभारते। चाक्षुषमन्वन्तरे देवगणभेदः; 'आद्याः प्रभूता ऋभवः पृथुकाश्च दिवौकसः'—इति हरिवंशे। ४

ऋश्यः पुं.-स्त्री. [ऋश्+क्यप्] मृगविशेषः, 'ऋश्यो न तृष्यन्नव पानमागहि'—इति ऋग्वेदे (८।४।१०)। २३०

ऋषभः पुं. [ऋष्+'ऋषिवृषिभ्यां कित्' इति अभच् किच्च] वृषः; 'उप ऋषभस्य रेतस्युपेन्द्र तव वीर्ये'—इति ऋग्वेदे (६।२८।८)। कर्णरन्ध्रं; कुम्भीरपुच्छः; उत्तरपदे श्रेष्ठवाचकः—'स्युरुत्तरपदे व्याघ्रपुङ्गवर्षभकुञ्जराः। सिंहशार्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थवाचकाः'—इत्यमरः। पर्वतविशेषः; वराहपुच्छः; आदिजिनः; भगवदवतारविशेषः; 'तस्य ह वा एवं मुक्तलिङ्गस्य भगवत ऋषभस्य योगमायावासनया देह इमां जगतीमभिमानाभासेन चङ्क्रममाणः'—इति भागवते (५।६।७)। स तु सत्ययुगे अग्नीध्रसुतनाभिराजपुत्रत्वेन जातः। तस्य पुत्रः जडभरतः—'अग्नीध्रसूनोर्नाभेस्तु ऋषभोऽभूत् सुतो द्विजः। ऋषभाद्भरतो जज्ञे वीरः पुत्रशताद्वरः'—इति मार्कण्डेये। स्वारोचिषे मन्वन्तरे ऋषिभेदः; 'ऊर्जस्तम्बस्तथा प्राणो दत्तोलिर्ऋषभस्तथा'—इति मार्कण्डेये। ऋषभसहस्रदक्षिण एकाहनिष्पाद्यो यागभेदः; 'पूर्वं ऋषभसंज्ञो राज्ञः'—इति गर्गः। यज्ञतुरपुत्रो नृपभेदः; 'एकविंशस्तोमेन ऋषभो याज्ञतुर ईजे शिक्नानां राजा तदेतद्गाथयाऽभिगीतम्'—इति शतपथब्राह्मणे (१३।५।४।१५)। अष्टवर्गान्तर्गतौषधिविशेषः; वृषः; ऋषभकः; वीरः; गोपतिः; धीरः; विषाणी; दुर्द्धरः; ककुद्मान्; पुङ्गवः; वोढा; शृङ्गी; धूर्यः; भूपतिः; कामी; रूक्षप्रियः; उक्षा; लाङ्गूली; गौः; बन्धुरः; गोरक्षः; वनवासी। 'ऋषभो वृषभो धीरो विषाणी द्राक्ष इत्यपि'—इति भावप्रकाशः। सप्तस्वरान्तर्गतद्वितीयस्वरः; 'षड्जं रौति मयूरो हि गावो नर्दन्ति चर्षभम्'—इति नारदसंहितायाम्। 'स्वरमृषभं चातको ब्रूते'—इति सङ्गीतदर्पणे। 'नाभिमूलाद्यदा वर्णं उत्थितः

कुरुते ध्वनिम्। वृषभस्येव निर्याति हेलया ऋषभः स्मृतः'—इति सङ्गीतदामोदरः। 'ऋग्वेदात् षड्ज-ऋषभौ यजुषो मध्यधैवतौ। सामवेदात् समुद्भूतौ तथा गान्धारपञ्चमौ'—इति रत्नावल्याम्।२६३

ऋषिः पुं. [ऋषति प्राप्नोति सर्वान् मन्त्रान् ज्ञानेन, पश्यति संसारपारं वा इति। ऋष्+'इगुपधात् कित्' इति इन् किच्च] ज्ञानसंसारयोः पारगन्ता। शास्त्रकृदाचार्यः; 'अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत। स देवा एह वक्षति'—इति ऋग्वेदे (१।१।२)। रिषि-हूंलादिश्च; 'विद्याविदग्धमतयो रिषयः प्रसिद्धा—इति प्रयोगात्। 'सप्त ब्रह्मर्षि-देवर्षि-महर्षि-परमर्षयः। काण्डर्षिश्च श्रुतर्षिश्च राजर्षिश्च क्रमावराः'—इति रत्नकोशे। वेदः; किरणः; भृग्वादिमहर्षिसन्तानः; 'भृगुर्मरीचिरत्रिश्च अङ्गिराः पुलहः क्रतुः। मनुर्दक्षो वशिष्ठश्च पुलस्त्यश्चेति ते दश॥ ब्रह्मणो मनसा ह्येते उत्पन्नाः स्वयमीश्वराः। परत्वेनर्षयस्तस्माद्भूतास्तस्मान्महर्षयः'—इति मत्स्यपुराणे। ४१२

ऋष्यः पुं.– स्त्री. [ऋष् यत्, निपातनात् सिद्धम्] मृगविशेषः; 'ऋष्यशृङ्गः कथं मृग्यामुत्पन्नः काश्यपात्मजः'—इति महाभारते। 'ऋष्यस्य मृगविशेषस्य शृङ्गमिव शृङ्गं यस्य स ऋष्यशृङ्गः।' 'ऋष्यो नीलाङ्गको लोके स दोह्य इति कीर्तितः'—इति भावप्रकाशः। कुरुवंशीयो देवातिथिपुत्रः; 'ततश्च क्रोधनस्तस्माद् देवातिथिरमुष्य च। ऋष्यस्तस्य दिलीपोऽभूत् प्रतीपस्तस्य चात्मजः'—इति भागवते (९।२२।११)। २३०

ए

एकम् त्रि. [एतीति, इण् गतौ, 'इणभीकापाशल्यतिमर्चिभ्यः कन्' इति कन्] केवलं; मुख्यम्; अन्यत्; 'त्वमेको ह्यस्य सर्वस्य विधानस्य स्वयम्भुवः'—इति मनुः (१–३)। 'एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वम्'—इति रघुवंशे (२–४७)। 'ममात्र भावैकरसं मनः स्थिरम्'—इति कुमारसम्भवे (५–८२)। आदिसंख्या; परमात्मा; विधुः; क्षितिः; गणेशदन्तः; शुक्रचक्षुः; अग्निः; सूर्यः; देवराजः; यमः। पुं. ऐलवंशीयो नृपतिभेदः; 'श्रुतायोर्वसुमान् पुत्रः सत्यायोश्च श्रुतंजयः। रयश्च सुत एकश्च जयश्च तनयोऽमितः'—इति भागवते (९।१५।२)। परमेश्वरः; विष्णुः; 'एको नैकः सवः कः किम्', 'परमार्थतः सजातीयविजातीयस्वगतभेदराहित्यादेकः'—इति भाष्यम्। ७८७

एककुण्डलः पुं. [एकं कुण्डलं यस्य] बलरामः; कुबेरः। (७८८) २८

एकतानः त्रि. [एकं भावरसं तनोति इति। तनु विस्तारे, कर्मण्यण्] एकाग्रः; एकविषयासक्तचित्तः; 'ब्रह्मादयः सुरगणा मुनयोऽथ सिद्धाः सत्त्वैकतानमतयो वचसां प्रवाहैः। नाराधितुं पुरुगुणैरधुनापि पिप्रुः किं तोष्टुमर्हति स मे हरिरुग्रजातेः॥' [एकस्तानो विस्तृतिर्यस्येति] एकताले पुं.। ५३४

एकदंष्ट्रः पुं. [एका दंष्ट्रा यस्य। परशुरामेण एकदन्तस्य उत्पाटनात् तथात्वम्] गणेशः। १८

एकदन्तः पुं. [एको दन्तो यस्य] गणेशः; 'एकदा रहसि स्थितयोःशिवाशिवयोर्द्वारपालत्वम् अङ्गीकृतं गजाननेन। एतस्मिन्नन्तरे परशुरामः शिवं द्रष्टुमागतः। शिवदर्शनव्याकुलस्यान्तर्जिगमिषोर्द्वाररोधे कृते गणपतिना सह तस्य तुमुलं युद्धमभवत्। परशुरामक्षिप्तेन परशुना च गजाननस्यैकदन्तो भग्नः। तदा प्रभृत्येव असौ एकदन्तः कथ्यते'—इति ब्रह्मवैवर्ते। १८

एकदृक् [श्] पुं. [एकं सर्वमभिन्नं पश्यति यः। एकदृश्+क्विप्, अथवा एका दृक् यस्य। रामबाणमोक्षणेन नष्टे एकचक्षुषि काकस्य तथात्वम्] काकः; शिवः; महादेवः; काणे त्रि.। ब्रह्मज्ञानी; [एकमेव सर्वं ब्रह्मत्वेन पश्यति यः इति व्युत्पत्त्या] तत्त्ववेत्ता। (एकमेव पक्षं पश्यतीत्यर्थे) एकपक्षाश्रयी। २४५

एकदेशः पुं. [एकश्चासौ देशः] एकभागः; अवयवः; अंशः। ७४४

एकपदम् क्ली. [एकं पदं पदमात्रोच्चारणकालो यस्मिन्] तत्कालः; तत्क्षणम्; 'कथमेकपदे निरागसं जनमाभाष्यमिमं न मन्यसे'—इति रघुवंशे (८–४८) 'एकपदे तत्क्षणे—'स्यात् तत्क्षण एकपदमिति'—विश्वः' इति तट्टीका। एकं प्रशस्तं पदं स्थानम्, इत्यमरोक्तेस्तथात्वम्। वैकुण्ठं; सुप्तिङन्तरूपं पदम् 'निहन्त्यरीनेकपदे य उदात्तः स्वरानिव'—इति माघे (२–९५)। एकं श्रेष्ठं पदं कोष्ठरूपपूजास्थानम्; वास्तुमण्डलस्थमेककोष्ठात्मकं स्थानम्; 'इन्द्रश्चेन्द्रात्मजश्चाभावेकैकपदसंस्थितौ'—

इति देवीपुराणे। पुं. शृङ्गारबन्धविशेषः; 'पादमेकं हृदि स्थाप्य द्वितीयं स्कन्धसंस्थितम्। स्तनौ धृत्वा रमेत् कामी बन्धस्त्वेकपदः स्मृतः'—इति रतिमञ्जरी। वास्तुयागमण्डलैककोष्ठपूजनीयो देवभेदः; 'भृगुश्चैकपदो ज्ञेयः'—इति देवीपुराणे। एकपदविशिष्टः [एकं पदं चरणं यस्य इति विग्रहे त्रि.]; 'पादैर्न्यूनं शोचसि मैकपादम् आत्मानं वा वृषलैर्भोक्ष्यमाणम्'—इति भागवते (१।१६।२२)। एकेन पदा चरन् वृषरूपधरो धर्मो गोरूपधरां पृथ्वीं रुदतीं दृष्ट्वोवाच—'हे भद्रे! पादैर्न्यूनम् एकपादं मां तथा शूद्रैर्भोक्ष्यमाणमात्मानं वा शोचसि किम्।' ७५२

एकपदी स्त्री. [एकः पादो यस्याम्। 'कुम्भपदीषु चेति' निपातः। यद्वा 'संख्यासुपूर्वस्येति' पादस्यान्तलोपः। 'पादोऽन्यतरस्यामिति' ङीप्, 'स्वाङ्गाच्चेति' ङीष् वा, पादः पत्] पन्थाः। २६०

एकयष्टिः स्त्री. [एका यष्टिरिव] हारविशेषः; एकावली; एकयष्टिका, 'एकलड़ा हार' इति भाषा। ५६३

एकाग्रः त्रि. [एकं एकस्मिन् वा अग्रं पुरोगतं ज्ञेयमस्य] अनन्यचित्तः; एकतानः; अनन्यवृत्तिः; एकायनः; एकसर्गः; एकाग्र्यः; एकायनगतः; 'मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः'—इति मनुः (१-१) 'एकाग्रं विषयान्तराव्याक्षिप्तचित्तम्'—इति कुल्लूकभट्टः। 'मनश्चैकाग्रया बुद्ध्या भगवत्यखिलात्मनि। वासुदेवे समाधाय चचार ह परव्रतम्'–इति भागवते (८।१६।३)। 'तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः। उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये'–इति भगवद्गीता (६-१२)। 'एकाग्रं विक्षेपरहितं मनः कृत्वा'—इति स्वामिटीका। अनाकुलः। ५३४

एकान्तः त्रि. [एकस्मिन्नेव अन्तः समाप्तिर्यस्य] निर्जनम्; 'अथ केनापि सस्यरक्षकेण धूसरकम्बलकृततनुत्राणेन धनुःकाण्डं सज्जीकृत्यावनतकायेन एकान्ते स्थितम्'—इति हितोपदेशे। ७०८

एकायनः त्रि. [एकम् अयनं विषयो यस्य] एकाग्रः; एकविषयासक्तचित्तः; 'तानि ह्येतानि संङ्कल्पैकायनानि सङ्कल्पात्मकानि सङ्कल्पे प्रतिष्ठितानि'—इति छान्दोग्योपनिषदि (७-४-२)। एकमयनं गतिर्यत्र, एकमात्रगमनयोग्यः; 'अनेनैव पथा मा वै गच्छेदिति विचार्य सः। आस्त एकायने मार्गे कदलीषण्डमण्डिते'—इति महाभारते (३।१४६।६६)। 'एकायनोऽसौ द्विफलस्त्रिमल.'—इति भागवते। ५३४

एकार्थः त्रि. [एकः अर्थः यस्य] अभिन्नार्थः; तुल्यार्थः; समानार्थवाचकः। ६३१

एकावलिः स्त्री. [एका आवलिः पङ्क्तिः हारविशेषः; एकयष्टिका। ५६३

एकावली स्त्री. [एका श्रेष्ठा आवली माला] एकयष्टिका; 'एकलड़ा हार' इति भाषा। अलङ्कारविशेषः; 'पूर्वं पूर्वं प्रति विशेषणत्वेन परं परम्। स्थाप्यतेऽपोह्यते वा चेत्स्यात्तदैकावली द्विधा॥' क्रमेणोदाहरणम्–'सरो विकसिताम्भोजमम्भोजं भृङ्गसङ्गतम्। भृङ्गा यत्र ससङ्गीताः सङ्गीतं सस्मरोदयम्॥' 'न तज्जलं यन्न सुचारुपङ्कजं, न पङ्कजं तद्यदलीनषट्पदम्। न षट्पदोऽसौ न जुगुञ्ज यः कलं, न गुञ्जितं तन्न जहार यन्मनः'—इति भट्टिः (२-१९)। क्वचिद्विशेष्यमपि यथोत्तरं विशेषणतया स्थापितमपोहितञ्च दृश्यते—'वाप्यो भवन्ति विमलाः स्फुटन्ति कमलानि वापीषु। कमलेषु पतन्त्यलयः करोति सङ्गीतमलिषु पदम्॥' एवमपोहने अपि। ५६३

एडः त्रि. [इलति, इल् स्वप्ने, अच्, डलयोरैक्यम्। यद्वा आ सर्वतः ईड्यते, ईड् स्तुतौ, घञ्] बधिरः; एडकः; मेषः; 'श्वैडवराहेषूदधारा प्राचीदं विष्णुः'—इति कात्यायनः। ६०९

एडगजः पुं. [एडो मेष एव गजो यस्य, भञ्जकत्वात्] चक्रमर्दकः; 'चक्रमर्दः प्रपुन्नाटो दद्रुघ्नो मेषलोचनः। पद्माटः स्यादेडगजश्चक्री पुन्नाट इत्यपि'—इति भावप्रकाशे। 'सलोमशः सैडगजः करञ्जः'—इति चरके। ६१९

एणः पुं.–स्त्री. [एति द्रुतं गच्छतीति। इ+बाहुलकाद् ण] हरिणः; मृगविशेषः; एणकः; 'अष्टावेणस्य मांसेन रौरवेण नवैव तु'—इति मनुः (३-२६९)। 'एणः कृष्णः प्रकीर्तितः'—इति भावप्रकाशः। २३०

एधः पुं. [इध्यतेऽनेनाग्निः। इन्ध्+'हलश्च' इति करणे घञ्। 'अवोदैधौद्मप्रश्रथहिमश्रथाः' इति घञि नलोपो गुणश्च निपातितः] इन्धनम्; 'एधान् हुताशनवतः स मुनिर्ययाचे'—इति रघुवंशे (९-८१)। ६९

एधः [स्] क्ली. [एध्+असुन्] इन्धनम्; 'यथैधांसि

समिद्धोऽग्निर्भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन'—इति भगवद्गीता (४–३७)। ६९

एनः [स्] क्ली. [एति गच्छति प्रायश्चित्तेन । इण्+आगसीत्यसुन् नुडागमश्च] पापम्; अपराधः; निन्दा; 'एनोनिवृत्तेन्द्रियवृत्तिरेनं जगाद भूयो जगदेकनाथः'—इति रघुवंशे (५।२३)। ६२७

एर्वारुः स्त्री. [एरणमिति । आ+ईर्+सम्पदादित्वात् क्विप्। एरं वृणोति वारयति वा । वृञ्+बाहुलकात् उण्] कर्कटीभेदः; व्यालपत्रा; लोमशा; स्थूला; तोयफला; हस्तिदन्तफला; कर्कटी; 'एर्वारुकं स्वादु शीतं सक्षारं कफवातकृत्। नातिपित्तकरं रुच्य दीपनं दाहनाशनम्'—इति हारीतः। 'त्रपुषैर्वारुकं स्वादु गुरु विष्टम्भि शीतलम्। एर्वारुकं च सम्पक्वं दाहतृष्णा-क्लमार्तिनुत्'—इति चरकः। एलविलः (७८); पुं. ऐलविलः; कुबेरः। २०९

एषण पुं. [इष् गतौ, ल्यु] लौहमयबाणः। ४६७

एषणा स्त्री. [इषु इच्छायाम्, ल्युट्] इच्छा; कामना; पुत्र-वित्त-लोकेप्सात्रितयम्; 'कामातुरं हर्षशोकभयैष-णार्तं तस्मै कथं तव गतिं विमृशामि दीनः'—इति भागवते (७।९।३८)। ३६०

ऐ

ऐकागारिकः त्रि. [एकमसहायमगारं प्रयोजनमस्य । 'ऐकागारिकट् चौरे' इति इकट् वृद्धिश्च निपातनात्] चौरः; एकागारवासी। ३३८

ऐतिह्यम् क्ली. [इतिह उपदेशपारम्पर्यम्, तदेव। इतिह+'अनन्तावसथेतिहभेषजाञ् ञ्यः' इति स्वार्थे ञ्य] पारम्पर्योपदेशः; इतिह; 'ऐतिह्यमनुमानं च प्रत्यक्ष-मपि चागमम्। ये हि सम्यक् परीक्षन्ते कुतस्तेषाम-बुद्धिता'—इति रामायणे (५।८७।२३)। 'ऐतिह्यं नाम आप्तोपदेशो वेदादिः'—इति चरकः। १४७

ऐन्द्रलुप्तिकः त्रि.— केशघ्नरोगविशिष्टः; खल्लीटः; खलतिः; 'गंजा' इति भाषा। ६०८

ऐन्द्री स्त्री. [इन्द्रस्य शक्रस्य इयम्। इन्द्र+'तस्येदम्' इत्यण् 'टिड्ढेति' ङीप्] पूर्वा दिक्; शची; 'वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता'—इति मार्कण्डेये। [इन्द्रस्य योगैश्वर्यशालिनो महादेवस्य पत्नी] दुर्गा; अलक्ष्मीः; इन्द्रवारुणी; एला; 'इलायची' इति भाषा। 'यष्ट्या ह्वमैन्द्री नलिनानि दूर्वा'—इति चरकः। १०१

ऐरावणः पुं. [इरया जलेन वणति शब्दायते। इरा+वण्, पचाद्यच्, तत इरावण एव, स्वार्थे प्रज्ञाद्यण्। यद्वा इरा सुरा वनमुदकं यस्मिन्; 'पूर्वपदादिति' णत्वम्। तत्र भवः, इरावण+अण्] ऐरावतहस्ती; 'श्वेतैर्दन्तै-श्चतुर्भिस्तु महाकायस्ततः परम्। ऐरावणो महानागोऽ-भवद्वज्रभृता धृतः'—इति महाभारते (१।१८।४१)। ६१

ऐरावतः पुं. [इरा जलानि विद्यन्तेऽस्मिन्, मतुप्, इरावान् समुद्रः, तत्र भवः इति। इरावत्+अण्। समुद्रमथनो-त्थितत्वादस्य तथात्वम्। यद्वा इरावत्या विद्युत अयम्, 'तस्येदमि' त्यण्] इन्द्रहस्ती; अभ्रमातङ्गः; ऐरावणः; अभ्रमुवल्लभः; श्वेतहस्तीः; चतुर्दन्तः; मल्लनागः; इन्द्रकुञ्जरः; हस्तिमल्लः; सदादानः; सुदामा; श्वेतकुञ्जरः; गजाग्रणीः; नागमल्लः; 'ऐरावता-स्फालनकर्कशेन'—इति कुमारसम्भवे (३–२२)। 'प्रावृषेण्यं पयोवाहं विद्युदैरावताविव'—इति रघुवंशे (१–३६)। पूर्वदिग्गजः (१०१); स तु इन्द्रहस्ती शुक्लवर्णः चतुर्दन्तः समुद्रमथनोत्थितः। नागरङ्गः; लकुचवृक्षः; 'ऐरावतं दन्तशठमम्लं शोणितपित्तकृत्'—इति सुश्रुतः। नागभेदः; इरावत्या नद्याः सन्निकृष्टो देशः [इरावती+अण्] 'बभूव परमाश्वानामैरावतपथे यथा'—इति महाभारते (३।१६२।३३)। क्ली. इन्द्रस्य ऋजुदीर्घं धनुः; 'इन्द्रधनुष' इति भाषा। ६१

ऐरावती स्त्री. [इरा जलानि विद्यन्तेऽस्य, इरावान् मेघः तस्य इयम्। इरावत्+'तस्येदम्' इति अण्+ङीप्] विद्युत्; विद्युद्विशेषः; ऐरावतभार्या; वटपत्रीवृक्षः; पञ्चालदेशीय नदीविशेषः; अधुना 'रावी' इति ख्याता। उत्तरमार्गे नक्षत्रविशेषाणां संज्ञाभेदः; 'पुष्याश्लेषा तथादित्या वीथी चैरावती स्मृता।' ६०

ऐलविलः पुं. [इलविलाया अपत्यं पुमान्। इलविल+अण्] इलविलापुत्रः; कुबेरः; ऐडविडः; ऐडविलः; ऐलविलः; एलविलः। ७८

ओ

ओकम् क्ली. [उच्चेरिगुपधलक्षणे के गुणः कुत्वं च 'ओक उचः के' इति निपात्यते] गृहम्; आश्रयः; पुं. पक्षी; वृषलः। २९७

ओकः [स्] क्ली. [उच्यते समवैति अस्मिन्। उच् + असुन्, गुणः, न्यङ्क्वादित्वात् कुत्वम्] आश्रयः; गृहम्; 'जलौका अथ भल्लुके'–इति अमरकोषः। 'सप्तर्षीणां तु यत्स्थानं स्मृतं तद्वै वनौकसाम्'—इति विष्णु-पुराणम् (१।६।३७)। २९७

ओघः पुं. [उच् समवाये + घञ्, पृषोदरादित्वात् साधुः] समूहः; द्रुतनृत्यगीतवाद्यं; जलवेगः; 'रविपीतजला तपात्यये पुनरोघेन हि युज्यते नदी'—इति कुमारसम्भवे (४–४४)। परम्परा; उपदेशः। ६८६

ओङ्कारः पुं. [ओम् + कारप्रत्ययः] प्रणवः; ओम्; 'ओङ्कारं पूर्वमुच्चार्यततो वेदमधीयते'—इति स्मृतिः। 'ओङ्कारश्चाथशब्दश्च द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा। कण्ठं भित्त्वा विनिर्यातौ तस्मान्माङ्गलिकावुभौ॥' 'प्राणायामै-स्त्रिभिः पूतस्तत ओङ्कारमर्हति'–इति मनुः (२–७५)। ८

ओजः [स्] क्ली. [उब्जत्यनेन। उब्ज् आर्जवे, 'उब्जेर्बले बलोपश्च' इति असुन् बलोपश्च, गुणः] बलम्; 'रुद्रौजसा तु प्रहृतं त्वयास्याम्'—इति रघुवंशे (२–५४)। 'तेषामिदं तु सप्तानां पुरुषाणां महौजसाम्'–इति मनुः (१।१९)। दीप्तिः; अवष्टम्भः; प्रकाशः; प्रथमतृतीयपञ्चमसप्तमनवमैकादशराशयः; गौडी रीतिः; काव्यगुणः; बहुसमाससंयुक्तवर्णपदाडम्बरः; 'ओजः प्रसादमाधुर्यगुणत्रितयभेदतः। गौडवैदर्भ-पाञ्चालीरीतयः परिकीर्तिताः। ओजः समासभूयस्त्वं मांसलं पदडम्बरम्।' तस्योदाहरणम्—'गङ्गोत्तुङ्गतर-ङ्गसङ्गतजटाजूटाग्रजाग्रत्फणिस्फूर्जत्फूत्कृतिभीतिसंभृत-चमत्कारस्फुरत्सम्भ्रमा। आनन्दामृतवापिकां विदधती चित्तं गिरीशप्रभोस्त्वां पायाश्रवसङ्गमे भगवती लज्जावती पार्वती'—इति काव्यचन्द्रिका। रसादिसप्तधातुसार-भागजधातुविशेषः; 'हृदि तिष्ठति यच्छुद्धं रक्तमीषत् सपीतकम्। ओजः शरीरे संजातं तन्नाशान्नाशमृच्छति॥ भ्रमरैः फलपुष्पेभ्यो यथा सम्भ्रियते मधु। तद्वदोजः शरीरेभ्यो धातुः संभ्रियते नृणाम्'—इति वैद्यकम्। अकारान्तोऽपि — 'हृदयं चेतनास्थानमोजश्चाश्रयमु-च्यते'—इति शार्ङ्गधरः। ७२३

ओड्रपुष्पम् क्ली. [ओड्रं पुष्पम्] जवा; जपा; 'ओड्रः स्यादोड्रपुष्पञ्च जवाथ हयमारकः'—इति रायमुकुटः। 'ओड्रपुष्पकुसुमप्रियेऽम्बिके'—इति हरानन्दः। २०७

ओतुः पुं.– स्त्री. [अवति गृहमाखुभ्यः। अव् रक्षणे + 'सितनिगमिमसिसच्यवीति' तुन् 'ज्वरत्वरेति' ऊठ् ततो गुणः] विडालः; यथा सिद्धान्तकौमुद्याम् 'स्थूलोतुः; स्थूलौतुः।' २३६

ओदनः पुं. – क्ली. [उन्द् + 'उन्देर्नलोपश्च' इति युच् नलोपश्च] अन्नं; भक्तम्; 'भात' इति भाषा। 'ओदनः क्षालितः स्विन्नः प्रस्रुतो विशदो लघुः। भृष्ट-तण्डुलजोऽत्यर्थमन्यथा स्याद् गुरुश्च सः'—इति वैद्यके। 'ओदनस्तैः शृतो द्विस्त्रिः प्रयोक्तव्यो यथायथम्। दोष-दूष्यादिबलतो ज्वरघ्नः क्वाथसाधितः'—इति वाग्भटः। भक्तमन्नं तथान्धश्च क्वचित् कूरं च कीर्तितम्। ओदनोऽस्त्री स्त्रियां भिस्सा दीदिविः पुंसि भाषितः।' ३१९

ओषधिः स्त्री. [ओषो दाहो दीप्तिर्वा धीयतेऽत्र। ओष + धा + कि] फलपाकान्तवृक्षादिः; कदली-धान्य-मित्यादिः; 'उद्भिज्जाः स्थावरा ज्ञेया बीजकाण्डा-प्ररोहिणः। ओषध्यः फलपाकान्ता बहुपुष्पफलोपगाः'—इति मनुः (१–४६)। 'भवन्ति यत्रौषधयो रजन्याम्'–इति कुमारसम्भवे (१–१०)। 'अथौषधीनामधिपस्य वृद्धौ'—इति कुमारे (७–१)। 'ओषधयः प्रशुष्यन्ति गवादीनां पयांसि च'—इति हारीते। १८०

ओषधी स्त्री. [ओषधि + ङीष्] ओषधिः; फलपाकान्त-वृक्षः। १८०

ओषधीशः पुं. [ओषधीनामीशः] चन्द्रः; ओषधीपतिः; 'ओषधीशः क्रियायोनिरम्भोयोनिरनुष्णभाक्'—इति हरिवंशे। कर्पूरः। ४२

ओष्ठः पुं. [उष्यते दह्यते उष्णाहारेणेति। उष् दाहे + 'उषिकुषीति' थन्] दन्ताच्छादकावयवः; रदनच्छदः; दशनवासः; दन्तवासः; दन्तवस्त्रं; रदच्छदः; 'अव-निष्ठीवतो दर्पाद् द्वावोष्ठौ च्छेदयेन्नृपः'—इति मनुः (८–२८२)। 'उमामुखे बिम्बफलाधरोष्ठे व्यापारया-मास विलोचनानि'—इति कुमारसम्भवे (३–६७)। 'ओठ' इति भाषा। ५२४

ओष्ठी स्त्री. [ओष्ठ इवाचरति पक्वावस्थायाम्। ओष्ठ + क्विप् ततोऽच् ङीप् च] बिम्बफलम्; 'कुन्दरू' इति भाषा। २०३

औ

औत्सुक्यम् क्ली. [उत्सुकस्य भावः, उत्सुक+ष्यञ्] उत्कण्ठा; 'औत्सुक्येन कृतत्वरा सहभुवा व्यावर्तमाना ह्रिया'—इति रत्नावली। 'रथचरणसमाह्वस्तावदौत्सुक्यनुन्ना'—इति माघे (११-२६)। 'इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन् गुह्यकस्तं ययाचे'—इति पूर्वमेघे (५)। व्यभिचारिभावभेदः; 'औत्सुक्योन्मादशङ्काः स्मृतिमतिसहिता व्याधिसन्त्रासलज्जाः'—इति साहित्यदर्पणे। इच्छा; 'औत्सुक्यमिच्छा सा च इष्यमाणप्राप्तौ निवर्तते इष्यमाणश्च स्वार्थं इष्टलक्षणत्वात् फलस्य'—इति तत्त्वकौमुद्याम्। ७४२

औदरिकः त्रि. [उदरे प्रसितः। उदर+ठक्] उदरमात्रपूरकः; आद्यूनः; विजिगीषाविवर्जितः; 'आद्यूनः स्यादौदरिके विजिगीषाविवर्जिते'—इत्यमरः। ३५०

औपयिकः त्रि. [उपायेन सञ्जातः। उपाय+ठक्+ह्रस्वश्च] न्याय्यः; उपयुक्तः; 'एतत्तव महाराज तेषु पुत्रेषु चैव ह। वृत्तमौपयिकं मन्ये भीष्मेण सह भारत'—इति महाभारते (१।२०५।१२)। 'वासमौपयिकं मन्ये तव राम महाबल'—इति रामायणे (२।५४।३९)। स्त्रियां तु ङीप्—'न वैश्यशूद्रौपयिकीः कथास्ता न च द्विजानां कथयन्ति वीराः'—इति महाभारते (२।१९४।११)। [स्वार्थे विनयादित्वात् ठक्प्रत्यये कृते उपाय एव औपयिकम्] 'शिवमौपयिकं गरीयसीम्'—इति भारविः (३५)। ७४६

औपवाह्यः पुं. [उपवाह्य, स्वार्थे अण्] राजवाह्यः। २२४

औमीनम् त्रि. [उमानां भवनं क्षेत्रं 'विभाषा तिलमाषोमेति' पक्षे खञ्] उम्यम्; उमाक्षेत्रम्। 'अलसी, तीसी का खेत' इति भाषा। १६३

औरभ्रः पुं. [उरभ्रस्य मेषस्य इदम्। उरभ्र+अण्] कम्बलः; ऊर्णायुः; उर्णयुः; आविकः, रल्लकः; मेषमांसम्; 'द्वौ मासौ मत्स्यमांसेन त्रीन् मासान् हारिणेन तु। औरभ्रेणाथ चतुरः शाकुनेनाथ पञ्च वै'—इति मनुः (३।२६८)। मेषदुग्धम्; 'औरभ्रं मधुरं रूक्षमुष्णं वातकफापहम्। न शस्तं रक्तपित्तानां वातिकानां हितं भवेत्'—इति हारीते। धन्वन्तरिं प्रति प्रश्नकारकः ऋषिभेदः; 'अथ खलु भगवन्तममरवरमृषिगणपरिवृतमाश्रमस्थं काशिराजं दिवोदासं धन्वन्तरिमौपधेनववैतरणौरभ्रपौष्कलावतकरवीर्यगोपुररक्षितसुश्रुतप्रभृतय ऊचुः'—इति सुश्रुते। ५५१

और्वः पुं. [और्वात् भृगुवंशीयाद् ऋषेर्जातः। और्व+अण्। और्वर्षिक्रोधजत्वात्तथात्वम्] वाडवानलः; स तु भूगोलस्य दक्षिणसीमा। तत्र सर्वे नरका दैत्याश्च वसन्ति। 'स्वादूदकान्तर्वडवानलोऽसौ पातालोकाः पृथिवीपुटानि'—इति सिद्धान्तशिरोमणिः। भृगुवंशीयऋषिभेदः; पञ्चप्रवरान्तर्गतमुनिविशेषः; 'ततश्च क्रोधजं तात और्वोऽग्निं वरुणालये। उत्ससर्ज स चैवाप उपयुङ्क्ते महोदधौ'—इति पुराणे। उर्वस्यापत्यम्; क्ली. [उर्व्यां भवम्, उर्वी+अण्] पांशवलवणम्। ७०

औशीरम् क्ली. [उश्यते, वश्+ईरन्, प्रज्ञाद्यण्। यद्वा उशीरस्येदं, 'तस्येदम्' इत्यण्] शयनासनं; शयनं; स्वापः; शय्या वा आसनम्; 'छत्रं वेष्टनमौशीरमुपानद्व्यजनानि च। यातयामानि देयानि शूद्राय परिचारिणे'—इति महाभारते (१२।६०।३१)। उशीरजं; चामरं; दण्डः; पुं. चामरदण्डः। १२१

औषधम् क्ली. [ओषधेरिदम्। ओषधिरेव वा, 'ओषधेरजातौ' इत्यण्] रोगनाशकद्रव्यम्; [ओषधिभवं, भवार्थे ष्णप्रत्ययः;] भेषजं; भैषज्यम्; अगदः; जायुः जैत्रम्; आयुर्योगः; गदारातिः; अमृतम्, आयुर्द्रव्यम्; 'शोधनं शमनं चेति समासादौषधं द्विधा। शरीरजानां दोषाणां क्रमेण परमौषधम्'—इति वाग्भटः। ६१३

क

कम् क्ली. [कायति शब्दो निर्गच्छति यतः यस्मिन् सतीत्यर्थः, सजिह्वावदास्यशिरोऽन्तर्वर्तित्वात्। यद्वा कायति वर्णात्मकं ध्वन्यात्मकं वा शब्दं करोति जीवः यस्मिन् सतीति यावत्। कै शब्दे, 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' इति ड। कायति शब्दायते स्रोतोवेगेनालोडनेन वेति यावत्] जलम्; 'सूर्योऽग्निः खं मरुद्दावः सोमः सन्ध्याहनी दिशः। कं कुः कालो धर्म इति ह्येते दैह्यस्य साक्षिणः॥' शिरः; 'द्वाभ्यामोष्ठौ द्विरुन्मृज्य चैकेन क्षालयेत्करम्। मुखघ्राणनेत्रश्रोत्रनाभ्युरस्कं भुजौ क्रमात्'—इति तन्त्रसारे। सुखम् [कायन्ति आनन्दोत्सवध्वनिं कुर्वन्ति यस्मिन् समागते उपस्थिते इत्यर्थः, गृहिण इति